श्री शंकराय नमः

श्री सरस्वत्यै नमः

श्री सूर्याय नमः

श्री विष्णवे नमः

श्री गणेशाय नमः

विश्वरूप जयादित्य जय विष्णो जयाच्युत। जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते॥
जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल। जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते॥

कलि संवत्सर–५१२३
विक्रम संवत्–२०७८
निम्बार्काब्द–५११६–१७
शक संवत्–१९४३
ईस्वी सन्–२०२१–२२

प्राचीन गणित श्रीसूर्यसिद्धान्त पर आधारित राजस्थान का एकमात्र

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्गम्

राजा – मंगल
मन्त्री – मंगल
संवत्सर – राक्षस
अक्षांश रेखांश
२६/५५ उत्तर
तथा ७५/४८ पूर्व

गणितकर्ता
आचार्य श्री विनय झा
त्रिस्कन्ध ज्योतिर्विद्, गणितज्ञ
दरभङ्गा

प्रधान सम्पादक
प्रो. सतीशचन्द्र शास्त्री
आचार्य, मु.स्व.पी., ज्योतिष विभाग
के.सं.वि.वि., जयपुर

प्रमुख सहयोग
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय,
जयपुर परिसर

प्रकाशक
श्रीनिम्बार्कपरिषद्
मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी, जयपुर

मार्गदर्शक
अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्,
वाराणसी

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥

ठाकुर श्री सरसबिहारी जी सरकार

रुक्मिणीसत्यभामाव्रजस्त्रीविशिष्टः श्रीभगवान
पुरुषोत्तमो वासुदेवः साम्प्रदायिभिर्वैष्णवैः सदोपासनीय

श्रीनिम्बार्क परिषद्

सुदर्शन चक्रावतार जगद्‌गुरु
भगवान श्रीनिम्बार्काचार्य

सर्वज्ञो जगतः कर्ता भक्ताभीष्टप्रदो विभुः। यः केशवं नामामस्तं शरण्यं भक्तवत्सलम्।।
अगाधबोधमाचार्य्यं निम्बादित्यं जगद्‌गुरुम्। ब्रह्मविद्योपदेष्टारं सततं प्रणमाम्यहम्।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्‌गुरु निम्बार्काचार्य
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज

हे आचार्यशिरोमणि!

आपश्री के आश्रित ''श्रीनिम्बार्क परिषद्'' द्वारा समस्त शास्त्रवचन पोषित आर्ष
सूर्यसिद्धान्तीय गणना आधारित भारतवर्ष के मान्य आचार्यों द्वारा प्राप्त
सम्मति एवं विद्वानों के परिश्रम से निर्मित यह

''श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग''

आपश्री को ही समर्पित है।

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

विश्वरूप **जयादित्य** जय विष्णो जयाच्युत।
जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते॥ -व.पु.

जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल।
जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते॥ -स्क.पु.

राक्षसनामसंवत्सर २०७८, २०२१-२२ ईस्वी

प्राचीन गणित श्रीसूर्यसिद्धान्त पर आधारित राजस्थान का एकमात्र पञ्चांग

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

◆ संरक्षक मण्डल ◆

श्रीमहन्त श्रीवृन्दावनबिहारीदास जी महाराज
'काठिया बाबा' सुखचर, कोलकाता

महन्त श्रीबनवारीशरण जी महाराज
प्रन्यासी अ.भा. निम्बार्काचार्यपीठ

महन्त श्रीवृन्दावनदास जी महाराज
महामंत्री अ.भा. श्रीनिम्बार्क महासभा

श्रीमहन्त श्रीपद्मनाभशरणदेवाचार्य जी महाराज,
श्रीसर्वेश्वर सेवाधाम
प्रन्यासी श्रीनिम्बार्क परिषद्

◆ मार्गदर्शक मण्डल ◆

प्रो. अर्कनाथ चौधरी
निदेशक, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर

डॉ. कामेश्वर उपाध्याय
महासचिव, अखिल भारतीय विद्वत्परिषद, वाराणसी

पं. गङ्गाधर पाठक
मुख्याचार्य श्रीरामजन्मभूमि शिलापूजन, अयोध्या

◆ पञ्चाङ्ग गणितकर्ता ◆

आचार्य श्री विनय झा, दरभंगा
संरक्षक, अखिल भारतीय विद्वत्परिषद, वाराणसी

◆ प्रधान सम्पादक ◆

प्रो. सतीशचन्द्र शास्त्री
आचार्य, मु.स्व.पी.,ज्योतिष, के.सं.वि.वि. जयपुर

◆प्रबन्ध सम्पादक◆

प्रो. मोहनलाल शर्मा
आचार्य, मु.स्व.पी., के.सं.वि.वि. जयपुर

◆ सम्पादक मण्डल ◆

प्रो. श्यामदेव मिश्र
विभागाध्यक्ष, ज्योतिष, के.सं.वि.वि. जयपुर

पं. अमित शर्मा
अध्यक्ष, श्रीनिम्बार्कपरिषद्, जयपुर

डॉ. गोविन्द चन्द्र द्विवेदी
ज्योतिषाचार्य, विन्ध्यक्षेत्र, मिर्जापुर

पं. पुरुषोत्तम शर्मा
राजज्योतिषी, कलवाड़ा, जयपुर

डॉ. विजेन्द्र शर्मा
सहा. आचार्य, ज्योतिष, के.सं.वि.वि. जयपुर

डॉ. रामेश्वर शर्मा
सहा. आचार्य, ज्योतिष, के.सं.वि.वि. जयपुर

डॉ. नीरज त्रिवेदी
सहा. आचार्य, ज्योतिष, के.सं.वि.वि. जयपुर

डॉ. भोजराज शर्मा
वरिष्ठ अध्यापक, ज्योतिष, के.सं.वि.वि. जयपुर

डॉ. अमित तिवारी
वरिष्ठ शोधअध्येता, के.सं.वि.वि. जयपुर

◆ विशिष्ट सहयोग ◆

पं. श्री बजरंगलाल शर्मा
आचार्य, श्रीवैकुण्ठनाथ जी मन्दिर, हरिमार्ग, जयपुर

डॉ. पारसनाथ ओझा
प्रधान संपादक, आदित्य पञ्चाङ्ग, काशी

डॉ. शचीन्द्रनाथ उपाध्याय
आचार्य, दिल्ली विश्वविद्यालय

◆ तकनीकी संयोजन ◆

डॉ. नमिता मित्तल
सहा. आचार्य, सङ्गणक विज्ञान, के.सं.वि.वि. जयपुर

◆ विद्यार्थी सम्पादक ◆

साकेत झा
अखिल भारतीय विद्वत्परिषद

मुदित मित्तल
अखिल भारतीय विद्वत्परिषद

◆ प्रमुख सहयोग ◆

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर
त्रिवेणी नगर, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर,-३०२०१८
www.csu-jaipur.edu.in

अखिल भारतीय विद्वत्परिषद्, वाराणसी
देवतायन, ९६, जानकीनगर, बजरडीहा, वाराणसी,
उत्तरप्रदेश – २२१००६
www.vidvatparishad.org

◆ प्रकाशक ◆

श्रीनिम्बार्क परिषद्
मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी गढ़ के सामने, कलवाड़ा,
जयपुर, राजस्थान – ३०२०३७
www.nimbarkparishad.com

विषयानुक्रमणिका

क्रं.सं.	विषय	पृष्ठ
१.	आवरण पृष्ठ	१.
२.	समर्पण	२.
३.	संरक्षक, मार्गदर्शक एवं सम्पादक मण्डल परिचय	३.
४.	विषयानुक्रमणिका,	४.
५.	नम्र निवेदन	४.
६.	सूर्यसिद्धान्त की सार्वकालिक ग्राह्यता	५.
७.	शुभाशीर्वाद	६.
८.	सूर्यसिद्धान्तीय पञ्चांगों की ही ग्राह्यता	८.
९.	शुभाशंसन	१०.
१०.	प्रधान सम्पादकीय	११.
११.	सम्पादकीय	१२.
१२.	संवत्सराम्भ एवं संवत्सर-फल	१३.
१३.	संवत् २०७८ का राशिफल	१४.
१४.	ग्रह उदयास्त विचार	१५.
१५.	सूर्य की द्वादश संक्रांतियाँ	१५.
१६.	संवत् २०७८ के ग्रहण, शिववास आदि	१६.
१७.	शनि की साढ़ेसाती का विचार	१७.
१८.	मंगली कुण्डली विचार एवं परिहार	१७.
१९.	विवाह मुहूर्त्त	१८.
२०.	द्विरागमन मुहूर्त्त	२०.
२१.	उपनयन मुहूर्त्त	२१.
२२.	प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त	२२.
२३.	होलिका दहन मुहूर्त्त विचार	२३.
२४.	मुण्डन मुहूर्त्त	२४.
२५.	अन्नप्राशन मुहूर्त्त	२५.
२६.	गृहारम्भ मुहूर्त्त (नींव)	२६.
२७.	गृहप्रवेश मुहूर्त्त	२७.
२८.	देवप्रतिष्ठा मुहूर्त्त	२८.
२९.	कतिपय आवश्यक मुहूर्त्त	२९.
३०.	**२४ पक्षों का तिथ्यादि-मान, व्रतपर्वादि-निर्णय, दैनिक ग्रहस्पष्ट, लग्न सारणियाँ**	**३०.**
३१.	वर-कन्या वैवाहिक अष्टकूट मेलापक चक्र	७८.
३२.	मेलापक सारणी	७९.
३३.	अवकहडा चक्र	८०.
३४.	नाड़ीदोष विचार एवं परिहार	८१.
३५.	श्रीनिम्बार्क व्रतोत्सव निर्णय	८२.

नम्र निवेदन

"वेदप्रणिहितो धर्मो ह्यधर्मस्तद्विपर्ययः।" [भा० ६/१/४०]

वेद प्रतिपादित नियमों के पालन करने का नाम धर्म और उसके विपरीताचरण का नाम ही अधर्म है। धर्माचरण के निर्णय हेतु **"तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्य व्यवस्थितौ"** इस भगवद्वाक्यानुसार एक मात्र शब्द (शास्त्र) ही प्रमाण है।

व्रत उपवास भी धर्माचरण का ही एक प्रधान अंग है। इसके पालन करने से प्रायः धर्म के अन्य समस्त लक्षणों का पालन हो जाता है। इसी धर्माचरण के व्यवस्थित पालन हेतु पञ्चाङ्ग नामक साधन का प्रणयन प्राचीन ऋषियों ने अपने अनुभव सिद्ध ज्ञान से किया। सिद्धान्तग्रन्थों में इस रीति का विशद वर्णन है। जिसका अवलम्ब लेकर भारतवर्ष के प्रत्येक क्षेत्र से पञ्चाङ्ग प्रकाशित होते आये हैं। परन्तु विगत कुछ समय से पञ्चाङ्ग निर्माण की विधि को लेकर मतभेद प्रकट हुए हैं तथा भिन्न भिन्न गणना विधि से पञ्चाङ्ग बनने से सामान्य जन में व्रतोपवास एवं पर्वों को लेकर भ्रम उपस्थित हो जाता है।

जयपुर में प्राचीन आर्षगणना द्वारा लगभग ढ़ाई शताब्दी से निरन्तर प्रकाशित भारतख्यात सौर पञ्चाङ्ग ऐसे समय में भी धर्म की ध्वजा को थामे हुए था जब नवीन पञ्चाङ्गकर्ताओं ने अमावस्या में ही नवरात्र स्थापना करवा डाली थी और प्रत्येक पर्व-त्यौहारों के दो दो दिन पड़ने का क्रम आरम्भ हो गया था। आधुनिक दृग्गणित के पक्षपातियों ने सूर्यसिद्धान्त को कालबाह्य घोषित कर एकमेव दृग्गणित आधारित पञ्चाङ्ग को ही सर्वथा ग्राह्य बतलाते हुए समस्त धर्मशास्त्रीय प्रक्रिया का अतिक्रमण कर लिया तब जयपुर से प्रकाशित एकमात्र सौर पञ्चाङ्ग को भी नत होकर सूर्यसिद्धान्तीय गणना का त्याग करना पड़ा। यह घटना हतप्रभ कर देने वाली थी।

दृग्गणित पक्षपातियों का स्वसिद्धान्त के पक्ष में एकमेव कथन यह है कि उनकी गणना से ग्रह दर्शन प्रत्यक्ष होता है। इनके इस कथन पर वह कथा स्मरण हो आती है की जब गङ्गापुत्र भीष्म अपने पिता शान्तनु का श्राद्ध करने हरिद्वार गए। एकाग्रचित होकर उन्होंने जैसे ही विधिवत पिण्डदान देना आरम्भ किया, तो पिण्ड वेदी पर बिछे कुशों में से एक हाथ निकलकर बाहर आया। शान्तनु स्वयं अपने निमित्त पिण्डदान लेने के लिये उपस्थित हो गए थे। धर्मनिष्ठ पुरुष भीष्म ने पिण्ड का दान उनके हाथ में न करके इस हेतु बनाई गयी वेदी के ऊपर रखे कुशों पर ही किया, क्योंकि शास्त्रों में कुशों पर ही पिण्डदान करने का विधान है-- **"पिण्डो देयः कुशोष्वीति।"** पुत्र भीष्म की इस शास्त्रनिष्ठा पर शान्तनु अत्यन्त प्रसन्न हुए। स्पष्ट है धर्माधर्म का विवेक सूक्ष्म और अदृष्ट है उसी प्रकार ज्योतिष का प्रमाण भी फलादेश होता है, भौतिक ग्रहों की स्थिति नहीं। केवल ग्रहदर्शनार्थ ही दृक्कर्मसंस्कार का शास्त्र में आदेश है, तिथ्यादि में नहीं। ग्रहों के उदयास्त, शृङ्ग तथा ग्रहण में ही दृक्कर्मसंस्कार करना चाहिये।

हमारे वृद्धजन अविवेकी नहीं थे जो अभी कुछ समय पूर्व तक सूर्यसिद्धान्तीय पञ्चाङ्गों का प्रयोग करते थे और ना ही आधुनिक पञ्चाङ्गकर्ता इतने मनोनिग्रही हैं कि उनके द्वारा सूर्यसिद्धान्त गणना को भ्रमजाल कहा जाना स्वीकार किया जा सके।

इसी बीच जब जयपुर से प्रकाशित एकमात्र सौर पञ्चाङ्ग भी दृग्गणित से ही प्रकाशित होने लगा तब से हृदय में एक टीस बनी हुई थी कि कैसे इस अज्ञान तिमिर का शमन हो। कुछ समय पूर्व ज्ञात हुआ की दरभङ्गा निवासी वेद-वेदाङ्गों के पारगामी विद्वान् परमतपस्वी आचार्य श्री विनय झा जी ने शाश्वतकालीन सौरपक्षीय गणना पर अत्यधिक अनुसंधान किया है, तथा उनकी गणना से काशी, दरभङ्गा आदि अनेक स्थानों से पञ्चाङ्ग प्रकाशित होते हैं। परन्तु एकान्तिक साधनानिरत आचार्यश्री से इस कार्य हेतु निवेदन कैसे किया जावे यह एक समस्या प्रकट हुई। ऐसे में देव शास्त्रों में श्रद्धावान् श्रीमुदित मित्तल से सम्पर्क हुआ जो आचार्य श्रीविनय झा जी के पूर्व से ही कृपापात्र रहे हैं। उनके द्वारा जब आचार्यश्री को यह प्रसङ्ग निवेदित किया तो कृपावशात् उन्होंने अखिल भारतीय विद्वत्परिषद, काशी के माध्यम से जयपुर के अक्षांशों पर पञ्चाङ्ग हेतु सौरपक्षीय सूक्ष्मगणितसाधन किया। इस कार्य में अखिल भारतीय विद्वत्परिषद, काशी के महासचिव, सकलशास्त्रविशारद, ज्योतिष के गुह्यतत्त्ववेत्ता आचार्य श्रीकामेश्वर उपाध्याय जी की प्रारम्भ से ही प्रेरणा व निरन्तर निर्देशन रहा। उन्होंने पञ्चाङ्ग के धर्मशास्त्रीय-ज्योतिषीय लेखों में इसकी शास्त्रीय प्रामाणिकता सर्वत्र पुष्ट की है।

आचार्य श्री विनय झा जी द्वारा प्राप्त सेमीकम्पोज फाइल मिलने पर, पण्डित श्री गोविन्दचन्द्र द्विवेदी जी के निरन्तर सहयोग से अत्यन्त अल्पकाल में श्री साकेत झा व श्री मुदित मित्तल ने पञ्चाङ्ग को जिस स्वरुप में प्रस्तुत किया है वैसा परिश्रम बिना धर्मनिष्ठा के सम्भव ही नहीं है क्योंकि अनेक बार ऐसी स्थितियाँ आईं कि लगने लगा था कि यह कार्य तो सम्भव ही नहीं हो पायेगा। परन्तु दोनों उत्साही युवाओं ने जिस प्रकार का अथक परिश्रम कर इस महनीय कार्य को मूर्त्त स्वरुप प्रदान किया उसके लिए श्रीनिम्बार्क परिषद् श्रीसर्वेश्वर प्रभु से इनके सर्वविध अभ्युदय की मङ्गलकामना करती है। पण्डित श्री गोविन्दचन्द्र द्विवेदी के हम आभारी हैं जिन्होंने समय कुसमय का ध्यान दिए बिना अपना सर्वविध सहयोग प्रदान किया। परिषद् अत्यन्त विनयावत हो आचार्य श्री विनय झा जी, आचार्य श्री कामेश्वर जी उपाध्याय के चरणों में यही प्रार्थना करती है कि वे सदैव ही इस कार्य में अपना आशीर्वाद निर्बाध प्रदान करते रहें।

पञ्चाङ्ग की गणना भी प्राप्त हो गई, उसका कलेवर भी निर्मित हो गया परन्तु उसके व्रतपर्वोत्सवों-मुहूर्त्तादि का निर्धारण हुए बिना पञ्चाङ्ग का क्या अर्थ? यह एक विकट चुनौती थी। जिसका एकमात्र समाधान दिखाई दिया निगमागम-धर्मशास्त्रवेत्ता कर्मकाण्डविशारद श्रीसर्वेश्वर चरणानुरागी आचार्य श्री मोहन लाल शर्मा जी की शरण में। पञ्चाङ्ग में मुहूर्त्तादि का शोधन अत्यन्त ही श्रमसाध्य प्रक्रिया है तदोपरि उसका परीक्षण उतना ही क्लिष्टकारी है। परन्तु आचार्य श्री मोहन लाल शर्मा जी ने इस कार्य को स्वयं का निजी कार्य मानकर केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर के संस्कृति संरक्षण में सदा संलग्न कर्मयोगी निदेशक प्रो. अर्कनाथ चौधरी जी तथा ज्योतिष के अत्यन्त वरिष्ठ विद्वान् जिनकी जिह्वा पर शास्त्र निवास करते हैं, उन सूक्ष्मदृष्टा दैवज्ञ पण्डित श्री सतीशचन्द्र शास्त्री जी से विचार-विमर्श कर इसकी कार्ययोजना निर्धारित की। इन विद्वज्जनों के निर्देशन से श्रीनिम्बार्क परिषद् तथा केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर के संयुक्त तत्वावधान में व्रतपर्वोत्सवों-मुहूर्त्तादि के निर्धारण हेतु कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें विश्वविद्यालय के विद्यासंवर्धन के उपक्रमों में सदैव तत्पर रहने वाले ज्योतिष विभागाध्यक्ष प्रो. श्रीश्यामदेव मिश्र जी के सुयोग्य नेतृत्व में ज्योतिष विभाग के सहायक आचार्य/वरिष्ठ अध्यापक /शोध अध्येता श्री विजेन्द्र शर्मा जी, श्रीरामेश्वर दयाल शर्मा जी, श्री नीरज त्रिवेदी जी, श्री भोजराज शर्मा जी, श्री अमित तिवारी जी ने इस गुरुत्तर कार्य को श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा मानकर किया वह वन्दनीय है। वरिष्ठ विद्वज्जन प्रो. अर्कनाथ जी चौधरी, पण्डित श्री सतीशचन्द्र शास्त्री जी, आचार्य श्री मोहन लाल शर्मा जी, प्रो. श्यामदेव मिश्र जी ने निरन्तर परिक्षण/सम्पादन कर इन मुहूर्त्तों का प्रमाणिकीकरण किया। श्रीनिम्बार्क परिषद् इन सभी महानुभावों के इस अवदान की सदा ऋणी रहेगी। तथा इस पञ्चाङ्ग के लिए निरन्तर उनका आशीर्वाद प्राप्त होगा यह दृढ विश्वास है।

समस्त विद्वानों तथा धर्मप्राण महानुभावों के सम्मुख यह **"श्रीसर्वेश्वर-जयादित्य पञ्चाङ्ग"** प्रस्तुत करते हुए निवेदन है कि इस प्रथम प्रयास को अपना आशीर्वाद प्रदान करें। धर्मानुरागी जन धर्मफल की सिद्धि हेतु धर्मशास्त्र अनुमोदित इस पञ्चाङ्ग के अनुसार व्रतपर्वोत्सवों का पालन करें। विद्वज्जन इस पञ्चाङ्ग का साङ्गोपाङ्ग परीक्षण कर इसकी त्रुटियों में सुधार करवायें तथा कैसे इसके स्वरुप में परिवर्धन हो वैसी आज्ञा देवें। इस पञ्चाङ्ग में जो कुछ भी श्रेष्ठ है वह सब श्रीसर्वेश्वर प्रभु के कृपाप्रसाद स्वरुप विद्वानों का अवदान है तथा प्रमादवश जो कुछ भी त्रुटि दिखाई दे वह सब श्रीनिम्बार्क परिषद् की है जिनका परिमार्जन आप सभी के सहयोग एवं श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा से ही सम्भव हो सकेगा। श्रीसर्वेश्वर प्रभु हम सभी पर सदा कृपा रखें !

--श्रीनिम्बार्क परिषद्

सूर्यसिद्धान्त की सार्वकालिक ग्राह्यता

आचार्य विनय झा (त्रिस्कन्ध ज्योतिर्विद्, सौरपक्षीय गणितकर्त्ता)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

विक्रमादित्य के नवरत्न वराहमिहिर की पञ्चसिद्धान्तिका–१/३[१] में सूर्यसिद्धान्त को **"सौर"** सिद्धान्त की संज्ञा दी गयी तथा पञ्चसिद्धान्तिका–१/४[२] में इसे **"सावित्र"** सिद्धान्त कहा गया। अतः वराहमिहिर के अनुसार गायत्री मन्त्र के वैदिक देवता सविता ही सूर्यसिद्धान्त के प्रतिपादक हैं, तथा उनके काल में जितने सिद्धान्त उपलब्ध थे उनमें सूर्यसिद्धान्त को ही सर्वाधिक स्पष्ट उन्होंने कहा।

पञ्चसिद्धान्तिका–१/२[३] में वराहमिहिर ने लिखा कि पूर्वाचार्यों के मतानुसार बीज के रहस्य को वे स्पष्ट करेंगे। इस प्रकरण का नाम ही करणावतार है, जिसका अर्थ है सिद्धान्तग्रन्थ पर आधारित व्यावहारिक गणना को सुगम बनाने वाली करणप्रक्रिया। परन्तु उपलब्ध पञ्चसिद्धान्तिका में करणप्रक्रिया स्पष्ट नहीं है, सम्पूर्ण मूल ग्रन्थ बचाया नहीं जा सका। भारत के विभिन्न प्रान्तों में जो सूर्यसिद्धान्तीय करणग्रन्थ और उनसे बनी पञ्चाङ्गोपयोगी मध्ययुगीन सारिणियाँ उपलब्ध हो सकीं उनमें जिस सिद्धान्त तथा करणप्रक्रिया का अनुसरण किया गया उसी के अनुसार सम्पूर्ण कल्प हेतु सूर्यसिद्धान्तीय सॉफ्टवेयर २००० ई॰ में बनाया गया जिसे प्रकाशनार्थ स्वरूप २००४ ई॰ के आरम्भ में दिया गया।

मकरन्दीय करणप्रक्रिया भारत में सर्वाधिक लोकप्रिय रही है। शाके १४०० हेतु काशी में बनी मकरन्दसारिणी में इसे **"श्रीसूर्यसिद्धान्तमतेन"** कहा गया जो सत्य है। केवल मङ्गल का बीज उसमें छूट गया था जिसे अन्य स्रोतों से लिया गया। बीज का रहस्य आजतक किसी ने प्रकाशित नहीं किया, केवल बीजों के गणितीय मान मध्ययुगीन सारिणियों में हैं। पूर्णाङ्क महायुग–भगणमानों द्वारा ग्रहगणित किया जाता है, तत्पश्चात उसमें बीजसंस्कार करके मध्यमग्रह बनाया जाता है। बर्जेस पहले व्यक्ति थे जिन्होंने अज्ञानतावश सूर्यसिद्धान्त में बीजसंस्कार को नहीं माना। आचार्य रङ्गनाथ के ही काल में सूर्यसिद्धान्त की जो पाण्डुलिपि उपलब्ध थी उसमें "बीजोपनयन–अध्याय" तो था किन्तु बीजप्रक्रिया को किसी ने इस्लामी ग्रहगणित के तुल्य बनाने की चेष्टा में भ्रष्ट कर डाला और उस प्रयास में असफल होने पर अधूरा ही छोड़ दिया। बर्जेस को पता नहीं था कि सूर्यसिद्धान्त की सैकड़ों सारिणियाँ और करणप्रक्रियायें उपलब्ध रहीं हैं, जिनकी सहायता से बीजोपनयनाध्याय को पुनर्निर्मित किया जा सकता है।

बीज के रहस्य पर ही सूर्यसिद्धान्त और ब्रह्मसिद्धान्त का परस्पर सम्बन्ध स्थापित होता है। ब्रह्माजी की परमायु का गणित ब्रह्मसिद्धान्त है, उसी का कल्पगणित सूर्यसिद्धान्त कहलाता है। ब्रह्मसिद्धान्त केवल सृष्टि के आरम्भ में प्रकट होता है। सूर्यसिद्धान्त प्रत्येक महायुग में प्रकट होता है — सतयुग के अन्त में। सतयुग में फलकामी विद्याओं की आवश्यकता नहीं पड़ती, और सतयुग के पश्चात सम्पूर्ण सूर्यसिद्धान्त को ग्रहण करने की क्षमता किसी में नहीं रहती, अतः सतयुग के अन्त में सूर्यसिद्धान्त प्रकट होता है शेष तीनों युगों के लिये। कलियुग में समस्त वेद–वेदाङ्गों सहित सूर्यसिद्धान्त की भी अवमानना होने लगती है। धर्म के एक पाद को कलियुग में जो लोग थामे रहते है उनके लिये सूर्यसिद्धान्त है।

अन्य सारे आर्ष सिद्धान्त सूर्यसिद्धान्त के ही विभिन्न कालखण्डों में प्रकट तात्कालिक तन्त्रग्रन्थ तथा करणग्रन्थ हैं। उपलब्ध सूर्यसिद्धान्त भी सिद्धान्त के साथ–साथ एक तन्त्रग्रन्थ भी है, क्योंकि यह पिछले सतयुग के अन्त की ग्रहस्थिति से गणना का निर्देश देता है। परन्तु उस समय के बीजसंस्कार का अध्याय किसी ने मध्ययुग में भ्रष्ट कर दिया। किसी युगारम्भ से गणना की प्रक्रिया को तन्त्रप्रक्रिया कहते हैं, अन्य किसी काल के बीज द्वारा जो प्रक्रिया हो उसे करण कहते हैं। बिना कम्प्यूटर के सीधे सिद्धान्तग्रन्थ द्वारा कोई मानव पञ्चाङ्ग नहीं बना सकता। कम्प्यूटर उपलब्ध हो तो करण वा तन्त्र की आवश्यकता नहीं, सीधे सिद्धान्त द्वारा गणना कर सकते हैं। परन्तु कम्प्यूटर में भी यदि करणप्रक्रिया को अपनाया जाय तो गति बढ़ जाती है।

मन्दफल और शीघ्रफल की दोषपूर्ण व्याख्यायें बर्जेस ने दीं, क्योंकि उनको मेरुकेन्द्रित सौरगणित का ज्ञान नहीं था। सही गणित मकरन्द जैसी प्राचीन सारिणियों में है, जिसपर बर्जेस ने ध्यान नहीं दिया। परन्तु उन सारिणियों में केवल परिणाम हैं, सूत्र नहीं। सूत्र सूर्यसिद्धान्त ग्रन्थ में है जिसकी गणितीय व्याख्या आजतक किसी गणितज्ञ ने नहीं लिखी है। सूर्यसिद्धान्त की गणितीय व्याख्या मुझे डॉ. लक्ष्मण झा (एल.एन.मिथिला विश्वविद्यालय के अवैतनिक पूर्व कुलपति बालब्रह्मचारी साधु) की कृपा से प्राप्त हुई।

करणप्रक्रिया का अर्थ यह है कि सिद्धान्तग्रन्थ द्वारा पहले किसी पास वाले व्यतीत समय तक का मध्यम ग्रहगणित बनाकर रख लें और फिर उस समय से वाञ्छित समय तक की गणना करके जोड़ लें। मकरन्द सारिणी शाके १४०० अथवा १४७८ ईस्वी हेतु बनी थी, अर्थात् उस समय तक के ग्रहस्पष्ट के बाद की ही गणना हर वर्ष करनी पड़ती। परन्तु अन्य करणग्रन्थकारों की तरह मकरन्द में भी ऐसी करणप्रक्रिया का अनुसरण किया गया ताकि कुछ दशकों वा एकाध शताब्दी के पश्चात करणग्रन्थ पुनः बनाना पड़े। दासता के कारण सैद्धान्तिक करणग्रन्थों का नवीनीकरण शाके १४०० के पश्चात नहीं हो सका।

पराशरी होरा में ग्रहों को देवता कहा गया जो जीवों को कर्मफल देने के लिये अवतरित हुए। परन्तु दृक्पक्षवादियों के अनुसार आकाशीय भौतिकपिण्ड ही कर्मफल देते हैं और पूजन द्वारा शान्त होते हैं ! इससे बेहतर आधुनिक वैज्ञानिक हैं, जो भौतिक पिण्डों में दैवी शक्ति नहीं मानते। ज्योतिष के ग्रह देवता अदृश्य हैं व भुवर्लोक में निवास करते हैं। बाह्य चक्षु से जो दिखते हैं वे ऐन्द्रिक विषय हैं, देवता नहीं। ज्योतिष का प्रमाण फलादेश की जाँच है, न कि ऐन्द्रिक नक्षत्रसूचन। भौतिकवादियों को देवता में भी तभी विश्वास होगा जब परखनली में डालकर जाँच न कर लें और देवता के भार, चुम्बकत्व, आदि भौतिक लक्षणों का सत्यापन न कर लें। भौतिक पदार्थों में भौतिक लक्षण होते हैं तथा अभौतिक तत्वों में अभौतिक लक्षण।

[१] *पौलिश-रोमक-वशिष्ठ-सौर-पैतामहास्तु पञ्च सिद्धान्ताः।*

[२] *पौलिशतिथिः स्फुटो अस्तु तस्यासन्नस्तु रोमकप्रोक्तः। स्पष्टतरः सावित्रः परिशेषौ दूरविभ्रष्टौ।।*

[३] *पूर्वाचार्यमतेभ्यो यद् यच्छ्रेष्ठं लघु स्फुटं बीजम्। तत्तदिहाविकलमहं रहस्यमभ्युद्यतो वक्तुम्।।*

शुभाशीर्वाद

महामहोपाध्याय देवर्षि कलानाथ शास्त्री (राष्ट्रपति सम्मानित)
प्रधान सम्पादक– 'भारती' संस्कृत पत्रिका
सदस्य- संस्कृत आयोग, भारत सरकार
भूतपूर्व अध्यक्ष– राजस्थान संस्कृत अकादमी तथा
आधुनिक संस्कृत पीठ, ज.रा.रा.सं.विश्वविद्यालय
भूतपूर्व निदेशक– संस्कृत शिक्षा एवं भाषा विभाग, राज० सरकार

C/8, पृथ्वीराज रोड,
सी स्कीम, जयपुर,
पिनकोड- 302001,
0141-2376008

शुभाशंसा

भारतीय ज्ञान परम्परा में काल गणना, समाज के शुभाशुभ निर्धारण एवं मार्गदर्शन, मुहूर्त्त, पर्व, उत्सव आदि के निर्णय हेतु ज्योतिष और धर्मशास्त्र की नितान्त आवश्यकता सर्वविदित है।

इसी संदर्भ को दृष्टिगत रखते हुए भारतवर्ष में अनेक स्थानों से पञ्चाङ्ग प्रकाशित होते आ रहे हैं जिसमें सिद्धान्तभेद के कारण तिथि-पर्व इत्यादि में कुछ विसंगतियाँ देखने को मिलती हैं, जिसके निराकरण का शास्त्रसम्मत सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रयास आचार्य श्री विनय झा जैसे ज्योतिष के प्रख्यात विद्वान ने सिद्धान्तज्योतिष के एकमात्र प्राचीन आर्ष ग्रन्थ सूर्यसिद्धान्त की गणित पद्धति के आधार पर पञ्चाङ्ग गणित साधन किया है।

इसी गणना को ग्रहण करके श्रीनिम्बार्क परिषद्, जयपुर द्वारा केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर के निदेशक प्रो. अर्कनाथ चौधरी जी, एवं ज्योतिष विभाग के सम्मानित आचार्यों एवं अखिल भारतीय विद्वत्परिषद, काशी के महासचिव आचार्य डॉ. कामेश्वर उपाध्याय जी के विशेष सहयोग से एवं अनेक गणमान्य आचार्यों के मार्गदर्शन में, सम्वत् २०७८ हेतु जयपुर से **"श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्गम्"** प्रकाशित होने जा रहा है।

जयपुर की समृद्ध परम्परा देश देशांतर के विद्वानों का सम्मान करती रही है, ऐसे में राष्ट्रीय विद्वानों के सारस्वत सहयोग से प्रकाशित हो रहे इस पञ्चाङ्ग हेतु मैं सभी सहयोगी विद्वानों, आचार्यों का अभिनन्दन करते हुए शुभकामना तथा साधुवाद प्रेषित करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि सभी पञ्चाङ्गकर्ता ऋषियों के वचनों का अवलम्ब लेकर धर्मशात्र की मर्यादानुसार ही पञ्चाङ्ग निर्माण करने हेतु एकमत होंगे।

दिनांक-
महाशिवरात्रि, संवत् २०७७
११/०३/२०२१

देवर्षि कलानाथ शास्त्री
जयपुर (राज०)

महामहोपाध्याय आचार्य दयानन्द भार्गव (राष्ट्रपति सम्मानित)
भारत सरकार द्वारा राष्ट्रपति सम्मान से पुरस्कृत।
राजस्थान सरकार द्वारा शिखर सम्मान से सम्मानित।
दिल्ली विश्वविद्यालय, जयनारायण वि.वि. जोधपुर, एवं
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं आदि में विभागाध्यक्ष।
केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, जम्मू तथा इलाहवाद में प्राचार्य आदि पदों से सेवा
निवृत्त। आई.सी.पी.आर. दिल्ली में वरिष्ठ रिसर्च फैलो के रूप में शोध-निरत।
म.म.पं. मधुसूदन ओझा वेदविज्ञानपीठ के पूर्वाध्यक्ष।

ओ.के.प्लस वीनस,
फ्लैट नं. ए-१००५,
महल रोड, जगतपुरा,
जयपुर, पिन.-३०२०२५,
dayanandbhargava.com

शुभाशंसा

श्वेताश्वतरोपनिषद् में सुख-दुःख के अनेक कारणों में से काल को भी एक माना है। अथर्ववेद में काल पर दो अत्यन्त महनीय सूक्त हैं। दिक् और काल ही एक को अनेक बनाने में सहायक होते हैं। भारत में काल के सूक्ष्म गणित के लिए अनेकानेक पञ्चांग सदा से प्रकाशित होते रहे और उनके आधार पर भारतीय अपना दैनन्दिन कार्यक्रम बनाते हैं। आज दैनिक व्यवहार में ईस्वीय सन्, मास तथा दिनाङ्क का प्रयोग बढ़ गया है तथापि जैसा वैज्ञानिक आधार भारतीय तिथि का है, वैसा अंग्रेजी दिनाङ्क का नहीं है।

इस पृष्ठभूमि में केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर के निदेशक प्रोफेसर अर्कनाथ चौधरी की सर्वतोमुखी देख-रेख में अनेकों बहुश्रुत विद्वानों द्वारा एवं अखिल भारतीय विद्वत्परिषद, काशी के सहयोग से सूर्यसिद्धान्तीय **"श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्"** जयपुर की श्रीनिम्बार्क परिषद् द्वारा प्रकाशित किया जा रहा है। प्रोफेसर अर्कनाथ चौधरी का इस पञ्चांग के साथ जुड़ना ही इसकी प्रामाणिकता सिद्ध करता है। अतः उस विषय में मुझे अधिक न कहकर केवल यही शुभाशंसा करनी है कि यह पञ्चांग विश्व, राष्ट्र, समाज तथा नागरिकों के लिए मङ्गल का मार्ग प्रशस्त करने वाला बने। स्वस्ति।

दिनांक-
फाल्गुन शुक्ल द्वितीया, संवत् २०७७
१५/०३/२०२१

डॉ. दयानन्द भार्गव
जयपुर (राज०)

शुभाशंसा

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि श्रीनिम्बार्क परिषद्, जयपुर द्वारा **"श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांग",** जो कि जयपुर शहर के अक्षांश रेखांश पर आधारित है, तथा जिसकी समस्त गणित प्रक्रिया सूर्यसिद्धान्तीय पक्ष से की गयी है, का नवीन प्रकाशन किया जा रहा है।

अब तक सूर्यसिद्धान्तीय प्रक्रिया से भारतवर्ष में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से "विश्व पञ्चांगम्" एवं कुछ ही अन्य पञ्चांग प्रकाशित हो रहे हैं, इसी श्रृंखला की कड़ी के रूप में केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा सम्पादित यह नवीन पञ्चांग जयपुर से प्रकाशित हो रहा है। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर के विद्वान पदाधिकारी इस पञ्चांग के महत्तर सम्पादन कार्य के लिए धन्यवाद के पात्र हैं, एवं जो भी विशिष्ट विद्वान इस पावन यज्ञ में अपना सहयोग एवं ज्ञानाहुति दे रहे हैं वे सभी प्रणम्य हैं।

मैं आशा करता हूँ कि यह पञ्चांग कि यह **"श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांग"** इसी शास्त्रनिष्ठा के साथ निरन्तर धर्मप्रेमियों के मन को आह्लादित करता रहेगा तथा भारत की धर्मप्राण जनता के लिए, व्रतोत्सव एवं अन्य धार्मिक कार्यों का परम्परा एवं शास्त्रसिद्ध निर्णय कर उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रेषित होकर जयपुर की जनता का मार्गदर्शन करता रहेगा।

ऐसी मेरी मंगलकामना है। शुभम्

ओमप्रकाश शर्मा
ज्योतिषाचार्य,
पूर्व अधीक्षक, ज्योतिष यन्त्रालय,
जन्तर-मन्तर, जयपुर

चैत्र कृष्ण त्रयोदशी
विक्रम संवत् २०७७

अतीव हर्ष का विषय है कि श्रीनिम्बार्क परिषद्, जयपुर संवत् २०७८ से जयपुर व राजस्थान का एकमात्र सूर्यसिद्धान्तीय पञ्चांग **"श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांग"** प्रकाशित करने जा रही है। ज्योतिषशास्त्र की प्राचीन परम्परा के संरक्षण एवं विद्या के संवर्द्धन हेतु यह प्रयास सराहनीय है। 'परोक्षप्रिया वै देवाः' इत्यादि वचनानुसार ऋषियों का ज्ञान ऐन्द्रिक समझ से परे होता है। जो समझ से परे है उसे 'परा' कहते हैं। और उस 'परा' में भी जो 'परम्' है उसे 'परम्परा' कहते हैं। अतः वेद-शास्त्रों में श्रद्धा रख सनातन 'परम्परा' की रक्षा करनी चाहिए।

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर के अनुभवी विद्वान आचार्यों ने इस पञ्चांग का श्रमसाध्य सम्पादन कर पञ्चांग की प्रामाणिकता सिद्ध एवं पुष्ट की है, अतः संस्कृति संरक्षण एवं सर्वजन हित हेतु इस महनीय कार्य का सफल निष्पादन करने वाले विश्वविद्यालय के निदेशक एवं सभी सम्पादक गण आचार्यों का मैं अभिनन्दन करता हूँ।

इस पञ्चाङ्ग से सम्बद्ध सभी विद्वान आचार्यों को मैं मेरी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ, व आशा करता हूँ कि विद्वज्जन इस शास्त्रसम्मत पञ्चाङ्ग को समादृत कर धार्मिक कर्तव्यों एवं पुरुषार्थों की सिद्धि करेंगे। स्वस्ति।

प्रो. सुरेन्द्र कुमार शर्मा
पूर्व निदेशक संस्कृत शिक्षा,
राजस्थान सरकार

चैत्र कृष्ण पञ्चमी
विक्रम संवत् २०७७

शास्त्रानुसार व्रतोपवासादि में सूर्यसिद्धान्तपक्षीय पञ्चाङ्गों की ग्राह्यता

पण्डित गङ्गाधर पाठक 'वेदाद्याचार्य' (मुख्याचार्य- श्रीरामजन्मभूमिशिलापूजन, अयोध्या)

साङ्गोपाङ्गाय वेदाय ज्योतिषां ज्योतिषे नमः ।
सूर्याय सूर्यसिद्धान्तज्योतिर्विद्भ्यो नमो नमः ।।

व्रतोत्सवादि सम्पादनार्थ एवं यज्ञोपनयनादि धार्मिककृत्यों के लिये सम्यक् कालपरिज्ञानार्थ तिथि-वार-नक्षत्र-योग-करणात्मक विशुद्ध **आर्षपञ्चाङ्ग** की आवश्यकता होती है। परन्तु विविध भारतीय पञ्चाङ्गों में भी व्रतोपवासादि के वैमत्य से प्रायः सर्वत्र कोलाहलश्रवण होता रहता है, एतदर्थ किञ्चिच्चिन्तन अपेक्षित है।

सम्प्रति कई प्रकार के पञ्चाङ्ग उपलब्ध होते हैं- **सूर्यसिद्धान्तपक्षीय, आर्यसिद्धान्तपक्षीय (वाक्यविधि), ब्राह्मसिद्धान्तपक्षीय, दृग्गणितपक्षीय** आदि। मकरन्द-ग्रहलाघवादि के भेद से सूर्यसिद्धान्तपक्षीय पञ्चाङ्ग का भी वैविध्य है तथा चित्रा-रैवतादिपक्षीय गणित के भेद से दृक्पञ्चाङ्ग भी कई प्रकार के हैं। कोई सूर्य-चन्द्रान्तरलक्षण से तथा कोई कलालक्षणभेद से तिथियों का द्वैविध्य वर्णन करते हैं।

भारत में ही कुछ पञ्चाङ्ग चैत्रशुक्लप्रतिपत् से, कुछ आषाढ़शुक्लप्रतिपत् से, कुछ श्रावणकृष्णप्रतिपत् से और कुछ कार्तिकशुक्लप्रतिपत् से प्रारम्भ किये जाते हैं। कोई विक्रमसंवत्, कोई शकसंवत् तथा कोई अन्य स्थानीय लौकिकसंवत् का उपयोग करते हैं। कहीं पूर्णिमान्त तो कहीं अमान्तमास ग्रहण किये जाते हैं। सम्प्रदायभेदवाले पञ्चाङ्गों की तो इयत्ता ही नहीं है। परिणामत: भारत के सार्वभौम व्रतोत्सवादि भी दो या तीन विभिन्न दिनों में सम्पादित होते हैं तथा कुछ कृत्य तो पूर्णिमान्त-अमान्तमास के भेद से पक्ष-मासपर्यन्त भी आगे- पीछे हो जाते हैं।

वर्त्तमान में आर्षज्ञानविहीन नवीनों के द्वारा दृक्पञ्चाङ्ग के रूप में एक बड़ी समस्या खड़ी कर दी गई है, जो नाविकपञ्चाङ्ग (Nautical Almanac) पर आधारित है, जहाँ ग्रहण जैसी घटनायें मांसचक्षुर्दृष्ट ही मान्य हैं।

शास्त्रनिष्ठ प्रामाणिक सनातनियों के लिये तो दृक्पञ्चाङ्ग सर्वथा अग्राह्य है। प्रत्येक धार्मिककृत्य के संकल्प में कल्प मन्वन्तर आदि का स्मरण करने के लिये प्राचीन आर्षसिद्धान्तपक्षीय पञ्चाङ्गों की ही उपयोगिता सिद्ध होती है।

दृग्गणितके पक्षपाती विद्वान् तिथ्यादिनिर्णय में इस पद्धति की उपयोगिता सिद्ध करते हैं-
यस्मिन्पक्षे यत्र काले येन दृग्गणितैक्यम् । दृश्यते तेन पक्षेण कुर्यात्तिथ्यादिनिर्णयम् ॥

परन्तु महान् दैवज्ञ ब्रह्मगुप्त तो पैर से भी दृग्गणितके पादमात्र का स्पर्श नहीं करना चाहते-
प्रतिदिवसविसंवादात्तिथिकरणर्क्षदिवसमासानाम् । ग्रहणग्रहयोगादिषु पादं पादेन कः स्पृशेत् ॥

ग्रहलाघवकार ने भी **"सौरार्कोऽपि.."** में इसपर विचार किया है।

स्थूल दृग्गणित का भी जनक भारतीय ज्योतिषशास्त्र ही है। मल्लारि एवं सूर्यसिद्धान्तादि ने भी किञ्चित् कार्यभेद से दृक्पक्ष को ग्रहण किया है। भास्कराचार्य ने-

यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटै: स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम् ।
स्यात्प्रोच्यते तेन नभश्चराणां स्फुटक्रिया दृग्गणितैककृद्या ॥

यद्यपि कतिपयमतेन सूर्यसिद्धान्त का बीजोपनयनाध्याय सूर्यांशोक्तापेक्षया प्रक्षिप्त है, तथापि मयरचित सूर्यसिद्धान्त में इसे अप्रक्षिप्त और यात्रादि में प्रशस्त माना गया है-

कालेन दृक्समो यः स्यात्ततो बीजक्रियोच्यते ।
बीजं विशेषसिद्धान्तरहस्यं परमं स्फुटम् । यात्रापाणिग्रहादीनां कार्याणां शुभसिद्धिदम् ॥

वराहमिहिर ने भी बीजसंस्कार को ग्रहण किया है-
पूर्वाचार्यमतेभ्यो यद्यच्छ्रेष्ठं लघु स्फुटं बीजम् । तत्तदिहाविकलमहरहरस्म्यभ्युद्यतो वक्तुम् ॥

मकरन्दानुसारि पञ्चाङ्गों में भी बीजसंस्कार किया जाता है, जिसपर विचारकों ने नित्य-नैमित्तिक-काम्यकर्मों में तत्तत् सिद्धान्तों के ग्रहण की चर्चा की है । इसका स्पष्टीकरण करते हुए महामहोपाध्याय श्रीसुधाकर द्विवेदी ने ब्रह्मगुप्त के तन्त्रभ्रंश की व्याख्या में कहा है कि जिस तन्त्र में दृग्गणित इष्ट है, वहीं वह आदरणीय है-

"यात्राविवाहोत्सवजातकादौ खेटैः स्फुटैरेव फलस्फुटत्वम्"
इति विषयविषयेण वाक्येन दृग्गणितैक्यकृत्स्फुटक्रिया
यात्राविवाहोत्सरवविशेषविषयेष्वेव ग्राह्या, न तु धर्मशास्त्रोपयोगितिथ्यानयने ।

अर्थात् कदाचित् यात्रा - विवाहोत्सव आदि में ही दृग्गणित की ग्राह्यता हो सकती है, धर्मशास्त्रोपयोगी तिथ्यानयन में नहीं। **इस विवेचन से सर्वविध धर्मकृत्यों में दृग्गणित की ग्राह्यता निरस्त हो गई।**

सिद्धान्ततत्त्वविवेककार ने भी अदृष्टफलसिद्ध्यर्थ सूर्योक्तप्रमाण की ही श्रुतिवद् ग्राह्यता सिद्ध की है-
अदृष्टफलसिद्ध्यर्थं निर्बीजार्कोक्तमेव हि ।
प्रमाणं श्रुतिवद्ग्राह्यं कर्मानुष्ठानतत्परैः ॥

शाकल्य संहिता में भी **"दृक् सिद्धा नेष्यते तिथि:"** से यही कहा है।

कालनिर्णय में भी **"तिथिनक्षत्रयोगानयनेऽबीजसंस्कृतो ग्राह्यः"** से यही बात कही है ।

भास्कराचार्यादि ने दृग्गणित को स्थूल और **पुलस्त्य-वसिष्ठ-गर्गादि** मुनिप्रणीत गणित को सूक्ष्म कहा है-
स्थूलं कृतं भानयनं यदेतज्ज्योतिर्विदां संव्यवहारहेतोः ।
सूक्ष्मं प्रवक्ष्येऽथ मुनिप्रणीतं विवाहयात्रादिफलप्रसिद्धयै ॥

वासनाकार ने भी यही पक्ष ग्रहण किया है-

स्थूलं लोकव्यवहारमात्रम्, यात्राविवाहादावपि सम्यक्फलसिद्ध्यर्थं मुनिप्रणीतं सूक्ष्ममेव ग्राह्यम्।

कथञ्चित् लोकव्यवहारमात्र के लिये ग्रहणास्तोदयादि में आवश्यकतानुसार स्थूल दृक्पक्ष को ग्रहण किया जा सकता है, परन्तु यात्रा-विवाहादि में भी अज्ञातज्ञापक सम्यक् फल की सिद्धि के लिये प्रत्यक्षानुमानागम्य और "अज्ञातज्ञापकं शास्त्रम्" के और अनुसार शास्त्रैकसमधिगम्य मुनिप्रोक्त सिद्धान्तपक्षीय सूक्ष्म गणित को ही ग्रहण करना उत्तम पक्ष है।

नृसिंह दैवज्ञ ने भी- **'भास्कराचार्याणामयमेवाशयः'** से इसी पक्ष को ग्रहण किया है।

तिथिस्वरूपनिर्णय में तो स्पष्ट घोषणा की गई है-

ततो धर्मशास्त्राद्युपयुक्ततिथिसाधनं नक्षत्रयोगकरणज्ञानं चोक्तम् ।

मत्स्यमहापुराण में भगवान् **वेदव्यास** का स्पष्ट उद्घोष है-

नैष शक्य: परिज्ञातुं याथातथ्येन केनचित् ।
गतागतं मनुष्येण ज्योतिषां मांसचक्षुषा ॥

ग्रहों की सूक्ष्म गति मनुष्यों के द्वारा अदृश्य है, एतदर्थ प्रत्यक्षातिरिक्त सभी व्रत-पर्व श्रौत-स्मार्तानुष्ठानार्थ आर्षसिद्धान्त की ही उपयोगिता सिद्ध है। **सनातनधर्मानुयायियों के सभी सिद्धान्त श्रुति-स्मृति-पुराण-तन्त्रागमादिमूलक ही हैं, इसलिये अनार्ष दृग्गणितमात्रदुराग्रही प्रत्यक्षवादियों के द्वारा धर्म-व्रताद्यनुष्ठानों का सूक्ष्म निर्णय असम्भव है।** ऋषिगण तपो-योगजसामर्थ्यातिशय के कारण अतीन्द्रियार्थदर्शी होते थे, यन्त्रादिनिर्माण-प्रयोगकुशल वैज्ञानिक सूक्ष्मज्ञ होते हुए भी ऋतम्भराप्रज्ञायुक्त अदृश्यदर्शी ऋषि नहीं हो सकते।

विष्णुधर्मोत्तर, कालार्क, ज्योति:सिद्धान्तसंग्रह, लल्ल, मुञ्जाल, श्रीनिवासीय धर्मशास्त्रादि में उपर्युक्त आर्ष पक्ष ही सम्मानित है।

स्कन्दमहापुराण के कलिमाहात्म्य में तो सिद्धान्तपक्ष के त्याग का भयावह फल और सिद्धान्तपक्ष के ग्रहण का सुखद फल भी बता दिया गया है-

दृक्सिद्धखेटग्रहसाधितासु कुर्वन्ति केचित्तिथिषु प्रमादात् ।
श्राद्धादिकं तत्पितृशापतस्ते पुण्यक्षयं दुर्गतिमाप्नुवन्ति ॥
तथापि सन्तो बहवोऽत्र धार्मिकाः पुरातनाचारमथाजहन्त: ।
सूर्यांशजोक्तार्जितकाल एव कर्माणि कुर्वन्ति सुखं लभन्ते ॥

भगवान् वेदव्यास पुनः दृढता से सूर्यसिद्धान्तारिक्त सिद्धान्त को अग्राह्य बताते हैं-

सौरोपनिषदेवाद्या कल्पे त्वस्मिन् सनातनी ।
यामादित्यः स्वयं प्राह मयाय परिपृच्छते ॥
कालज्ञानं तु तत्सिद्धं विशुद्धं नान्यदुच्यते ।
तद्विरुद्धं तु यत्सर्वमपरिग्राह्यमेव तत् ॥

जब दृग्गणितवादियों के यहाँ भी चित्रा- रेवत्यादि के भेद से अयनांशभेद होता है तब तदनुसार पञ्चाङ्गीय तिथ्यादिकों में भी भेद का होना स्वाभाविक ही है। ऐसी परिस्थिति में निर्दिष्ट शास्त्रीय आर्षपक्ष का आश्रय ग्रहणकर एक स्थिर पञ्चाङ्गनिर्माण की महती उपयोगिता सिद्ध होती है।

सम्प्रति दक्षिणदेश में भी तिथि-नक्षत्र-मुहूर्त्तादि वैदिक विषयों में आर्षग्रन्थसिद्ध ग्रहस्थिति को ही ग्रहण करने की परम्परा है और ग्रहण तथा जातकर्मादि लौकिक विषयों में दृक्सिद्ध ग्रहों को ग्रहण किया जाता है।

सम्पूर्ण ज्योतिर्मण्डल गतिशील है, कालान्तर में अथवा देशभेदादि से गत्यादिमूलक गणितीय भेद हो सकते हैं; परन्तु कालान्तर या देशभेदादि के भी गणितीय भेद की उपपत्ति मुनिप्रणीत सूक्ष्म ज्योतिषीय सिद्धान्तों में ही बता दी गई है। इसलिये नवीन-प्राचीन का मानापमान अत्यन्त उपहासास्पद है। सम्प्रदायादि के भेद से भी व्रत-पर्वों का भेद दूषण नहीं, अपितु अमुकामुक सम्प्रदायनिष्ठों के लिये सम्मान्य है।

सभी प्राचीन आप्त आचार्यों और 'कुम्भतिथ्यादिनिर्णयः' आदि धर्मशास्त्रपरक ज्योतिषीय निबन्धों में सर्वभूतहृदय धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाभाग आदि ने भी समारोहपूर्वक इसी पक्ष को समुद्घाटित किया है। मौलिक अध्येताओं के लिये भारतीय सूक्ष्म गणितसिद्धान्त सर्वकाल में मान्य रहेंगे।

वर्तमान में अतिशय चिन्ता का विषय यह है कि विविधपक्षीय पञ्चाङ्गनिर्माण के लिये अगणित सॉफ्टवेयर्स उपलब्ध हैं, जिनसे अल्प प्रयास में ही पञ्चाङ्ग तो तैयार हो जाते हैं; परन्तु पञ्चाङ्गों का सम्मान व्रतोपवासादि के मीमांसामूलक धर्मशास्त्रीय सूक्ष्मविचार से ही होता है, जिसकी सम्पूर्ति पारम्परिक शास्त्राध्ययन के अत्यन्ताभाव में प्रायः नहीं हो रही है। अन्यों के लिये भी, विशेषत: ज्योतिषियों के लिये तो सन्ध्या-गायत्र्यादि के माध्यम से ज्योति:शास्त्र के प्रथम प्रवर्त्तक भगवान् श्रीसूर्यनारायण की सम्यक् उपासना अत्यन्त अनिवार्य है। मैं पञ्चाङ्गविभाग के प्रबुद्ध प्रणेतृमण्डल एवं प्रयोक्ताओं से इस कमी को सदा के लिये दूर करने की महती अपेक्षा रखता हूँ और पञ्चाङ्ग किसी सम्प्रदायविशेष में बँधकर अल्पोपयोगी न हो जाय, इसका भी ध्यान रखना आवश्यक है।

श्रीनिम्बार्कपरिषद्, जयपुर, राजस्थान के द्वारा **सूर्यसिद्धान्तपक्षीय श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्गम्** का प्रकाशन शास्त्रवादी सनातनियों के लिये अत्यन्त ही हर्ष का विषय है । सर्वेश्वर भगवान् श्रीराधाकृष्ण की अहैतुकी कृपा से पञ्चाङ्गप्रणेता, पञ्चाङ्गप्रयोक्ता एवं एतत्सिद्धान्तानुसार व्रत पर्वादि श्रौत-स्मार्तधर्मों के अनुष्ठाता के दृश्यादृश्य लोकद्वय मङ्गलमय हों।

शुभमिति दिक्

शुभाशंसन

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि श्रीनिम्बार्क परिषद् के द्वारा प्राचीन परम्परायुक्त ग्रह-गणित की विधि से पञ्चांग बनाने की सदिच्छा प्रकट की गई। इस हेतु सूर्यसिद्धान्तोक्त ग्रहगणित की प्रक्रिया ही आर्ष परम्परानुकूल प्रतीत होती है। शास्त्रोक्त वचन भी इसी प्रकार के प्राप्त होते हैं।

पौलिशकृतः स्फुटोऽसौ तस्यासन्नस्तु रोमकः प्रोक्तः।
स्पष्टतरः सावित्रः परिशेषौ दूरविभ्रष्टौ॥ (पञ्चसिद्धान्तिका, प्रथम अध्यायः)

स्पष्ट है कि सनातन परम्परा में सूर्यसिद्धान्त का स्थान सर्वोच्च रहा है। कालान्तर में करण-ग्रन्थों के प्रभाव के कारण ग्रहलाघव प्रभृति करण-ग्रन्थों के आधार पर पञ्चांग का निर्माण होने लगा। इस नई परम्परा ने सिद्धान्त आधारित पञ्चांगों के निर्माण में न केवल अवरोध उत्पन्न किया अपितु सैद्धान्तिकगणित का विकासक्रम भी अवरुद्ध हो गया।

यद्यपि कमलाकर प्रभृति सूर्यसिद्धान्तैकपक्षपाती विद्वानों के द्वारा सौरपक्षीय गणनाधारित पञ्चांगों के निर्माण का प्रबलवाद उपस्थापित किया गया, किन्तु कुछेक मकरन्द आदि सारणियों को छोड़कर आधुनिक विद्वानों के द्वारा अन्य सौरपक्षीय सारणियों का अवलम्बन नगण्य हो गया। इसमें एक हेतु ग्रहगणना में पाश्चात्य मत का अवलम्बन भी रहा है। इस मत के प्रमुख संवाहकों में वेंकटेश बाबू, केतकर, केरोपन्त छत्रे आदि प्रमुख रहे हैं। ग्रहगणना में इस अत्यधिक मतवैभिन्न्य से विविध मतावलम्बी अनेकों पञ्चांगों का प्रादुर्भाव हुआ जिसने सनातन समाज में संशय की स्थिति उत्पन्न कर दी है।

वर्तमान समय में इस विषम परिस्थिति को देखकर तथा पारम्परिक पक्षीय सौर पञ्चांगों की समाज में न्यूनता का अनुभव करते हुए श्रीनिम्बार्क परिषद् के द्वारा व्रत-पर्वोत्सव संशयोच्छेदक **"श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांग"** राजस्थान की धर्मप्राण जनता को अमूल्य निधि के रूप में देने का स्तुत्य निर्णय किया गया है।

पञ्चांग निर्माण श्रमसाध्य एवं समयसाध्य प्रक्रिया है। पञ्चांग के गणित का निर्माण, व्रत-पर्वादि का निर्णय, विविध मुहूर्त्त एवं अन्य पञ्चांग सम्बन्धी आवश्यक तत्व, ये चार किसी भी पञ्चांग के आवश्यक घटक होते हैं। इन सभी घटकों का निष्पादन परिश्रम एवं अवधान के बिना असम्भव है।

मुझे यह कहते हुए हर्ष एवं गौरव का अनुभव हो रहा है कि इन सभी कार्यों हेतु योग्य एवं कर्मठ विद्वानों का अद्भुत संयोग श्रीनिम्बार्क प्रभु की कृपा से सम्भव हो सका है। इस पञ्चांग के गणितकर्ता एकान्तिक सारस्वत-साधनारत परमतपोनिष्ठ ब्रह्मचारी आचार्य श्री विनय झा सौरपक्षीयगणना एवं वेद-वेदाङ्गादि नानाशास्त्रों के अद्वितीय विद्वान हैं, आपके द्वारा साधित सूर्यसिद्धान्तीय गणित से देश में अनेक पञ्चांग प्रकाशित हो रहे हैं, पञ्चांग गणित हेतु आपने अपना अमूल्य सहयोग दिया एतदर्थ मैं हृदय से आपका आभारी हूँ।

इसी कर्म में काशीस्थ अखिल भारतीय विद्वत्परिषद् के महासचिव, विश्व पञ्चांग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के पूर्व सहसम्पादक, त्रिस्कन्ध ज्योतिष, धर्मशास्त्र, आगम के विलक्षण मर्मज्ञ, आचार्य श्री कामेश्वर उपाध्याय का अविस्मरणीय सहयोग एवं मार्गदर्शन हमें पदे-पदे प्राप्त होता रहा है। एतदर्थ उनका मैं उनका हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

इस पञ्चांग के प्रधान सम्पादक त्रिस्कन्धवेत्ता गुण-गणगरिष्ठ विद्याविनोदी विद्वद्वरेण्य आचार्य श्री सतीशचन्द्र शास्त्री, शास्त्र-चूड़ामणि, के.सं.वि.वि., जयपुर, ज्योतिषशास्त्र एवं पञ्चांग गणित के अत्यन्त वरिष्ठ आधिकारिक विद्वान हैं। आपने प्रधान सम्पादक की भूमिका का सहर्ष दायित्व निर्वहन करते हुए पञ्चांग का शास्त्रनिष्ठ सम्पादन करके हमें अनुगृहीत किया है।

यह पञ्चांग आज आपके सम्मुख इस रूप में प्रस्तुत हो सका है, इसमें अति शुभाशंसनीय भूमिका निभायी पञ्चांग के सम्पादक प्रो. श्यामदेव मिश्र, विभागाध्यक्ष, ज्योतिष विभाग, के.सं.वि.वि., जयपुर परिसर ने, जिनके कुशल नेतृत्व में सम्पादक मण्डल के सदस्य डॉ. विजेन्द्र शर्मा, डॉ. नीरज त्रिवेदी एवं डॉ. रामेश्वर दयाल शर्मा ने यह श्रमसाध्य कार्य संपन्न किया। एतदर्थ सम्पादन कार्य हेतु मैं उक्त विभागीय प्राध्यापकों को हार्दिक शुभाशीष प्रदान करता हूँ।

इसके साथ ही इस पञ्चांग के निर्माण में डॉ. अमित तिवारी, वरिष्ठ अनुष्ठान अध्येता, प्राकृत एवं डॉ. भोजराज शर्मा, अतिथि प्राध्यापक, ज्योतिष ने उल्लेखनीय योगदान दिया है। एतदर्थ उक्त दोनों विद्वानों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ। इस पञ्चांग के तकनीकी संयोजन आदि में महनीय भूमिका निभाकर डॉ. नमिता मित्तल, अतिथि प्राध्यापिका, संगणक विभाग, के.सं.वि.वि., जयपुर परिसर, एवं श्री मुदित मित्तल, अ.भा.विद्वत्परिषद् ने पञ्चांग को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया है, इस हेतु इन दोनों को भी हृदय से आशीर्वाद प्रदान करता हूँ।

पञ्चांग निर्माण रुपी इस सारस्वत क्रतु के आयोजन में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका रही है निगमागम-धर्मशास्त्रवेत्ता परमशाब्दीक आचार्य श्री मोहन लाल शर्मा, शास्त्र-चूड़ामणि, के.सं.वि.वि., जयपुर परिसर, की, आपके अथक परिश्रम एवं कुशल प्रबन्धन का परिणत रूप है यह "श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांग"। एतदर्थ हृदय से आपका आभार व्यक्त करता हुआ सर्वेश्वर से आपके उत्तम स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

अन्त में मैं श्रीनिम्बार्क परिषद् का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने पञ्चांग निर्माण रूप इस पवित्र यज्ञ का संकल्प लिया एवं इसके सम्पादन रूप गुह्यतर कार्य हेतु ज्योतिष-विभाग, जयपुर परिसर में अपना विश्वास प्रकट करके विभाग की यशोवृद्धि हेतु अवसर कल्पित किया।

फाल्गुन पूर्णिमा
विक्रम संवत् २०७७

निदेशक
प्रो. अर्कनाथ चौधरी
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर, जयपुर

प्रधान सम्पादकीय

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

भारतीय संस्कृति वेद पर आधारित है, वेद यज्ञ विज्ञान के विधायक हैं, और यज्ञकाल का दृष्टिबोधन ज्योतिषशास्त्र कराता है, अतः यह वेद का नेत्र कहा गया है।

कालादापः समभवन् कालाद् ब्रह्म तपो दिशः।
कालेनोदेति सूर्यः काले नि विशते पुनः। (अथर्व० १९.५४.१)

काल से जल की, यज्ञादिकर्म की, चान्द्रायण आदि व्रत व तप की, तथा दश दिशाओं की उत्पत्ति हुई है। काल से ही सूर्य का उदय और काल में ही सूर्य अस्त हो जाता है।

अतः विशिष्ट काल ही व्रत-पर्व-तप, श्रौत-स्मार्त्त अनुष्ठानों का निर्धारक होता है। अतः संवत्सरारम्भ में चतुर्दिक पुरुषार्थों की सम्यक् सिद्धि हेतु पञ्चाङ्ग-निर्माण सनातन परम्परा में सदैव किया जाता है। शास्त्रों में ऋषियों द्वारा अपूर्व-अदृष्ट फल की सिद्धि हेतु सूर्यसिद्धान्तीय सूक्ष्म गणित श्रुतिवद् पूज्य कहा गया है।

श्रीनिम्बार्क परिषद्, जयपुर द्वारा सद्यः प्रकाशित **"श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग"** का यह प्रथम पुष्प विद्वज्जनों एवं जनता जनार्दन के कर कमलों में समर्पित करते हुए असीम प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। संवत्सर ही प्रजापति है, **'सम्वत्सर एव प्रजापतिः'** (शतपथ, १।६।३।५)। काल ही सर्वेश्वर और प्रजापति का भी पिता है। **"कालो ह सर्वस्येश्वरो यः पितासीत् प्रजापतेः"**(अथर्व० १९.५३.८)। भगवान् श्रीकृष्ण ने स्वयं को गीता में अक्षय काल **"अहमेवाक्षयः कालः"** कहा है। कालरूपी सर्वेश्वर श्रीकृष्ण के नाम वाला यह पञ्चाङ्ग भगवान् आदित्य की जय का हेतु बन रहा है।

सुदीर्घकाल से मन में एक अभिलाषा घर किए हुए थी कि विशुद्ध सूर्यसिद्धान्त पर आधारित एक पञ्चाङ्ग का प्रकाशन हो। आज श्रीनिम्बार्क परिषद् द्वारा प्रकाशित इस पञ्चाङ्ग के माध्यम से इस चिर आकांक्षा की पूर्तिक्रम में मैं परिषद् के पदाधिकारियों एवं सदस्यों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए धन्यवाद करता हूँ।

जैसा की विद्वज्जनों को विदित है कि भारतीय व्रतोत्सवों की कालादि निर्धारणा सौर मत के आधार पर ही की गई है। वर्तमान में प्रचलित पञ्चाङ्गों में प्रायः दृश्य गणित का ही आश्रय लेकर तदाधार का ही उल्लेख मिलता है, इसके मूल स्रोत के रूप में किस सिद्धान्त का अवलम्बन लिया गया है, प्रायः विदित नहीं हो पाता। यद्यपि इन पञ्चाङ्गों में स्पष्ट ग्रह स्थिति प्रायः समान ही दृष्टिगोचर होती है, तथापि सिद्धान्तों की विभिन्नता में तिथ्यादि मान में असमानता देखी जाती है। इससे जनसामान्य में भ्रान्तियों की उद्भावना स्वाभाविक समझी जा सकती है।

इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर एक सर्वमान्य सिद्धान्त का आश्रय लेकर नवीन पञ्चाङ्ग की यह परिकल्पना है। वर्तमान में सूर्यसिद्धान्त पर आधारित एक पञ्चाङ्ग काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से प्रकाशित हो रहा है, परन्तु राजस्थान में सौर पञ्चाङ्ग का पूर्णतः अभाव है, अतः जयपुर से भी ऐसा सम्भव हो, यही सोचकर विशुद्ध सौर सिद्धान्त को आधार मानकर यह पञ्चाङ्ग तैयार किया गया है। आशा है इससे व्रतोत्सवों सम्बन्धी कालादि विषयक भ्रान्तियों का निर्मूलन सम्भव हो सकेगा। यह प्रथम प्रयास है **"अनृता वै मनुष्याः"** इस शतपथ ब्राह्मण एवं **"गच्छतः स्खलन क्वापि भवेदेव प्रमादतः"** इस आभाणक के प्रकाश में मानवोचित स्वभाववश त्रुटियाँ सम्भव हैं। विद्वज्जनों से निवेदन है कि इस पञ्चाङ्ग में ऐसा कुछ ध्यान में आने पर अपने अमूल्य सुझावों से हमें कृतार्थ करें, जिससे आगामी प्रकाशन में उनका यथोचित समाधान सम्भव हो सके।

प्रस्तुत पञ्चाङ्ग में गणितकर्त्ता के रूप में आचार्य विनय झा, दरभङ्गा का अमूल्य सहयोग रहा। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर के विद्वान निदेशक माननीय प्रोफेसर अर्कनाथ चौधरी जी का मार्गदर्शन इस प्रकाशन का परम संबल रहा। विश्वविद्यालय के ही ज्योतिष विभागाध्यक्ष, डॉ. श्यामदेव मिश्र एवं उनके सहकर्मी सभी सहाचार्य तथा सहायकाचार्य महानुभावों का सम्पादन कार्य में प्राप्त सौहार्दपूर्ण सहयोग, स्वल्पकालिक परिश्रम व प्रयास से इस पञ्चाङ्ग को मूर्त्तरूप प्रदान करने में परम सहयोगी रहे पं. मोहनलाल शर्मा, व्याकरणाचार्य तथा तकनीकी कार्य में प्रत्यक्ष व परोक्ष सहयोगी रहे इन सभी महानुभावों के प्रति में प्रणति पुरस्सर हार्दिक कार्त्तज्ञ एवं धन्यवाद ज्ञापित करता हुआ विश्वास व्यक्त करता हूँ कि भविष्य में भी आप सज्जनों का सौहार्दपूर्ण सहयोग इसी रूप में मिलता रहेगा। इसी के साथ-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग भवेत्।

इस सर्वजन मङ्गलकामना के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूँ।

॥ इति शम् ॥

पं. सतीशचन्द्र शास्त्री
प्रधान संपादक
मुक्तस्वाध्याय पीठम्, ज्योतिष विभाग,
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर

फाल्गुन शुक्ल एकादशी
विक्रम संवत् २०७७

सम्पादकीय

सनातन-समाज का मूल उद्देश्य लौकिक और पारलौकिक अभ्युन्नति के साथ-साथ आत्यन्तिक दु:ख से निवृत्ति ही है। एतदर्थ इस प्राचीनतम और गौरवशाली सभ्यता के मूल में धर्म ही है। वेद, ब्राह्मण-आरण्यक-उपनिषद् आदि वैदिक साहित्य, वेदांग, पुराण, रामायण-महाभारत-स्मृतिग्रन्थ इत्यादि मूल-स्तम्भों पर दृढता से सुप्रतिष्ठित यह अतिविशिष्ट धर्ममूलक सामाजिक-प्रासाद, नित्य-नैमित्तिक-काम्ययागादिकरूप विविध जगती-जंघा-मण्डपादियों से सुव्यवस्थित, विवाहादि विविध संस्काररूप चितिओं से सुघटित तथा व्रत-पर्व-उत्सवरूप आमलसार-कलश-तोरणादियों से विभूषित है। फलत: उक्त सभी सनातन-समाज के अविच्छिन्न स्वभाव-रूप में अभिहित हैं।

इन संस्कारों, यागादिकों एवं व्रत-पर्व-उत्सवों के शास्त्रोक्त अभीष्टतम-फलप्राप्ति के मूल में 'तत्क्रियायोग्यकाल' ही है। काल-ज्ञान के अभाव में कृत-कर्म का अभीप्सित फल मिलना असम्भव है, कहा है –

अतीतानागते काले दानहोमजपादिकम् ।
ऊषरे वापितं बीजं तद्वद्भवति निष्फलम् ।। (ज्योतिर्निबन्ध २/१२)

चूंकि अनुकूल समय में किया गया कार्य ही सफलता की कुंजी है जिसका निर्धारण ज्योतिषशास्त्र के ज्ञान के बिना असम्भव है। जैसा कि स्वयं देवर्षि नारद ने कहा है –

विनैतदखिलं श्रौतस्मार्तकर्म न सिद्ध्यति ।
तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा रचितं पुरा ।। (नारदसंहिता १/४)

इसलिए काल का निर्धारण आरम्भ से ही सनातन-समाज का मुख्य चरित्र रहा है। वैदिक ऋषि सुपर्ण-चिति आदि के लेखन में तिथि, नक्षत्र, दिन-रात्रि-प्रमाण, मास, अधिमास, पक्ष, अयन सम्वत्सर आदि काल-बोधक-तत्त्वों का सांकेतिक-प्रयोग किया करता था। सम्पूर्ण वैदिक-वाङ्मय ज्योतिषीय सन्दर्भों से भरा पड़ा है। ऋग्वेद का यह मन्त्र वर्ष के १२ महीनों, ३६० दिनों, अधिमास आदि का उल्लेख करता है –

द्वादश प्रधयश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत ।
यस्मिन् साको त्रिशता न शङ्कवोऽर्पिता: षष्टिर्न चलाचलास: ।। (ऋक् १/१६४/४८)

१२ चान्द्रमासों और अधिमास का नामोल्लेख तैत्तिरीय संहिता में इस प्रकार है –

मधुश्च माधवश्च शुक्रश्च शुचिश्च नभश्च नभस्यश्चेषश्चोर्जश्च सहश्च ।
सहस्यश्च तपश्च तपस्यश्चोपयाम गृहीतोऽसि सँ॰ सर्वोस्यँ॰ हस्पत्याय त्व ।। (तै.सं. १/४/१४)

कालक्रम से जैसे-जैसे भगवान् सूर्य, पितामह, देवर्षि नारद आदि एवं अत्रि, कश्यप, गर्ग, भृगु, पराशर आदि खगोलज्ञों व ज्योतिष-शास्त्र-प्रवर्तकों के द्वारा ग्रह-गणना के अनेकानेक नियम प्रकाश में लाए गए, वैसे-वैसे उन नियमों, सूत्रों के आधार पर तिथि-नक्षत्र-ग्रहबोधक-चक्रों का निर्माण आरम्भ हुआ जो कि पञ्चाङ्ग का प्रारम्भिक-स्वरूप था। इसके संकेत वेदांग-ज्योतिष में मिलते हैं।

वेदांग-ज्योतिष-वाङ्मय में परिगणित प्रमुख अङ्ग 'ऋक् ज्योतिष' आरम्भ में ही पञ्च-संवत्सरात्मक-युग की बात करता हुआ ज्योतिष के फलपर्यवासायी पक्ष को इंगित करते हुए सामाजिक-कार्यों में इसकी उपयोगिता, महत्ता और प्रासंगिकता को ध्वनित करता है –

पञ्चसंवत्सरमययुगाध्यक्षं प्रजापतिम् । दिनर्त्वयनमासाङ्गं प्रणम्य शिरसा शुचिम् ।।
ज्योतिषामयनं पुण्यं प्रवक्ष्याम्यनुपूर्वश: । सम्मतं ब्राह्मणेन्द्राणां यज्ञकालार्थसिद्धये ।।
(ऋक् ज्योतिष १-२)

ऋक् ज्योतिष में वर्णित नक्षत्र, तिथि, युग आदि की सूत्रात्मक गणनाएं न केवल तत्कालीन समाज में तिथि-नक्षत्रादि की गणना-मुख्यता को अभिव्यक्त करती हैं अपितु इन सूत्रों की गणितीय-गम्भीरता इस बात की ओर भी इशारा करती है कि तत्कालीन विद्वत्समाज में गभीर-खगोलीयज्ञान का अत्यधिक प्रचार था। इन नक्षत्र-तिथ्यादियों के साधन हेतु ऋक् ज्योतिष किसी दिग्दर्शिका के समान थी। और ऐसी अनेकों दिग्दार्शिकाओं के अस्तित्व से इन्कार नहीं किया जा सकता है। 'आर्च-ज्योतिष' सदृश ग्रन्थों ने ही वर्तमान पञ्चाङ्ग के लिए भूमि तैयार की, इस बात में कथमपि संदेह नहीं है।

एक ओर ऋक् ज्योतिष, शास्त्र के तत्कालीन सिद्धान्त-पक्ष से जगत् का परिचय कराता है तो वहीं दूसरी ओर **आथर्वण-ज्योतिष** 'विजय', 'शिव', 'अभिजित्', 'सारभट', 'मैत्र', 'कुतप' आदि मुहूर्त्तों को परिभाषित करते हुए इसके फल-पक्ष की अभिव्यक्ति करता है। 'शुभाशुभक्रियायोग्यकालो मुहूर्त:' वस्तुत: मुहूर्त्त शब्द के इस प्रकार की व्याख्या का उत्स अथर्व-ज्योतिष-सम्बन्धी कारिकाएं हैं। इस प्रकार, वेदांग-ज्योतिष-साहित्य ने ज्योतिष के स्वरूप को अधिक शास्त्रीय व समाजोन्मुखी बनाया।

वर्ष-पर्यन्त घटनीय समाजोपयोगी सभी ज्योतिषीय-सूचनाओं को एकत्रित करने के उपक्रम की परिणति, पञ्चाङ्ग की आरम्भिक-अवस्था कही जा सकती है। 'पञ्चाङ्ग' जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, १. तिथि, २, वार, ३. नक्षत्र, ४. योग और ५. करण इन पांच अंगों (कालविधायक-तत्त्वों) का समूह है, जो कि व्रत, पर्व आदि के निर्णय में सहायक होते हैं -

तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योग: करणमेव च। पञ्चाङ्गमिति आख्यातं व्रतपर्वनिदर्शकम् ।।

श्री सर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग

जब इस पंचांग के निर्माण का विचार बना तभी परामर्शकों के द्वारा यह निर्णय लिया गया कि चूंकि उक्त पंचांग का प्रकाशन 'निम्बार्क-परिषद्' जैसी सनातन-धर्मध्वजा-संवाहक-संस्था के द्वारा किया जाना है इसलिए ग्रह-गणना का आधार भी सनातन-परम्परा-पोषक सूर्य-सिद्धान्त ही होगा। इसलिए 'श्री सर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग' की गणित सूर्यसिद्धान्तीय-गणना को आधार बनाकर की गयी है। वर्तमान में प्रचलित प्रमुख पञ्चाङ्गों में काशी-हिन्दू-विश्वविद्यालय का 'विश्वपञ्चाङ्गम्' भी सूर्य-सिद्धान्तीय-पक्ष का पञ्चाङ्ग है। इस पंचांग को जयपुर के अक्षांश पर बनाया गया है। वर्त्तमान समय में प्रकाशित पंचांगों में जो विवाहादि-मुहूर्त्त, ग्रहण-आदि की जानकारी दी जाती है उन सभी महत्त्वपूर्ण विषयों का इस पंचांग में समावेश किया गया है। किन्तु इसकी विशेषता यह है कि इस पंचांग में, सनातन-समाज में प्रसिद्ध सभी व्रत-पर्व-उत्सव-सम्बन्धी काल-निर्णय और विधि-विधान-विषयक-ज्ञान के अतिरिक्त राजस्थानी-संस्कृति से जुड़े व्रत-पर्व-त्यौहारों का भी विशेष-रूप से उल्लेख किया गया है, जिसके कारण यह पंचांग समाज के लिए अत्युपयोगी हो गया है। इसकी दूसरी विशेषता यह है कि निम्बार्क-सम्प्रदाय की परम्परा में प्रचलित व्रत-पर्वादियों के काल-निर्णय के साथ ही साम्प्रदायिक-विधानों का भी यत्र-तत्र समावेश किया गया है।

प्रस्तुत पञ्चाङ्ग के विषय में यह विशेष-रूप से अवधेय है कि सूर्यसिद्धान्तीय-गणना पर आधारित होने के कारण, इस पंचांग से साधित (सौरपक्षीय) सूर्य आदि ग्रहों की स्थिति में, दृक्पक्षीय-पंचांग-साधित ग्रहों की अपेक्षा कुछ अंशात्मक अंतर आता है। इस सम्बन्ध में यह भी उल्लेखनीय है कि व्रत-पर्वादि के कृत्याकृत्य-निर्धारण में सर्वमान्य ग्रन्थ '**निर्णय-सिन्धु**' के कर्ता व महान् ज्योतिर्विद् '**सिद्धान्त-तत्त्व-विवेक**'कार **आचार्य कमलाकर भट्ट** ने सौरपक्षीय-ग्रह-गणना को ही शुद्ध मानते हुए, व्रत-पर्वादि के निर्णयार्थ व फलादेशार्थ तदाधारित पंचांग के ही आश्रय का प्रबल-समर्थन किया है।

ऐसे में इस पंचांग के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य, दृक्पक्षीय-ग्रह-साधन से इतर, व्रत-पर्व-आदि के वास्तविक-फल की प्राप्ति कराना तथा आर्ष-सम्मत-ग्रह-गणित द्वारा जन्म-कुण्डली के शुद्धफल की प्राप्ति कराना है।

सम्पादक
प्रो. श्यामदेव मिश्र
विभागाध्यक्ष, ज्योतिष
केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर परिसर

फाल्गुनशुक्ल पूर्णिमा
विक्रम संवत् २०७७

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

स ईश्वरो व्यष्टिसमष्टिरूपो ऽव्यक्तस्वरूपः प्रकटस्वरूपः ।
सर्वेश्वरः सर्वगः सर्ववेत्ता समस्तशक्तिः परमेश्वराख्यः ॥

नतोऽस्मि सर्वेश्वरमादिदेवं प्रपन्नसंरक्षणबद्धकक्षम् ।
कारुण्यवात्सल्यदयादिसिन्धुं जगद्गुरुं ब्रह्मशिवादिवन्द्यम् ॥

जयस्व सर्वेश्वर विश्वमूर्त्ते सुरासुरैर्वन्दितपादपीठ ।
त्रैलोक्यमातुर्गुरवे वृषाङ्क भीतः शरण्यं शरणागतोऽस्मि ॥

विश्वरूप जयादित्य जय विष्णो जयाच्युत । जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते ॥

जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल । जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते ॥

नियमेन यदानन्दो जगद्धासयतेऽखिलम् । तमहं नियमानन्दं वन्दे कृष्णं जगद्गुरुम् ॥

साङ्गोपाङ्गाय वेदाय ज्योतिषां ज्योतिषे नमः। सूर्याय सूर्यसिद्धान्तज्योतिर्विद्भ्यो नमो नमः॥

स्वस्ति श्रीः सूर्यसिद्धान्तमतेन समस्तजगदुत्पत्ति स्थिति लय नियमन-ज्ञानाज्ञानबन्धमोक्षकारणस्य स्वाभावतोऽपास्तसमस्तदोषोऽनन्ताचिन्त्य विचित्रयावदात्म-वृत्तिस्वाभाविककल्याणगुणशक्तिवैभवाश्रयो जगज्जन्मादिहेतुरखिलशास्त्रैकवेद्यो मुक्तप्राप्यः परब्रह्मभगवदादिशब्दाभिधेयश्चिदचित्पदार्थभिन्नाभिन्नसंबन्धाश्रयः श्रीपुरुषोत्तमोरमानिवास श्रीमहाविष्णोर्नाभिकमलोद्भवस्य चतुर्मुखब्रह्मणः परमायुः वर्षशतम्। तत्र पूर्वार्धं गतम् । उत्तरार्धे प्रथमवर्षे प्रथममासे प्रथमदिने श्वेतवराहकल्पसंज्ञे प्रथमकल्पे अहि त्रयोदशघटिकाः द्विचत्वारिंशत् पलानि च व्यत्यायन् । कृतत्रेताद्वापरकलियुगैरेकं महायुगं भवति । तैरेकसप्ततिमहायुगैः एकं मन्वन्तरम् । तैश्चतुर्दशभिरेकः कल्पः । तत् ब्रह्मणो दिनम् । तावती रात्रिः । एतादृशैः षष्ट्यधिकशतत्रयदिवसैरेकः ब्रह्मणो वर्षः । वर्तमानब्रह्मणो दिनमध्ये षण्मनवो गताः । इदानीं वर्तमानः सप्तमो वैवस्वतो मनुः । वैवस्वतमन्वन्तरेऽपि एकसप्ततिमहायुगमध्ये सप्तविंशतिमहायुगानि गतानि। अष्टाविंशतिततमेऽपि महायुगे कृतत्रेताद्वापराख्यास्त्रयो युगपादाः गताः । कलियुगेऽपि ५१२२ वर्षाः गताः ॥

महायुगप्रमाणम् – ४३ लक्ष २० सहस्रवर्षाः ।
कृतयुगप्रमाणम् – १७ लक्ष २८ सहस्रवर्षाः । **त्रेतायुगप्रमाणम् –** १२ लक्ष ९६ सहस्रवर्षाः।
द्वापरयुगप्रमाणम् – ८ लक्ष ६४ सहस्रवर्षाः । **कलियुगप्रमाणम् –** ४ लक्ष ३२ सहस्रवर्षाः।

कल्पादितः – १९७२९४९१२२ वत्सराव्यतीताः । **सृष्ट्यादितश्च –** १९५५८८५१२२ ।
श्रीरामरावणयोर्युद्धतो गतवर्षाणि – ८८०१६३ । **श्रीकृष्णावतारात् गतवर्षाणि –** ५२५७ ।
विक्रमराज्यकालासंवत्सराः गताः २०७८ । **शकारम्भतश्च** १९४३ ।

तत्र चैत्रशुक्लप्रतिपत् तिथिमारभ्य गुरुमानेन प्रभवादि षष्ट्यब्दानां मध्ये रूद्रविंशतिकायां
राक्षसनाम संवत्सरारम्भः ।

राक्षस नामक संवत्सर

श्री शुभसंवत् २०७८, शक १९४३, कलियुगाब्दारम्भ ५१२३, १३ अप्रैल २०२१ से 1 अप्रैल २०२२ तक

इस संवत्सर का नाम राक्षस है। राक्षस का अर्थ होता है- शौच और आचार के विपरीत जीवन पद्धति और प्रवृत्ति से युक्त- "राक्षसाब्देऽखिलालोका राक्षसा इव निष्क्रियाः।" राक्षस संवत्सर में अधिकांश आबादी नैतिक एवं वैधानिक मूल्यों के विपरीत आचरण करती है।

इस वर्ष वर्षपति अर्थात् **राजा मंगल** ग्रह है। जिस वर्ष मंगल राजा होता है उस वर्ष पृथ्वी पर कलह की अत्यधिक वृद्धि होती है। प्रशासनिक टकराव बढ़ता है, युद्ध एवं अग्नि के कारण जनधन की हानि होती है। राजाओं में परस्पर युद्ध का वातावरण बनता है। चोरी-डकैती एवं अत्याचार में वृद्धि होती है। सभी प्रकार की दुर्घटनायें बढ़ती हैं इस वर्ष मंत्री मंगल है।

भौमे नृपे वह्निभयं जनक्षयं चौराकुलं पार्थिव विग्रहं च।
दुःखं प्रजाव्याधि वियोगपीड़ा स्वल्पं पयो मुञ्चति वारिवाहः।।

जिस वर्ष **मंत्री मंगल** होता है उस वर्ष जनप्रतिनिधि उग्र आचरण करते हैं। मंगल ग्रह के हाथ में ही राजा एवं मंत्री दोनों पद होने के कारण दृढ़निश्चयी मंत्री एवं पदाधिकारी कार्य करने में सफल रहेंगे अनेक राज्यों में रक्षक ही भक्षक बन बैठेंगे।

इस वर्ष **वित्तमंत्री शुक्र** है। देश में धन, धान्य, समृद्धि की वृद्धि होगी। आय और व्यय में सन्तुलन बना रहेगा। आयात-निर्यात में देश मजबूत होगा। राष्ट्रीय योजनायें जनहित में बनेंगी और पूर्ण भी होंगी। प्रजाजन में प्रसन्नता रहेगी।

इस वर्ष **मेघेश मंगल** है। इस वर्ष अल्पवृष्टि के कारण धान्य उत्पत्ति में गिरावट का योग है। कहीं अतिवृष्टि तो कही अनावृष्टि का योग बनेगा।

इस वर्ष **धान्येश गुरु है, रसेश सूर्य है, नीरसेश शुक्र** है, **फलेश चन्द्रमा** है, **धनेश शुक्र** है, **दुर्गेश मंगल** है।

भारतवर्ष के लिए यह संवत्सर तनावपूर्ण विकासकारी है। मई मास में लगने वाला चतुर्ग्रही योग देश के पश्चिमोत्तर भाग में तनाव उत्पन्न करेगा। प्रतीत होता है दिल्ली से लेकर काश्मीर तक इस मास में कलह, आतंक आदि से दुष्प्रभावित रहेगा। मंगलप्रधान यह वर्ष भारतवर्ष के भीतर प्रधानमंत्री को चुनौती प्रस्तुत करेगा। जिसे वे दृढ़ता के साथ निपटाने में सक्षम होंगे। केन्द्र और राज्य के सम्बन्धों में तनाव के समाचार आते रहेंगे। ग्रीष्म काल में दुर्घटनाओं का बाहुल्य रहेगा। दिसम्बर २०२१ में तनाव बढ़ने का योग है। यह सम्पूर्ण वर्ष राक्षसों की सक्रियता और पराजय का है।

धर्मशास्त्र के अनुसार तिथ्यादिमान सौरमत (सूर्यसिद्धान्त) के अनुरूप होना चाहिए।

अतः इस पञ्चांग में व्रत-पर्व-त्यौहार का मान सूर्यसिद्धान्त के अनुसार प्रतिपादित है।

संवत् २०७८ का राशिफल

– डॉ. कामेश्वर उपाध्याय

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

(१३ अप्रैल २०२१ से १ अप्रैल २०२२ तक)

(यहाँ एक वर्ष का स्थूल राशिफल दिया जा रहा है जो ग्रहयोग पर आधारित है।)

मेष- यह वर्ष स्वास्थ्य एवं दाम्पत्यजीवन के लिए शुभकारी है। जुलाई मास में दुर्घटना से बचना होगा। जीविका में समर्थन एवं विरोध लगा रहेगा। पिता के स्वास्थ्य को लेकर चिंता बनी रहेगी। दिसम्बर मास में स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। २०२२ के आरम्भिक तीन मास धनागमकारी हैं। समग्रत: यह वर्ष अनुकूल रहेगा।

वृष- स्वास्थ्य को लेकर निरन्तर चिंता बनी रहेगी। दाम्पत्यजीवन में कलह न बचाने पर विघटन संभव है। कन्धे तथा भुजाओं में कष्ट संभव है । शुभकार्यों में अवरोध बना रहेगा। अगस्त में निर्माण सम्बन्धी कार्य आगे बढ़ेगा। पिता से मतभेद से बचना होगा, नवम्बर में रक्तचाप एवं दुर्घटना से बचना होगा। जनवरी से मार्च २०२२ तक नये कार्यों में सफलता का योग है।

मिथुन- वर्ष पर्यन्त धीमी गति से शुभकार्य होते रहेंगे। पारिवारिक कलह से बचना होगा। मित्रों एवं श्रेष्ठजनों से निरन्तर सहयोग मिलेगा। निर्माण कार्य में प्रगति का योग है। पीलिया रोग से बचना होगा। अनेक जातक विदेशयात्रा कर सकेंगे घर-परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होने का योग हैं। विद्या में सफलता मिलेगी।

कर्क- विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष चुनौतीपूर्ण है। जुलाई मास में दुर्घटना से बचना होगा। प्रत्यक्ष कलह से दूर रहें। विश्वास करने पर धनहानि होगी। गलत सुझावों पर अमल से वर्षपर्यन्त संकट बढ़ेगा। घर में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे। २०२२ में मार्च मास तक की अवधि अत्यन्त अनुकूल और प्रगतिकारी है। हनुमद् आराधना करते रहें ।

सिंह- जीविका क्षेत्र में संकट बना रहेगा। साझा कार्य हानिकारक सिद्ध होगा। व्यावसायिक कलह से जितना हो सके बचें। पिता से मतभेद एवं अधिकारियों से विवाद का दुर्योग है। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहना होगा। अपनी योजनाओं को गुप्त रखकर किया हुआ कार्य सफल होगा। दिनचर्या एवं भोजन पर नियन्त्रण रखने से स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

कन्या- विद्यार्थियों के लिए यह वर्ष शुभकारी है। प्रोन्नति एवं सफलता प्राप्ति का योग बना हुआ है। देश-विदेश की यात्रा सम्भव है। गुरुजनों से अनावश्यक विवाद बचाना होगा। साधारणतः यह वर्ष प्रगति का है। अनावश्यक विवाद एवं उत्तेजना से दूर रहकर आगे बढ़ने का योग है। भीतरी बाहरी सहयोग मिलता रहेगा।

तुला- भवन, वाहन एवं संसाधन का योग वर्ष पर्यन्त बना हुआ है। विद्या के क्षेत्र में सफलता मिलेगी। उदर-व्याधि से सावधान रहना होगा। अगस्त मास में व्यावसायिक हानि एवं कलह से बचें। निर्माण कार्य में निरन्तर सफलता मिलेगी। सम्पर्क में वृद्धि तथा यात्रा का योग उत्तम है। इस वर्ष परिवार में अनेक शुभकार्य सम्पन्न होंगे।

वृश्चिक- इस वर्ष स्वास्थ्य को लेकर परेशानी बनी रहेगी। शारीरिक से अधिक मानसिक कष्ट का दुर्योग है। दाम्पत्यजीवन में टकराव रोकना होगा अन्यथा सम्बन्धविच्छेद तक की स्थिति आ सकती है। पिता एवं पूज्यजनों द्वारा भरपूर सहयोग मिलेगा। उधार देने से बचना होगा अन्यथा कलह और मानसिक क्षोभ बढ़ेगा। महामृत्युञ्जय मंत्र जप कराना शुभ रहेगा।

धनु- परिवार के लिए यह वर्ष शुभकारी है। विद्या सफलता का योग है। देश-विदेश का भ्रमण योग लगा हुआ है। अक्टूबर से मार्च मास तक निरन्तर प्रगति एवं अपने क्षेत्र में विकास का योग है। धनागम में तेजी आयेगी। अत्यधिक व्यय से बचें, दूसरों के कलह में भागीदार बनने से समय एवं धन दोनों नष्ट होगा। क्रोध पर नियन्त्रण रखें।

मकर- शनि की साढ़ेसाती निरन्तर बनी हुई है। अतः शनि वैदिक मन्त्र का जप, हनुमद् आराधन और महामृत्युञ्जय मन्त्र जप कराना उत्तम रहेगा। अपने ही लोगों से उग्र विवाद से बचना होगा अन्यथा पारिवारिक संकट बढ़ेगा। अपने भीतर सही और गलत को लेकर अक्टूबर मास तक द्वन्द्व चलता रहेगा। आराधना से ही संकट से बचाव होगा।

कुम्भ- शनि की साढ़ेसाती जीविका एवं धनागम पर चोट मार रही है। विवाद बढ़ने की स्थिति में न्यायालय का चक्कर लगाना पड़ सकता है। निर्माण कार्य में बाधा का योग है। धनहानि एवं धनागम में अवरोध से मन खिन्न रहेगा। श्री हनुमान जी की आराधना स्वयं भी करते रहे। उधार दिया धन नहीं लौटेगा। अपनी योजना को गुप्त रखें।

मीन- भवन, वाहन एवं संसाधन में वृद्धि का योग प्रबल है। सन्तान को लेकर चिंता बनी रहेगी। पिता एवं गुरुजनों से टकराव बचाना होगा। उत्तम व्यवहार करने से लाभ होगा और तनाव करने से धनहानि होगी। वर्ष का उत्तरार्ध अत्यन्त शुभ एवं अनुकूल है। श्रेष्ठजनों से सहयोग मिलता रहेगा। देश-विदेश की यात्रा सम्भव है।

विशेष- २ जून से २० जुलाई तक कर्क का मंगल दुर्घटनाकारी है। गुरु और शनि की युति अक्टूबर मास तक पारिवारिक एवं निकटस्थजनों से संशय योग उत्पन्न करेगी। अनिर्णय की स्थिति के कारण परिवार में एकता भंग होने का योग है। १७ नवम्बर से १५ दिसम्बर के बीच वातावरण में तनाव रहेगा। दुर्घटनाओं का योग बढ़ेगा। यह अवधि राष्ट्रीय क्षितिज पर घरेलू तनाव का कारक है। जो एक माह से तीन मास तक बनी रहेगी। २०२२ में जनवरी से मार्च के बीच देश का आर्थिक पक्ष मजूबत होगा। इन तीन महीनों में अनेक भ्रष्टाचारियों तथा राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में लिप्त लोगों का पर्दाफाश होगा। तमाम अन्तर्विरोधों के बावजूद भारतवर्ष की प्रगति सतत् जारी रहेगी।

उदयास्त विचार

शुक्र ग्रह विचार (उदयास्त)

१९ अप्रैल २०२१ को शुक्र पश्चिम दिशा में **उदित हो रहा है।**

५/६ जनवरी २०२२ को शुक्र पश्चिम दिशा में रात्रि में **अस्त हो रहा है।**

११ जनवरी २०२२ को शुक्र पूर्व दिशा में **उदित हो रहा है।** अस्त से तीन दिन पूर्व वार्धक्य दोष तथा उदय से तीन दिन बाद तक बालत्व दोष में शुभकार्य वर्जित होता है।

बृहस्पति ग्रह विचार (उदयास्त)

२१ फरवरी २०२२ को पश्चिम दिशा में **मध्यरात्रि ००:५८ पर बृहस्पति अस्त होगा। २१ मार्च २०२२** को पूर्व दिशा में **रात्रि २२:३८ पर बृहस्पति उदित होगा।** अस्त से तीन दिन पूर्व वार्धक्य दोष तथा उदय से तीन दिन बाद तक बालत्व दोष में शुभकार्य वर्जित हैं। **गुरु वर्षारम्भ से कुम्भ में है। ६ अक्तू. को मकर में प्रवेश व ४ नवम्बर को पुनः कुम्भ में आएगा।**

शनि ग्रह विचार

सूर्यसिद्धान्त गणित के अनुसार शनि मकर राशि में मार्गी चल रहा है, जो २१ मई २०२१ को वक्री हो रहा है। यह ६ अक्टूबर २०२१ को पुनः मकर राशि में ही मार्गी हो रहा है। वर्ष पर्यन्त शनि मकर राशि में विद्यमान है।

राहु-केतु ग्रह विचार

सूर्यसिद्धान्त गणित के अनुसार राहु वृष राशि में १३ अप्रैल २०२१ से लेकर १ अप्रैल २०२२ तक अर्थात् संवत्सर पर्यन्त विद्यमान् है। व केतु वृश्चिक राशि में संवत्सर पर्यन्त विद्यमान् है।

संवत् २०७८- १३ अप्रैल २०२१ से १ अप्रैल २०२२ तक के ग्रह-गोचर

ग्रह राशि प्रवेश	मंगल	बुध	शुक्र
मेष		१४ अप्रैल	वर्षारम्भ से
वृषभ	वर्षारम्भ से	१ मई	३ मई
मिथुन	१५ अप्रैल	४ जुलाई	२७ मई
कर्क	२ जून	२२ जुलाई	२१जून
सिंह	२० जुलाई	८ अगस्त	१६ जुलाई
कन्या	५ सितम्बर	२५ अगस्त	१० अगस्त
तुला	२१ अक्तूबर	१ नवम्बर	५ सितम्बर
वृश्चिक	५ दिसम्बर	२० नवम्बर	२ अक्तूबर
धनु	१७ जनवरी	७ दिस., २८ जन.	३१ अक्तूबर
मकर	२८ फरवरी	२७ दिस., ९ फर.	१ मार्च
कुम्भ		४ मार्च	३१ मार्च
मीन		२१ मार्च	

सूर्य की द्वादश संक्रान्तियाँ

सूर्य की द्वादश संक्रान्तियों को प्रतिमाह की सूची में उनके आसन्न अंग्रेजी तारीख के साथ दिया गया है। स्पष्ट सूर्य गणित के अनुसार इनकी तिथि एक दिन आगे पीछे होती रहती है। ये द्वादश संक्रान्तियाँ हैं मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन।

चतुर्दश्यष्टमी चैव अमावास्या च पूर्णिमा। पर्वाण्येतानि राजेन्द्र! रविसंक्रान्तिरेव च।।

चतुर्दशी, अष्टमी, आमावास्या, पूर्णिमा एवं सूर्य की द्वादश संक्रान्तियाँ पर्व कहलाती हैं। सूर्य संक्रान्ति से ही वर्ष, ऋतु एवं अयन का निर्धारण होता है। देव एवं असुरों की दिन-रात्रियाँ सूर्य संक्रान्ति से ही निर्धारित होती हैं। सूर्य संक्रान्ति के दिन स्नान-दान-व्रत-जप-श्राद्ध-होम किया जाता है। मेष और तुला की संक्रान्ति को विषुव संक्रान्ति कहते हैं मकर और कर्क की संक्रान्ति को अयन संक्रान्ति कहते हैं। मिथुन, कन्या, धनु, मीन संक्रान्ति को षडशीतिमुख संक्रान्ति कहते हैं।

सामान्यरूप से संक्रान्ति से १६ घटी (६ घंटा २४ मिनट) पूर्व और पश्चात् पुण्यकाल होता है। मकर और कर्क संक्रान्ति को छोड़कर अन्य संक्रान्तियों में यदि मध्यरात्रिमें संक्रमण हो तो दोनों दिन पुण्यकाल होता है। यदि सूर्यास्त के बाद मकर संक्रान्ति हो तो अगले दिन स्नान-दान हेतु पुण्यकाल होता है। अर्द्धरात्रि या रात्रि में कर्क संक्रान्ति होने पर पुण्यकाल पूर्वदिन ही होता है।

यदास्तमयवेलायां मकरे याति भास्करः। प्रदोषे चार्द्धरात्रे वा स्नानं दानं परेऽहनि।।
अर्द्धरात्रे तदूर्ध्वं वा संक्रान्तौ दक्षिणायने। पूर्वमेव दिनं ग्राह्यं यावन्नोदयते रविः।। *गर्ग संहिता।*

कर्क संक्रान्ति में सूर्योदय से ३ घटी (७२ मिनट) पहले संक्रमण होने पर पूर्व दिन ही पुण्यकाल होता है। यदि सूर्योदय पूर्व से ३ घटी के अन्दर संक्रमण हो तो अगले दिन पुण्यकाल होगा।

सूर्य संक्रान्तियाँ

१. मेष संक्रान्ति १४ अप्रैल २०२१, ५.१४ मि. से, वसन्त ऋतु, **खरमास समाप्ति**

२. वृष संक्रान्ति १४ मई २०२१, रात्रि ३.४० से, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ

३. मिथुन संक्रान्ति १५ जून २०२१ दिन १३.४५ से, ग्रीष्म ऋतु

४. कर्क संक्रान्ति १६ जुलाई २०२१, अगलीभोर ५.१६ से, वर्षा ऋतु **दक्षिणायनारम्भ**

५. सिंह सक्रान्ति १७ अगस्त २०२१, दिन १६.३४ से, वर्षा ऋतु

६. कन्या संक्रान्ति १७ सितम्बर २०२१, दिन १६.५८ से, शरद् ऋतु प्रारम्भ

७. तुला संक्रान्ति १७ अक्टूबर २०२१, रात्रि ३.२४ से, शरद् ऋतु

८. वृश्चिक संक्रान्ति १६ नवम्बर २०२१, रात्रि ००.४५ से, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ

९. धनु संक्रान्ति १६ दिसम्बर २०२१, दिन १२.४७ से, हेमन्त ऋतु, **खरमासारम्भ**

१०. मकर संक्रान्ति१५ जनवरी २०२२,रात्रि२०.४१ से, शिशिर, **खरमाससमाप्ति**, **उत्तरायण**

११. कुम्भ संक्रान्ति १२ फरवरी २०२२, प्रातः ७.३७ से, शिशिर ऋतु

१२. मीन संक्रान्ति १४ मार्च २०२२, रात्रि ३.९ से, वसन्त ऋतुप्रारम्भ, **खरमासारम्भ**

संवत् २०७८ के ग्रहण

१३ अप्रैल २०२१ से १ अप्रैल २०२२ तक

(इस वर्ष राजस्थान में कोई ग्रहण दृश्य व महत्व का नहीं है।)

१. चन्द्रग्रहण- वैशाखशुक्ल पूर्णिमा, अनुराधानक्षत्र, बुधवार, २६ मई २०२१ को स्वल्प काल के लिए भारतवर्ष के पूर्वी भाग में दृश्य होगा। यह चन्द्रग्रहण भारतवर्ष में दिन में लगने के कारण अदृश्य रहेगा और पूर्वी भाग में सायं ६.२२ पर इसका मोक्ष होगा। यह ग्रहण कनाडा, आस्ट्रेलिया, जापान, कोरिया, रूस आदि में पूर्ण दृश्य होगा। **राजस्थान व भारतवर्ष के अन्य भागों में इस ग्रहण का धार्मिक महत्त्व नहीं होगा।**

२. कंकणसूर्यग्रहण- (भारत में अदृश्य) ज्येष्ठकृष्ण अमावास्या, रोहिणी/ मृगशीर्ष नक्षत्र, गुरुवार, १० जून २०२१ को अफ्रीका, अमेरिका, चीन, मंगोलिया, ग्रीनलैण्ड, यू.के. आदि देशों में दृश्य होगा। **भारतवर्ष में इस ग्रहण का धार्मिक महत्त्व नहीं होगा।**

३. खण्डचन्द्रग्रहण- कार्तिकशुक्ल पूर्णिमा, कृत्तिकानक्षत्र, शुक्रवार, १९ नवम्बर २०२१ ग्रहण का मोक्षकाल सायं १६.१७ बजे होने के कारण पूर्वी भाग अरूणाचल प्रदेश आदि में यह अत्यन्त स्वल्प काल के लिए ग्रस्तास्त दृश्य हो सकता है। **राजस्थान व भारतवर्ष के अन्य भागों में इस ग्रहण का धार्मिक महत्त्व नहीं होगा।**

४. खग्रास्तसूर्यग्रहण- (भारत में अदृश्य) मार्गशीर्षकृष्ण अमावास्या, अनुराधा/ ज्येष्ठानक्षत्र, शनिवार, ४ दिसम्बर २०२१। यह आस्ट्रेलिया, अफ्रीका, अमेरिका आदि में दृश्य होगा। **यह ग्रहण भारत में दृश्य नहीं है, अतः भारतवर्ष में इस ग्रहण का धार्मिक महत्त्व नहीं होगा।**

जो ग्रहण अपने भूखण्ड पर दिखाई नहीं देता उसका धार्मिक महत्त्व नहीं होता है। अतः अदृश्य ग्रहण को लेकर अनावश्यक विमर्श निरर्थक होता है। दिन का चन्द्रग्रहण तथा रात्रि का सूर्यग्रहण विफल होता है।- **सूर्यग्रहो यदा रात्रौ दिवा चन्द्रग्रहो यदि।**

तत्र स्नानं न कुर्वीत दद्याद् दानं न च क्वचित्।।

ग्रहण काल में किया हुआ स्नान, जप, दान पुण्यकारी होता है। सूर्य और चन्द्र के ग्रहण में जो मोक्ष स्नान नहीं करता वह सूतक दोष का भागी होता है- **मुक्तौ यस्तु न कुर्वीत स्नानं ग्रहणसूतके।**

स सूतकी भवेत्तावद्यावत्स्यादपरो ग्रहः।।

श्री सर्वेश्वर अष्टकम्

(श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज विरचित)

सनन्दनाद्यैः परिसेविताय, युग्मस्वरूपेण विराजिताय ।
चक्राङ्किताया़ऽतिमनोहराय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ॥१॥
श्रीनारदान्तर्हृदि संस्थिताय, मुनीन्द्रनिम्बार्कसुपूजिताय ।
सौन्दर्यलावण्यगुणार्णवाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ॥२॥
केशेन्द्रदेवैरभिवन्दिताय, गोपाङ्गनागोकुलजीवनाय ।
निजाश्रिताऽतङ्कनिवर्तकाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ॥३॥
राधाहृदागारनिमज्जिताय, निकुञ्जलीलारतिवर्द्धकाय ।
कालिन्दिकूले रसलासिताय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ॥४॥
वृन्दावनश्रीक्षणहर्षिताय, कदम्बकुञ्जान्तशोभिताय ।
सखीसहस्रैरनुरञ्जिताय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ॥५॥
नन्दात्मजायाऽखिलमोहनाय, सर्वैः समाराध्यशुचिस्मिताय।
कृष्णाय पूर्णाय सुकोमलाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ॥६॥
वंशीरवाऽकर्षितश्रीवनाय, हैवङ्गीवीनाऽशननिर्गताय ।
श्रीरासलीलारससंप्लुताय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ॥७॥
गोचारणाऽनारतनैपुणाय, वेदान्तवेद्याय सुलोचनाय ।
संसारदावानलमोचनाय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ॥८॥
सर्वेश्वराष्टकं स्तोत्रं भक्ताभीष्टप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराख्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥९॥

श्री जयादित्य अष्टकम्

(श्रीस्कन्द महापुराणे)

न त्वं कृतः केवलसंश्रुतश्च यजुष्येवं व्याहरत्यादिदेव! ।
चतुर्विधा भारती दूरदूरं धृष्टः स्तौमि स्वार्थकामः क्षमैतत् ॥१॥
मार्तण्डसूर्यांशुरविस्तथेन्द्रो भानुर्भगश्चाऽर्यमा स्वर्णरिताः ॥२॥
दिवाकरो मित्रविष्णुश्च देव! ख्यातस्त्वं वै द्वादशात्मा नमस्ते ।
लोकत्रयं वै तव गर्भगेहं जलाधारः प्रोच्यसे खं समग्रम् ॥३॥
नक्षत्रमाला कुसुमाभिमाला तस्मै नमो व्योमलिङ्गाय तुभ्यम् ॥४॥
त्वं देवदेवस्त्वमनाथनाथस्त्वं प्राप्यपालः कृपणे कृपालुः ।
त्वं नेत्रनेत्रं जनबुद्धिबुद्धिराकाशकाशो जय जीवजीवः ॥५॥
दारिद्र्यदारिद्र्य निधे निधीनाममङ्गलामङ्गल शर्मशर्म ।
रोगप्ररोगः प्रथितः पृथिव्यां चिरं जयाऽऽदित्य! जयाऽऽप्रमेय! ॥६॥
व्याधिग्रस्तं कुष्ठरोगाभिभूतं भग्नघ्राणं शीर्णदेहं विसंज्ञम् ।
मातापिताबान्धवाः सन्त्यजन्ति सर्वैस्त्यक्तं पासि कोऽस्तित्वदन्यः ॥७॥
त्वं मे पिता त्वं जननी त्वमेव त्वं मे गुरुर्बान्धवाश्च त्वमेव ।
त्वं मे धर्मस्त्वञ्च मे मोक्षमार्गो दासस्तुभ्यं त्यज वा रक्ष देव! ॥८॥
पापोऽस्मि मूढोऽस्मि महोग्रकर्मा रौद्रोऽस्मि नाऽऽचारनिधानमस्मि ।
तथापि तुभ्यं प्रणिपत्य पादयोर्जयं भक्तानामर्पयं श्रीजयार्क! ॥९॥

इति श्रीस्कांदे महापुराण प्रथमे माहेश्वरखण्डे कौमारिकाखण्डे जयादित्य अष्टकम् ।।

शिव-वास

शु.प.तिथि	कृ.प.तिथि	शिववासम्	फलम्
१, ८, १५	७, १४	श्मशाने	मृत्युः
२, ९	१, ८, ३०	गौरीसन्निधौ	शुभम्
३, १०	२, ९	सभायाम्	तापकारकम्
४, ११	३, १०	क्रीडायाम्	विशिष्टकष्टम्
५, १२	४, ११	कैलाशे	सुखम्
६, १३	५, १२	वृषे	श्री प्राप्तिः
७, १४	६, १३	भोजने	कष्टप्राप्तिः

अग्नि-वास चक्र

शु.प.तिथि	कृ.प.तिथि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
१, ९	२, १०	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
२, १०	३, ११	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
३, ११	४, १२	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
४, १२	५, १३	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी
५, १३	४, १४	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश
६, १४	७, अमा.	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल
७, पूर्णि.	अष्टमी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी
अष्टमी	१, ९	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी	आकाश	पाताल	पृथ्वी	पृथ्वी

शनि की साढ़ेसाती

शनिग्रह जिस राशि पर रहता है उससे एक राशि आगे और एक राशि पीछे इस प्रकार कुल तीन राशि को प्रभावित करता है। शनि एक राशि पर ढ़ाई वर्ष रहता है। कुल तीन राशि पर इसका काल साढ़ेसात वर्ष का होता है। इसे ही शनि की **सार्द्धसप्तवार्षिकी (साढ़ेसाती)** कहते हैं। **द्वादशे जन्मगे राशौ द्वितीये च शनैश्चरः। सार्द्धानि सप्तवर्षाणि तदा दुःखैर्युतो भवेत्।**

सूर्यसिद्धान्त के अनुसार शनि वर्षपर्यन्त अर्थात् १३ अप्रैल २०२१ से १ अप्रैल २०२२ तक मकर राशि में विद्यमान है। अतः **शनि की साढ़ेसाती धनु, मकर और कुम्भ राशियों पर चलेगी।** वर्षारम्भ से लेकर १९ मई २०२१ तक शनि मार्गी है । २१ मई २०२१ से लेकर ८ अक्टूबर २०२१ तक शनि वक्री रहेगा। ९ अक्टूबर २०२१ से लेकर वर्षान्त १ अप्रैल २०२२ तक शनि मार्गी ही रहेगा। धनु राशि पर साढ़ेसाती का प्रभाव शुभकारी हो गया है। मकर एवं कुम्भ राशि के ऊपर साढ़ेसाती का प्रभाव अपने चरम पर दिखाई देगा। अतः शनि का जप हवन तथा श्रीहनुमान जी की आराधना करने से साढ़ेसाती का दुष्प्रभाव नगण्य होगा।

शनि की ढैया

जब अपनी जन्मराशि से शनि चतुर्थ या अष्टम में स्थित हो तो शनि की ढैय्या चलती है। इसकी अवधि ढाई वर्ष की होती है। शनि की ढैया का प्रभाव भी जातक को प्रभावित करता है। यदि कुण्डली में चन्द्रमा शुभ स्थान में स्थित होकर योगकारी हो तो शनि की ढैया का प्रभाव कल्याणकारी होता है। कतिपय लोग इसे शनि की कल्याणी भी कहते हैं। **इस वर्ष शनि की ढैया तुला राशि एवं मिथुन राशि के ऊपर है।**

मेष - कर्क, वृश्चिक का शनि ढैया कारक।	**वृष -** सिंह, धनु का शनि ढैया कारक।
मिथुन - कन्या, मकर का शनि ढैया कारक।	**कर्क -** तुला, कुम्भ का शनि ढैया कारक।
सिंह - वृश्चिक, मीन का शनि ढैया कारक।	**कन्या -** धनु, मेष का शनि ढैया कारक।
तुला - मकर, वृष का शनि ढैया कारक।	**वृश्चिक -** कुम्भ, मिथुन का शनि ढैया कारक।
धनु - मीन, कर्क का शनि ढैया कारक।	**मकर -** मेष, सिंह का शनि ढैया कारक।
कुम्भ - वृष, कन्या का शनि ढैया कारक।	**मीन -** मिथुन, तुला का शनि ढैया कारक।

शनिसाढ़ेसाती शांति स्तोत्र

महर्षि पिप्लाद ने शनि की साढ़ेसाती की शांति के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्तोत्र का निर्माण किया। इस स्तोत्र के पाठ से साढ़ेसातीजनित बाधा दूर होती है और रोग, कष्ट तथा कलह से बचाव होता है। इससे जीविका बाधा भी दूर होती है इस स्तोत्र का शनिवार के दिन १०८ बार पाठ किया जाता है:--

नमस्ते कोणसंस्थाय पिङ्गलाय नमोऽस्तु ते। नमस्ते बंधु रूपाय कृष्णाय च नमोऽस्तु ते ।।१।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो ।।२।।
नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्वर नमोऽस्तु ते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च ।।३।।

मंगली कुण्डली विचार

मंगल को लेकर ज्योतिषीगण न भ्रम में रहें, न भ्रमयुक्त निर्णय दें। भ्रमयुक्त निर्णय दाम्पत्य का नाश कर सकता है। अतः सावधानीपूर्वक मंगली कुण्डली का निर्णय दें।

◆ कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२ वें भाव में मंगल बैठा हो तो कुण्डली मंगली होती है। इसी तरह से चन्द्रमा के साथ मंगल बैठा हो या चन्द्रमा से ४, ७, ८, १२ वें भाव में बैठा हो तो कुण्डली चन्द्र मंगली होती है। प्रमाणवचन-

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तुविनाशाय भत्ता पत्नी विनाशकृत्।।

◆ यदि लड़की मंगली कुण्डली वाली है तो लड़का भी मंगली कुण्डली वाला होना चाहिए।

◆ मंगल दोष का परिहार शनि करता है। यदि शनि कुण्डली में लग्न या चन्द्रमा से १, ४, ७, ८, १२वें भाव में बैठा हो तो वह मंगल दोष का शमन (नाश) करता है-

जामित्रे च यदा सौरिः लग्ने वा हिबुकेऽथवा। अष्टमे द्वादशे वाऽपि भौमदोषविनाशकृत्।।

◆ यह व्यवस्था पूरे देश में मान्य है। साफ्टवेयर द्वारा कुण्डली मेलापक में चन्द्रमंगली दोष पर विचार नहीं किया गया है। यह घातक प्रवृत्ति है।

◆ मंगल दोष का परिहार अपनी ही कुण्डली में नहीं देखा जाता है।

◆ यदि कन्या की कुण्डली मंगली है तो परिहार वर की कुण्डली में देखा जाता है ।

◆ यदि वर की कुण्डली मंगली है तो परिहार कन्या की कुण्डली में देखा जाता है।

◆ १, ४, ७ केन्द्रों में बैठा मेष, वृश्चिक, मकर का मंगल राजयोगकारी होने पर भी मंगली-कुण्डली का दोष देता है। यह दाम्पत्य के लिए बाधक होता है।

परिहार (उपाय)

◆ यदि लड़की की कुण्डली मंगली है और लड़के की कुण्डली मंगली नहीं है और कोई ज्योतिषीय परिहार न निकले तो धर्मशास्त्रीय परिहार करना चाहिए। ऐसा करने से विच्छेद या वैधव्यादि दोष नहीं उत्पन्न होता है।

◆ कुम्भ विवाह, विष्णु प्रतिमा विवाह और अश्वत्थविवाह ये तीन धर्मशास्त्रीय परिहार कन्या के लिए बतलाये गये हैं। ये उपाय आज भी व्यवहार में हैं।

◆ अर्कविवाह वर के लिए होता है। इससे कन्या के जीवन की रक्षा होती है ।

◆ मंगलदोष परिहार के लिए लड़का या लड़की (जो मंगल दोष से ग्रस्त हो) हेतु ब्राह्मणों द्वारा सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र का जप कराया जाता है। यह भी परम्परा प्राप्त एवं शास्त्रोक्त परिहार है।

◆ धर्मशास्त्रीय परिहार प्रायशः विवाह से पूर्व और तिलकोत्सव के बाद किया जाता है। अभी बहुतायत में यही परम्परा सक्रिय है।

विवाह मुहूर्त्त २०२१-२०२२
(१३ अप्रैल २०२१ से १ अप्रैल २०२२ तक)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

◆ **विवाह के मास- चैत्र** (मेषकासूर्य), **वैशाख** (वृषकासूर्य), **ज्येष्ठ** (वृष-मिथुनकासूर्य), **आषाढ़** (मिथुनकासूर्य, शुक्लदशमीतक), **कार्तिक** (वृश्चिकर्कासूर्य), **मार्गशीर्ष** (वृश्चिककासूर्य), **पौष** (मकरकासूर्य), **माघ** (मकरकासूर्य), **फाल्गुन** (कुम्भकासूर्य)। कार्तिक व पौष में प्रायः वृश्चिक और मकर का सूर्य नहीं मिलता है। ◆ श्रावण, भाद्रपद, आश्विन मास विवाह में वर्जित है।
◆ मृत्युबाण में विवाह वर्जित होता है। सूर्य के १, १०, १९, २८ गतांश पर मृत्युबाण होता है। ◆ पारस्कर गृह्यसूत्रोक्त नक्षत्रचतुष्टयी को मुहूर्त्तो में सम्मिलित नहीं किया गया है।
◆ १७ जुलाई २०२१ से कर्कसंक्रान्ति दोष व २० जुलाई २०२१ से हरिशयनदोष में विवाह वर्जित रहेंगे। ◆ हरिप्रबोधिनी एकादशी १५ नवम्बर २०२१ से विवाह मुहूर्त्त आरम्भ होंगे।
◆ १६ दिस. २०२१ से १४ जन. २०२२ तक खरमास दोष है। २२ फर. से २३ मार्च २०२२ तक बृहस्पति अस्त व १५ मार्च २०२२ से खरमास आरम्भ होने से विवाह मुहूर्त्त का अभाव है।

क्र सं	दिनाँक	मास, पक्ष, तिथि, वार	चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)	सूर्य राशि	चन्द्र राशि	गुरु राशि	लतादि दशदोष रेखा दोष– ऽ, शुद्ध रेखा– ।	विवाह लग्न	समय
१	**२३-०४-२०२१**	चैत्र शुक्ल ११, शुक्र	उत्तराफाल्गुनी	मेष	सिंह	कुम्भ	ऽ।।।।।।ऽऽ।	कुम्भ, मीन	रात्रि २:५० से सूर्योदय तक
२	**२६-०४-२०२१**	चैत्र शुक्ल १४, सोम	स्वाति	मेष	तुला	कुम्भ	।।।।ऽ।।ऽ।।	कुम्भ, मीन	रात्रि ११:१६ पश्चात् २:२७ से ५:२१ तक
३	**२७-०४-२०२१**	चैत्र शुक्ल १५, मंगल	स्वाति	मेष	तुला	कुम्भ	८ रेखा	मिथुन, सिंह	**मि.**-८:५७-११:०३, **सिं**-१३:२३-१५:३९
४	**३०-०४-२०२१**	वैशाख कृष्ण ४, शुक्र	मूल	मेष	धनु	कुम्भ	।।।।।।।ऽ।।	गोधूलि, कुम्भ, मीन	**कुम्भ, मीन-** रात्रि २:११-५:०५
५	**०१-०५-२०२१**	वैशाख कृष्ण ५, शनि	मूल	मेष	धनु	कुम्भ	९ रेखा	दिवा- मिथुन,कर्क	**मिथुन, कर्क-** ८:३४-१३:०७
६	**०२-०५-२०२१**	वैशाख कृष्ण ६, रवि	उत्तराषाढ़ा	मेष	मकर	कुम्भ	।ऽ।।।।।।।।	गोधूलि	दिन १४:१७ से भद्रा रात्रि २०:१८ पूर्व
७	**०३-०५-२०२१**	वैशाख कृष्ण ७, सोम	उत्तराषाढ़ा	मेष	मकर	कुम्भ	९ रेखा	दिवा लग्न	प्रातः ७:३२ से १३:२८ तक
८	**०७-०५-२०२१**	वैशाख कृष्ण ११, शुक्र	उत्तराभाद्रपद	मेष	मीन	कुम्भ	ऽऽ।।।।ऽऽ।।	मकर, कुम्भ	रात्रि ९:३४ बाद **लग्न-** २३:५९-३:१२
९	**०८-०५-२०२१**	वैशाख कृष्ण १२, शनि	रेवती	मेष	मीन	कुम्भ	।।।।।।।ऽ।।।	सिंह, गोधूलि, कुम्भ	**सिं.**-१२:४०-१४:५६, **कु.**-१:३९-३:०८
१०	**०९-०५-२०२१**	वैशाख कृष्ण १३, रवि	रेवती	मेष	मीन	कुम्भ	९ रेखा	कन्या	**कन्या-** १४:५३-१७:०७
११	**१३-०५-२०२१**	वैशाख शुक्ल २, गुरु	रोहिणी	मेष	वृष	कुम्भ	।।।।ऽ।।।।।	गोधूलि, कुम्भ, मीन	**कुम्भ, मीन-** रात्रि १:२०-४:१४
१२	**१४-०५-२०२१**	वैशाख शुक्ल ३, शुक्र	मृगशिरा	मेष	वृष	कुम्भ	९ रेखा	दिवारात्रि	स्वयं सिद्ध (अबूझ)
१३	**२१-०५-२०२१**	वैशाख शुक्ल ९, शुक्र	उत्तराफाल्गुनी	वृष	कन्या	कुम्भ	।।।।।।ऽऽ।।	दिवारात्रि	प्रातः १०:४५ पश्चात्
१४	**२२-०५-२०२१**	वैशाख शुक्ल ११, शनि	हस्त	वृष	कन्या	कुम्भ	।।।।।।।ऽ।।	सिंह	**सिं.**-११:४१-१३:५७ व भद्रा२६:२८ पश्चात्
१५	**२४-०५-२०२१**	वैशाख शुक्ल १३, सोम	स्वाति	वृष	तुला	कुम्भ	।।।।।ऽ।।।	कन्या, धनु	**कन्य**-१३:५४-१६:०८, **ध.**-२०:४७-२२:५१
१६	**२६-०५-२०२१**	वैशाख शुक्ल १५, बुध	अनुराधा	वृष	वृश्चिक	कुम्भ	।।।।ऽ।ऽ।।।	कन्या, गोधूलि, मकर	**कन्य**-१३:४६-१६:००, **म.**-२०:३९-२२:४३
१७	**२९-०५-२०२१**	ज्येष्ठ कृष्ण ३, शनि	उत्तराषाढ़ा	वृष	धनु	कुम्भ	।।।।ऽ।।ऽऽऽ	मीन	रात्रि **मीन-** १:४६-३:११
१८	**०५-०६-२०२१**	ज्येष्ठ कृष्ण ११, शनि	रेवती	वृष	मीन	कुम्भ	।।।।।।।ऽ।।	कन्या, गोधूलि, कुम्भ	**कन्य**-१३:०७-१५:२१, **कु.**-२०:३९-२२:४३
१९	**१८-०६-२०२१**	ज्येष्ठ शुक्ल ८, शुक्र	हस्त	मिथुन	कन्या	कुम्भ	।ऽ।।।।।।।।	कुम्भ, मीन	रात्रि २३:५२ व्यति.पश्चात् से १:५३ तक
२०	**१९-०६-२०२१**	ज्येष्ठ शुक्ल ९, शनि	हस्त	मिथुन	कन्या	कुम्भ	९ रेखा	सिंह, कन्या	**लग्न-** ९:५५-१४:२६, मुहूर्त्त १६:५५ तक

क्र सं	दिनाँक	मास, पक्ष, तिथि, वार	चन्द्र नक्षत्र (विवाह नक्षत्र)	सूर्य राशि	चन्द्र राशि	गुरु राशि	लतादि दशदोष रेखा दोष– ऽ, शुद्ध रेखा– ।	विवाह लग्न	विशेष विवरण
२१	२०-०६-२०२१	ज्येष्ठ शुक्ल १०, रवि	स्वाति	मिथुन	तुला	कुम्भ	ऽ।।।।ऽ।।।	दिवारात्रि	दिन १५:३३ से भद्रा २३:०६ पूर्व (अबूझ)
२२	२१-०६-२०२१	ज्येष्ठ शुक्ल ११, सोम	स्वाति	मिथुन	तुला	कुम्भ	ऽऽऽऽ।।ऽ।।	सिंह, कन्या	भद्रा पश्चात् ९:५६ से दिन १४:०१ तक
२३	२२-०६-२०२१	ज्येष्ठ शुक्ल १२, मंगल	अनुराधा	मिथुन	वृश्चिक	कुम्भ	।ऽ।।ऽ।।।।	तुला, मीन	**तु.**-१४:१५-१६:३३,**मीन**-००:१२-१:३७
२४	२४-०६-२०२१	ज्येष्ठ शुक्ल १५, गुरु	मूल	मिथुन	धनु	कुम्भ	।।।।।।ऽऽ।	तुला, मीन	**तु.**-१४:०७-१६:२५,**मीन**-००:०४-१:२९
२५	०१-०७-२०२१	आषाढ़ कृष्ण ७, गुरु	उत्तराभाद्रपद	मिथुन	मीन	कुम्भ	ऽ।।।ऽ।ऽ।।	कन्या, मीन	**क.**-११:२५-१३:३९,**मीन**-२३:३७-१:०२
२६	०२-०७-२०२१	आषाढ़ कृष्ण ८, शुक्र	रेवती	मिथुन	मीन	कुम्भ	ऽ।।।।।ऽ।ऽ	कन्या, गोधूलि, कुम्भ	**क.**-११:२१-१३:३५, **कु**-२२:०४-२३:३२
२७	०६-०७-२०२१	आषाढ़ कृष्ण १२,मंगल	रोहिणी	मिथुन	वृष	कुम्भ	।।।ऽ।ऽ।ऽ।।	मीन, वृष	**मीन**-२३:१७-००:४२,**वृष.**-२:१९-४:१४
२८	१२-०७-२०२१	आषाढ़ शुक्ल २, सोम	मघा	मिथुन	सिंह	कुम्भ	।।।ऽ।।।ऽ।	वृष, मिथुन	रात्रि २:४५ पश्चात् सूर्योदय ५:४३ तक
२९	१३-०७-२०२१	आषाढ़ शुक्ल ३, मंगल	मघा	मिथुन	सिंह	कुम्भ	८ रेखा	दिवा लग्न कन्या	**कन्या**- १०:३८-१२:५२
३०	१६-०७-२०२१	आषाढ़ शुक्ल ७, शुक्र	हस्त	मिथुन	कन्या	कुम्भ	।।ऽ।।।ऽऽ।।	कुम्भ, मीन	**लग्न**-२१:०९-००:०३, भद्रा २:०० पूर्व
३१	१५-११-२०२१	कार्तिक शुक्ल ११,सोम	उत्तराभाद्रपद	वृश्चिक	मीन	कुम्भ	अबूझ	दिवारात्रि	स्वयं सिद्ध (अबूझ)
३२	२०-११-२०२१	मार्गशीर्ष कृष्ण १, शनि	रोहिणी	वृश्चिक	वृष	कुम्भ	।।।।ऽऽऽ।।।	कन्या, तुला	**कन्या-तुला**- रात्रि २:०५-६:३८
३३	२८-११-२०२१	मार्गशीर्ष कृष्ण ९, रवि	उत्तराफाल्गुनी	वृश्चिक	सिंह	कुम्भ	।।।।ऽ।।ऽ।।	कन्या	सायं १७:३५पश्चात्, **लग्न**-१:३३-३:४७
३४	२९-११-२०२१	मार्गशी. कृष्ण १०, सोम	हस्त	वृश्चिक	कन्या	कुम्भ	।।।।ऽ।।।ऽ।	सिंह, कन्या, तुला	भद्रा २२:५५ पश्चात् **लग्न**- २३:१३-६:०२
३५	३०-११-२०२१	मार्गशी. कृष्ण ११,मंगल	हस्त	वृश्चिक	कन्या	कुम्भ	।।।।ऽ।।।।।	मीन, दिवा	**मीन**-१३:३७-१५:०२
३६	०१-१२-२०२१	मार्गशीर्ष कृष्ण १२, बुध	स्वाति	वृश्चिक	तुला	कुम्भ	।ऽ।।।।।।।।	सिंह, कन्या	**सिंह-कन्या**- २३:०५-०३:३६
३७	०२-१२-२०२१	मार्गशीर्ष कृष्ण १३, गुरु	स्वाति	वृश्चिक	तुला	कुम्भ	९ रेखा	मीन	**लग्न**- १३:२९ से दिन १४:३८ पूर्व
३८	११-१२-२०२१	मार्गशीर्ष शुक्ल ८, शनि	उत्तराभाद्रपद	वृश्चिक	मीन	कुम्भ	।।।।।ऽ।।।	तुला	**लग्न**- रात्रि ३:२२ पश्चात् ५:१५ तक
३९	१३-१२-२०२१	मार्गशीर्ष शुक्ल १०,सोम	रेवती	वृश्चिक	मीन	कुम्भ	।ऽ।।ऽ।।ऽ।।	कन्या, तुला	**कन्या-तुला**- ००:३३-०५:०७
४०	२२-०१-२०२२	माघ कृष्ण ४, शनि	उत्तराफाल्गुनी	मकर	कन्या	कुम्भ	।।।।।ऽऽऽ।।	गोधूलि, कन्या, तुला	**कन्या-तुला**- २१:५६-०२:२९
४१	२३-०१-२०२२	माघ कृष्ण ६, रवि	हस्त	मकर	कन्या	कुम्भ	।।।।।।।ऽऽ।	गोधूलि, कन्या, तुला	**कन्या-तुला**- २१:५२-०२:२५
४२	०५-०२-२०२२	माघ शुक्ल ५, शनि	रेवती	मकर	मीन	कुम्भ	।ऽ।।।।।।।।	तुला, धनु	स्वयं सिद्ध (अबूझ)
४३	०६-०२-२०२२	माघ शुक्ल ६, रवि	रेवती	मकर	मीन	कुम्भ	९ रेखा	मीन, गोधूलि	**मीन**-प्रातः ९:०९-१०:३४
४४	०९-०२-२०२२	माघ शुक्ल ८, बुध	कृत्तिका	मकर	वृष	कुम्भ	।।।।ऽ।।।ऽ।	वृश्चिक	**लग्न**- रात्रि १:५० पश्चात् ३:३७ तक
४५	१८-०२-२०२२	फाल्गुन कृष्ण २, शुक्र	उत्तराफाल्गुनी	कुम्भ	सिंह/कन्या	कुम्भ	।।।।।।।।।।	गोधूलि, कन्या, वृश्चिक	स्वयं सिद्ध (अबूझ)
४६	१९-०२-२०२२	फाल्गुन कृष्ण ३, शनि	उत्तराफाल्गुनी	कुम्भ	कन्या	कुम्भ	९ रेखा	वृश्चिक, धनु	भद्रा २२:१५ पश्चात् **लग्न**-००:३९-५:०३

द्विरागमन मुहूर्त्त (सम्वत् २०७८, २०२१-२०२२)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

◆ **वधूप्रवेश-** नवविवाहिता का पिता के घर से विदा होकर पति के घर प्रथम प्रवेश। वधूप्रवेश १६ दिन के भीतर समदिनों एवं ५, ७, ९ विषम दिनों में होता है। एक वर्ष के भीतर विषम मासों में होता है। इसमें शुक्र का विचार नहीं होता।

◆ **द्विरागमन-** वधूप्रवेश के बाद पति के घर से पिता के घर में आयी हुई वधू का पुन: पतिगृह में प्रवेश को द्विरागमन कहा जाता है। यह विषम वर्षों में कुम्भ (११), वृश्चिक (८) एवं मेष (१) के सूर्य में किया जाता है- **घटालिमेषगे रवौ।** मुहूर्त्तमार्तण्डग्रन्थ के अनुसार विलम्बित वधूप्रवेश एवं द्विरागमन वैशाख, फाल्गुन एवं मार्गशीर्ष मास में किया जाता है- **'वैफामार्गसिते जगुः'** (४/४०)। वैशाख में मेष का सूर्य, मार्गशीर्ष में वृश्चिक का सूर्य तथा फाल्गुन में कुम्भ का सूर्य प्राय: होता है। द्विरागमन में शुक्र का विचार होता है। सम्मुख एवं दक्षिण शुक्र अशुभ होता है। वाम एवं पृष्ठ शुक्र शुभ होता है। प्रथम संतान को लेकर यात्रा करते समय भी शुक्र का विचार होता है। वधूप्रवेश एवं द्विरागमन खरमास, हरिशयन, गुरु-शुक्र के अस्त में नहीं किया जाता है। रेवती से मृगशीर्ष तक चन्द्रमा के रहने पर शुक्र अन्धा रहता है। इसमें अनिवार्य होने पर विदाई होती है। ◆ **वधूप्रवेश की तिथियाँ-** १, २, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५

◆ **वधूप्रवेश के नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, रेवती। वधूप्रवेश के वार - सोम, गुरु, शुक्र, शनि, मतान्तर से बुध। ◆ **वर्जित लग्न-** १, ४, ७, १०

चैत्र शुक्लपक्ष (वधू प्रवेश मुहूर्त्त, मेष का सूर्य)

२२ अप्रैल २०२१ गुरुवार, दशमी, मघा नक्षत्र में वधूप्रवेश लग्न २, ५।

२६ अप्रैल २०२१ सोमवार, पूर्णिमा, चित्रा नक्षन में दिन १२.०० बजे से वधूप्रवेश लग्न ११, १२।

वैशाख कृष्णपक्ष (वधूप्रवेश एवं द्विरागमन, मेष का सूर्य)

२८ अप्रैल २०२१ बुधवार, द्वितीया अनुराधा नक्षत्र में द्विरागमन लग्न १२ ।

२९ अप्रैल २०२१ गुरुवार, तृतीया, अनुराधा नक्षत्र में भद्रा दिन ३.३८ से पूर्व लग्न २ ३ ।

३० अप्रैल २०२१ शुक्रवार, पंचमी, मूल नक्षत्र में दिन ४.४७ से रिक्तादोष है।

३ मई २०२१ सोमवार, सप्तमी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में भद्रा प्रातः ७.३२ पश्चात् लग्न २ , ३ ।

५ मई २०२१ बुधवार, दशमी, शतभिषा नक्षत्र में सायं ५.१४ से लग्न ७ ।

६ मई २०२१ गुरुवार, दशमी, शतभिषा नक्षत्र में प्रातः से सायं ५.०८ तक भद्रादोष है।

७ मई २०२१ शुक्रवार, एकादशी, उ.भा. नक्षत्र में वैधृतिदोष है अत्यावश्यक होने पर रात्रि ९.३३ पश्चात्।

वैशाख शुक्लपक्ष (वधूप्रवेश एवं द्विरागमन, मेष का सूर्य)

१३ मई २०२१ गुरुवार, द्वितीया, रोहिणी नक्षत्र में वधूप्रवेश-द्विरागमन लग्न २, ३।

१४ मई २०२१ शुक्रवार, तृतीया, मृगशीर्ष नक्षत्र में वधूप्रवेश- द्विरागमन लग्न २, ३।

वृषसंक्रान्ति १४ मई २०२० (रात्रि ३.१२) से द्विरागमन मुहूर्त्त बन्द हो जाता है।

(कुछ पंचांगों में नवमी, त्रयोदशी एवं पूर्णिमा को द्विरागमन मुहूर्त्त दिया है जो वृषसंक्रान्ति के कारण अशुद्ध है।)

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष (वधूप्रवेश, वृष का सूर्य)

२८ मई २०२१ शुक्रवार, द्वितीया, मूल नक्षत्र में वधूप्रवेश लग्न २, ५ है।

३१ मई २०२१ सोमवार को पंचमी, श्रवण नक्षत्र में वधूप्रवेश लग्न २ ५ है।

४ जून २०२१ शुक्रवार, दशमी, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में प्रात: ५.३३ से वधूप्रवेश ल. ३, ५ है।

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष (वधूप्रवेश, वृष एवं मिथुन का सूर्य)

११ जून २०२१ शुक्रवार, प्रतिपदा, मृगशीर्ष नक्षत्र में वधूप्रवेश लग्न २, ५ है।

१६ जून २०२१ बुधवार, सप्तमी, मधा नक्षत्रयोग में वधूप्रवेश।

२१ जून २०२१ सोमवार, द्वादशी, स्वाती नक्षत्र में दिन ९.५७ से २.०३ तक वधूप्रवेश मुहूर्त्त है।

२४ जून २०२१ गुरुवार, पूर्णिमा, मूल नक्षत्र में भद्रा दिन १.२५ पश्चात् वधूप्रवेश मुहूर्त्त है।

आषाढ़ कृष्णपक्ष (वधूप्रवेश, मिथुन का सूर्य)

२८ जून २०२१ सोमवार, पंचमी, धनिष्ठा नक्षत्र में दिन ५.३८ पश्चात् वधूप्रवेश मुहूर्त्त है।

१ जुलाई २०२१ गुरुवार, सप्तमी, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में प्रातः ५.४८ पश्चात् लग्न ५, ८।

२ जुलाई २०२१ शुक्रवार, अष्टमी, रेवती नक्षत्र में वधूप्रवेश लग्न ५, ८।

७ जुलाई २०२१ बुधवार, त्रयोदशी, रोहिणी नक्षत्र में वधूप्रवेश लग्न ५, ८।

आषाढ शुक्लपक्ष (वधूप्रवेश, मिथुन का सूर्य)

१५ जुलाई २०२१ गुरुवार, सप्तमी, हस्त नक्षत्र में रात्रि ३.४९ से वधूप्रवेश मुहूर्त्त है।

(कुछ पंचांगों में षष्ठी तिथि में वधूप्रवेश दिया हुआ है जो वर्जित हैं । ४, ६, ९,११, १४ तिथियों में वधूप्रवेश वर्जित है।)

कार्तिक शुक्लपक्ष (वधूप्रवेश एवं द्विरागमन, १६ नवम्बर २०२१ वृश्चिक का सूर्य रात्रि १२.१८ से)

१७ नवम्बर २०२१ बुधवार, त्रयोदशी, अश्विनी नक्षत्र में वधूप्रवेश एवं द्विरागमन लग्न ८।

१९ नवम्बर २०२१ शुक्रवार, पूर्णिमा,रोहिणी नक्षत्र में वधूप्रवेश-द्विरागमन रात्रि २७.४२ से सूर्योदयपूर्व ल. ८।

मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष (वधूप्रवेश एवं द्विरागमन, वृश्चिक का सूर्य)

२४ नवम्बर २०२१ बुधवार, पंचमी, पुनर्वसु नक्षत्र में वधूप्रवेश- द्विरागमन लग्न ८ है।

२५ नवम्बर २०२१ गुरुवार, षष्ठी में कतिपय पंचांगों में वधूप्रवेश- द्विरागमन मुहूर्त्त है।

२९ नवम्बर २०२१ सोमवार, दशमी, उ.फा. नक्षत्र में भद्रा दिन ११.२८ पूर्व वधूप्रवेश-द्विरागमन मुहूर्त्त है।

१ दिसम्बर २०२१ बुधवार, द्वादशी, चित्रा नक्षत्र में वधूप्रवेश-द्विरागमन लग्न ९, १२ है।

मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष (वधूप्रवेश एवं द्विरागमन, वृश्चिक का सूर्य)

६ दिसम्बर २०२१ सोमवार, द्वितीया, मूल नक्षत्र में वधूप्रवेश-द्विरागमन लग्न ९ है।

८ दिसम्बर २०२१ बुधवार, पंचमी, श्रवण नक्षत्र में वधूप्रवेश- द्विरागमन लग्न ९ है।

१० दिसम्बर २०२१ शुक्रवार, सप्तमी, शतभिषा नक्षत्र में वधूप्रवेश-द्विरागमन लग्न ९ है।

१३ दिसम्बर २०२१ सोमवार, दशमी, रेवती नक्षत्र में वधूप्रवेश-द्विरागमन लग्न ९ है।

माघ कृष्णपक्ष (वधूप्रवेश, मकर का सूर्य)

२० जनवरी २०२२ गुरुवार, द्वितीया, मघा नक्षत्र में वधूप्रवेश मुहूर्त्त लग्न ११, २ है ।

२४ जनवरी २०२२ सोमवार, सप्तमी, चित्रा नक्षत्र में भद्रा सायं ५.२७ पश्चात् वधूप्रवेश मुहूर्त्त है।

२७ जनवरी २०२२ गुरुवार, दशमी, अनुराधा नक्षत्र में भद्रा दिन ११.५२ पूर्व वधूप्रवेश मुहूर्त्त ल. ११,१२ है।

माघ शुक्लपक्ष (वधूप्रवेश, मकर का सूर्य, १३ फरवरी से कुम्भ का सूर्य)

२ फरवरी २०२२ बुधवार, प्रतिपदा, धनिष्ठा नक्षत्र में वधूप्रवेश मुहूर्त्त लग्न ११, १२ है।

१० फरवरी २०२२ गुरुवार, दशमी, रोहिणी नक्षत्र में दिन १२.०४ पश्चात् वधूप्रवेश मुहूर्त्त लग्न २ है।

१४ फरवरी २०२२ सोमवार, त्रयोदशी, पुष्य नक्षत्रमें दिन ११.५३ पश्चात् वधूप्रवेश-द्विरागमन ल. २,३,५॥

फाल्गुन कृष्णपक्ष (वधूप्रवेश एवं द्विरागमन, कुम्भ का सूर्य)

१७ फरवरी, २०२२ गुरुवार, प्रतिपदा, मघा नक्षत्र में वधूप्रवेश- द्विरागमन २, ३ है।

१८ फरवरी, २०२२ शुक्रवार, द्वितीया, उ.फा. नक्षत्र में सायं ५.१६ पश्चात् वधूप्रवेश- द्विरागमन लग्न ६ है।

इसके आगे १९ फरवरी २०२२ से को गुरुवार्धक्य आरम्भ तथा २२ फरवरी २०२२ को गुरुअस्त होने के कारण वधूप्रवेश एवं द्विरागमन मुहूर्त्त का अभाव है। २३ मार्च २० २२ को गुरु उदय होगा। आगे खरमासदोष है।

उपनयन (यज्ञोपवीत, व्रतबन्ध) मुहूर्त्त

(सम्वत् २०७८, १३ अप्रैल २०२१ से १ अप्रैल २०२२ तक)

- **उपनयन के नाम-** उपनयन को व्रतबन्ध, यज्ञोपवीत या जनेऊ संस्कार भी कहते हैं। इस संस्कार से ब्रह्मविद्या, वेदाध्ययन का अधिकार मिलता है।
- **उपनयन की आयु-** पंचम, षष्ठ, अष्टम, एकादश, द्वादश वर्ष में उपनयन कराना चाहिए।
- **उपनयन अयन-** उपनयन संस्कार केवल उत्तरायण में ही किया जाता है।
- **उपनयन मास-** माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ मास।
  (चैत्र मास में केवल ब्राह्मण बटुकों का उपनयन होता है।)
- **उपनयन के वार-** रवि, सोम, बुध, गुरू, शुक्र (शनि, मंगल वर्जित)।
- **उपनयन तिथियाँ-** **शुक्लपक्ष-** २, ३, ५, १०, ११, १२ **कृष्णपक्ष-** २, ३, ५॥
- **उपनयन नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल २२ नक्षत्र)।
- **वर्जित नक्षत्र-** भरणी, कृत्तिका, ज्येष्ठा, विशाखा, मघा (कुल ५ नक्षत्र) । पुनर्वसु नक्षत्र में विप्र बटुकों का उपनयन वर्जित है- *पुनर्वसौ कृतो विप्रः पुनः संस्कारमर्हति।* राजमार्तण्ड।
- **उपनयन लग्न-** २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १२ ◆ **वर्जित लग्न-** १, ८, १०, ११
- **उपनयन काल-** पूर्वाह्न एवं मध्याह्न (अपराह्न वर्जित)
- **उपनयन में बाणदोष-** रोगबाण में उपनयन नहीं होता है (अन्य चार बाणों में होता है) ।
  सूर्य के ८, १७, २६ अंश पर रोगबाण होता है।

चैत्र मास

इस वर्ष चैत्रशुक्लपक्ष में तिथि, नक्षत्रादि का समन्वय न होने के कारण एक भी उपनयन मुहूर्त नहीं है।

वैशाख मास

२९ अप्रैल २०२१ गुरुवार, कृष्ण तृतीया, अनुराधा नक्षत्र में भद्रा दिन १५:३८ पूर्व उपनयन मुहूर्त्त है।
समय- लग्न प्रातः वृष/मिथुन (६:४६- १०:५५), व सिंह लग्न १३:१६-१५:३१ तक

१३ मई २०२१ गुरुवार, शुक्ल द्वितीया, रोहिणी नक्षत्र में उपनयन मुहूर्त्त है।
समय- लग्न मिथुन प्रातः ७:४६- १०:०० तक, सिंह लग्न- १२:२१ से १४:३६ तक

१४ मई २०२१ शुक्रवार, अक्षय तृतीया, मृगशिरा नक्षत्र में उपनयन मुहूर्त्त है।
समय- सम्पूर्ण दिन मुहूर्त्त है।

१७ मई २०२१ सोमवार, शुक्ल पञ्चमी, के दिन षष्ठी तिथि दोष है।

२१ मई २०२१ शुक्रवार, शुक्ल दशमी, उ.फाल्गुनी नक्षत्र में प्रातः ५:४९ पश्चात उपनयन मुहूर्त्त है।
समय- लग्न सिंह– दोपहर १४:०६ से १६:२० तक

ज्येष्ठ मास

३० मई २०२१ रविवार, कृष्ण पञ्चमी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में प्रातः ८:३० पश्चात उपनयन मुहूर्त्त है।
समय- लग्न सिंह, कन्या– दोपहर ११:१८ से १५:४८ तक

१३ जून २०२१ रविवार, शुक्ल तृतीया, को पुनर्वसु दोष है। *पुनर्वसौ कृतो विप्रः पुनः संस्कारमर्हति।* कतिपय आचार्य क्षत्रिय एवं वैश्य के उपनयन हेतु पुनर्वसु को स्वीकार करते हैं।
समय- लग्न सिंह– दोपहर १०:१९ से १२:३४ तक

ज्येष्ठ मास

२० जून २०२१ रविवार, शुक्ल दशमी, चित्रा नक्षत्र में प्रातः ९:५६ भद्रा बाद उपनयन मुहूर्त्त है।
समय- लग्न सिंह– प्रातः ९:५२ से १२:०७ तक

२१ जून २०२१ सोमवार, शुक्ल एकादशी, स्वाति नक्षत्र में प्रातः ९:५६ भद्रा बाद उपनयन मुहूर्त्त है।
समय- लग्न सिंह– दोपहर १२:०४ से १४:०२(स्वाति समाप्त) तक

माघ मास

१९ जनवरी २०२२ बुधवार, कृष्ण द्वितीया, आश्लेषा नक्षत्र में उपनयन मुहूर्त्त है।
समय- लग्न वृषभ– दोपहर १३:२२ से १५:१६ तक

३ फरवरी २०२२ बुधवार, शुक्ल द्वितीया/तृतीया, शतभिषा नक्षत्र में उपनयन मुहूर्त्त है।
समय- लग्न– प्रातः कुम्भ,मीन (७:५१ - १०:४५) तक व
दोपहर वृष (१२:२२- १४:१७) तक

फाल्गुन मास

१८ फरवरी २०२२ शुक्रवार, कृष्ण द्वितीया, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में उपनयन मुहूर्त्त है।
समय- लग्न वृषभ मिथुन– दोपहर ११:२३ से १५:३२ तक

अबूझ मुहूर्त्त :- १४ मई – अक्षय तृतीया, **२० मई –** जानकी नवमी, **२६ मई –** पीपल पूर्णिमा, **२० जून –** गंगा दशहरा, **१८ जुलाई –** भड़ल्या नवमी, **२० जुलाई –** देवशयनी एकादशी, **१० सितम्बर –** गणेश चतुर्थी, **१५ अक्तूबर –** विजयादशमी, **२ नवम्बर –** धनतेरस, **१५ नवम्बर –** देवउठान एकादशी, **५ फरवरी –** वसन्त पञ्चमी, **४ मार्च –** फुलेरा दौज

प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त (सम्वत् २०७८, २०२१-२०२२)

◆ सन्तानोत्पत्ति के छठवें एवं बारहवें दिन प्रसूतिका स्नान करती है। इसे लोक में छठी एवं बरही का स्नान कहते हैं। यह संस्कार अनिवार्य कृत्य होने के कारण आवश्यक करणीय है। प्रसूतिका स्नान मुहूर्त्त में लग्न शुद्धि विचार आवश्यक नहीं है। स्नान के दिन चन्द्रमा की दिशा का विचार किया जाता है। स्नान करते समय चन्द्रमा प्रसूतिका के सम्मुख या दक्षिण होना चाहिए।

◆ **स्नान के नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, रेवती।

◆ **स्नान में मध्यम नक्षत्र-** आश्लेषा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, शतभिषा।

◆ **स्नान की तिथियाँ-** १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५, ३०।

◆ **स्नान में त्याज्य नक्षत्र-** भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, मघा, चित्रा, विशाखा, मूल, श्रवण।

◆ **स्नान के वार-** रवि, मंगल, बृहस्पति। रवीज्यकुजेषु शस्तम्। मुहूर्त्तचिन्तामणि, ५/१२।

◆ **स्नान में त्याज्य-** रिक्तातिथि (४, ९, १४) तथा ६, ८, १२ तिथियाँ। भद्रा एवं वैधृतिदोष।

चैत्र शुक्लपक्ष

१३ अप्रैल २०२१ मंगलवार, प्रतिपदा/द्वितीया, अश्विनी नक्षत्र में दिन १३.१६ तक उत्तम मुहूर्त्त है।
२५ अप्रैल २०२१ रविवार त्रयोदशी, हस्त नक्षत्र में दिन १४.०६ तक उत्तम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
२७ अप्रैल २०२१ मंगलवार, पूर्णिमा/प्रतिपदा, स्वाती नक्षत्र में उत्तम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।

वैशाख कृष्णपक्ष

२९ अप्रैल २०२१ गुरुवार, तृतीया, अनुराधा नक्षत्र में भद्रा दिन १५.३८ पूर्व उत्तम प्रसूति. मुहूर्त्त है।
६ मई २०२१ गुरुवार, एकादशी, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में मध्यम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
९ मई २०२१ रविवार, त्रयोदशी, रेवती नक्षत्र में उत्तम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।

वैशाख शुक्लपक्ष

१३ मई २०२१ गुरुवार, द्वितीया, रोहिणी नक्षत्र में उत्तम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है ।
१८ मई २०२१ मंगलवार, सप्तमी, आश्लेषानक्षत्र में दिन १०.४३ पश्चात् मध्यम प्रसूतिका. मुहूर्त्त है।

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष

२७ मई २०२१ गुरुवार, प्रतिपदा, ज्येष्ठा नक्षत्र में मध्यम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
३० मई २०२१ रविवार, पंचमी, उ.षाढ़ानक्षत्र में प्रात: ८.३० पश्चात् उत्तम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
१ जून २०२१ मंगल, सप्तमी, धनिष्ठा नक्षत्र में भद्रा सायं १७.३४ पश्चात् मध्यम प्रसूति. मुहूर्त्त है।
६ जून २०२१ रविवार, एकादशी, अश्विनीनक्षत्र में प्रातः ७.४४ पूर्व उत्तम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
१० जून २०२१ गुरुवार, अमावास्या, रोहिणी नक्षत्र में उत्तम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष

१५ जून २०२१ मंगलवार, पंचमी, आश्लेषा नक्षत्र में मध्यम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
१७ जून २०२१ गुरुवार, सप्तमी, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में मध्यम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
२० जून २०२१ रवि, एकादशी, स्वाती नक्षत्र में दिन १५.३४ पश्चात् उत्तम सूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
२२ जून २०२१ मंगल, त्रयोदशी, अनुराधा नक्षत्र में दिन १२.२४ पश्चात् उत्तम सूतिका. मुहूर्त्त है।
२४ जून २०२१ गुरुवार, पूर्णिमा, ज्येष्ठा नक्षत्र में दिन ९.०७ तक मध्यम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

२९ जून २०२१ मंगलवार, पंचमी, शतभिषा नक्षत्र में मध्यम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
१ जुलाई २०२१ गुरु, सप्तमी, उ.भाद्रपद नक्षत्र में प्रात: ५.४८ से सायं १७.०५ तक उत्तम मुहर्त है।
४ जुलाई २०२१ रविवार, दशमी, अश्विनी नक्षत्र में भद्रा प्रात: ८.०० पूर्व उत्तम प्रसूतिका. मुहूर्त्त है।

श्रावण कृष्णपक्ष

२५ जुलाई २०२१ रविवार, द्वितीया, धनिष्ठानक्षत्र में दिन १२.४९ पश्चात् मध्यम सूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
३ अगस्त २०२१ मंगलवार, एकादशी, रोहिणी नक्षत्र में भद्रा दिन १२.१० पश्चात् उत्तम मुहूर्त्त है।
८ अगस्त २०२१ रविवार, अमावास्या, आश्लेषा नक्षत्र में दिन ९.३६ पश्चात् मध्यम प्रसूतिका. मुहूर्त्त है।

श्रावण शुक्लपक्ष

१० अगस्त २०२१ मंगलवार, द्वितीया, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में दिन १०.४४ पश्चात् मध्यम मुहूर्त्त है।
१२ अगस्त २०२१ गुरुवार, पंचमी, हस्त नक्षत्र में भद्रा दिन १५.३३ पश्चात् उत्तम सूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
१५ अगस्त २०२१ रविवार, सप्तमी, स्वाती नक्षत्र में प्रातः ५.३४ से ६.२३ तक उत्तम मुहूर्त्त है।
१७ अगस्त २०२१ मंगलवार, दशमी, ज्येष्ठा नक्षत्र में मध्यम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
२२ अगस्त २०२१ रविवार, पूर्णिमा, धनिष्ठा नक्षत्र में मध्यम मुहूर्त्त है।

भाद्रपद कृष्णपक्ष

२४ अगस्त २०२१ मंगलवार, द्वितीया, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में मध्यम मुहूर्त्त है।
२५ अगस्त २०२१ गुरुवार, पंचमी, रेवती नक्षत्र में सायं १७.०८ से रात्रि ११.३० तक उत्तम मुहूर्त्त है।
५ सितम्बर २०२१ रविवार, त्रयोदशी, श्लेषा नक्षत्र में भद्रा प्रातः ६.४० पूर्व मध्यम सूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
७ सितम्बर २०२१ मंगलवार, अमावास्या, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में मध्यम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।

भाद्रपद शुक्लपक्ष

९ सितम्बर २०२१ गुरुवार, तृतीया, हस्त नक्षत्र में उत्तम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
१६ सित. २०२१ गुरुवार, दशमी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में प्रातः ६.२८ पश्चात् उत्तम सूतिकास्नान मुहूर्त्त है।

आश्विन कृष्णपक्ष

२१ सित. २०२१ मंगलवार, प्रतिपदा, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में उत्तम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त है।
२३ सित. २०२१ गुरुवार, तृतीया, रेवती/अश्विनी नक्षत्र में उत्तम प्रसूतिकास्नान मुहूत्त है।
२८ सित. २०२१ मंगलवार, सप्तमी, मृगशीर्ष नक्षत्र में उत्तम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
५ अक्टूबर २०२१ मंगलवार, अमावास्या, उ.फा. नक्षत्र में सायं ६.०७ से सूर्योदय तक उत्तम मुहूर्त्त है।

आश्विन शुक्लपक्ष

१२ अक्टू. २०२१ मंगल, सप्तमी, पू.षाढ़ा नक्षत्र में दिन १५.५३ से रात्रि १.२४ तक मध्यम मुहूर्त्त है।
१७ अक्टू. २०२१ रविवार, त्रयोदशी, पू.भा. नक्षत्र में सायं ६.०८ से सूर्योदय पूर्व तक मध्यम मुहर्त है।

प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त (सम्वत् २०७८, २०२१-२०२२)

कार्तिक कृष्णपक्ष

२१ अक्टू. २०२१ गुरुवार, प्रतिपदा, अश्विनी नक्षत्र में उत्तम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त हैं।
३१ अक्टू. २०२१ रविवार, एकादशी, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में दिन ९.३४ से मध्यम प्रसूतिका.मुहूर्त्त है।
२ नवम्बर २०२१ मंगलवार, त्रयोदशी, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में प्रात: ८.०३ पश्चात् उत्तम मुहूर्त्त है।
४ नवम्बर २०२१ गुरुवार, अमावास्या, स्वाती नक्षत्र में भद्रा सायं १७.५४ पश्चात् उत्तम मुहूर्त्त है।

कार्तिक शुक्लपक्ष

७ नवम्बर २०२१ रविवार, तृतीया, ज्येष्ठा नक्षत्र में मध्यम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
९ नवम्बर २०२१ मंगलवार, पंचमी, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में मध्यम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
१४ नव. २०२१ रविवार, दशमी, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में मध्यम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
१६ नव.२०२१ मंगलवार, त्रयोदशी, रेवती नक्षत्र में प्रातः ८.४९ से उत्तम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।

मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष

२१ नव. २०२१ रविवार, द्वितीया, मृगशीर्ष नक्षत्र में उत्तम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त हैं।
३० नव. २०२१ मंगलवार, एकादशी, हस्त नक्षत्र में उत्तम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
२ दिसम्बर २०२१ गुरुवार, त्रयोदशी, स्वाती नक्षत्र में उत्तम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।

मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष

५ दिसम्बर २०२१ रविवार, प्रतिपदा, ज्येष्ठा नक्षत्र में दिन ९.५३ तक मध्यम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
१४ दिस. २०२१ मंगलवार, एकादशी, अश्विनी नक्षत्र में भद्रा दिन १२.४० पूर्व उत्तम मुहूर्त्त हैं।
१९ दिस. २०२१ रविवार पूर्णिमा, मृगशीर्ष नक्षत्र में उत्तम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।

पौष कृष्णपक्ष

२३ दिस. २०२१ गुरुवार, पंचमी, श्लेषा नक्षत्र में दिन १५.२० से रात्रि १२.१६ तक मध्यम मुहूर्त्त है।
२६ दिस. २०२१ रविवार, सप्तमी, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में उत्तम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
२ जनवरी २०२२ रविवार, अमावास्या, पू.षाढ़ा नक्षत्र में दिन १६.३७ पश्चात् मध्यम सूति. मुहूर्त्त है।

पौष शुक्लपक्ष

४ जनवरी २०२२ मंगलवार, द्वितीया, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में उत्तम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
६ जनवरी २०२२ गुरुवार, पंचमी, शतभिषा नक्षत्र में भद्रा सायं १७.०१ पश्चात् मध्यम मुहूर्त्त है।
९ जनवरी २०२२ रविवार, सप्तमी, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में दिन ११.४९ तक उत्तम सूतिका. मुहूर्त्त है।

माघ कृष्णपक्ष

२० जन. २०२२ गुरुवार, तृतीया, आश्लेषा नक्षत्र में प्रात: ७.५८ तक मध्यम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
२७ जन. २०२२ गुरुवार, दशमी, अनुराधा नक्षत्र में भद्रा दिन ११.५२ पूर्व उत्तम मुहूर्त्त है।
३० जन. २०२२ रविवार, त्रयोदशी, पू.षाढ़ा नक्षत्र में भद्रा दिन १५.४४ पूर्व मध्यम प्रसूति. मुहूर्त्त है।

माघ शुक्लपक्ष

३ फरवरी २०२२ गुरुवार, द्वितीया, शतभिषा नक्षत्र में मध्यम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
१० फर. २०२२ गुरुवार, दशमी, रोहिणी नक्षत्र में दिन १२.०६ पश्चात् उत्तम सूतिकास्नान मुहूर्त्त है।

फाल्गुन कृष्णपक्ष

१७ फर. २०२२ गुरुवार, प्रतिपदा, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में दिन १६.४० पश्चात् मध्यम मुहूर्त्त है।

फाल्गुन शुक्लपक्ष

३ मार्च २०२२ गुरुवार, प्रतिपदा, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में मध्यम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
१५ मार्च २०२२ मंगल, त्रयोदशी, आश्लेषानक्षत्र में दिन १२.०९ से रात्रि १०.५३ तक मध्यम मुहूर्त्त है।

चैत्र कृष्णपक्ष

२४ मार्च २०२२ गुरुवार, सप्तमी, ज्येष्ठा नक्षत्र में मध्यम प्रसूतिकास्नान मुहूर्त्त है।
२९ मार्च २०२२ मंगलवार, त्रयोदशी, शतभिषा नक्षत्र में दिन १४.४० पश्चात् मध्यम मुहूर्त्त है ।
३१ मार्च २०२२ गुरुवार, अमावास्या, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में दिन १२.२० पश्चात् उत्तम मुहूर्त्त है।

अबूझ मुहूर्त :- **१४ मई** – अक्षय तृतीया, **२० मई** – जानकी नवमी, **२६ मई** – पीपल पूर्णिमा, **२० जून** – गंगा दशहरा, **१८ जुलाई** – भड़ल्या नवमी, **२० जुलाई** – देवशयनी एकादशी, **१० सितम्बर** – गणेश चतुर्थी, **१५ अक्तूबर** – विजयादशमी, **२ नवम्बर** – धनतेरस, **१५ नवम्बर** – देवउठान एकादशी, **५ फरवरी** – वसन्त पञ्चमी, **४ मार्च** – फुलेरा दौज

होलिका दहन मुहूर्त्त विचार

होलिका दहन फाल्गुन शुक्लपक्ष की भद्रारहित प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा को ग्राह्य है। धर्मशास्त्र के सूक्ष्म विचार से यही सिद्ध होता है कि इस वर्ष १७ मार्च २०२२ में रात्रि १:२२ के पश्चात् ही होलिका दहन मान्य होगा।

दिनार्धात् परतो या स्यात् फाल्गुनी पूर्णिमा यदि। रात्रौ भद्रावसाने तु होलिकां तत्र पूजयेत्॥ –भविष्योत्तर

अर्थात् यदि पहले दिन प्रदोष के समय भद्रा हो और दूसरे दिन सूर्यास्त से पहले पूर्णिमा समाप्त हो जाए तो भद्रा के समाप्त होने की प्रतीक्षा करके सूर्योदय होने से पहले रात्रि में होलिकादाह करना चाहिए। क्योंकि-

नन्दायां नरकं घोरं भद्रायां देशनाशनम्। दुर्भिक्षं च चतुर्दश्यां करोत्येव हुताशनः॥ –विद्याविनोद

प्रतिपदा में होलिकादाह से नरक, भद्रा में होलिकादाह से देशनाश, और चतुर्दशी में करने से दुर्भिक्ष होता है।

प्रतिपद्भूतभद्रासु यार्चिता होलिका दिवा। संवत्सरं तु तद्राष्ट्रं पुरं दहति साद्‌भुतम्॥ – चन्द्रप्रकाश

प्रतिपदा, चतुर्दशी, भद्रा और दिन, इनमें होली जलाना सर्वथा त्याज्य है। कुयोगवश यदि जला दी जाए तो वहाँ के राज्य, नगर और मनुष्य अद्‌भुत उत्पातों से एक ही वर्ष में हीन हो जाते हैं।

भद्रायां दीपिता होली राष्ट्रभंगं करोति वै। - पुराणसमुच्चय, भद्रा में होली दाह से राष्ट्रभंग होता है।

अतः उपरोक्त प्रचुर प्रमाणों से सिद्ध है कि पूर्णिमाव्यापिनी रात्रिपर्यन्त कभी भी भद्रारहित काल मिलने पर भद्रा में होलिका दाह पूर्णतः शास्त्रविरुद्ध एवं अनिष्टकारी है।

भद्रा पुच्छकाल में होलिका दहन केवल तब ही होता है जब यदि पहले दिन भद्रारहित प्रदोष न मिले, रात्रिभर भद्रा रहे (सूर्योदय होने से पहले न उतरे) और दूसरे दिन सूर्यास्त से पहले ही पूर्णिमा समाप्त हो जाए, तो ऐसे अवसर में सूर्योदय पूर्व भद्रा के पुच्छकाल में होलिकादीपन कर देना चाहिए।

पर चूँकि भद्राकाल सूर्योदय पर्यन्त व्याप्त नहीं है और रात्रि १:२२ पर ही समाप्त हो रहा है अतः रात्रि १:२२ से पहले होलिका दहन शास्त्र एवं परम्परा के विरुद्ध होगा। अपनी सुविधा हेतु शास्त्रवचनों का अनादर कथमपि कल्याण का हेतु नहीं है। **अतः १७ मार्च २०२२ को रात्रि १:२२ पश्चात शास्त्रवचन एवं परम्परासिद्ध उत्तम मुहूर्त्त में होलिकादीपन कर उत्तम शुभफल की प्राप्ति करें।**

मुण्डन मुहूर्त्त

(सम्वत् २०७८, १३ अप्रैल २०२१ से १ अप्रैल २०२२ तक)

- **मुण्डन के नाम-** मुण्डन को चौल, चूड़ा या वपन कहते हैं।
- **मुण्डन काल-** एक वर्ष के भीतर, तीसरे वर्ष या विषम वर्ष में।
- **मुण्डन अयन-** मुण्डन को उत्तरायण में किया जाता है- *"चौलोपवीतं नैवयाम्यायने स्यात्।"* मुहूर्त्तचिन्तामणि, प्रकरण ५, श्लोक २६
- **मुण्डन मास-** माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़ मास में हरिशयनपूर्व
- **मुण्डनमें वर्जितमास-** चैत्र में मुण्डन वर्जित है- चैत्रे चौलं न कारयेत्।
- **मुण्डन पक्ष-** कृष्णपक्ष में पंचमी तिथि पर्यन्त एवं सम्पूर्ण शुक्लपक्ष में।
- **मुण्डन के वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र- *ज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम्।*
- **मुण्डन नक्षत्र-** अश्विनी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (१२ नक्षत्र)।
- **वर्जित नक्षत्र-** रोहिणी, तीनों उत्तरा एवं अनुराधा (५ नक्षत्र)। इसके अतिरिक्त भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, आश्लेषा, मघा, तीनों पूर्वा, विशाखा, मूल भी वर्जित हैं।
- **मुण्डन लग्न-** २, ३, ४, ५, ६, ७, ९, १२ ◆ **वर्जित लग्न-** १, ८, १०, ११
- **मुण्डन तिथियाँ-** २,३,५,७,१०,११,१३ (कुल ७)
- **वर्जित तिथियाँ-** १,४,६,८,९, १२, १४, १५ ३०
- **मुण्डन समय-** पूर्वाह्न एवं मध्याह्न

वैशाख मास

१४ मई २०२१ शुक्रवार, अक्षय तृतीया, मृगशिरा नक्षत्र में मुण्डन मुहूर्त्त है।
समय- सम्पूर्ण दिन मुहूर्त्त है।

१७ मई २०२१ सोमवार, शुक्ल पञ्चमी, पुनर्वसु नक्षत्र में मुण्डन मुहूर्त्त है।
समय- लग्न वृष, मिथुन– प्रातः ५:३९ से ९:४४ तक

२४ मई २०२१ सोमवार, शुक्ल त्रयोदशी, स्वाती नक्षत्र में प्रातः ९:१६ पश्चात मुण्डन मुहूर्त्त है।
समय- लग्न सिंह, कन्या– दोपहर १३:५४ से १८:२७ तक

२७ मई २०२१ गुरुवार, कृष्णद्वितीया, ज्येष्ठा नक्षत्र में दोपहर १४:४३(ति.१) पश्चात मुण्डनमुहूर्त्त है।
समय- लग्न तुला– दोपहर १५:५७ से १८:१५ तक

ज्येष्ठ मास

३१ मई २०२१ सोमवार, कृष्ण पञ्चमी, श्रावण नक्षत्र में प्रातः ७:०१ पूर्व मुण्डन मुहूर्त्त है।

२१ जून २०२१ सोमवार, शुक्ल एकादशी, स्वाति नक्षत्र में प्रातः ९:५६ भद्रा पश्चात मुण्डन मुहूर्त्त है।
समय- लग्न कन्या– दोपहर १२:०४ से १४:०२(स्वाति समाप्त) तक

आषाढ़ मास

१६ जुलाई २०२१ शुक्रवार, शुक्ल सप्तमी, हस्त नक्षत्र में मुण्डन मुहूर्त्त है।
समय- लग्न सिंह, कन्या– प्रातः ८:१० से १२:४० तक

माघ मास

२ फरवरी २०२२ बुधवार, शुक्ल द्वितीया, धनिष्ठा नक्षत्र में प्रातः ९:५२(ति.१) पश्चात।
समय- लग्न मीन, वृष– प्रातः (९:२४- १०:४९) व दोप. (१२:२६- १४:२१)

३ फरवरी २०२२ बुधवार, शुक्ल द्वितीया/तृतीया, शतभिषा नक्षत्र में मुण्डन मुहूर्त्त है।
समय- लग्न– प्रातः मीन (९:२१ - १०:४५) तक व
दोपहर वृष/मिथुन (१२:२२- १६:३१) तक

७ फरवरी २०२२ सोमवार, शुक्ल सप्तमी, अश्विनी नक्षत्र में प्रातः ७:४० पश्चात मुण्डन मुहूर्त्त है।
समय- लग्न– प्रातः मीन (९:०५ - १०:३०) तक व
दोपहर वृष/मिथुन (१२:०७- १६:१५) तक

११ फरवरी २०२२ शुक्रवार, शुक्ल दशमी, मृगशिरा नक्षत्र में मुण्डन मुहूर्त्त है।
समय- लग्न– प्रातः मीन (८:५९ - १०:१४) तक व
दोपहर वृष/मिथुन (११:५१- १५:५९) तक

१४ फरवरी २०२२ सोमवार, शुक्ल त्रयोदशी, पुनर्वसु नक्षत्र में मुण्डन मुहूर्त्त है।
समय- लग्न– प्रातः मीन (०८:३७ - १०:०२) तक व
दोपहर वृष/मिथुन (११:३९- १५:४८) तक

अबूझ मुहूर्त्त :- १४ मई – अक्षय तृतीया, **२० मई** – जानकी नवमी, **२६ मई** – पीपल पूर्णिमा, **२० जून** – गंगा दशहरा, **१८ जुलाई** – भड़ल्या नवमी, **२० जुलाई** – देवशयनी एकादशी, **१० सितम्बर** – गणेश चतुर्थी, **१५ अक्तूबर** – विजयादशमी, **२ नवम्बर** – धनतेरस, **१५ नवम्बर** – देवउठान एकादशी, **५ फरवरी** – वसन्त पञ्चमी, **४ मार्च** – फुलेरा दौज

अन्नप्राशन मुहूर्त्त (सम्वत् २०७८, २०२१-२०२२)

◆ **अन्नप्राशन तिथियाँ-** २, ३, ५, ७, १०, १३, १५ ◆**अन्नप्राशन नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल १६)

◆ **अन्नप्राशन वार-** सोम, बुध, गुरू, शुक्र (कुल ४ वार)। ◆ **अन्नप्राशन मास-** पंचम मास से आरम्भ कर विषम मास (कन्याओं का)।, षष्ठ मास से आरम्भ कर सम मास (बालकों का)।

चैत्र मास

१६ अप्रैल २०२१	शुक्रवार, शुक्ल पंचमी, रोहिणी नक्षत्र में दिन ३.०४ से अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
१९ अप्रैल २०२१	सोमवार, शुक्ल सप्तमी पुनर्वसु नक्षत्र में दिन में सूर्यास्त पूर्व अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
२६ अप्रैल २०२१	सोमवार, पूर्णिमा, चित्रा नक्षत्र में दिन १२.०० पश्चात् अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।

वैशाख मास

२९ अप्रैल २०२१	गुरुवार, कृष्ण तृतीया, अनुराधा नक्षत्र में भद्रा दिन ३.३८ पूर्व अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
३ मई २०२१	सोमवार, कृष्ण सप्तमी, उ.षाढ़ा नक्षत्र में भद्रा प्रातः ७.३२ पश्चात् अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
१३ मई २०२१	गुरुवार, शुक्ल द्वितीया, रोहिणी नक्षत्र में सम्पूर्ण दिन अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
१४ मई २०२१	शुक्रवार शुक्ल तृतीया, मृगशीर्ष नक्षत्र में सम्पूर्ण दिन अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
२१ मई २०२१	शुक्रवार, शुक्ल दशमी, उ.फाल्गुनी नक्षत्र में दिन १०.४४ पश्चात् अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
२४ मई २०२१	सोमवार, शुक्ल त्रयोदशी, चित्रा/स्वाती नक्षत्र में अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
२६ मई २०२१	बुधवार, पूर्णिमा, अनुराधा नक्षत्र में भद्रा प्रातः ६.२३ पश्चात् अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।

ज्येष्ठ मास

३१ मई २०२१	सोमवार, कृष्ण पंचमी, श्रवण नक्षत्र में प्रातः ७.०० तक अन्नप्राशन मुहुर्त है।
४ जून २०२१	शुक्रवार, कृष्ण दशमी, उ.भाद्रपद नक्षत्र में भद्रा पूर्व १७.५६ तक अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।

आषाढ़ मास

१ जुलाई २०२१	गुरुवार, कृष्ण सप्तमी, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में प्रातः ५.४८ से अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
७ जुलाई २०२१	बुधवार, कृष्ण त्रयोदशी, रोहिणी नक्षत्र में अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
१६ जुलाई २०२१	शुक्रवार, शुक्ल सप्तमी, हस्त नक्षत्र में अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।

श्रावण मास

२६ जुलाई २०२१	सोमवार, कृष्ण तृतीया, धनिष्ठा नक्षत्र में भद्रा दिन १६.४६ पूर्व तक अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
२८ जुलाई २०२१	बुधवार, कृष्ण पंचमी, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में दिन १३.२५ पश्चात् अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
६ अगस्त २०२१	शुक्रवार, कृष्णत्रयोदशी, पुनर्वसु न. में प्रातः ६.३१ से भद्रा सायं १७.१४ तक मुहूर्त्त है।
११ अगस्त २०२१	बुधवार, शुक्लतृतीया, उ. फाल्गुनी नक्षत्र में दिन १०.३५ से सायं १६.५९ तक मुहूर्त्त है।
१३ अगस्त २०२१	शुक्रवार, शुक्ल पंचमी, हस्त नक्षत्र में प्रातः ९.०४ तक अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
२० अगस्त २०२१	शुक्रवार, शुक्ल त्रयोदशी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में सम्पूर्ण दिन अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।

भाद्रपद मास

२७ अगस्त २०२१	शुक्रवार, कृष्ण पंचमी, अश्विनी नक्षत्र में सायं १८:२३ तक अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
१ सितम्बर २०२१	बुधवार, कृष्ण दशमी, मृगशीर्ष नक्षत्र में प्रातः से दिन ११.२८ तक अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
८ सितम्बर २०२१	बुधवार, शुक्ल द्वितीया, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में सायं १७:५० तक अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
९ सितम्बर २०२१	गुरुवार, शुक्ल तृतीया, हस्त नक्षत्र में सायं १६:५९ तक अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
१३ सितम्बर २०२१	सोमवार, शुक्लसप्तमी, अनुराधा नक्षत्र में प्रातः से दिन ११.०८ तक अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।

आश्विन मास

२२ सितम्बर २०२१	बुधवार, कृष्ण द्वितीया, रेवती नक्षत्र में अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
२३ सितम्बर २०२१	गुरुवार, कृष्ण तृतीया रेवती/अश्विनी नक्षत्र में अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
८ अक्टूबर २०२१	शुक्रवार, शुक्ल द्वितीया, स्वाती नक्षत्र में अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
१५ अक्टूबर २०२१	शुक्रवार, शुक्ल दशमी, श्रवण नक्षत्र में दिन १२.१५ तक अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
१८ अक्टूबर २०२१	सोमवार, शुक्ल १३, उ.भाद्र. नक्षत्र में दिन ११.५२ से सायं १७.५६ तक मुहूर्त्त है।
२० अक्टूबर २०२१	बुधवार, पूर्णिमा, रेवतीनक्षत्र में प्रातः ६:३९ से दिन १४.०१ तक अन्नप्रा. मुहूर्त्त है।

कार्तिक मास

२५ अक्टूबर २०२१	सोमवार, कृष्ण पंचमी, मृगशीर्ष नक्षत्र में अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
२९ अक्टूबर २०२१	गुरुवार, कृष्ण सप्तमी, पुष्य नक्षत्र में प्रातः ६:३७ से ७.४४ तक अन्नप्रा. मुहूर्त्त है।
११ नवम्बर २०२१	गुरुवार, शुक्लसप्तमी, श्रवणनक्षत्र में सूर्योदय से दिन ११.४० तक अन्नप्रा. मुहूर्त्त है।
१७ नवम्बर २०२१	बुधवार, शुक्लत्रयोदशी, अश्विनी नक्षत्र में प्रातः ६:५१ से दिन ९.४३ तक मुहूर्त्त है।

मार्गशीर्ष मास

२४ नवम्बर २०२१	बुधवार, कृष्ण पंचमी, पुनर्वसु/पुष्य नक्षत्र में अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
२९ नवम्बर २०२१	सोमवार, कृष्ण दशमी, उ.फा. नक्षत्र में सूर्योदय से भद्रा ११.२७ पूर्व तक मुहूर्त्त है।
२ दिसम्बर २०२१	गुरुवार, कृष्ण त्रयोदशी, स्वाती नक्षत्र में अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
८ दिसम्बर २०२१	बुधवार, शुक्ल पंचमी, श्रवण नक्षत्र में अन्नप्राशन मुहूर्त्त है ।
१० दिसम्बर २०२१	शुक्रवार, शुक्ल सप्तमी, शतभिषा नक्षत्र में अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
१३ दिसम्बर २०२१	सोमवार, शुक्ल दशमी, रेवती नक्षत्र में अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।

माघ मास

२७ जनवरी २०२२	गुरुवार, कृष्णदशमी, अनुराधा नक्षत्र में सूर्योदय से भद्रा दिन ११.५२ पूर्व मुहूर्त्त है।
२ फरवरी २०२२	बुधवार, शुक्ल द्वितीया, धनिष्ठा नक्षत्र में प्रातः ९.५२ पश्चात् अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
३ फरवरी २०२२	गुरुवार, शुक्ल द्वितीया/तृतीया, शतभिषा नक्षत्र में अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
७ फरवरी २०२२	सोमवार, शुक्ल सप्तमी, अश्विनी नक्षत्र में प्रातः ७.४० पश्चात् अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
११ फरवरी २०२२	शुक्रवार, शुक्लदशमी, मृगशीर्ष नक्षत्र में प्रातः ७:१२ से दिन १४.१० तक मुहूर्त्त है।
१४ फरवरी २०२२	सोमवार, शुक्ल त्रयोदशी, पुनर्वसु/पुष्य नक्षत्र में अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।

फाल्गुन मास

२१ फरवरी २०२२	सोमवार, कृष्ण पंचमी, चित्रा नक्षत्र में अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
२८ फरवरी २०२२	सोमवार, कृष्ण त्रयोदशी, श्रवण नक्षत्र में अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।
४ मार्च २०२२	शुक्रवार शुक्ल द्वितीया, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में अन्नप्राशन मुहूर्त्त है।

१४ मार्च २०२२ को रात्रि २.३९ से खरमासारम्भ हो रहा है।

अबूझ मुहूर्त्त :- १४ मई – अक्षय तृतीया, **२० मई –** जानकी नवमी, **२६ मई –** पीपल पूर्णिमा,
२० जून – गंगा दशहरा, **१८ जुलाई –** भड़ल्या नवमी, **२० जुलाई –** देवशयनी एकादशी,
१० सितम्बर – गणेश चतुर्थी, **१५ अक्तूबर –** विजयादशमी, **२ नवम्बर –** धनतेरस,
१५ नवम्बर – देवउठान एकादशी, **५ फरवरी –** वसन्त पञ्चमी, **४ मार्च –** फुलेरा दौज

गृहारम्भ मुहूर्त्त (नींव)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

(सम्वत् २०७८, १३ अप्रैल २०२१ से १ अप्रैल २०२२ तक)

- **गृहारम्भ मास-** वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, पौष एवं फाल्गुन
- **गृहारम्भ नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल १३ नक्षत्र)
- **गृहारम्भ तिथि-** १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथियाँ
- **गृहारम्भ वार-** सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार, शनिवार
- **गृहारम्भ में सूर्यराशि-** जब सूर्य मेष, वृष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर या कुम्भ राशिस्थ हो

- **गृहारम्भ में वर्ज्य-** अग्निबाण, पंचक और भूशयनदोष (परिहारपूर्वक)
  - चैत्र, ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, कार्तिक और माघ में गृहारम्भ नहीं करना चाहिए।
  - चैत्र में शोक, ज्येष्ठ में मृत्यु, आषाढ़ में पशुनाश, भाद्रपद में मृत्यु, आश्विन में कलह, कार्तिक में हानि और माघ में अग्निभय उत्पन्न होता है।
- **गृहारम्भ लग्न-** २/३/५/६/८/९/११/१२
- **लग्न शुद्धि-** लग्न से १/४/७/१०/५/९ में शुभग्रह, लग्न से ३/६/११ में पापग्रह

वैशाख कृष्णपक्ष (२८ अप्रैल से ११ मई २०२१ तक)

२८ अप्रैल २०२१ — बुधवार, द्वितीया, अनुराधा नक्षत्र में रात्रि ७.५९ पश्चात् गृहारम्भ मुहूर्त्त है।
समय- लग्न वृश्चिक– रात्रि २०:०९ से २२:२८ तक

२९ अप्रैल २०२१ — गुरुवार, तृतीया, अनुराधा नक्षत्र में भद्रा दिन १५.३८ पूर्व गृहारम्भ मुहूर्त्त है।
समय- लग्न सिंह, कन्या– दोपहर १३:१६ से १५:३८ तक

वैशाख शुक्लपक्ष (१२ मई से २६ मई २०२१ तक)

१४ मई २०२१ — शुक्रवार, अक्षय तृतीया, सम्पूर्ण दिन अबूझ गृहारम्भ मुहूर्त्त है।

२२ मई २०२१ — शनिवार, एकादशी, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में गृहारम्भ मुहूर्त्त है।
समय- लग्न वृष– प्रातः ७:११ से ९:२४ तक

२४ मई २०२१ — सोमवार, त्रयोदशी, स्वाती नक्षत्र में गृहारम्भ मुहूर्त्त है।
समय- लग्न सिंह, कन्या– दोपहर १३:५४ से १८:२७ तक

२६ मई २०२१ — बुधवार, पूर्णिमा, अनुराधा नक्षत्र में गृहारम्भ मुहूर्त्त है।
समय- लग्न सिंह– दोपहर १३:४६ से १६:०० तक

श्रावण कृष्णपक्ष (२५ जुलाई से ८ अगस्त २०२१ तक)

२६ जुलाई २०२१ — सोमवार, तृतीया, धनिष्ठा नक्षत्र में गृहारम्भ मुहूर्त्त है।
समय- लग्न सिंह, कन्या– प्रातः ०७:३० से १२:०१ तक

श्रावण शुक्लपक्ष (९ अगस्त से २२ अगस्त २०२१ तक)

१९ अगस्त २०२१ — गुरुवार, द्वादशी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में रात्रि १०.३३ पश्चात् गृहारम्भ मुहूर्त्त है।

२० अगस्त २०२१ — शुक्रवार, त्रयोदशी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में गृहारम्भ मुहूर्त्त है।
समय- लग्न सिंह, कन्या– प्रातः ०८:०८ से १२:४१ तक

मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष (२० नवम्बर से ४ दिसम्बर २०२१ तक)

२० नवम्बर २०२१ — शनिवार, प्रतिपदा, रोहिणी नक्षत्र में गृहारम्भ मुहूर्त्त है।
समय- स्थिर द्विस्वभाव लग्नों में समस्त दिन मुहूर्त्त है।

मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष (५ दिसम्बर से १९ दिसम्बर २०२१ तक)

१० दिसम्बर २०२१ — शुक्रवार, सप्तमी, शतभिषा नक्षत्र में गृहारम्भ मुहूर्त्त है।
समय- लग्न कुम्भ– दोपहर ११:२९ से १२:५७ तक

१३ दिसम्बर २०२१ — सोमवार, दशमी, रेवती नक्षत्र में गृहारम्भ मुहूर्त्त है।
समय- लग्न कुम्भ– दोपहर ११:१७ से १२:४५ तक

माघ शुक्लपक्ष (२ फरवरी से १६ फरवरी २०२२ तक)

५ फरवरी २०२२ — शनिवार, वसन्तपंचमी, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में गृहारम्भ मुहूर्त्त है।
समय- स्थिर द्विस्वभाव लग्नों में समस्त दिन मुहूर्त्त है।

१० फरवरी २०२२ — गुरुवार, दशमी, रोहिणी नक्षत्र में दिन १२.०५ पश्चात् गृहारम्भ मुहूर्त्त है।

११ फरवरी २०२२ — शुक्रवार, दशमी, मृगशीर्ष नक्षत्र में गृहारम्भ मुहूर्त्त है।
समय- लग्न कुम्भ, मीन– प्रातः ०७:२० से १०:१४ तक

१४ फरवरी २०२२ — सोमवार, त्रयोदशी, पुष्य नक्षत्र में दिन ११.५३ पश्चात् गृहारम्भ मुहूर्त्त हैं।
समय- लग्न कुम्भ, मीन– प्रातः ०८:३७ से ११:३८ तक

फाल्गुन कृष्णपक्ष (१७ फरवरी से २ मार्च २०२२ तक)

१८ फरवरी २०२२ — शुक्रवार, द्वितीया, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में गृहारम्भ मुहूर्त्त है।
समय- सायं १७:१६ के बाद सिंह लग्न में– १७:५३ से २०:०८ तक

१९ फरवरी २०२२ — शनिवार, तृतीया, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में भद्रा दिन १०.३७ पूर्व गृहारम्भ मुहूर्त्त है।

गृहप्रवेश मुहूर्त्त (सम्वत् २०७८, २०२१-२०२२)

◆ **नूतन गृहप्रवेश मास- माघ, फाल्गुन, वैशाख एवं ज्येष्ठ मास (सौम्यायन) का गृहप्रवेश सर्वोत्तम होता है-** अथ प्रवेशो नवसद्मनश्च सौम्यायने जीवसिते बलाढ्ये (वसिष्ठसंहिता)। अथ सौम्यायने कार्यं नववेश्मप्रवेशनम् (नारदसंहिता)। माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठमासेषु शोभनः। प्रवेशो मध्यमो ज्ञेयः सौम्याकार्त्तिक- मासयोः (नारदसंहिता) (सौम्य = मार्गशीर्ष)।

◆ **जीर्ण गृहप्रवेश मास-** श्रावण, कार्त्तिक एवं मार्गशीर्ष- मार्गोर्जयोः श्रावणिकेऽपि सत्स्यात्।

◆ **नूतन गृहप्रवेश नक्षत्र-** रोहिणी, मृगशीर्ष, तीनों उत्तरा, चित्रा, अनुराधा, रेवती। (कुल ८ नक्षत्र)

◆ **गृहप्रवेश में वर्जित मास** - चैत्र, आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, पौष मासों में गृहप्रवेश सर्वथा वर्जित है। गृहप्रवेश में चान्द्रमास लिया जाता है, सौरमास नहीं। चैत्रेऽर्थहानिः । परेषु नूनं हानिप्रदं पुत्रभयप्रदं च। (वसिष्ठसंहिता)

◆ **गृहप्रवेश वार** - सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार और शनिवार

◆ **जीर्ण गृहप्रवेश नक्षत्र** - शतभिषा, पुष्य, स्वाती, धनिष्ठा- अम्बुपेज्यानिलवासवेषु।(मु.चि. प्रक.१३, श्लो.२)

◆ **गृहप्रवेश तिथि-** १, २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ तिथियाँ

वैशाख कृष्णपक्ष (नूतन गृहप्रवेश)

५ मई २०२१	बुधवार, दशमी, शतभिषा नक्षत्र में गृहप्रवेश मुहूर्त्त है रात्रि लग्न ५,६
७ मई २०२१	शुक्रवार, एकादशी/द्वादशी, उत्तरा भाद्रपदनक्षत्र में गृहप्रवेश मुहूर्त्त है। लग्न ५, ६
८ मई २०२१	शनिवार, द्वादशी/त्रयोदशी रेवती नक्षत्र में गृहप्रवेश मुहूर्त्त है। लग्न ५, ६

वैशाख शुक्लपक्ष (नूतन गृहप्रवेश)

२१ मई २०२१	शुक्रवार, दशमी, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में गृहप्रवेश मुहूर्त्त है। लग्न ५, ६
२२ मई २०२१	शनि, एकादशी, उ.फाल्गुनी नक्षत्र में भद्रा दिन १५.२६ पूर्व गृहप्र. मुहूर्त्त है। ल.५,६

ज्येष्ठ कृष्णपक्ष (नूतन गृहप्रवेश)

२ जून २०२१	बुधवार, अष्टमी, शतभिषा नक्षत्र में गृहप्रवेश मुहूर्त्त है लग्न ५, ६
४ जून २०२१	शुक्रवार, दशमी, उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में भद्रा सायं १७.५६ पूर्व गृहप्रवेश मुहुर्त्त है।
५ जून २०२१	शनिवार, एकादशी, रेवती नक्षत्र में गृहप्रवेश मुहूर्त्त है। लग्न ५, ६

ज्येष्ठ शुक्लपक्ष (नूतन गृहप्रवेश)

१८ जून २०२१	शुक्रवार, अष्टमी, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में गृहप्रवेश मुहूर्त्त है। लग्न ५, ६
१९ जून २०२१	शनिवार, दशमी, चित्रा नक्षत्र में सायं १६.५५ पश्चात् गृहप्रवेश मुहूर्त्त है।
२१ जून २०२१	सोमवार, एकादशी, स्वाती नक्षत्र में गृहप्रवेश मुहूर्त्त है। लग्न ५, ६

श्रावण कृष्णपक्ष (जीर्णादि गृहप्रवेश)

४ अगस्त २०२१	बुधवार, एकादशी, मृगशीर्ष नक्षत्र में गृहप्रवेश मुहूर्त्त है। लग्न ८

श्रावण शुक्लपक्ष (जीर्णादि गृहप्रवेश)

१३ अग. २०२१	शुक्रवार, पंचमी, चित्रा नक्षत्र में गृहप्रवेश मुहूर्त्त हैं। लग्न ८
१४ अग. २०२१	शनिवार, षष्ठी, स्वाती नक्षत्र में गृहप्रवेश मुहूर्त्त है। लग्न ८
२० अग. २०२१	शुक्रवार, त्रयोदशी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में गृहप्रवेश मुहूर्त्त है। लग्न ५, ८

कार्तिक कृष्णपक्ष (जीर्णादि गृहप्रवेश)

१ नव. २०२१	सोमवार, द्वादशी, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में गृहप्रवेश मुहूर्त्त है। लग्न ९

कार्तिक शुक्लपक्ष (जीर्णादि गृहप्रवेश)

१० नव. २०२१	बुधवार, षष्ठी/सप्तमी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में गृहप्रवेश मुहूर्त्त हैं । लग्न ९
१५ नव. २०२१	सोम, द्वादशी, उ.भाद्रपद नक्षत्र में भद्रा प्रातः ८.२६ पश्चात् गृहप्रवेश मुहूर्त्त है। ल.९

मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष (जीर्णादि गृहप्रवेश)

२० नव. २०२१	शनिवार, प्रतिपदा, रोहिणी नक्षत्र में गृहप्रवेश मुहूर्त्त है। लग्न ९
२९ नव. २०२१	सोमवार, दशमी, उ.फाल्गुनी नक्षत्र में भद्रा दिन ११.२९ पूर्व गृहप्र. मुहूर्त्त है। ल. ८
१ दिस. २०२१	बुधवार, द्वादशी, चित्रा नक्षत्र में गृहप्रवेश मुहूर्त्त है। लग्न ९ ११
२ दिस. २०२१	गुरुवार, त्रयोदशी, स्वाती नक्षत्र में दिन १४.३८ पूर्व गृहप्रवेश मुहूर्त्त है ल. ९

मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष (जीर्णादि गृहप्रवेश)

१० दिस. २०२१	शुक्रवार, सप्तमी, शतभिषा नक्षत्र में गृहप्रवेश मुहूर्त्त है
१३ दिस. २०२१	सोमवार, दशमी, रेवती नक्षत्र मे गृहप्रवेश मुहूर्त्त है । लग्न ११, १२

माघ कृष्णपक्ष (जीर्णादि गृहप्रवेश)

२७ जन. २०२२	गुरुवार, दशमी, अनुराधा नक्षत्र में भद्रा दिन ११.५२ पूर्व गृहप्रवेश मुहुर्त है। ल. १२

माघ शुक्लपक्ष (जीर्णादि गृहप्रवेश)

५ फर. २०२२	शनि, पंचमी, उ.भा./रेवती नक्षत्र में भद्रा प्रात: ७.०५ पश्चात् गृहप्र. मुहूर्त्त है।ल.१२
१० फर. २०२२	गुरुवार, दशमी, रोहिणी नक्षत्र में दिन १२.०४ पश्चात् गृहप्रवेश मुहूर्त्त हं। लग्न ३
११ फर. २०२२	शुक्रवार, दशमी, मृगशीर्ष नक्षत्र में गृहप्रवेश मुहूर्त्त है । लग्न ३
१४ फर. २०२२	सोमवार, त्रयोदशी, पुष्य नक्षत्र में दिन ११.५३ से रात्रि ८.११ तक गृहप्र. मुहूर्त्त है।

फाल्गुन कृष्णपक्ष (जीर्णादि गृहप्रवेश)

१८ फर. २०२२	शुक्रवार, द्वितीया, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में सायं १७.१६ पश्चात् गृहप्रवेश मुहूर्त्त है

फाल्गुन शुक्लपक्ष (जीर्णादि गृहप्रवेश)

९ मार्च २०२२	बुधवार, सप्तमी, रोहिणी नक्षत्र में दिन ९.०२ पश्चात् गृहप्रवेश मुहूर्त्त है। लग्न ३, ५

देवप्रतिष्ठा मुहूर्त (सम्वत् २०७८, २०२१-२०२२)

◆ **देवप्रतिष्ठा नक्षत्र-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती (कुल १६ नक्षत्र)।
जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा सौम्यायने जीवशशाङ्कशुक्रे।
दृश्ये मृदुक्षिप्रचरध्रुवे स्यात् पक्षेसिते स्वर्क्षतिथिक्षणे वा।। मु.चि.,२/६१

◆ **देवप्रतिष्ठा मास-** चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, माघ, फाल्गुन (हरिशयनपूर्व) बृहस्पति के मतानुसार पौष और माघ सभी देवों की प्रतिष्ठा हेतु ग्राह्य हैं- सर्वेषां पौषमाघौ द्वौ विबुधस्थापने शुभौ। आषाढ़ यजमान विनाशक, श्रावण राज्य-राष्ट्रनाशक, भाद्रपद पृथ्वीनाशक, आश्विन राज्यनाशक, कार्तिक एवं मार्गशीर्ष शत्रुवर्धक (बृहदैवज्ञरंजन)।

◆ **देवप्रतिष्ठा पक्ष-** शुक्लपक्ष में देव प्राणप्रतिष्ठा करनी चाहिए। मुहूर्त्तचिन्तामणि- **पक्षेसिते** तथा मत्स्य पुराण- **प्राप्यपक्षं शुभं शुक्लमतीते चोत्तरायणे।** कतिपय ग्रन्थों में माघादि पाँच महीनों में कृष्णपक्ष पंचमी तिथि तक देवप्रतिष्ठा विहित मानी गयी है- देवतारामवाप्यादिप्रतिष्ठामुत्तरायणे। माघादिपञ्चमासेषु कृष्णेप्यापञ्चमीदिनम्।।

◆ **देवप्रतिष्ठा तिथि-** २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ (कृष्णपक्ष २, ३, ५)।
द्वितीयसादिद्वयोः पञ्चम्यादितः तिसृषु क्रमात् ।
दशम्यादिचतसृषु पौर्णमास्यां विशेषतः।। - नारदसंहिता
मुहूर्त्त चिन्तामणि के अनुसार प्रतिमा प्रतिष्ठा रिक्ता तिथि (४, ९, १४) को छोड़कर सभी तिथियाँ ग्राह्य हैं- **रिक्तारवर्जे** अर्थात् १, ८ तिथि भी ग्राह्य है।

◆ **देवप्रतिष्ठा वार-** सोम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, रवि। **मंगलवार को निषेध है।**

◆ **देवप्रतिष्ठा लग्न-** २, ५, ८, ११

◆ **उग्रदेव प्रतिष्ठा-** काली, नृसिंह, वराह, वामन, महिषवाहिनी, महाविद्या, श्मशानदेवता, भैरव आदि की प्रतिष्ठा दक्षिणायन में भी होती है (वैखानससंहिता)।

◆ **विशेषदेवता प्रतिष्ठा-** **सूर्य-** हस्तनक्षत्र, सिंहलग्न। **चन्द्रादि अष्टग्रह-** पुष्यनक्षत्र। **ब्रह्मा-** पुष्य, श्रवण, अभिजित्, कुम्भलग्न। **विष्णु-** पुष्य, श्रवण, अभिजित्, कन्यालग्न। **शिव-पार्वती-** पुष्य, श्रवण, अभिजित्, मिथुनलग्न। **दुर्गा-** मूल नक्षत्र। **कुबेर-कार्तिकेय-** अनुराधा नक्षत्र।

चैत्र शुक्ल पक्ष

१९ अप्रैल २०२१ सोमवार, सप्तमी, पुनर्वसु नक्षत्र में भद्रा सायं ६.५९ पूर्व। लग्न.५ (१३:५५-१६:११)
२४ अप्रैल २०२१ शनिवार, द्वादशी, उ. फाल्गुनी नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.५ (१३:३६–१५:५१)
२५ अप्रैल २०२१ रविवार त्रयोदशी, हस्त नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.२ (०७:०२–०८:५६)

वैशाख कृष्ण पक्ष

२८ अप्रैल २०२१ बुधवार, द्वितीया, प्रातः ७:१८ बाद अनुराधा नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.८
२९ अप्रैल २०२१ गुरुवार, तृतीया, अनुराधा नक्षत्र में भद्रा दिन १५.३८ पूर्व मुहूर्त्त है। ल.२, ५
१ मई २०२१ शनिवार, पंचमी, मूल नक्षत्र में श्रीदुर्गादिवीप्रतिष्ठा मुहूर्त्त है। लग्न.२,५
३ मई २०२१ सोमवार, सप्तमी, उ.षाढ़ा नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.२, ५
५ मई २०२१ बुधवार, दशमी, शतभिषा नक्षत्र में मुहूर्त्त है। रात्रि लग्न.८

वैशाख शुक्ल पक्ष

१३ मई २०२१ गुरुवार, द्वितीया, रोहिणी नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.५
१४ मई २०२१ शुक्रवार, तृतीया, मृगशीर्ष नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.५
१७ मई २०२१ सोमवार, पंचमी/षष्ठी, पुनर्वसु/पुष्य नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.५, ८
२१ मई २०२१ शुक्रवार, दशमी, उ.फाल्गुनी नक्षत्र में दिन १०.४५ पश्चात् मुहूर्त्त है। लग्न.५
२२ मई २०२१ शनि, एकादशी, उ.फाल्गुनी/हस्त नक्षत्र में भद्रा १५:३६ पूर्व मुहूर्त्त है। लग्न.५, ८
२३ मई २०२१ रविवार, द्वादशी, चित्रा नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.५
२४ मई २०२१ सोमवार, त्रयोदशी, स्वाती नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.५
२६ मई २०२१ बुधवार, पूर्णिमा अनुराधा नक्षत्र में भद्रा प्रातः ६:२३ पश्चात् मुहूर्त्त है। लग्न.५

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

२८ मई २०२१ शुक्रवार, द्वितीया, मूल नक्षत्र में श्रीदुर्गदिवीप्रतिष्ठा मुहूर्त्त है। लग्न.५
३० मई २०२१ रविवार, पंचमी, उ.षाढ़ा नक्षत्र में भद्रा प्रातः ८.३० पश्चात् मुहूर्त्त है। लग्न.५
३१ मई २०२१ सोमवार, पंचमी/ षष्ठी, श्रवण नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.५
४ जून २०२१ शुक्रवार दशमी, उ.भाद्रपद नक्षत्र में भद्रा सायं १७.५५ पूर्व मुहूर्त्त है। लग्न.५
५ जून २०२१ शनिवार, एकदशी, रेवती नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.५

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

१३ जून २०२१ रविवार, तृतीया, पुनर्वसु नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.५
२० जून २०२१ रविवार, दशमी, चित्रा नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.५
२१ जून २०२१ सोमवार, द्वादशी, स्वाती नक्षत्र में भद्रा दिन ९.५६ पश्चात् मुहूर्त्त है। लग्न.५

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

२८ जून २०२१ सोमवार, पंचमी, धनिष्ठा नक्षत्र में सायं १७.३७ पश्चात् मुहूर्त्त है। लग्न.११
१ जुलाई २०२१ गुरुवार, सप्तमी, उ.भाद्रपद नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.५

आषाढ़ शुक्ल पक्ष

१५ जुलाई २०२१ गुरुवार, षष्ठी, उ.फाल्गुनी नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.५, ८
१६ जुलाई २०२१ शुक्रवार, सप्तमी, हस्त नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.५

माघ कृष्ण पक्ष

३ जनवरी २०२२ रविवार, षष्ठी, हस्त नक्षत्र में मुहूर्त्त है लग्न.१२

माघ शुक्ल पक्ष

३ फरवरी २०२२ गुरुवार, द्वितीया शतभिषा नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.११, १२
५ फरवरी २०२२ शनिवार, पंचमी, उ.भाद्रपद नक्षत्र में भद्रा प्रातः ७.०६ पश्चात् मुहूर्त्त है। लग्न.१२
६ फरवरी २०२२ रविवार, षष्ठी, रेवती नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.१२
७ फरवरी २०२२ सोमवार, सप्तमी, अश्विनी नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.११, १२
११ फर. २०२२, शुक्रवार, दशमी, मृगशीर्ष नक्षत्र में मुहूर्त्त है। लग्न.११, १२
१४ फर. २०२२ सोमवार, त्रयोदशी, पुष्य नक्षत्र में मुहूर्त्त है । लग्न.१२, ३, ५

फाल्गुन मास

१९ फर. २०२२, शनिवार, तृतीया, उ.फाल्गुनी नक्षत्र में भद्रा दिन १०.३७ पूर्व मुहूर्त्त है। लग्न.१२

कतिपय आवश्यक मुहूर्त्त (सम्वत् २०७८, २०२१-२०२२)

अबूझ मुहूर्त्त :- १४ मई – अक्षय तृतीया, **२० मई** – जानकी नवमी, **२६ मई** – पीपल पूर्णिमा, **२० जून** – गंगा दशहरा, **१८ जुलाई** – भड़ल्या नवमी, **२० जुलाई** – देवशयनी एकादशी, **१० सितम्बर** – गणेश चतुर्थी, **१५ अक्तूबर** – विजयादशमी, **२ नवम्बर** – धनतेरस, **१५ नवम्बर** – देवउठान एकादशी, **५ फरवरी** – वसन्त पञ्चमी, **४ मार्च** – फुलेरा दौज

प्रथम रजोदर्शन विचार

मास- वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन
तिथि- १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३,१५ **वार-** चं बु गु शु.
नक्षत्र- अश्विनी, रोहिणी, मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
लग्न- २,३,४,६,७,९,१२ शुभयुक्त एवं दृष्ट लग्न राशि।
विशेष- प्रथम रजोदर्शन में कुयोग (परिघ, व्यतिपात, वैधृति आदि) भद्रा, सूर्यचन्द्र ग्रहण, मासान्त, सन्ध्या, निद्रावस्था आदि अशुभ कहा गया है। यदि इन कुयोगो में प्रथम ऋतुमति हो तो गायत्री मन्त्र से तिल, घृत, दूर्वा सहित १०८ आहुति देने से कुयोगों की शान्ति होती है।

गर्भाधान में विचारणीय काल

भद्रा, षष्ठी, अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या, रिक्तातिथि, प्रातः, सायं, संध्या, ग्रहणकाल, सूर्योदि ग्रहों की संक्रान्तिकाल, अशुभवार, श्राद्धदिन एवं रजोदर्शन से चार दिन त्याज्य है। स्त्री रजोदर्शन दिन से १६ दिन तक गर्भधारण करने का योग रहता है। तदनन्तर स्त्री सहवास निष्फल होता है। पुत्रप्राप्ति के लिये सूर्य, भौम, गुरूवार विषम नवमांशगत लग्न एवं रजोदर्शन से समदिन (६,८,१०,१२,१४,१६) उत्तम एवं कन्या प्राप्ति के लिये चंद्र, शुक्रवार समराशि, समनवमांश तथा विषम दिनों (५,७,९,११,१३,१५) में उत्तम होता है। गर्भाधान के समय लग्न एवं त्रिकोण में शुभग्रह की दृष्टि एवं युति होनी चाहिये।

गर्भाधान मुहूर्त्त

तिथि- २,३,५,७,१०,११, १२, १३,१५। **वार-** च-बु-गु-शु.।
नक्षत्र- रो, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत।

पुंसवन मुहूर्त्त

मास- गर्भधारण से तृतीय मास। शु.प. पूर्वाह्न, चन्द्रताराशुद्धि
तिथि- १,२,३,५,७, १०,११,१२,१३ **वार-** सू.मं गु
नक्षत्र- अश्वि,मृग,आश्ले,पुन,पु,म,पूर्वा-३,उ-३, ह,अनु,धनि,रेव, विद्धनक्षत्र त्याज्य। लग्न- २,५,६,८,९,१०,१२ लग्नशुद्धि अनिवार्य।

सीमन्तोन्नयन मुहूर्त्त

मास- गर्भाधारण से ४,६,८ मास उत्तम। **तिथि-** २,३,१,७, १०,११,
नक्षत्र- मृग,पुन,पुष्य,.हस्त,मूल,श्रवण, विद्धनक्षत्र त्याज्य।
लग्न- १,३,५,७,९, १२ लग्न की शुद्धि अनिवार्य।

जातकर्म

तिथि- १,२,१, ,७,१०,१२,१३,१५ **वार-** चं,बु,गु, शु,
नक्षत्र- अश्वि,रो,मृग,पुन,पु,उ.३,ह,चि,स्वा,अनु,श्र,धनि,शत,रे
लग्न- २,३,४,६,७,९,१२, लग्न व नवमांश की शुद्धि अनिवार्य।

सूतिकागृहप्रवेश मुहूर्त्त

तिथि- १,२,३,५,७,१०,११,१२,१३,१५। **वार-** चं,बु,गु,शु,
नक्षत्र- अश्वि,मृ,पुन, पु,उत्तरा-३,चि,स्वा,अनु,श्र,ध,श,रे
लग्न- २,३,४,६,७,९,१२

नामकरण मुहूर्त्त

जन्म से १०,१२,१३,१६,१९,२०,२२,३०वें दिन अपनी कुल परम्परा के अनुसार नामकरण करना चाहिये।
तिथि- १,२,३,५,७,१०,११, १२, १३ **वार-** चं,बु,गु,शु
नक्षत्र- अश्वि,रो,मृग,पुन,पु,उ-३,ह,चि,स्वा,अनु,धनि,शत,रेव।
लग्न- २,४,६,७,९,१२ लग्न अष्टम द्वादशभाव शुभग्रह स्थित हो २,३,५,९ वें चन्द्रमा एवं ३,६,११ वे में भाव में पापग्रह की स्थिति।

कर्णवेधः मुहूर्त्त

कर्ण छेदन बालक के जन्म से १२, १६वें दिन या ६,७,८वें मास में अथवा विषम वर्ष में शुभ होता है।
मास- चैत्र(मीनस्थ सूर्य त्याज्य), कार्तिक (शु.११ के पश्चात्), पौष(धनुसंक्रान्ति वर्जित), फाल्गुन। **वार-** चं,बु,गु,शु
तिथि- २,३,५,६,७,१०,१२,१३
नक्षत्र- अश्वि, मृग, पुन, पु, ह, चि, अनु, श्रव, अभि, धनि, रेव, विद्ध एवं जन्म नक्षत्र त्याज्य।
लग्न- २, ३, ४, ६, ७,९,१२ केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह बलवान होना अनिवार्य है।

मन्त्रग्रहण मुहूर्त्त

मास- वैशाख, श्रावण, आश्वि., कार्ति., मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन
अबूझ- संक्रान्ति, पूर्णिमा, नवरात्रि, ग्रहण, सिद्धिक्षेत्र में।
वार- रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। **तिथि-** २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ शुक्लपक्ष। कृष्ण पञ्चमी तक।
नक्षत्र- अश्वि, रोहि, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त , चि, स्वा, अनु, मूल, अभि, श्रव, धनि, शतभि, रेव। **लग्न-** २ ३, ५, ७, ९, १२

औषधि ग्रहण का मुहूर्त्त

वार- सू, चं, बु, गु, शु. **नक्षत्र-** अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, अभि, श्रव, धनि, शत, रोहि में शुभ।
लग्न- ३, ६, ९, १२ लग्नों में, शुभग्रह ३, ६, ९ , १२ राशि में स्थित हों, तथा लग्न से ७, ८, १२ स्थान ग्रहरहित हों तो औषधि ग्रहण करना शुभ होता है।

कारखाना आरम्भ का मुहूर्त्त

वार- सूर्य, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र। **तिथि-** २, ३, ५, ७, १०, ११,१३, १५शुक्लपक्ष **नक्षत्र-** भरणी, कृतिका, आश्लेषा, विशाखा, पूर्वा ३ शुभ। **लग्न-** कुम्भ के बिना लग्नों में शुभग्रह दृष्ट या युत हो, शुभग्रह १, २, ४, ५, ७, १० भावों में रहने पर, पापग्रह ३, ६ , ११ में, शुभ हैं।

मुकद्दमा दायर करने का मुहूर्त्त

तिथि- ३,५,८,१०,१३, (शु.) १५ **वार-** सू,बु,गु,शु.।
नक्षत्र- भ,आर्द्रा,आश्ले,मघा,पूर्वा३,ज्ये,मू **लग्न** ३,६,७,८,११
जब शुभ ग्रह केन्द्र में, पापग्रह ३,६,११वें एवं अष्टम भाव ग्रह रहित होना चाहिए।

व्यवहार पत्रारम्भ मुहूर्त्त

तिथि- १,२,३,५,७,१०,११,१३ **वार-** सू,चं,बु,गु,शु
नक्षत्र- अश्वि,रो,मृ,पुन,पु,उत्तरा-३,ह,चि,अनु,श्र,रे
लग्न- १,३,४,६,७,९,१०, १२ लग्न शुद्धि अनिवार्य

चैत्र शुक्लपक्षः ; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वास्त; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वास्त, १३:४:२०२१;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१	द·प·	क२	द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
३१:३२:२३	१ मं	०७:०८	दि ०९:०१:२६	**अश्वि·**	१७:४६	दि १३:१६:२४	विष्कु·	२०:४०	दि १४:२६:१४	बव	०७:०८	बाल	३९:३६	मेष	अहोरात्र	६:१०:०३	६:४६:६०	अमृत	३०	१३	**संक्रान्ति; मासान्तः; चान्द्रसंवत्सरारम्भः**
३१:३६:१५	२ बु	१२:१२	दि ११:०१:४१	**भरणी**	२४:१४	दि १५:५०:३८	प्रीति	२२:०९	दि १५:००:४१	कौल	१२:१२	तैति	४४:४८	मे·४०:५३	रा २२:३०:०५	६:०८:६०	६:४७:३०	काण	१	१४	**संक्रान्ति पुण्यकालं,५:४२–१२:०१घं·;**
३१:४०:०७	३ गु	१७:२६	दि १३:०६:२४	**कृत्ति·**	३०:४८	दि १८:२७:१८	आयु·	२३:४४	दि १५:३७:२५	गर	१७:२६	वणि	४९:५८	वृष	अहोरात्र	६:०७:५७	६:४८:००	लुम्ब	२	१५	**भद्रारंभः२६:०७घं·;** मासादिः;
३१:४३:५७	४ शु	२२:२४	दि १५:०४:३६	**रोहि·**	३७:०२	रा २०:५५:४९	सौभा·	२५:०४	दि १६:०८:३४	विष	२२:२४	बव	५४:३९	वृष	अहोरात्र	६:०६:५५	६:४८:३०	मित्र	३	१६	**भद्रांतः१५:०५घं·;** अमृत·४;
३१:४७:४७	५ श	२६:४३	दि १६:४७:१५	**मृग·**	४२:३५	रा २३:०७:५०	शोभ·	२५:५५	दि १६:२७:४८	बाल	२६:४३	कौल	५८:३१	वृ·०९:५६	दि १०:०४:१८	६:०५:५४	६:४९:०१	वज्र	४	१७	द·ति·६; अमृत·६;
३१:५१:३५	६ र	३०:०५	दि १८:०६:५३	**आर्द्रा**	४७:०८	रा २४:५६:१४	अतिग·	२६:०२	दि १६:२९:३४	तैति	३०:०५	गर	६०:००	मिथुन	अहोरात्र	६:०४:५४	६:४९:३१	ध्वांक्ष	५	१८	द·ति·६;रवियोगःआ;
३१:५५:२१	७ चं	३२:१७	रा १८:५८:४६	**पुन·**	५०:३३	रा २६:१७:१६	सुकर्मा	२५:१६	दि १६:१०:२१	गर	०१:२१	वणि	३२:१७	मि·३४:४९	रा १९:५९:३९	६:०३:५३	६:५०:०२	धूम्र	६	१९	**भद्रारंभः१८:५९घं·;** द·ति·६;
३१:५९:०७	८ मं	३३:१४	रा १९:२०:३५	**पुष्य**	५२:४४	रा २७:०८:३१	धृति	२३:३२	दि १५:२७:५३	विष	०२:५६	बव	३३:१४	कर्क	अहोरात्र	६:०२:५४	६:५०:३३	प्रवर्द्ध	७	२०	**भद्रांतः७:१३घं·;** सिद्ध·८;
३२:०२:५१	९ बु	३२:५४	रा १९:११:२७	**आश्ले·**	५३:४०	रा २७:२९:५४	शूल	२०:४९	दि १४:२१:२०	बाल	०३:१४	कौल	३२:५४	क·५३:४०	रा २७:२९:५४	६:०१:५५	६:५१:०४	राक्षस	८	२१	**गण्डान्तारम्भः२१:२७;**रवियोगःआश्ले;
३२:०६:३३	१० गु	३१:१९	दि १८:३२:४०	**मघा**	५३:२५	रा २७:२२:५९	गण्ड	१७:०६	दि १२:५१:१५	तैति	०२:१६	गर	३१:१९	सिंह	अहोरात्र	६:००:५७	६:५१:३५	मुसल	९	२२	**गण्डान्तः९:३१;** सिद्ध·१०;
३२:१०:१५	११ शु	२८:३६	दि १७:२६:३३	**पू·फा·**	५२:०६	रा २६:५०:१७	वृद्धि	१२:२७	दि १०:५८:५७	वणि	००:०७	विष	२८:३६	सिंह	अहोरात्र	५:५९:६०	६:५२:०६	सिद्धि	१०	२३	**भद्रा ६:०३–१७:२७घं·;** सिद्ध·११;
३२:१३:५४	१२ श	२४:५४	दि १५:५६:३४	**उ·फा·**	४९:५१	रा २५:५५:३९	ध्रुव	०६:५९	दि ०८:४६:३३	बाल	२४:५४	कौल	५२:४२	सिं·०६:३८	दि ०८:३८:१७	५:५९:०३	६:५२:३७	उत्पात	११	२४	त्रिपुष्करः१२+उफा; रवियोगःह;
३२:१७:३२	१३ र	२०:२१	दि १४:०६:२९	**हस्त**	४६:५१	रा २४:४२:४२	व्याघ· हर्षण	००:४८ ५३:१२	दि ०६:१७:१५ रा २७:३४:०३	तैति	२०:२१	गर	४७:४८	कन्या	अहोरात्र	५:५८:०८	६:५३:०८	मानस	१२	२५	सर्वार्थ·ह; सिद्ध·१३; रवियोगःह;
३२:२१:०८	१४ चं	१५:०७	दि १२:००:१०	**चित्रा**	४३:१७	रा २३:१५:५६	वज्र	४६:४५	रा २४:३९:२४	वणि	१५:०७	विष	४२:१८	कं·१५:०८	दि १२:००:३६	५:५७:१३	६:५३:४०	मुद्गर	१३	२६	**भद्रा १२:००–२२:५३घं·;** द·न·चि;
३२:२४:४३	१५ मं	०९:२५	दि ०९:४२:२५	**स्वाती**	३९:१९	रा २१:३९:६०	सिद्धि	३९:१४	रा २१:३७:४३	बव	०९:२५	बाल	३६:२६	तुला	अहोरात्र	५:५६:१८	६:५४:१२	ध्वज	१४	२७	भरण्यांरविः३७:४९,घं·२१:३०:५०;

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

तिथि	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से
१	११:२९:०४:३७	००:०९:४५:११	०१:२८:४७:३६	११:२७:४०:१६	१०:०३:०४:५८	००:०५:२१:०५	०९:१५:०९:४५	०७:२१:४३:०८	४५:४६:११	०६:४३:०३	उ·०८:४१:०८	–०·७३१
२	००:००:०३:२०	००:२१:४८:३५	०१:२९:२३:४५	११:२९:३२:१८	१०:०३:१६:१०	००:०६:३५:२५	०९:१५:१३:२४	०७:२१:३९:५८	४५:४८:०८	०७:२०:२१	द·२१:०७:५१	–०·४८
३	००:०१:०२:०१	०१:०३:४९:२५	०१:२९:५९:५५	००:०१:२४:०८	१०:०३:२७:१६	००:०७:४९:४४	०९:१५:१६:५८	०७:२१:३६:४७	४५:५०:०३	०७:५७:३०	उ·०९:२५:४२	–०·२३
४	००:०२:००:३९	०१:१५:५१:४०	०२:००:३६:०८	००:०३:१५:४३	१०:०३:३८:१५	००:०९:०४:०१	०९:१५:२०:२६	०७:२१:३३:३६	४५:५१:५९	०८:४१:४९	उ·०९:४७:४६	०·०१३
५	००:०२:५९:१६	०१:२७:५८:५५	०२:०१:१२:२२	००:०५:०६:५९	१०:०३:४९:०९	००:१०:१८:१६	०९:१५:२३:४९	०७:२१:३०:२६	४५:५३:५३	०९:२८:१५	उ·१०:०९:४०	०·२५४
६	००:०३:५७:५०	०२:१०:१४:२०	०२:०१:४८:३८	००:०६:५७:५४	१०:०३:५९:५६	००:११:३२:३०	०९:१५:२७:०६	०७:२१:२७:१५	४५:५५:४७	१०:१८:१८	उ·१०:३१:२३	०·४८८
७	००:०४:५६:२१	०२:२२:४०:४१	०२:०२:२४:५५	००:०८:४८:२३	१०:०४:१०:३७	००:१२:४६:४२	०९:१५:३०:१७	०७:२१:२४:०४	४५:५७:४१	११:१३:३४	उ·१०:५२:५६	०·७२२
८	००:०५:५४:५१	०३:०५:२०:०७	०२:०३:०१:१५	००:१०:३८:२५	१०:०४:२१:११	००:१४:००:५३	०९:१५:३३:२३	०७:२१:२०:५४	४५:५९:३३	१२:१०:०८	उ·११:१४:१९	०·९३३
९	००:०६:५३:१८	०३:१८:१४:१२	०२:०३:३७:३६	००:१२:२७:५४	१०:०४:३१:३९	००:१५:१५:०१	०९:१५:३६:२२	०७:२१:१७:४३	४६:०१:२५	१३:०९:०८	उ·११:३५:३०	१·१४१
१०	००:०७:५१:४४	०४:०१:२३:४३	०२:०४:१३:५९	००:१४:१६:४८	१०:०४:४१:६०	००:१६:२९:०९	०९:१५:३९:१६	०७:२१:१४:३३	४६:०३:१७	१४:०९:०३	उ·११:५६:३०	१·३४२
११	००:०८:५०:०७	०४:१४:४८:४१	०२:०४:५०:२४	००:१६:०५:०३	१०:०४:५२:१४	००:१७:४३:१४	०९:१५:४२:०४	०७:२१:११:२२	४६:०५:०७	१५:०८:३०	उ·१२:१७:१८	१·५४२
१२	००:०९:४८:२७	०४:२८:२८:२३	०२:०५:२६:५०	००:१७:५२:३४	१०:०५:०२:२१	००:१८:५७:१८	०९:१५:४४:४७	०७:२१:०८:११	४६:०६:५७	१६:०८:५९	उ·१२:३७:५४	१·७२७
१३	००:१०:४६:४६	०५:१२:२१:२१	०२:०६:०३:१८	००:१९:३९:१७	१०:०५:१२:२१	००:२०:११:२१	०९:१५:४७:२३	०७:२१:०५:०१	४६:०८:४६	१७:१०:३२	उ·१२:५८:१८	१·९११
१४	००:११:४५:०३	०५:२६:२५:२७	०२:०६:३९:४८	००:२१:२५:०८	१०:०५:२२:१४	००:२१:२५:२२	०९:१५:४९:५३	०७:२१:०१:५०	४६:१०:३४	१८:१२:५८	उ·१३:१८:२९	२·०७९
१५	००:१२:४३:१७	०६:१०:३७:५९	०२:०७:१६:१९	००:२३:१०:०३	१०:०५:३१:५९	००:२२:३९:२१	०९:१५:५२:१७	०७:२०:५८:३९	४६:१२:२२	१९:१७:३९	उ·१३:३८:२७	२·२४६

सृष्टि और सतयुग का आरम्भ **चैत्र शुक्ल प्रतिपदा** को ही हुआ था। इस दिन संवत्सर पूजन, नवरात्रि घटस्थापन, पंचांग श्रवण, निज गृह पर ध्वजारोपण करें, श्रीठाकुरजी को नवीन पोशाक धारण करावें, वंदनवार लगावें, शंखध्वनि पूर्वक **नवसंवत्सर २०७८** का अभिनन्दन करें। **चैत्र शुक्ल नवमी** को उपवास व भक्तिपूर्वक विधिविधान से भगवान् श्री रामचन्द्रजी का प्राकट्य महोत्सव करें। **श्रीरामनवमी** पूर्वविद्धा त्याज्य है। नवमी पूर्वविद्धा हो तो दशमी में व्रत करे और दशमी की वृद्धि ना हो तो पारणा का त्याग करने में भी कोई दोष नहीं। श्रीसनत्कुमारों ने कहा है – **चैत्र शुक्ल एकादशी** को श्रीहरि को डोल पर विराजमान करके भक्तिपूर्वक श्रीभगवान् की पूजाकर उन्हें झुलावें। **चैत्र शुक्ल पूर्णिमा** २७ अप्रैल को परम महाभागवत अंजनीनन्दन श्री हनुमान्जी का जयन्ती उत्सव उल्लासपूर्वक संपन्न करें।

चैत्र शुक्लपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; १३ अप्रैल से २७ अप्रैल,२०२१ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःदक्षिण । ऋतुःवसन्त, याम्यगोलः मेषार्कतः सौम्यगोलः, सौम्यायनं । ति·१५ अयनांशाः२२:४९:५०

तिथि दिन	दिनाङ्क अंग्रेजी	卐 व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि 卐
१ मं	१३	**विक्रम नववर्षारम्भः, नवरात्र घटस्थापना, पञ्चाङ्गफलश्रवण,** चन्द्रदर्शनम्, सर्वार्थ·अ; ①
२ बु	१४	**सिंजारा**; खरमास समाप्तिः; आश्वन्यांबुधः १४:५०,घं·१२:३१:५६; ②
३ गु	१५	**गणगौर पूजा; श्रीमत्स्यावतार जयन्ती;** अमृत·३; मिथुनेमङ्गलः००:८,घं·०६:३७:५५; ③
४ शु	१६	**वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थी**; रवियोगःरो; ① आश्वन्यांमेषेरविः५६:३४,घं·५:१४; द·ति·२; अमृत·२;
५ श	१७	**श्री रामराज्य महोत्सव;** श्रीपञ्चमी; रंगपञ्चमी; रवियोगःआ;
६ र	१८	**श्री यमुना जयन्ती;** त्रिपुष्करः७+पुन;
७ चं	१९	भरण्यांशुक्रः२६:५५,घं·१७:१६; सर्वार्थ·पु;
८ मं	२०	**महाष्टमी;** सर्वार्थ·आश्ले; रवियोगःआश्ले; ② सिद्ध·२; सर्वार्थ·कृ; मृत्युबाण घं·७:२८:६उ·;
९ बु	२१	**नवरात्र समाप्तिः; श्रीरामनवमी**; भरण्यांबुधः२८:३९,घं·१७:५६:१२; रवियोगःम;
१० गु	२२	**नवरात्रोत्थापन; नवरात्र व्रतपारणा;** रवियोगःम; ③ रवियोगःरो; मृत्युबाण घं·६:५५:१२या·;
११ शु	२३	**श्रीकामदा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त)** ;
१२ श	२४	**दमनोत्सव**; **शनि प्रदोष व्रतम्**; मृत्युबाण घं·२५:१६:४उ·;
१३ र	२५	**श्री महावीर जयन्ती (जैन)** ; मृत्युबाण घं·०:३३:४०या·;
१४ चं	२६	**पूर्णिमा व्रतम्;** आर्द्रायांमङ्गलः००:२०,घं·०६:३१:५३; अमृत·१५;
१५ मं	२७	**चैत्रपूर्णिमा स्नान–दान; श्रीहनुमानजयन्ती; वैशाखस्नान आरम्भ;** श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा;

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	१२:०३:१७–१३:४४:१३
१५	११:५९:१९–१३:४३:०२

चैत्रशुक्लपक्ष - कृत्य एवं मुहूर्त्त

नववर्षारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा- यदि प्रतिपदा का मान स्वल्प भी हो तो उसी दिन वर्षारम्भ माना जाता है। यह पूर्वविद्धा ग्राह्य है। यह चान्द्रवर्ष होता है- *तत्रौदयिकी प्रतिपद् ग्राह्या। दिनद्वये उदयव्याप्तौ अव्याप्तौ वा पूर्वा (धर्मसिन्धु, परिच्छेद 2, वर्षनिर्णय)।*

घटस्थापना मुहूर्त्त – प्रातःकाल ०९:०१ मिनट तक

वासन्तिक नवरात्रि- चैत्र शुक्ल प्रतिपदा मुहूर्त्तमात्र भी द्वितीयायुक्त ग्राह्य होती है-

"परयुता मुहूर्त्तमात्रापि प्रतिपद् ग्राह्या (धर्मसिन्धु, द्वितीय परिच्छेद)।"

जब प्रतिपदा का क्षय हो तभी अमावास्या युक्त प्रतिपदा ग्राह्य होती है- *"मुहूर्तन्यूनव्याप्तौ सूर्योदयाद्स्पर्शे वा दर्शयुतापि ग्राह्या"* नवरात्रि में चित्रानक्षत्र एवं वैधृतियोग में कभी भी कलशस्थापन नहीं करना चाहिए। सम्पूर्ण तिथि विद्ध होने पर मध्याह्न काल में अभिजित् मुहूर्त में कलशस्थापन किया जाता है। (रुद्रयामल)

दुर्गापाठ हवन व बलिदान- नवमी तिथि में दुर्गापाठ का हवन करना चाहिए- *"नवम्यां पूजां विधाय होमः कार्यः"* (धर्मसिन्धु)। नवरात्रि पारणा दशमी में होती है- *"दशम्यामेव पारणा"*।

निम्बपत्रभक्षण- चैत्रमासके शुक्लपक्ष में निम्ब की सुकोमल पत्तियों एवं पुष्पों का चूर्ण बनाकर उसमें मरीचि (कालीमिर्च), सेंधा नमक, हींग, जीरा एवं आजवाइन को सम मात्रा में मिला कर खाने से वर्षपर्यन्त रक्तविकार एवं चर्मरोग नहीं होता है।

"पारिभद्रस्य पत्राणि कोमलानि विशेषतः । सपुष्पाणि समानीय चूर्णं कृत्वा विधानतः।
मरीचिं लवणं हिंगुं जीरकेण च संयुतम्। अजमोदयुतं कृत्वा भक्षयेद्रोगशान्तये।।"

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि ल·अं·	१ मं घं·मि·से	लग्न अन्त	२ बु घं·मि·से	३ गु घं·मि·से	४ शु घं·मि·से	५ श घं·मि·से	६ र घं·मि·से	७ चं घं·मि·से	८ मं घं·मि·से	९ बु घं·मि·से	१० गु घं·मि·से	११ शु घं·मि·से	१२ श घं·मि·से	१३ र घं·मि·से	१४ चं घं·मि·से	१५ मं घं·मि·से
मीनः	०६:१२:४६	मेषः	०७:४४:४५	०७:४०:४८	०७:३६:५२	०७:३२:५५	०७:२८:५९	०७:२५:०२	०७:२१:०५	०७:१७:०९	०७:१३:१२	०७:०९:१५	०७:०५:१९	०७:०१:२२	०६:५७:२५	०६:५३:२९
मेषः	०७:४८:४१	वृष्	०९:४०:१४	०९:३६:१७	०९:३२:२१	०९:२८:२४	०९:२४:२८	०९:२०:३१	०९:१६:३५	०९:१२:३८	०९:०८:४२	०९:०४:४५	०९:००:४८	०८:५६:५२	०८:५२:५५	०८:४८:५८
वृष्	०९:४४:१०	मिथुनः	११:५४:२३	११:५०:२७	११:४६:३१	११:४२:३४	११:३८:३८	११:३४:४१	११:३०:४५	११:२६:४८	११:२२:५१	११:१८:५५	११:१४:५८	११:११:०२	११:०७:०५	११:०३:०८
मिथुनः	११:५८:२०	कर्कः	१४:१४:३२	१४:१०:३६	१४:०६:४०	१४:०२:४३	१३:५८:४७	१३:५४:५०	१३:५०:५४	१३:४६:५७	१३:४३:०१	१३:३९:०४	१३:३५:०८	१३:३१:११	१३:२७:१४	१३:२३:१८
कर्कः	१४:१८:२९	सिंहः	१६:३०:५९	१६:२७:०३	१६:२३:०६	१६:१९:१०	१६:१५:१४	१६:११:१७	१६:०७:२१	१६:०३:२४	१५:५९:२८	१५:५५:३१	१५:५१:३५	१५:४७:३८	१५:४३:४२	१५:३९:४५
सिंहः	१६:३४:५५	कन्या	१८:४५:५५	१८:४१:५९	१८:३८:०२	१८:३४:०६	१८:३०:१०	१८:२६:१३	१८:२२:१७	१८:१८:२०	१८:१४:२४	१८:१०:२७	१८:०६:३१	१८:०२:३४	१७:५८:३८	१७:५४:४१
कन्या	१८:४९:५१	तुला	२१:०४:४४	२१:००:४७	२०:५६:५१	२०:५२:५५	२०:४८:५८	२०:४५:०२	२०:४१:०६	२०:३७:०९	२०:३३:१३	२०:२९:१६	२०:२५:२०	२०:२१:२४	२०:१७:२७	२०:१३:३१
तुला	२१:०८:४०	वृश्चिकः	२३:२३:३६	२३:१९:३९	२३:१५:४३	२३:११:४७	२३:०७:५१	२३:०३:५४	२२:५९:५८	२२:५६:०२	२२:५२:०५	२२:४८:०९	२२:४४:१२	२२:४०:१६	२२:३६:२०	२२:३२:२३
वृश्चिकः	२३:२७:३२	धनुः	०१:२९:०१	०१:२५:०४	०१:२१:०८	०१:१७:१२	०१:१३:१६	०१:०९:१९	०१:०५:२३	०१:०१:२७	००:५७:३०	००:५३:३४	००:४९:३८	००:४५:४१	००:४१:४५	००:३७:४९
धनुः	०१:३२:५७	मकरः	०३:१३:३३	०३:०९:३७	०३:०५:४१	०३:०१:४५	०२:५७:४८	०२:५३:५२	०२:४९:५६	०२:४५:५९	०२:४२:०३	०२:३८:०७	०२:३४:११	०२:३०:१४	०२:२६:१८	०२:२२:२२
मकरः	०३:१७:२९	कुम्भः	०४:४२:४१	०४:३८:४४	०४:३४:४८	०४:३०:५२	०४:२६:५६	०४:२३:००	०४:१९:०३	०४:१५:०७	०४:११:११	०४:०७:१५	०४:०३:१८	०३:५९:२२	०३:५५:२६	०३:५१:२९
कुम्भः	०४:४६:३७	मीनः	०६:०८:५०	०६:०४:५३	०६:००:५७	०५:५७:००	०५:५३:०३	०५:४९:०७	०५:४५:१०	०५:४१:१४	०५:३७:१७	०५:३३:२०	०५:२९:११	०५:२५:१५	०५:२१:१९	०५:१७:२२

सूर्योदयकालीन तिथिः४

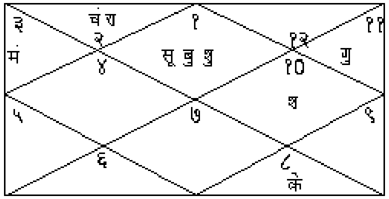

सूर्योदयकालीन तिथिः११

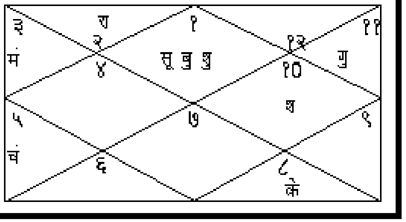

वैशाख कृष्णपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः, २८:४:२०२१; गुरु संवत्सर परिवर्तन : ५८:४८:४५ दण्डादि, ८:५:२०२१ ईस्वी, तिथि २७;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से·	योग	सौर	अंग्रेजी	
३२:२८:१६	१ बु	०३:२५ ५३:५३	दि ०७:१७:३३ रा २८:५०:४५	**विशा·**	३५:१०	रा १९:५९:३६	व्यति·	३१:३२	दि १८:३२:२४	कौल ०३:२५	तैति ३०:२१	तु·२१:१३	दि १४:२४:४९	५:५५:२५	६:५४:४३	धाता	१५	२८	अमृत·१; सिद्ध·२;
३२:३१:४७	३ गु	५१:२०	रा २६:२६:२५	**अनु·**	३१:०४	दि १८:२०:०८	वरी·	२३:५३	दि १५:२७:३६	वणि २४:१८	विष ५१:२०	वृश्चिक	अहोरात्र	५:५४:३३	६:५५:१५	आनन्द	१६	२९	**भद्रा १५:३८–२६:२६घं·;** अमृत·३;
३२:३५:१६	४ शु	४५:४१	रा २४:०९:५९	**ज्ये·**	२७:१३	दि १६:४६:४५	परिघ	१६:२४	दि १२:२७:१९	बव १८:२८	बाल ४५:४१	वृ·२७:१३	दि १६:४६:४५	५:५३:४१	६:५५:४७	सुस्थिर	१७	३०	**गण्डान्तः११:०९–२२:२५;** अमृत·४;
३२:३८:४३	५ श	४०:३२	रा २२:०५:४१	**मूल**	२३:४८	दि १५:२३:५८	शिव	०९:१६	दि ०९:३५:०४	कौल १३:०३	तैति ४०:३२	धनु	अहोरात्र	५:५२:५०	६:५६:१९	गद	१८	१	अमृत·६
३२:४२:०८	६ र	३६:०६	रा २०:१८:१५	**पू·षा·**	२१:०१	दि १४:१६:३५	सिद्धि साध्य	०२:३६ ५३:५७	दि ०६:५४:३२ रा २८:२९:२०	गर ०८:१४	वणि ३६:०६	ध·३५:२७	रा २०:०२:४८	५:५२:०१	६:५६:५२	शुभ	१९	२	**भद्रारंभः२०:१८घं·;** द·ति·६;
३२:४५:३०	७ चं	३२:३०	दि १८:५१:१०	**उ·षा·**	१९:०४	दि १३:२८:५०	शुभ	५१:१५	रा २६:२१:२३	विष ०४:११	बव ३२:३०	मकर	अहोरात्र	५:५१:१२	६:५७:२४	मृत्यु	२०	३	**भद्रांतः७:३२घं·;** द·ति·६;
३२:४८:५१	८ मं	२९:५५	दि १७:४८:३४	**श्रवण**	१८:०५	दि १३:०४:१४	शुक्ल	४६:५०	रा २४:३४:२०	बाल ०१:०५	कौल २९:५५	म·४७:५९	रा २५:०१:५३	५:५०:२४	६:५७:५६	लुम्ब	२१	४	**पञ्चकारंभः१३:०४;** सिद्ध·८;
३२:५२:०९	९ बु	२८:३०	दि १७:१३:३४	**धनि·**	१८:१२	दि १३:०६:२५	ब्रह्म	४३:२१	रा २३:०९:५८	गर २८:३०	वणि ५८:१४	कुंभ	अहोरात्र	५:४९:३७	६:५८:२९	मित्र	२२	५	**भद्रारंभः२९:०७घं·;**
३२:५५:२५	१० गु	२८:१९	दि १७:०८:१९	**शत·**	१९:३२	दि १३:३७:३३	ऐन्द्र	४०:५२	रा २२:०९:३२	विष २८:१९	बव ५८:४१	कुंभ	अहोरात्र	५:४८:५१	६:५९:०२	वज्र	२३	६	**भद्रांतः१७:०८घं·;**
३२:५८:३९	११ शु	२९:२४	दि १७:३३:४१	**पू·भा·**	२२:०७	दि १४:३८:५१	वैधृ·	३९:२३	रा २१:३३:२५	बाल २९:२४	कौल ६०:००	कु·०६:२१	दि ०८:२०:३८	५:४८:०७	६:५९:३४	ध्वांक्ष	२४	७	**रोहिण्यां**बुधः२२:५१,घं·१५:२३;
३३:०१:५०	१२ श	३१:४४	दि १८:२८:५१	**उ·भा·**	२५:५५	दि १६:०९:१३	विष्कु·	३८:५२	रा २१:२०:१०	कौल ००:२६	तैति ३१:४४	मीन	अहोरात्र	५:४७:२३	७:००:०७	धूम्र	२५	८	द·न·रे;
३३:०४:५९	१३ र	३५:११	रा १९:५१:००	**रेवती**	३०:४९	दि १८:०६:०६	प्रीति	३९:१२	रा २१:२७:३६	गर ०३:२०	वणि ३५:११	मी·३०:४९	दि १८:०६:०६	५:४६:४०	७:००:४०	प्रवर्द्ध	२६	९	**भद्रारंभः१९:५१घं·;पञ्चकान्तः१८:०६;**
३३:०८:०४	१४ चं	३९:३२	रा २१:३४:४९	**अश्वि·**	३६:३६	रा २०:२४:३०	आयु·	४०:१४	रा २१:५१:३४	विष ०७:१७	बव ३९:३२	मेष	अहोरात्र	५:४५:५९	७:०१:१३	राक्षस	२७	१०	**भद्रांतः८:४१घं·;** अमृत·१५;
३३:११:०८	३० मं	४४:२९	रा २३:३२:४६	**भरणी**	४२:५९	रा २२:५६:५५	सौभा·	४१:४३	रा २२:२६:२४	चतु ११:५८	नाग ४४:२९	मे·५९:३७	दि २९:३६:१२	५:४५:१९	७:०१:४६	मुसल	२८	११	कृत्तिकायांरविः२५:४९,घं·१६:३१:५१;

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

तिथि	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से
१	००:१३:४१:३०	०६:२४:५५:४७	०२:०७:५२:५२	००:२४:५३:५६	१०:०५:४१:३७	००:२३:५३:१८	०९:१५:५४:३५	०७:२०:५५:२९	४६:१४:०८	२०:२३:०९	उ·१३:५८:११	+ १:४४
३	००:१४:३९:४०	०७:०९:१५:२१	०२:०८:२९:२६	००:२६:३६:४२	१०:०५:५१:०७	००:२५:०७:१४	०९:१५:५६:४७	०७:२०:५२:१८	४६:१५:५३	२१:२७:३१	उ·१४:१७:४२	+ १:५४
४	००:१५:३७:४८	०७:२३:३२:३९	०२:०९:०६:०२	००:२८:१८:१५	१०:०६:००:२९	००:२६:२१:०८	०९:१५:५८:५३	०७:२०:४९:०७	४६:१७:३८	२२:३१:११	उ·१४:३६:५९	+ २:०४
५	००:१६:३५:५४	०८:०७:४४:१६	०२:०९:४२:३९	००:२९:५८:३०	१०:०६:०९:४४	००:२७:३५:००	०९:१६:००:५३	०७:२०:४५:५७	४६:१९:२१	२३:२७:५८	उ·१४:५६:०१	+ २:१३
६	००:१७:३३:५८	०८:२१:४७:०५	०२:१०:१९:१८	०१:०१:३७:२१	१०:०६:१८:५१	००:२८:४८:५१	०९:१६:०२:४६	०७:२०:४२:४६	४६:२१:०४	२४:२१:४९	उ·१५:१४:४९	+ २:२२
७	००:१८:३२:०१	०९:०५:३८:२७	०२:१०:५५:५८	०१:०३:१४:४०	१०:०६:२७:४९	०१:००:०२:४०	०९:१६:०४:३३	०७:२०:३९:३५	४६:२२:४५	०१:०७:५६	उ·१५:३३:२१	+ २:३०
८	००:१९:३०:०१	०९:१९:१६:२१	०२:११:३२:४०	०१:०४:५०:२१	१०:०६:३६:४०	०१:०१:१६:२८	०९:१६:०६:१४	०७:२०:३६:२५	४६:२४:२६	०१:४९:५५	उ·१५:५१:३९	+ २:३८
९	००:२०:२७:५९	१०:०२:३९:२२	०२:१२:०९:२३	०१:०६:२४:१७	१०:०६:४५:२२	०१:०२:३०:१३	०९:१६:०७:४८	०७:२०:३३:१४	४६:२६:०५	०२:२७:५९	उ·१६:०९:४०	+ २:४५
१०	००:२१:२५:५५	१०:१५:४६:५३	०२:१२:४६:०७	०१:०७:५६:१८	१०:०६:५३:५५	०१:०३:४३:५७	०९:१६:०९:१६	०७:२०:३०:०३	४६:२७:४३	०३:०२:१९	उ·१६:२७:२६	+ २:५१
११	००:२२:२३:४९	१०:२८:३९:०३	०२:१३:२२:५३	०१:०९:२६:१७	१०:०७:०२:२१	०१:०४:५७:४०	०९:१६:१०:३८	०७:२०:२६:५३	४६:२९:१९	०३:३५:५४	उ·१६:४४:५५	+ २:५८
१२	००:२३:२१:४२	११:११:१६:४४	०२:१३:५९:४०	०१:१०:५४:०५	१०:०७:१०:३७	०१:०६:११:२०	०९:१६:११:५३	०७:२०:२३:४२	४६:३०:५५	०४:०८:५०	उ·१७:०२:०८	+ ३:०३
१३	००:२४:१९:३२	११:२३:४१:३४	०२:१४:३६:२९	०१:१२:१९:३१	१०:०७:१८:४५	०१:०७:२४:५९	०९:१६:१३:०२	०७:२०:२०:३१	४६:३२:२९	०४:४१:१४	उ·१७:१९:०४	+ ३:०८
१४	००:२५:१७:२१	००:०५:५५:५०	०२:१५:१३:१८	०१:१३:४२:२५	१०:०७:२६:४३	०१:०८:३८:३६	०९:१६:१४:०४	०७:२०:१७:२१	४६:३४:०२	०५:१७:५४	उ·१७:३५:४३	+ ३:१२
१५	००:२६:१५:०८	००:१८:०२:१९	०२:१५:५०:०९	०१:१५:०२:३५	१०:०७:३४:३३	०१:०९:५२:११	०९:१६:१४:६०	०७:२०:१४:१०	४६:३५:३४	०५:५५:०६	उ·१७:५२:०४	+ ३:१६

वैशाख मास में विशेष दान

वैशाख में जलदान करने का विशेष पुण्य है। मिट्टी के घड़े द्रोण कलश में सुगन्धित शीतल जल भरकर दान करने का अपूर्व महत्व होता है। **इस मास में शिवलिंग पर कलश से जल टपकाने की व्यवस्था करना अक्षय पुण्यकारी होता है।** गर्मी से बचाने वाली वस्तु, मटका, जल दान, जूता, चप्पल, छाता, कपड़ा, पंखा, चंदन, मलमल वस्त्र, कर्पूर, ताम्बूल, फूल माला, सुगन्धित पदार्थ, शर्बत, अंगूर, तरबूज, खीरा, आम्र आदि दान करने से अक्षयफल की प्राप्ति होती है। वैशाख में प्रपा (प्याऊ) लगाने का महत्व है। प्यासे पशु पक्षियों को पानी दें।

प्रपा कार्याच वैशाखे देवे देया गलन्तिका।
उपानद्व्यजनंछत्रं सूक्ष्मवासांसि चंदनम् ॥

वैशाख कृष्णपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; २८ अप्रैल से ११ मई, २०२१ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःदक्षिण । ऋतुःवसन्त, सौम्यगोलः, सौम्यायनं । ति·३0 अयनांशाः२२:४९:५२

तिथि / दिन	दिनाङ्क / अंग्रेजी	卐 व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि 卐
१ बु	२८	**व्यतिपात पुण्य;** सर्वार्थ·अनु;
३ गु	२९	कृत्तिकायांबुधः०१:५६,घं·०७:७:५६; सर्वार्थ·अनु;
४ शु	३0	**संकष्टी श्री गणेशचतुर्थी;** कृत्तिकायांशुक्रः१५:१९,घं·१२:२८:१; द·न·ज्ये;
५ श	१	वृषेबुधः00:५४,घं·०६:४१:१६;
६ र	२	**श्रीकोकिला षष्ठी;** वृषेशुक्रः५७:४८,घं·५:२६:४; सर्वार्थ·उषा; रवियोगःउषा; त्रिपुष्करः७+उषा;
७ चं	३	**शर्करा सप्तमी; अभिजितः४:२९–२२:५८;** रवियोगःउषा; सर्वार्थ·श्र; मृत्युबाण घं·१८:२१:२७उ·;
८ मं	४	**श्रीकालाष्टमी; बूढ़ा बास्योड़ा;** शतभिषायांगुरुः२२:५३,घं·१५:२६:३०; मृत्युबाण घं·१७:३०:५३या·;
९ बु	५	द·न·ध;
१0 गु	६	सिद्ध·१०;
११ शु	७	**श्रीवरूथिनी एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त) ; श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती;** सिद्ध·११;
१२ श	८	**एकादशी पारणा;**
१३ र	९	**प्रदोष व्रतम्; गण्डान्तः११:३५–२४:३९;** सिद्ध·१३; सर्वार्थ·अ;
१४ चं	१0	**मास शिवरात्रि;**
३0 मं	११	**भौमवती अमावस्या (स्नान,दान,श्राद्ध) ;** रोहिण्यांशुक्रः०६:२२,घं·०८:४४:५२; सर्वार्थ·कृ;

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	११:५९:0६–१३:४३:00
१५	११:५६:५९–१३:४३:११

वैशाख मास कृत्य

इस मास में भगवान् श्रीहरि की पूजा करने से दारुण पाप जलकर भस्म हो जाते हैं। वैशाख में पीपल वृक्ष की जड़ में प्रतिदिन जल डालने से अपूर्व पुण्य की प्राप्ति होती है। प्रात: काल में स्नान पश्चात् पीपल की जड़ में जल देवें। इससे कुल का तारण होता है- **"अनेन अनेककुलतारणं फलम् ।"**
वैशाख स्नान का महत्त्व- चैत्र पूर्णिमा से लेकर वैशाख शुक्ल पूर्णिमा तक सूर्योदयपूर्व स्नान करने से समस्त पाप का नाश होता है। अशक्त होने की स्थिति में वैशाख शुक्ल त्रयोदशी से पूर्णिमा तक सूर्योदयपूर्व स्नान करना चाहिए। संकल्पपूर्वक स्नान करने से सभी पापों का क्षय होता है। यदि नदी या सरोवर का नाम न ज्ञात हो तो विष्णुतीर्थ कहकर संकल्प लिया जाता है- **"अज्ञाने तु विष्णुतीर्थमितिवदेत्।"** सभी तीर्थों के देवता भगवान् विष्णु होते हैं। वैशाखमास में तुलसीपत्र से भगवान् विष्णु की त्रिकाल पूजा करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है-

माधवं सकलं मासं तुलस्या योऽ र्चयेन्नरः ।
त्रिसन्ध्यं मधुहन्तारं नास्ति तस्य पुनर्भवः।

शनि, रवि, मंगल को दाढ़ी-बाल न बनवायें

शनि, रवि और मंगलवार को दाढ़ी, बाल, नाखून नहीं कटवाना चाहिए। इससे आयु घटती है। अंग्रेजों के देखा-देखी बीसवीं शताब्दी से हिन्दुओं ने भी रविवार के दिन बाल कटवाना शुरु कर दिया। यह एक सुविधाजनक दोष है, जो आयु को कम करता है। शेष दिनों में क्षौर कराने से आयु बढ़ती है। अनुराधा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, कृत्तिका और मघा नक्षत्र में भी दाढ़ी-बाल कटवाने से आयु की हानि होती है। **युक्षयोऽनुराधाग्नित्र्युतरारोहिणीमघे।।** जो लोग प्रतिदिन दाढ़ी बनाते हैं, उनपर यह दोष नहीं लगता है।

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि / ल·अं·	१ बु घं·मि·से	३ गु घं·मि·से	४ शु घं·मि·से	५ श घं·मि·से	६ र घं·मि·से	७ चं घं·मि·से	८ मं घं·मि·से	९ बु घं·मि·से	१0 गु घं·मि·से	११ शु घं·मि·से	१२ श घं·मि·से	१३ र घं·मि·से	१४ चं घं·मि·से	१५ मं घं·मि·से
मेषः	0६:४९:३२	0६:४५:३५	0६:४१:३८	0६:३७:४२	0६:३३:४५	0६:२९:४८	0६:२५:५१	0६:२१:५४	0६:१७:५८	0६:१४:0१	0६:१0:0४	0६:0६:0८	0६:0२:११	0५:५८:१४
वृष्	0८:४५:0२	0८:४१:0५	0८:३७:0८	0८:३३:११	0८:२९:१५	0८:२५:१८	0८:२१:२१	0८:१७:२४	0८:१३:२८	0८:0९:३१	0८:0५:३४	0८:0१:३८	0७:५७:४१	0७:५३:४४
मिथुनः	१0:५९:१२	१0:५५:१५	१0:५१:१८	१0:४७:२२	१0:४३:२५	१0:३९:२८	१0:३५:३२	१0:३१:३५	१0:२७:३८	१0:२३:४२	१0:१९:४५	१0:१५:४८	१0:११:५२	१0:0७:५५
कर्कः	१३:१९:२१	१३:१५:२५	१३:११:२८	१३:0७:३१	१३:0३:३५	१२:५९:३८	१२:५५:४१	१२:५१:४५	१२:४७:४८	१२:४३:५२	१२:३९:५५	१२:३५:५९	१२:३२:0२	१२:२८:0५
सिंहः	१५:३५:४८	१५:३१:५२	१५:२७:५५	१५:२३:५९	१५:२0:0२	१५:१६:0६	१५:१२:0९	१५:0८:१२	१५:0४:१६	१५:00:१९	१४:५६:२३	१४:५२:२६	१४:४८:३0	१४:४४:३३
कन्या	१७:५0:४५	१७:४६:४८	१७:४२:५२	१७:३८:५५	१७:३४:५९	१७:३१:0२	१७:२७:0६	१७:२३:0९	१७:१९:१३	१७:१५:१६	१७:११:२0	१७:0७:२३	१७:0३:२७	१६:५९:३१
तुला	२0:0९:३४	२0:0५:३८	२0:0१:४१	१९:५७:४५	१९:५३:४८	१९:४९:५२	१९:४५:५५	१९:४१:५९	१९:३८:0२	१९:३४:0६	१९:३0:१0	१९:२६:१३	१९:२२:१७	१९:१८:२0
वृश्चिकः	२२:२८:२७	२२:२४:३0	२२:२0:३४	२२:१६:३७	२२:१२:४१	२२:0८:४५	२२:0४:४८	२२:00:५२	२१:५६:५५	२१:५२:५९	२१:४९:0३	२१:४५:0६	२१:४१:१0	२१:३७:१४
धनुः	00:३३:५२	00:२९:५६	00:२५:५९	00:२२:0३	00:१८:0७	00:१४:१0	00:१0:१४	00:0६:१८	00:0२:२१	२३:५८:२५	२३:५४:२९	२३:५0:३२	२३:४६:३६	२३:४२:४0
मकरः	0२:१८:२५	0२:१४:२९	0२:१0:३२	0२:0६:३६	0२:0२:४0	0१:५८:४३	0१:५४:४७	0१:५0:५१	0१:४६:५४	0१:४२:५८	0१:३९:0२	0१:३५:0६	0१:३१:0९	0१:२७:१३
कुम्भः	0३:४७:३३	0३:४३:३७	0३:३९:४0	0३:३५:४४	0३:३१:४८	0३:२७:५१	0३:२३:५५	0३:१९:५९	0३:१६:0३	0३:१२:0६	0३:0८:१0	0३:0४:१४	0३:00:१८	0२:५६:२१
मीनः	0५:१३:२६	0५:0९:३0	0५:0५:३४	0५:0१:३७	0४:५७:४१	0४:५३:४५	0४:४९:४८	0४:४५:५२	0४:४१:५६	0४:३८:00	0४:३४:0३	0४:३0:0७	0४:२६:११	0४:२२:१५

सूर्योदयकालीन तिथिः४

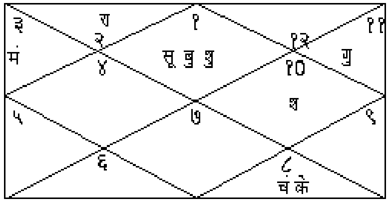

सूर्योदयकालीन तिथिः११

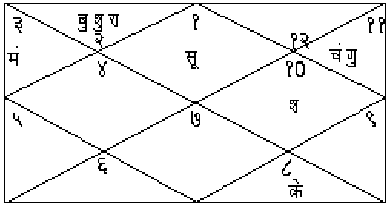

वैशाख शुक्लपक्षः; संवत्

ग्रहस्थितिः–मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः,१२:५:२०२१;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
३३:१४:०८	१ बु	४९:३७	रा २५:३५:३०	**कृत्ति·**	४९:३४	रा २५:३४:१३	शोभ·	४३:२२	रा २३:०५:१९	किं १७:०४	बव ४९:३७	वृष	अहोरात्र	५:४४:३९	७:०२:१८	सिद्धि	२९	१२	सर्वार्थ·कृ; अमृत·१; सर्वार्थ·रो;
३३:१७:०५	२ गु	५४:३०	रा २७:३२:०३	**रोहि·**	५५:५४	रा २८:०५:४०	अतिग·	४४:५१	रा २३:४०:२४	बाल २२:०८	कौल ५४:३०	वृष	अहोरात्र	५:४४:०१	७:०२:५१	उत्पात	३०	१३	अमृत·३;
३३:१९:६०	३ शु	५८:४५	रा २९:१३:२३	**मृग·**	६०:००	अहोरात्र	सुकर्मा	४५:५४	रा २४:०४:५४	तैति २६:४४	गर ५८:४५	वृ·२८:५२	दि १७:१६:१८	५:४३:२४	७:०३:२४	मानस	३१	१४	**संक्रान्ति, मासान्तः**; अमृत·४;
३३:२२:५१	४ श	६०:००	अहोरात्र	**मृग·**	०१:३९	दि ०६:२२:२०	धृति	४६:१६	रा २४:१३:०३	वणि ३०:३३	विष ६०:००	मिथुन	अहोरात्र	५:४२:४९	७:०३:५७	वज्र	१	१५	**भद्रा १७:५६–३०:३२घं·**; सिद्ध·४;
३३:२५:४०	४ र	०२:०४	दि ०६:३१:५८	**आर्द्रा**	०६:२७	दि ०८:१६:५७	शूल	४५:४६	रा २४:००:४०	विष ०२:०४	बव ३३:१७	मि·५४:१८	रा २७:२५:२९	५:४२:१४	७:०४:३०	ध्वांक्ष	२	१६	**भद्रांतः६:३२घं·; मासादिः**; द·ति·४;
३३:२८:२५	५ चं	०४:१४	दि ०७:२३:०७	**पुन·**	१०:०८	दि ०९:४४:४१	गण्ड	४४:२०	रा २३:२५:३५	बाल ०४:१४	कौल ३४:५०	कर्क	अहोरात्र	५:४१:४१	७:०५:०३	धूम्र	३	१७	अमृत·५; सिद्ध·६; सर्वार्थ·पु;
३३:३१:०६	६ मं	०५:०८	दि ०७:४४:२२	**पुष्य**	१२:३५	दि १०:४३:१२	वृद्धि	४१:५३	रा २२:२६:१४	तैति ०५:०८	गर ३५:०६	कर्क	अहोरात्र	५:४१:०९	७:०५:३५	प्रवर्द्ध	४	१८	**गण्डान्तारम्भः२९:०७;**
३३:३३:४५	७ बु	०४:४५	दि ०७:३४:४८	**आश्ले·**	१३:४७	दि ११:११:३३	ध्रुव	३८:२६	रा २१:०३:०३	वणि ०४:४५	विष ३४:०५	क·१३:४७	दि ११:११:३३	५:४०:३८	७:०६:०८	राक्षस	५	१९	**भद्रा७:३५–१९:१९घं·;गण्डान्तः१७:१४;**
३३:३६:२०	८ गु	०३:०९	दि ०६:५५:४२	**मघा**	१३:४८	दि ११:११:११	व्याघ·	३४:०३	रा १९:१७:१४	बव ०३:०९	बाल ३१:५४	सिंह	अहोरात्र	५:४०:०८	७:०६:४०	मुसल	६	२०	अमृत·८; रवियोगःपूफा;
३३:३८:५१	९ शु	**००:२४** **५६:१४**	**दि ०५:४९:१३** **रा २८:१८:४९**	**पू·फा·**	१२:४२	दि १०:४४:२६	हर्षण	२८:४७	दि १७:१०:३९	कौल ००:२४	तैति २८:३८	सिं·२७:१६	दि १६:३३:५६	५:३९:४०	७:०७:१२	सिद्धि	७	२१	अमृत·९; रवियोगःपूफा;
३३:४१:१९	११ श	५२:०३	रा २६:२८:१५	**उ·फा·**	१०:३९	दि ०९:५४:४३	वज्र	२२:४८	दि १४:४६:२७	वणि २४:२६	विष ५२:०३	कन्या	अहोरात्र	५:३९:१३	७:०७:४५	उत्पात	८	२२	**भद्रा १५:२६–२६:२८घं·**; अमृत·११;
३३:४३:४३	१२ र	४६:४६	रा २४:२१:२०	**हस्त**	०७:४८	दि ०८:४५:५५	सिद्धि	१६:११	दि १२:०७:१२	बव १९:२९	बाल ४६:४६	कं·३६:०७	रा २०:०५:३४	५:३८:४७	७:०८:१६	मानस	९	२३	सर्वार्थ·ह; द्विपुष्करः१२+चि;
३३:४६:०४	१३ चं	४१:०१	रा २२:०२:५१	**चित्रा**	०४:१९	दि ०७:२२:०७	व्यति·	०९:०५	दि ०९:१६:१५	कौल १३:५७	तैति ४१:०१	तुला	अहोरात्र	५:३८:२३	७:०८:४८	मुद्गर	१०	२४	द·न·चि; रवियोगःस्वा;
३३:४८:२०	१४ मं	३४:५८	रा १९:३७:०५	**स्वाती** **विशा·**	**००:२५** **५५:५१**	**दि ०५:४८:११** **रा २८:०८:३५**	**वरी** **परिघ·**	**०१:३८** **५२:२१**	**दि ०६:१७:१८** **रा २७:१३:४२**	गर ०८:०२	वणि ३४:५८	तु·४२:१९	रा २२:३३:४४	५:३७:५९	७:०९:१९	ध्वज	११	२५	**भद्रारंभः१९:३७घं·**; रवियोगःस्वा;
३३:५०:३३	१५ बु	२८:४८	दि १७:०८:५२	**अनु·**	५२:०८	रा २६:२८:३८	शिव	४६:२१	रा २४:०९:५१	विष ०१:५३	बव २८:४८	वृश्चिक	अहोरात्र	५:३७:३८	७:०९:५१	सौम्य	१२	२६	**भद्रांतः६:२३घं·**; सर्वार्थ·अनु;

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

❀ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❀

तिथि	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से
१	००:२७:१२:५३	०१:००:०४:१५	०२:१६:२७:०२	०१:१६:१९:५१	१०:०७:४२:१३	०१:११:०५:४५	०९:१६:१५:४९	०७:२०:१०:५९	४६:३७:०४	०५:५४:२६	उ·१८:०८:०७	+ ३:१९
२	००:२८:१०:३६	०१:१२:०५:१८	०२:१७:०३:५५	०१:१७:३३:५९	१०:०७:४९:४४	०१:१२:१९:१७	०९:१६:१६:३२	०७:२०:०७:४९	४६:३८:३३	०६:३५:२४	उ·१८:२३:५३	+ ३:२२
३	००:२९:०८:१८	०१:२४:०९:२४	०२:१७:४०:५०	०१:१८:४४:४६	१०:०७:५७:०६	०१:१३:३२:४७	०९:१६:१७:०८	०७:२०:०४:३८	४६:४०:००	०७:२१:३४	उ·१८:३९:१९	+ ३:२४
४	०१:००:०५:५७	०२:०६:१९:५४	०२:१८:१७:४६	०१:१९:५१:५८	१०:०८:०४:१८	०१:१४:४६:१६	०९:१६:१७:३८	०७:२०:०१:२७	४६:४१:२६	०८:०८:३०	उ·१८:५४:२८	+ ३:२५
४	०१:०१:०३:३५	०२:१८:३९:५०	०२:१८:५४:४३	०१:२०:५५:१९	१०:०८:११:२१	०१:१५:५९:४३	०९:१६:१८:०१	०७:१९:५८:१७	४६:४२:५०	०९:०३:१०	उ·१९:०९:१७	+ ३:२६
५	०१:०२:०१:१२	०३:०१:११:४३	०२:१९:३१:४१	०१:२१:५४:३३	१०:०८:१८:१३	०१:१७:१३:०८	०९:१६:१८:१८	०७:१९:५५:०६	४६:४४:१२	०९:५८:५४	उ·१९:२३:४७	+ ३:२६
६	०१:०२:५८:४६	०३:१३:५७:२८	०२:२०:०८:४१	०१:२२:४९:२३	१०:०८:२४:५६	०१:१८:२६:३१	०९:१६:१८:२८	०७:१९:५१:५५	४६:४५:३३	१०:५६:४७	उ·१९:३७:५७	+ ३:२६
७	०१:०३:५६:१९	०३:२६:५८:१७	०२:२०:४५:४२	०१:२३:३९:३२	१०:०८:३१:२९	०१:१९:३९:५३	०९:१६:१८:३१	०७:१९:४८:४५	४६:४६:५२	११:५६:२३	उ·१९:५१:४८	+ ३:२५
८	०१:०४:५३:५१	०४:१०:१४:४०	०२:२१:२२:४३	०१:२४:२४:४२	१०:०८:३७:५२	०१:२०:५३:१२	०९:१६:१८:२८	०७:१९:४५:३४	४६:४८:१०	१२:५६:१९	उ·२०:०५:१८	+ ३:२४
९	०१:०५:५१:२१	०४:२३:४६:१७	०२:२१:५९:४६	०१:२५:०४:३६	१०:०८:४४:०५	०१:२२:०६:३०	०९:१६:१८:१८	०७:१९:४२:२३	४६:४९:२६	१३:५६:३६	उ·२०:१८:२९	+ ३:२२
११	०१:०६:४८:४९	०५:०७:३२:०५	०२:२२:३६:५०	०१:२५:३८:५६	१०:०८:५०:०७	०१:२३:१९:४७	०९:१६:१८:०२	०७:१९:३९:१३	४६:५०:४०	१४:५८:०३	उ·२०:३१:१८	+ ३:१९
१२	०१:०७:४६:१६	०५:२१:३०:२०	०२:२३:१३:५६	०१:२६:०७:२५	१०:०८:५५:५८	०१:२४:३३:०१	०९:१६:१७:४०	०७:१९:३६:०२	४६:५१:५२	१५:५९:४९	उ·२०:४३:४७	+ ३:१६
१३	०१:०८:४३:४१	०६:०५:३८:३५	०२:२३:५१:०२	०१:२६:२९:४८	१०:०९:०१:४०	०१:२५:४६:१४	०९:१६:१७:१०	०७:१९:३२:५१	४६:५३:०२	१७:०३:०६	उ·२०:५५:५५	+ ३:१३
१४	०१:०९:४१:०५	०६:१९:५३:५८	०२:२४:२८:०९	०१:२६:४५:५०	१०:०९:०७:१०	०१:२६:५९:२५	०९:१६:१६:३५	०७:१९:२९:४१	४६:५४:१०	१८:०८:१८	उ·२१:०७:४१	+ ३:०९
१५	०१:१०:३८:२७	०७:०४:१३:१०	०२:२५:०५:१८	०१:२६:५५:२०	१०:०९:१२:३०	०१:२८:१२:३४	०९:१६:१५:५२	०७:१९:२६:३०	४६:५५:१६	१९:१३:१२	उ·२१:१९:०६	+ ३:०४

वैशाख शुक्ल तृतीया को भगवान् श्री परशुरामजी का अवतार व त्रेतायुग की प्रवृत्ति हुई। उस दिन वेद धर्म की प्रवृत्ति हुई। यह अक्षय तृतीया श्रीहरि भगवान् को बहुत प्यारी है, इस में स्नान, दान, पूजा, श्राद्ध, जप और पितृतर्पण का अक्षय फल प्राप्त होता है।

वैशाख शुक्ल चतुर्दशी २५ मई को श्रीमन्नृसिंह भगवान् का व्रतपूर्वक, विधिपूर्वक जन्मोत्सव करें। यह व्रत नृसिंह भगवान् की तुष्टि के लिए पूर्णिमा से युक्त चतुर्दशी में करें। जो मनुष्य अज्ञानता से त्रयोदशी विद्ध चतुर्दशी का व्रत करता है, वह धन और सन्तान से वियोग पाता है इस कारण त्रयोदशी से युक्त चतुर्दशी का परित्याग करें, ऐसी स्कन्द पुराण में श्रीनृसिंह भगवान् की उक्ति है।

वैशाख शुक्लपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; १२ मई से २६ मई,२०२१ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपश्चिम । ऋतुःवसन्त वृषार्कतः ऋतुःग्रीष्म, सौम्यगोलः, सौम्यायनं । ति·१५ अयनांशाः२२:४९:५४

तिथि दिन	दिनाङ्क अंग्रेजी	卐 व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि 卐
१ बु	१२	सिद्ध·२; मृत्युबाण घं·११:१२:४८उ·;
२ गु	१३	**छत्रपति शिवाजी जयन्ती;** मृत्युबाण घं·१०:१५:३१या·;
३ शु	१४	**अक्षय तृतीया; श्री परशुराम जयन्ती;** वृषेरविः५३:४७,घं·३:४०:५६;
४ श	१५	**श्रीपरशुराम जयन्ती (निम्बार्क) ; वैनायकी श्रीगणेशचतुर्थी; संक्रान्ति पुण्यकालं,५:१६:०१–११:५६:३५घं·; ①**
४ र	१६	रवियोगःआ; अमृत·५; मृत्युबाण घं·७:१८:५७या·; ① रवियोगःआ; मृत्युबाण घं·८:१८:३५उ·;
५ चं	१७	**श्रीमद् आद्य शंकराचार्य जयन्ती; संत श्री सूरदास जयन्ती;** पुनर्वसौमङ्गलः४५:५४,घं·०:३०:१०; रवियोगःपु;
६ मं	१८	**श्रीमद् रामानुजाचार्य जयन्ती; श्रीगंगासप्तमी;** चन्दनषष्ठी; ②
७ बु	१९	**श्री कामदा सप्तमी;** सिद्ध·७;
८ गु	२०	**श्री जानकी नवमी (स्मार्त्त) ; श्रीदुर्गाष्टमी; श्री बगलामुखी जयन्ती;**
९ शु	२१	**श्री जानकी नवमी (वैष्णव) ;** रवियोगःउफा; सिद्ध·११;
११ श	२२	**श्री मोहिनी एकादशी (स्मार्त्त) ;** मृगशिरायांशुक्रः००:११,घं·०६:१०:२३; रवियोगःउफा;
१२ र	२३	**श्री मोहिनी एकादशी (वैष्णव) ; श्रीहितहरिवंश महाप्रभु जयन्ती;** सिद्ध·१३;
१३ चं	२४	**सोम प्रदोष व्रतम्; व्यतिपात पुण्य; ②** मृगशिरायांबुधः३५:५५,घं·२०:२९; रवियोगःपु; अमृत·७; सर्वार्थ·आश्ले;
१४ मं	२५	**श्री नृसिंह जयन्ती; पूर्णिमा व्रतम्;** रोहिण्यांरविः१९:४७,घं·१३:५९:२६; रवियोगःवि; मृत्युबाण घं·२१:४९:३४उ·;
१५ बु	२६	**वैशाखी पूर्णिमा (स्नान–दान) ; श्री कूर्म जयन्ती; श्री बुद्ध पूर्णिमा;** श्रीसत्यनारायण पूर्णिमा; पीपल पूर्णिमा; अमृत·१; मृत्युबाण घं·२०:४२:५३या·;

ति	श्राद्धकाल घण्टादिः
१	११:५६:५४–१३:४३:१५
१५	११:५६:४०–१३:४४:५७

वैशाख मास कृत्य

अक्षयतृतीया- वैशाख शुक्ल तृतीया को अक्षय तृतीया कहते हैं। यह पूर्वाह्नव्यापिनी ग्राह्य होती है। दो दिन पूर्वाह्न में होने पर अगली तिथि ग्राह्य होती है। द्वितीया विद्धा अग्राह्य होती है। चतुर्थी विद्धा शुभ होती है- ***वैशाखशुक्लतृतीया अक्षय्यतृतीयोच्यते। सापूर्वाह्नव्यापिनीग्राह्या। दिनद्वयेपितद्व्याप्तौपरैव।*** *(निर्णयसिन्धु)*। इसमें जप, होम, पितृतर्पण, दान जो भी किया जाए वह सब कुछ अक्षयफल प्रदान करता है। यह युगादि तिथि भी है। तिल या स्वर्ण का दान विशेष फलदायी होता है।

चन्दनोत्सव- भी इसी दिन करें। श्रीठाकुरजीको अभ्यंग पूर्वक स्नान कराकर गुलाब जल में घिसे हुए केशर-कपूर-चन्दन का सर्वांग में लेपन करें, अत्यन्त महीन-वस्त्र धारण करावें, आभूषण-पुष्पादि से श्रृंगार कर सिंहासन पर विराजमान करें।

श्री परशुरामजयन्ती- वैशाख शुक्ल की प्रदोषव्यापिनी तृतीया में परशुरामजी का जन्म हुआ था। यदि दोनों दिन प्रदोषव्यापिनी तिथि हो, तो परातिथि ग्राह्य करे- ***द्विनद्वये रात्रिप्रथमयामे साम्येन वैषम्येण वैकदेशव्याप्तौ परा।*** *(धर्मसिन्धु)*।

भगवान् परशुराम को अर्घ्य देने का मन्त्र-

जमदग्निसुतो वीर क्षत्रियान्तकर प्रभो। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर।।

श्रीगंगासप्तमी- वैशाख शुक्ल सप्तमी के दिन महर्षि जह्नु ने अपने दाहिने कान से गंगा को पृथ्वी पर छोड़ा था। गंगा सप्तमी मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्य होती है। दोनों दिन मध्याह्न व्यापिनी होने, या न होने पर पूर्वातिथि ग्राह्य होती है।

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि ल·अं·	१ बु घं·मि·से	२ गु घं·मि·से	३ शु घं·मि·से	लग्न अन्त	४ श घं·मि·से	४ र घं·मि·से	५ चं घं·मि·से	६ मं घं·मि·से	७ बु घं·मि·से	८ गु घं·मि·से	९ शु घं·मि·से	११ श घं·मि·से	१२ र घं·मि·से	१३ चं घं·मि·से	१४ मं घं·मि·से	१५ बु घं·मि·से
मेषः	०५:५४:१८	०५:५०:२१	०५:४६:२४	वृष्	०७:३७:५८	०७:३४:०२	०७:३०:०५	०७:२६:०९	०७:२२:१३	०७:१८:१६	०७:१४:२०	०७:१०:२४	०७:०६:२८	०७:०२:३२	०६:५८:३६	०६:५४:४०
वृष्	०७:४९:४८	०७:४५:५१	०७:४१:५५	मिथुनः	०९:५२:०९	०९:४८:१३	०९:४४:१७	०९:४०:२०	०९:३६:२४	०९:३२:२८	०९:२८:३२	०९:२४:३५	०९:२०:३९	०९:१६:४३	०९:१२:४७	०९:०८:५१
मिथुनः	१०:०३:५९	१०:००:०२	०९:५६:०६	कर्कः	१२:१२:२०	१२:०८:२३	१२:०४:२७	१२:००:३१	११:५६:३५	११:५२:३८	११:४८:४२	११:४४:४६	११:४०:५०	११:३६:५४	११:३२:५८	११:२९:०३
कर्कः	१२:२४:०९	१२:२०:१३	१२:१६:१६	सिंहः	१४:२८:४८	१४:२४:५२	१४:२०:५५	१४:१६:५९	१४:१३:०३	१४:०९:०७	१४:०५:११	१४:०१:१५	१३:५७:१९	१३:५३:२३	१३:४९:२७	१३:४५:३१
सिंहः	१४:४०:३७	१४:३६:४१	१४:३२:४४	कन्या	१६:४३:४५	१६:३९:४९	१६:३५:५३	१६:३१:५७	१६:२८:०१	१६:२४:०४	१६:२०:०८	१६:१६:१३	१६:१२:१७	१६:०८:२१	१६:०४:२५	१६:००:२९
कन्या	१६:५५:३४	१६:५१:३८	१६:४७:४२	तुला	१९:०२:३५	१८:५८:३९	१८:५४:४३	१८:५०:४७	१८:४६:५१	१८:४२:५५	१८:३८:५९	१८:३५:०३	१८:३१:०७	१८:२७:११	१८:२३:१६	१८:१९:२०
तुला	१९:१४:२४	१९:१०:२८	१९:०६:३२	वृश्चिकः	२१:२१:२९	२१:१७:३३	२१:१३:३७	२१:०९:४१	२१:०५:४५	२१:०१:४९	२०:५७:५३	२०:५३:५७	२०:५०:०१	२०:४६:०५	२०:४२:१०	२०:३८:१४
वृश्चिकः	२१:३३:१७	२१:२९:२१	२१:२५:२५	धनुः	२३:२६:५५	२३:२२:५९	२३:१९:०३	२३:१५:०७	२३:११:११	२३:०७:१५	२३:०३:१९	२२:५९:२३	२२:५५:२८	२२:५१:३२	२२:४७:३६	२२:४३:४१
धनुः	२३:३८:४४	२३:३४:४७	२३:३०:५१	मकरः	०१:११:२९	०१:०७:३३	०१:०३:३७	००:५९:४१	००:५५:४५	००:५१:४९	००:४७:५३	००:४३:५७	००:४०:०२	००:३६:०६	००:३२:१०	००:२८:१५
मकरः	०१:२३:१७	०१:१९:२१	०१:१५:२५	कुम्भः	०२:४०:३७	०२:३६:४१	०२:३२:४५	०२:२८:४९	०२:२४:५३	०२:२०:५८	०२:१७:०२	०२:१३:०६	०२:०९:१०	०२:०५:१५	०२:०१:१९	०१:५७:२३
कुम्भः	०२:५२:२५	०२:४८:२९	०२:४४:३३	मीनः	०४:०६:३१	०४:०२:३५	०३:५८:३९	०३:५४:४३	०३:५०:४७	०३:४६:५१	०३:४२:५६	०३:३९:००	०३:३५:०४	०३:३१:०९	०३:२७:१३	०३:२३:१८
मीनः	०४:१८:१९	०४:१४:२३	०४:१०:२७	मेषः	०५:४२:२८	०५:३८:३१	०५:३४:३५	०५:३०:३८	०५:२६:४२	०५:२२:४६	०५:१८:४९	०५:१४:५३	०५:११:०१	०५:०७:०५	०५:०३:१०	०४:५९:१४

सूर्योदयकालीन तिथिः४

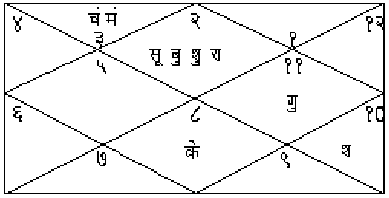

सूर्योदयकालीन तिथिः११

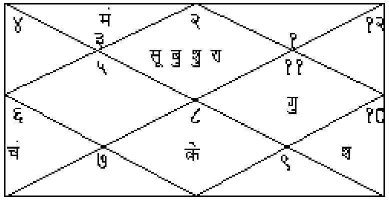

ज्येष्ठकृष्णपक्षः; संवत् २०७८फसली १४२८

ग्रहस्थितिः–मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; वक्री बुधःपश्चिमोदितः, २७:५:२०२१;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
३३:५२:४१	१ गु	२२:४५	दि १४:४३:२३	**ज्ये·**	४८:११	रा २४:५३:४०	सिद्ध	३८:५१	रा २१:०९:३८	कौल २२:४५	तैति ४९:५०	वृ·४८:११	रा २४:५३:४०	५:३७:१७	७:१०:२१	कालदंड	१३	२७	**गण्डान्तारम्भः१९:१७;**
३३:५४:४५	२ शु	१७:०१	दि १२:२५:२७	**मूल**	४४:३८	रा २३:२८:१६	साध्य	३१:३९	दि १८:१६:४०	गर १७:०१	वणि ४४:१९	धनु	अहोरात्र	५:३६:५८	७:१०:५२	प्रवर्द्ध	१४	२८	**भद्रारंभः२३:२१घं·; गण्डान्तः६:३१;**
३३:५६:४६	३ श	११:४७	दि १०:१९:२२	**पू·षा·**	४१:४१	रा २२:१७:१४	शुभ	२४:५५	दि १५:३४:४४	विष ११:४७	बव ३९:२४	ध·५६:०४	रा २८:०२:१२	५:३६:४०	७:११:२२	मातङ्ग	१५	२९	**भद्रांतः१०:१९घं·;** द·ति·४;
३३:५८:४२	४ र	०७:१४	दि ०८:२९:५५	**उ·षा·**	३९:३१	रा २१:२४:४७	शुक्ल	१८:४७	दि १३:०७:१०	बाल ०७:१४	कौल ३५:१५	मकर	अहोरात्र	५:३६:२३	७:११:५२	अमृत	१६	३०	**अभिजितः२४:५९–४३:२४;** द·ति·४;
३४:००:३३	५ चं	०३:३१	दि ०७:००:४०	**श्रवण**	३८:१७	रा २०:५४:५३	ब्रह्म	१३:२१	दि १०:५६:३९	तैति ०३:३१	गर ३२:०२	मकर	अहोरात्र	५:३६:०८	७:१२:२१	सिद्धि	१७	३१	**पञ्चकारंभः२०:५५;** सर्वार्थ·श्र;
३४:०२:२०	६ मं	००:४९ ५८:२६	दि ०५:५५:३३ रा २९:१७:५७	**धनि·**	३८:०८	रा २०:५०:५६	ऐन्द्र	०८:४६	दि ०९:०६:२३	वणि ००:४९	विष २९:५३	म·०८:०४	दि ०८:४९:२८	५:३५:५४	७:१२:५०	उत्पात	१८	१	**भद्रा ५:५६–१७:३३घं·;**
३४:०४:०३	८ बु	५८:५५	रा २९:०९:३९	**शत·**	३९:०९	रा २१:१५:२६	वैधृ·	०५:०७	दि ०७:३८:३१	बाल २८:५६	कौल ५८:५५	कुंभ	अहोरात्र	५:३५:४२	७:१३:१९	मानस	१९	२	कर्कमैङ्गलः५५:७,घं·४:५:२१;
३४:०५:४१	९ गु	५९:५२	रा २९:३२:११	**पू·भा·**	४१:२६	रा २२:०९:५९	विष्कु·	०२:२७	दि ०६:३४:२३	तैति २९:१४	गर ५९:५२	कु·२५:४५	दि १५:५३:३३	५:३५:३०	७:१३:४७	मुद्गर	२०	३	सिद्ध·१०;
३४:०७:१५	१० शु	६०:००	अहोरात्र	**उ·भा·**	४४:५७	रा २३:३४:०५	प्रीति	००:४८	दि ०५:५४:३४	वणि ३०:४९	विष ६०:००	मीन	अहोरात्र	५:३५:२०	७:१४:१४	ध्वज	२१	४	**भद्रा १७:५५–३०:२४घं·;** सर्वार्थ·रे;
३४:०८:४४	१० श	०२:०४	दि ०६:२४:३७	**रेवती**	४९:३६	रा २५:२५:२७	आयु·	००:०८	दि ०५:३८:१३	विष ०२:०४	बव ३३:३५	मी·४९:३६	रा २५:२५:२७	५:३५:१२	७:१४:४१	धाता	२२	५	**भद्रांतः६:२५घं·; पञ्चकान्तः२५:२५;**
३४:१०:०८	११ र	०५:२२	दि ०७:४३:५८	**अश्वि·**	५५:१२	रा २७:३९:४७	सौभा·	००:२०	दि ०५:४३:०३	बाल ०५:२२	कौल ३७:२३	मेष	अहोरात्र	५:३५:०४	७:१५:०८	आनन्द	२३	६	सर्वार्थ·अ; द·न·भ;
३४:११:२८	१२ चं	०९:३६	दि ०९:२५:२६	**भरणी**	६०:००	अहोरात्र	शोभ·	०१:१६	दि ०६:०५:३३	तैति ०९:३६	गर ४१:५८	मेष	अहोरात्र	५:३४:५८	७:१५:३३	सुस्थिर	२४	७	
३४:१२:४२	१३ मं	१४:२६	दि ११:२१:२८	**भरणी**	०१:२८	दि ०६:१०:०४	अतिग·	०२:४३	दि ०६:४०:०७	वणि १४:२६	विष ४६:५८	मे·१८:०५	दि १२:४९:०५	५:३४:५४	७:१५:५९	मुसल	२५	८	**भद्रा ११:२१–२४:२२घं·;**सर्वार्थ·कृ;
३४:१३:५२	१४ बु	१९:३०	दि १३:२२:५२	**कृत्ति·**	०८:०१	दि ०८:४७:२६	सुकर्मा	०४:२४	दि ०७:२०:२०	शकु १९:३०	चतु ५१:५८	वृष	अहोरात्र	५:३४:५०	७:१६:२३	सिद्धि	२६	९	सर्वार्थ·कृ; सर्वार्थ·रो;
३४:१४:५७	३० गु	२४:२०	दि १५:१८:४८	**रोहि·**	१४:२६	दि ११:२१:२०	धृति	०५:५९	दि ०७:५८:१७	नाग २४:२०	किं ५६:३२	वृ·४७:२८	रा २४:३३:४९	५:३४:४८	७:१६:४७	उत्पात	२७	१०	सिद्ध·१५;

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

❀ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❀

तिथि	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से
१	०१:११:३५:४८	०७:१८:३२:२२	०२:२५:४२:२७	०१:२६:५८:०८	१०:०९:१७:३८	०१:२९:२५:४२	०९:१६:१५:०४	०७:१९:२३:१९	४६:५६:२१	२०:१६:५९	उ·२१:३०:०९	२·९६४
२	०१:१२:३३:०८	०८:०२:४७:४७	०२:२६:१९:३७	०१:२६:५४:१०	१०:०९:२२:३६	०२:००:३८:४७	०९:१६:१४:०९	०७:१९:२०:०९	४६:५७:२३	२१:१७:३१	उ·२१:४०:४९	२·८४२
३	०१:१३:३०:२६	०८:१६:५६:०५	०२:२६:५६:४९	०१:२६:४३:२८	१०:०९:२७:२३	०२:०१:५१:५१	०९:१६:१३:०७	०७:१९:१६:५८	४६:५८:२३	२२:११:४६	उ·२१:५१:०८	२·७१७
४	०१:१४:२७:४३	०९:००:५४:२४	०२:२७:३४:०१	०१:२६:२६:०९	१०:०९:३१:५८	०२:०३:०४:५३	०९:१६:११:५९	०७:१९:१३:४७	४६:५९:२१	२३:०२:२९	उ·२२:०१:०४	२·५८५
५	०१:१५:२४:५९	०९:१४:४०:१७	०२:२८:११:१५	०१:२६:०२:२७	१०:०९:३६:२२	०२:०४:१७:५४	०९:१६:१०:४५	०७:१९:१०:३६	४७:००:१७	२३:४४:५६	उ·२२:१०:३८	२·४५१
६	०१:१६:२२:१३	०९:२८:१२:००	०२:२८:४८:३०	०१:२५:३२:४७	१०:०९:४०:३५	०२:०५:३०:५२	०९:१६:०९:२५	०७:१९:०७:२६	४७:०१:१०	००:२५:५४	उ·२२:१९:४८	२·३०४
८	०१:१७:१९:२६	१०:११:२८:२९	०२:२९:२५:४५	०१:२४:५७:४०	१०:०९:४४:३६	०२:०६:४३:४९	०९:१६:०७:५८	०७:१९:०४:१५	४७:०२:०२	०१:००:३८	उ·२२:२८:३५	२·१४७
९	०१:१८:१६:३८	१०:२४:२९:२६	०३:००:०३:०२	०१:२४:१७:४७	१०:०९:४८:२६	०२:०७:५६:४४	०९:१६:०६:२५	०७:१९:०१:०४	४७:०२:५१	०१:३४:३७	उ·२२:३६:५९	१·९८८
१०	०१:१९:१३:४९	११:०७:१५:१८	०३:००:४०:१९	०१:२३:३३:५९	१०:०९:५२:०४	०२:०९:०९:३७	०९:१६:०४:४६	०७:१८:५७:५४	४७:०३:३८	०२:०७:५३	उ·२२:४५:००	१·८२३
१०	०१:२०:१०:५९	११:१९:४७:१९	०३:०१:१७:३७	०१:२२:४७:१४	१०:०९:५५:३०	०२:१०:२२:२९	०९:१६:०३:००	०७:१८:५४:४३	४७:०४:२२	०२:४०:३२	उ·२२:५२:३७	१·६५६
११	०१:२१:०८:०७	००:०२:०७:२४	०३:०१:५४:५७	०१:२१:५८:३६	१०:०९:५८:४५	०२:११:३५:१९	०९:१६:०१:०९	०७:१८:५१:३२	४७:०५:०४	०३:१५:१९	उ·२२:५९:५०	१·४७५
१२	०१:२२:०५:१५	००:१४:१८:०४	०३:०२:३२:१७	०१:२१:०९:१५	१०:१०:०१:४७	०२:१२:४८:०६	०९:१५:५९:११	०७:१८:४८:२२	४७:०५:४४	०३:५२:३६	उ·२३:०६:४०	१·२९२
१३	०१:२३:०२:२१	००:२६:२२:२०	०३:०३:०९:३८	०१:२०:२०:३५	१०:१०:०४:३७	०२:१४:००:५२	०९:१५:५७:०८	०७:१८:४५:११	४७:०६:२१	०४:३०:१२	उ·२३:१३:०५	१·१०१
१४	०१:२३:५९:२६	०१:०८:२३:३३	०३:०३:४७:००	०१:१९:३३:४६	१०:१०:०७:१६	०२:१५:१३:३७	०९:१५:५४:५९	०७:१८:४२:००	४७:०६:५६	०५:१६:०६	उ·२३:१९:०६	०·९०९
१५	००:१२:४३:१७	०१:२०:२५:४१	०३:०४:२४:२४	०१:१८:४९:५४	१०:१०:०९:४२	०२:१६:२६:१९	०९:१५:५२:४४	०७:१८:३८:४९	४७:०७:२८	०६:०२:२३	उ·२३:२४:४२	०·७१८

सम्पूर्ण ज्येष्ठ मास में जल मंदिर के मध्य संपादित उपचारों से श्रीभगवान् की सेवा करें। जल क्रीड़ा के उपयोगी सब सामग्री और विशेष भोग धरें।

माँ गंगा का स्वरूप– १·चतुर्भुजा, २·त्रिनेत्रा, ३·एक हाथ में पूर्णकुम्भ, ४·एक हाथमें श्वेत कमल, ५·एक हाथ में अभय मुद्रा, ६· एक हाथ में वरद मुद्रा, ७·नदी नद से सुशोभित, ८·श्वेतछत्र से सुशोभित, ९·छरहरी देहयुक्त, १०·देव, ऋषि आदि से संस्तुत। *(स्कन्द, का·खण्ड– २७/१४२–१४५)*

गंगा पूजा – दश संख्या की वस्तु से गंगा पूजन का विशेष महत्व है। दशविध पुष्प, दशांग, दशविध फल, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल आदि से पूजा की जाती है। गंगातट पर वास मात्र से ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति हो जाती है।

ज्येष्ठ कृष्णपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; २७ मई से १० जून, २०२१ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपश्चिम । ऋतुःग्रीष्म, सौम्यगोलः, सौम्यायनं । ति·३० अयनांशाः२२:४९:५६

卐 व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि 卐

तिथि दिन	दिनाङ्क अंग्रेजी	
१ गु	२७	**श्री ठाकुरजी की जलसेवा आरम्भ;** मिथुनेशुक्रः२८:९,घं·१७:१९:४०;
२ शु	२८	**देवर्षि श्री नारद जयन्ती (पत्रकारिता दिवस) ; श्री वीर सावरकर जयन्ती;**
३ श	२९	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी ;** सिद्ध·४;
४ र	३०	सर्वार्थ·उषा; अमृत·५;
५ चं	३१	अमृत·५; सिद्ध·६; रवियोगःध;
६ मं	१	आर्द्रायांशुक्रः५६:५१,घं·४:४६:५८; रवियोगःध; अमृत·७; द्विपुष्करः७+ध; सिद्ध·८;
८ बु	२	**श्रीकालाष्टमी;**
९ गु	३	मृत्युबाण घं·१२:३८:५५उ·;
१० शु	४	रोहिण्यांबुधः१८:१७,घं·१३:२०:५८; मृत्युबाण घं·११:२७:३४या·;
१० श	५	**गण्डान्तारम्भः१८:५५;** द·न·रे; अमृत·११;
११ र	६	**श्री अपरा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त) ; गण्डान्तः७:५७;**
१२ चं	७	**सोम प्रदोष व्रतम्; श्रीवटसावित्री व्रतारम्भ (उत्तर भारत) ;**
१३ मं	८	**श्री वटसावित्रीव्रत द्वितीय दिन;** मृगशिरायांरविः१८:३३,घं·१३:२६:४५; ⑪
१४ बु	९	**श्री वटसावित्री व्रतपूर्ति;** ⑪ पुष्येमङ्गलः१६:३८,घं·१२:४०:५७; सिद्ध·१३;
३० गु	१०	**ज्येष्ठी अमावस्या (स्नान, दान, श्राद्ध) ; श्री शनिजयन्ती;**

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	११:५६:४३–१३:४५:०८
१५	११:५८:२३–१३:४७:५९

ज्येष्ठ मास कृत्य

वटसावित्री व्रत- यह व्रत ज्येष्ठ मास के दोनों पक्षों (कृष्ण-शुक्ल) में होता है। भविष्य पुराण के अनुसार ज्येष्ठ की अमावास्या में पूर्ण होता है तथा स्कन्द पुराण के अनुसार ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा में मनाया जाता है- **"अमायां च तथा ज्येष्ठे वटमूले तथासति त्रिरात्रोपोषिता नारी विधिनाऽनेन पूजयेत्।"**(भवि.), **"ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे पूर्णिमायां तथा व्रतम्। चीर्णं पुरा महाभक्त्या कथितं ते मया नृप।"** (स्कन्द) यह व्रत त्रिदिवसीय होता है। अमावास्या में इसकी पूर्ति होती है- **अत्र व्रते त्रयोदश्यादिदिनत्रयमुपवासः** (धर्मसिन्धु)। यह सौभाग्य रक्षक व्रत है। इसमें उपवास के बिना भी पूजन किया जाता है। वट के मूल में भगवान् ब्रह्मा, मध्य में भगवान् विष्णु एवं अग्र भाग में भगवान शिव का निवास रहता है- **वटमूलेस्थितो ब्रह्मा वटमध्ये जनार्दनः। वटाग्रे तु शिवो देवः सावित्रीवटसंश्रिता।।** कतिपय स्त्रियाँ केवल पूजन मात्र से सावित्री व्रत करती हैं।

शनिजयन्ती- ज्येष्ठ कृष्ण अमावास्या के दिन शनि देवता की जयन्ती मनायी जाती है। आज शनि का पूजन एवं दान किया जाता है। कालावस्त्र, तिल, तेल का दान शनिजनित कष्ट को दूर करता है ।

शनिग्रह का ध्यानमंत्र– **नीलाम्बरः शूलधरः किरीटी, गृध्रस्थितः शस्त्रधरो धनुष्मान्।**
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः, सदास्तु मह्यं वरदोस्तु नित्यम् ।।

नीलवस्त्र धारण करने वाले, शूल धारण करने वाले, मुकुट धारण करने वाले, गृध्रवाहन पर स्थित शस्त्रधारण करने वाले, धनुष से युक्त, चार भुजाधारी भगवान् सूर्य के पुत्र प्रशान्त शनि हमारे लिए हमेशा वरदायी हों।

शनि गायत्री – ॐ भगभवाय विद्महे मृत्युरूपाय धीमहि तन्नो शनिः प्रचोदयात्।।

शनि मन्त्र – ॐ नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि ल·अं·	१ गु घं·मि·से	२ शु घं·मि·से	३ श घं·मि·से	४ र घं·मि·से	५ चं घं·मि·से	६ मं घं·मि·से	८ बु घं·मि·से	९ गु घं·मि·से	१० शु घं·मि·से	१० श घं·मि·से	११ र घं·मि·से	१२ चं घं·मि·से	१३ मं घं·मि·से	१४ बु घं·मि·से	१५ गु घं·मि·से
वृष्	०६:५०:४४	०६:४६:४८	०६:४२:५२	०६:३८:५७	०६:३५:०१	०६:३१:०५	०६:२७:१०	०६:२३:१४	०६:१९:१९	०६:१५:२४	०६:११:२८	०६:०७:३३	०६:०३:३८	०५:५९:४३	०५:५५:४८
मिथुनः	०९:०४:५६	०९:०१:००	०८:५७:०४	०८:५३:०८	०८:४९:१३	०८:४५:१७	०८:४१:२२	०८:३७:२६	०८:३३:३१	०८:२९:३६	०८:२५:४०	०८:२१:४५	०८:१७:५०	०८:१३:५५	०८:१०:००
कर्कः	११:२५:०७	११:२१:११	११:१७:१५	११:१३:२०	११:०९:२४	११:०५:२९	११:०१:३३	१०:५७:३८	१०:५३:४२	१०:४९:४७	१०:४५:५२	१०:४१:५७	१०:३८:०२	१०:३४:०७	१०:३०:१२
सिंहः	१३:४१:३५	१३:३७:४०	१३:३३:४४	१३:२९:४९	१३:२५:५३	१३:२१:५८	१३:१८:०२	१३:१४:०७	१३:१०:१२	१३:०६:१६	१३:०२:२१	१२:५८:२६	१२:५४:३१	१२:५०:३६	१२:४६:४१
कन्या	१५:५६:३३	१५:५२:३८	१५:४८:४२	१५:४४:४७	१५:४०:५१	१५:३६:५६	१५:३३:००	१५:२९:०५	१५:२५:१०	१५:२१:१५	१५:१७:१९	१५:१३:२४	१५:०९:२९	१५:०५:३४	१५:०१:३९
तुला	१८:१५:२४	१८:११:२९	१८:०७:३३	१८:०३:३८	१७:५९:४२	१७:५५:४७	१७:५१:५१	१७:४७:५६	१७:४४:०१	१७:४०:०६	१७:३६:११	१७:३२:१६	१७:२८:२१	१७:२४:२६	१७:२०:३१
वृश्चिकः	२०:३४:१८	२०:३०:२३	२०:२६:२७	२०:२२:३२	२०:१८:३६	२०:१४:४१	२०:१०:४६	२०:०६:५१	२०:०२:५५	१९:५९:००	१९:५५:०५	१९:५१:१०	१९:४७:१५	१९:४३:२०	१९:३९:२५
धनुः	२२:३९:४५	२२:३५:५०	२२:३१:५४	२२:२७:५९	२२:२४:०३	२२:२०:०८	२२:१६:१३	२२:१२:१८	२२:०८:२२	२२:०४:२७	२२:००:३२	२१:५६:३७	२१:५२:४२	२१:४८:४७	२१:४४:५२
मकरः	००:२४:१९	००:२०:२४	००:१६:२८	००:१२:३३	००:०८:३८	००:०४:४२	००:००:४७	२३:५६:५२	२३:५२:५७	२३:४९:०२	२३:४५:०७	२३:४१:१२	२३:३७:१७	२३:३३:२२	२३:२९:२७
कुम्भः	०१:५३:२८	०१:४९:३३	०१:४५:३७	०१:४१:४२	०१:३७:४७	०१:३३:५१	०१:२९:५६	०१:२६:०१	०१:२२:०६	०१:१८:११	०१:१४:१६	०१:१०:२१	०१:०६:२६	०१:०२:३१	००:५८:३६
मीनः	०३:१९:२२	०३:१५:२७	०३:११:३१	०३:०७:३६	०३:०३:४१	०२:५९:४५	०२:५५:५०	०२:५१:५५	०२:४८:००	०२:४४:०५	०२:४०:१०	०२:३६:१५	०२:३२:२०	०२:२८:२५	०२:२४:३०
मेषः	०४:५५:१९	०४:५१:२३	०४:४७:२८	०४:४३:३३	०४:३९:३७	०४:३५:४२	०४:३१:४७	०४:२७:५२	०४:२३:५७	०४:२०:०२	०४:१६:०७	०४:१२:१२	०४:०८:१७	०४:०४:२२	०४:००:२७

सूर्योदयकालीन तिथिः४

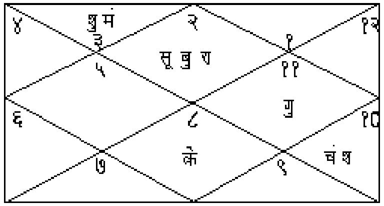

सूर्योदयकालीन तिथिः११

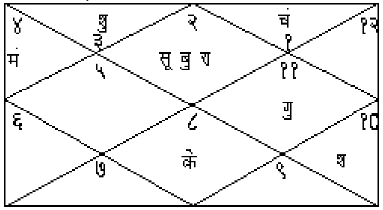

ज्येष्ठ शुक्लपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; वक्री बुधःपश्चिमास्तः, ११:६:२०२१;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१	द·प·	क२	द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:स	योग	सौर	अंग्रेजी	
३४:१५:५७	१ शु	२८:३३	दि १७:००:०२	**मृग·**	२०:१९	दि १३:४२:२०	शूल	०७:१०	दि ०८:२६:४९	बव	२८:३३	बाल	६०:००	मिथुन	अहोरात्र	५:३४:४७	७:१७:१०	मानस	२८	११	
३४:१६:५२	२ श	३१:५१	दि १८:१९:०६	**आर्द्रा**	२५:२०	दि १५:४२:४६	गण्ड	०७:४३	दि ०८:४०:०५	बाल	००:२०	कौल	३१:५१	मिथुन	अहोरात्र	५:३४:४७	७:१७:३२	मुद्गर	२९	१२	त्रिपुष्करः२+पुन;
३४:१७:४१	३ र	३४:०१	दि १९:११:०१	**पुन·**	२९:१६	दि १७:१७:१३	वृद्धि	०७:२६	दि ०८:३३:२१	तैति	०३:०४	गर	३४:०१	मि·१३:२३	दि १०:५६:०६	५:३४:४९	७:१७:५४	ध्वज	३०	१३	सिद्ध·३; सर्वार्थ·पु; रवियोगःपु;
३४:१८:२६	४ चं	३४:५६	रा १९:३३:१०	**पुष्य**	३१:६०	दि १८:२२:४१	ध्रुव	०६:१४	दि ०८:०४:२०	वणि	०४:३८	विष	३४:५६	कर्क	अहोरात्र	५:३४:५२	७:१८:१४	धाता	३१	१४	**भद्रा ७:२६–१९:३३घं·; मासान्तः;**
३४:१९:०६	५ मं	३४:३४	रा १९:२४:३५	**आश्ले·**	३३:२८	दि १८:५८:०९	व्याघ·	०४:००	दि ०७:११:०७	बव	०४:५५	बाल	३४:३४	क·३३:२८	दि ०६:५८:०९	५:३४:५६	७:१८:३४	आनन्द	३२	१५	**संक्रान्ति पुण्यकालं,१२:५१–१८:५१घं·;**
३४:१९:४०	६ बु	३२:५९	दि १८:४६:२९	**मघा**	३३:४४	दि १९:०४:३०	**हर्षण वज्र**	**००:४७ ५५:४८**	**दि ०५:५३:४४ रा २८:१२:५६**	कौल	०३:५५	तैति	३२:५९	सिंह	अहोरात्र	५:३५:०१	७:१८:५३	सुस्थिर	१	१६	**मासादिः;** अमृत·६; रवियोगःम;
३४:२०:०९	७ गु	३०:१४	दि १७:४०:५३	**पू·फा·**	३२:५१	दि १८:४३:३९	सिद्धि	५१:३१	रा २६:११:४०	गर	०१:४५	वणि	३०:१४	सिं·४७:२९	रा २४:३४:३३	५:३५:०७	७:१९:११	गद	२	१७	**भद्रा १७:४१–२८:५६घं·;** अमृत·८;
३४:२०:३३	८ शु	२६:३०	दि १६:११:०८	**उ·फा·**	३०:६०	दि १७:५९:०४	व्यति·	४५:४१	रा २३:५१:३६	बव	२६:३०	बाल	५४:१८	कन्या	अहोरात्र	५:३५:१५	७:१९:२८	शुभ	३	१८	द·ति·८; अमृत·९; रवियोगःह;
३४:२०:५२	९ श	२१:५४	दि १४:२१:१०	**हस्त**	२८:१८	दि १६:५४:२८	वरी·	३९:१२	रा २१:१६:०१	कौल	२१:५४	तैति	४९:२०	कं·५६:४१	रा २८:१५:४४	५:३५:२४	७:१९:४४	मृत्यु	४	१९	सिद्ध·९; रवियोगःह;
३४:२१:०५	१० र	१६:३७	दि १२:१४:३२	**चित्रा**	२४:५६	दि १५:३३:४९	परिघ	३२:११	दि १८:२७:५७	गर	१६:३७	वणि	४३:४७	तुला	अहोरात्र	५:३५:३३	७:१९:६०	पद्म	५	२०	**भद्रारंभः२३:०६घं·;** अमृत·१०;
३४:२१:१४	११ चं	१०:५१	दि ०९:५६:०३	**स्वाती**	२१:०६	दि १४:०१:५९	शिव	२४:४९	दि १५:३१:१०	विष	१०:५१	बव	३७:५०	तुला	अहोरात्र	५:३५:४४	७:२०:१४	छत्र	६	२१	**भद्रांतः९:५६घं·;** सिद्ध·११;
३४:२१:१७	१२ मं	**०४:४५ ५३:४७**	**दि ०७:२९:५९ रा २९:००:४७**	**विशा·**	१६:५९	दि १२:२३:२६	सिद्ध	१७:१३	दि १२:२९:०७	बाल	०४:४५	कौल	३१:३९	तु·०३:०१	दि ०६:४८:२८	५:३५:५६	७:२०:२७	श्रीवत्स	७	२२	अमृत·१२;त्रिपुष्करः१२+वि;सिद्ध·१३;
३४:२१:१५	१४ बु	५२:२६	रा २६:३४:२८	**अनु·**	१२:४८	दि १०:४३:१३	साध्य	०९:३४	दि ०९:२५:४३	गर	२५:२८	वणि	५२:२६	वृश्चिक	अहोरात्र	५:३६:०९	७:२०:३९	सौम्य	८	२३	**भद्रारंभः२६:३४घं·;गण्डान्तारम्भः२७:३०;**
३४:२१:०७	१५ गु	४६:३७	रा २४:१५:१४	**ज्ये·**	०८:४६	दि ०९:०६:४८	**शुभ शुक्ल**	**०२:०२ ५२:४५**	**दि ०६:२५:१४ रा २७:३१:१४**	विष	१९:२८	बव	४६:३७	वृ·०८:४६	दि ०९:०६:४८	५:३६:२३	७:२०:५०	कालदंड	९	२४	**भद्रांतः१३:२४घं·; गण्डान्तः१४:४४;**

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

तिथि	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से
१	०१:२५:५३:३४	०२:०२:३२:२३	०३:०५:०१:४८	०१:१८:०९:५५	१०:१०:११:५६	०२:१७:३८:६०	०९:१५:५०:२३	०७:१८:३५:३९	४७:०७:५८	०६:०२:२१	उ·२३:२९:५५	+ ०:५०
२	०१:२६:५०:३७	०२:१४:४६:५२	०३:०५:३९:१२	०१:१७:३४:४०	१०:१०:१३:५८	०२:१८:५१:३९	०९:१५:४७:५६	०७:१८:३२:२८	४७:०८:२६	०६:५३:५५	उ·२३:३४:४२	+ ०:३८
३	०१:२७:४७:३८	०२:२७:११:५८	०३:०६:१६:३८	०१:१७:०४:५०	१०:१०:१५:४७	०२:२०:०४:१६	०९:१५:४५:२४	०७:१८:२९:१७	४७:०८:५१	०७:४८:५५	उ·२३:३९:०५	+ ०:२७
४	०१:२८:४४:३९	०३:०९:४९:५६	०३:०६:५४:०५	०१:१६:४०:५७	१०:१०:१७:२४	०२:२१:१६:५१	०९:१५:४२:४६	०७:१८:२६:०६	४७:०९:१३	०८:४५:२७	उ·२३:४३:०३	+ ०:१५
५	०१:२९:४१:३९	०३:२२:४२:२५	०३:०७:३१:३३	०१:१६:२३:२५	१०:१०:१८:४८	०२:२२:२९:२५	०९:१५:४०:०२	०७:१८:२२:५६	४७:०९:३३	०९:४४:०८	उ·२३:४६:३६	+ ०:०३
६	०२:००:३८:३८	०४:०५:५०:१६	०३:०८:०९:०१	०१:१६:१२:२८	१०:१०:२०:००	०२:२३:४१:५६	०९:१५:३७:१४	०७:१८:१९:४५	४७:०९:५०	१०:४३:५८	उ·२३:४९:४४	− ०:०९
७	०२:०१:३५:३६	०४:१९:१३:३९	०३:०८:४६:३०	०१:१६:०८:१४	१०:१०:२०:६०	०२:२४:५४:२६	०९:१५:३४:२०	०७:१८:१६:३४	४७:१०:०५	११:४३:२२	उ·२३:५२:२८	− ०:२१
८	०२:०२:३२:३४	०५:०२:५१:५५	०३:०९:२४:०१	०१:१६:१०:४३	१०:१०:२१:४७	०२:२६:०६:५४	०९:१५:३१:२०	०७:१८:१३:२४	४७:१०:१७	१२:४४:०२	उ·२३:५४:४६	− ०:३४
९	०२:०३:२९:३०	०५:१६:४३:४२	०३:१०:०१:३२	०१:१६:१९:५२	१०:१०:२२:२१	०२:२७:१९:२०	०९:१५:२८:१६	०७:१८:१०:१३	४७:१०:२६	१३:४५:५०	उ·२३:५६:३९	− ०:४६
१०	०२:०४:२६:२६	०६:००:४६:५६	०३:१०:३९:०४	०१:१६:३५:३१	१०:१०:२२:४३	०२:२८:३१:४४	०९:१५:२५:०६	०७:१८:०७:०२	४७:१०:३३	१४:४८:३३	उ·२३:५८:०७	− ०:५८
११	०२:०५:२३:२२	०६:१४:५८:५८	०३:११:१६:३६	०१:१६:५७:२८	१०:१०:२२:५२	०२:२९:४४:०७	०९:१५:२१:५२	०७:१८:०३:५१	४७:१०:३७	१५:५३:५८	उ·२३:५९:१०	− १:११
१२	०२:०६:२०:१६	०६:२९:१६:४३	०३:११:५४:१०	०१:१७:२५:३०	१०:१०:२२:४८	०३:००:५६:२८	०९:१५:१८:३३	०७:१८:००:४१	४७:१०:३८	१६:५९:५४	उ·२३:५९:४७	− १:२३
१४	०२:०७:१७:११	०७:१३:३६:४२	०३:१२:३१:४४	०१:१७:५९:२०	१०:१०:२२:३२	०३:०२:०८:४७	०९:१५:१५:०९	०७:१७:५७:३०	४७:१०:३७	१८:०४:१४	उ·२३:५९:६०	− १:३६
१५	०२:०८:१४:०४	०७:२७:५४:५५	०३:१३:०९:२०	०१:१८:३८:४०	१०:१०:२२:०३	०३:०३:२१:०४	०९:१५:११:४०	०७:१७:५४:१९	४७:१०:३४	१९:०७:५६	उ·२३:५९:४७	− १:४९

गंगा दशहरा – ज्येष्ठ, शुक्लपक्ष, दशमी, बुधवार, **हस्त** नक्षत्र, व्यतीपात योग, गर करण, आनंद योग, कन्या राशिस्थ चन्द्रमा, वृषभ राशिस्थ सूर्य, ये दस योग से गंगा दशमी कहलाती है। इस दिन गंगास्नान करने से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है। यह नवमीविद्धा दशमी हो वा एकादशी विद्धा हो जिसमें योग अधिक हो, वही ग्रहण करना चाहिये। पूजन का विशेष मन्त्र है–

ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गंगायै स्वाहा।

इसी मन्त्र से भगवती गंगा का बार बार स्मरण कर पूजन पदार्थ अर्पित करे।

निर्जला एकादशी– वृष वा मिथुन राशिस्थ सूर्य हो, तब ज्येष्ठ मास शुक्लपक्ष एकादशी को यत्नपूर्वक निर्जल व्रत करें। इस एक ही व्रत के प्रभाव से बारह द्वादशियों के व्रत करने का फल प्राप्त होता है। – पद्मपुराण

ज्येष्ठ शुक्लपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; ११ जून से २४ जून, २०२१ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपश्चिम । ऋतुःग्रीष्म, सौम्यगोलः, सौम्यायनं । ति·१५ अयनांशाः२२:४९:५८

तिथि / दिन	दिनाङ्क अंग्रेजी	卐 व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि 卐
१ शु	११	सिद्ध·१;
२ श	१२	पुनर्वसौशुक्रः५६:२८,घं·४:३६:५२;
३ र	१३	**श्री रम्भा तृतीया; श्री महाराणा प्रताप जयन्ती;** हल्दीघाटी मेला; मृत्युबाण घं·0:२३:३६उ·;
४ चं	१४	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी;** द·ति·४; सर्वार्थ·पु; रवियोगःपु; अमृत·५; मृत्युबाण घं·२३:७:४०या·;
५ मं	१५	**गण्डान्तः१२:५२–२५:0२;** मिथुनेरविः१९:१९,घं·१३:४५:२७; द·ति·४; ⑫
६ बु	१६	**श्री स्कन्दषष्ठी; श्री अरण्य षष्ठी;** सिद्ध·७; मृत्युबाण घं·२०:३४:४२उ·;
७ गु	१७	द·न·उफा; मृत्युबाण घं·१९:१७:४१या·; ⑫ सर्वार्थ·आश्ले; रवियोगःम;
८ शु	१८	**श्री दुर्गाष्टमी व्रतम्; व्यतिपात पुण्य;**
९ श	१९	**श्री महेश नवमी;** रवियोगःचि;
१0 र	२0	**श्री गंगा दशहरा व्रतम्; श्री बटुकभैरव जयन्ती;** रवियोगःचि; मृत्यु·११;
११ चं	२१	**श्री निर्जला भीमसेनी एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त);** कर्केशुक्रः१३:१०,घं·११:१८:३८;
१२ मं	२२	**श्री चम्पाद्वादशी; भौमप्रदोष व्रतम्; श्री वटसावित्री व्रतारम्भ (दक्षिण भारत);** आर्द्रायांरविः२०:४८,घं·१४:२१:५५; रवियोगःअनु;
१४ बु	२३	**श्री वटसावित्री व्रत द्वितीय दिन;** पुष्येशुक्रः५९:७,घं·५:४१:५०; मार्गी बुधः0७:२३; सर्वार्थ·अनु; रवियोगःज्ये;
१५ गु	२४	**ज्येष्ठी पूर्णिमा (स्नान–दान–व्रत); श्रीवटसावित्री व्रतपूर्ति; ज्येष्ठाभिषेक; जलसेवा पूर्ति;** मार्गी बुधः0७:२३; सिद्ध·१५; रवियोगःज्ये;

ज्येष्ठ मास कृत्य

निर्जला एकादशी- आज के दिन आचमन को छोड़कर अन्य किसी भी प्रकार से जल का ग्रहण नहीं किया जाता है। इसे करने से विष्णुलोक की प्राप्ति होती है। एकादशी व्रत करके द्वादशी में जलकुम्भ और शर्करा दान करना पाहिए। दान देते समय निम्नलिखित मन्त्र का प्रयोग करते हैं-

देव देव हृषीकेश संसारार्णवतारक। उदकुम्भप्रदानेन यास्यामि परमां गतिम्।।

त्रिविक्रम(वामन) पूजन- ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी तिथि में भगवान् त्रिविक्रम विष्णु की दिन-रात पूजा की जाती है। इस पूजन के प्रभाव से गो-अयन यज्ञ का पुण्य प्राप्त होता है।

द्वादशाक्षर मन्त्र

विनियोगः- ॐ अस्य श्रीद्वादशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापति ऋषिः, गायत्री छन्दः, वासुदेव देवता, ॐ बीजं, नमः शक्तिः श्रीवासुदेवप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

ध्यानम् - **हरिमुज्ज्वलचक्रदराब्जगदाकुलदोःपरिघं सितपद्मगतम्।**
वलयांगदहारकिरीटधरं नवकुन्दरुचं प्रणमामि सदा। (प्रपंचसारे)

प्रकाशमान चक्र, शंख, गदा एवं पद्म, वलय, अंगद, हार, किरीटधारी, नवविकसित कुन्दपुष्प की कान्ति वाले भगवान् विष्णु का ध्यान करता हूँ।

मन्त्रः - ❋❋ **ॐ नमो भगवते वासुदेवाय** ❋❋

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	११:५८:३४–१३:४८:१३
१५	१२:0१:0८–१३:५१:0३

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि ल·अं·	१ शु घं·मि·से	२ श घं·मि·से	३ र घं·मि·से	४ चं घं·मि·से	५ मं घं·मि·से	लग्न अन्त	६ बु घं·मि·से	७ गु घं·मि·से	८ शु घं·मि·से	९ श घं·मि·से	१0 र घं·मि·से	११ चं घं·मि·से	१२ मं घं·मि·से	१४ बु घं·मि·से	१५ गु घं·मि·से
वृष्	0५:५१:५३	0५:४७:५८	0५:४४:0३	0५:४0:0८	0५:३६:१३	मिथुनः	0७:४६:३१	0७:४२:३६	0७:३८:४१	0७:३४:४७	0७:३0:५२	0७:२६:५७	0७:२३:0३	0७:१९:0८	0७:१५:१३
मिथुनः	0८:0६:0५	0८:0२:१0	0७:५८:१५	0७:५४:२0	0७:५0:२५	कर्कः	१0:0६:४२	१0:0२:४८	0९:५८:५३	0९:५४:५८	0९:५१:0४	0९:४७:0९	0९:४३:१४	0९:३९:२0	0९:३५:२५
कर्कः	१0:२६:१७	१0:२२:२२	१0:१८:२७	१0:१४:३२	१0:१0:३७	सिंहः	१२:२३:१२	१२:१९:१७	१२:१५:२२	१२:११:२८	१२:0७:३३	१२:0३:३८	११:५९:४४	११:५५:४९	११:५१:५५
सिंहः	१२:४२:४६	१२:३८:५१	१२:३४:५६	१२:३१:0१	१२:२७:0७	कन्या	१४:३८:१0	१४:३४:१६	१४:३0:२१	१४:२६:२६	१४:२२:३२	१४:१८:३७	१४:१४:४२	१४:१0:४८	१४:0६:५३
कन्या	१४:५७:४४	१४:५३:५0	१४:४९:५५	१४:४६:00	१४:४२:0५	तुला	१६:५७:0२	१६:५३:0७	१६:४९:१२	१६:४५:१८	१६:४१:२३	१६:३७:२८	१६:३३:३४	१६:२९:३९	१६:२५:४५
तुला	१७:१६:३६	१७:१२:४१	१७:0८:४६	१७:0४:५१	१७:00:५७	वृश्चिकः	१९:१५:५७	१९:१२:0२	१९:0८:0७	१९:0४:१३	१९:00:१८	१८:५६:२३	१८:५२:२९	१८:४८:३४	१८:४४:३९
वृश्चिकः	१९:३५:३0	१९:३१:३६	१९:२७:४१	१९:२३:४६	१९:१९:५१	धनुः	२१:२१:२४	२१:१७:२९	२१:१३:३४	२१:0९:४0	२१:0५:४५	२१:0१:५१	२0:५७:५६	२0:५४:0१	२0:५0:0७
धनुः	२१:४0:५८	२१:३७:0३	२१:३३:0८	२१:२९:१३	२१:२५:१९	मकरः	२३:0५:५८	२३:0२:0४	२२:५८:0९	२२:५४:१४	२२:५0:२0	२२:४६:२५	२२:४२:३0	२२:३८:३६	२२:३४:४१
मकरः	२३:२५:३२	२३:२१:३७	२३:१७:४३	२३:१३:४८	२३:0९:५३	कुम्भः	00:३५:0८	00:३१:१३	00:२७:१८	00:२३:२४	00:१९:२९	00:१५:३४	00:११:४0	00:0७:४५	00:0३:५0
कुम्भः	00:५४:४१	00:५0:४६	00:४६:५२	00:४२:५७	00:३९:0२	मीनः	0२:0१:0२	0१:५७:0७	0१:५३:१३	0१:४९:१८	0१:४५:२३	0१:४१:२९	0१:३७:३४	0१:३३:४0	0१:२९:४५
मीनः	0२:२0:३६	0२:१६:४१	0२:१२:४६	0२:0८:५१	0२:0४:५७	मेषः	0३:३६:५९	0३:३३:0४	0३:२९:१0	0३:२५:१५	0३:२१:२0	0३:१७:२६	0३:१३:३१	0३:0९:३७	0३:0५:४२
मेषः	0३:५६:३३	0३:५२:३८	0३:४८:४३	0३:४४:४८	0३:४0:५४	वृष्	0५:३२:१८	0५:२८:२४	0५:२४:२९	0५:२0:३४	0५:१६:४0	0५:१२:४५	0५:0९:0३	0५:0५:0८	0५:0१:१४

सूर्योदयकालीन तिथिः४

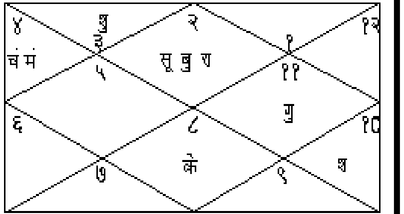

सूर्योदयकालीन तिथिः११

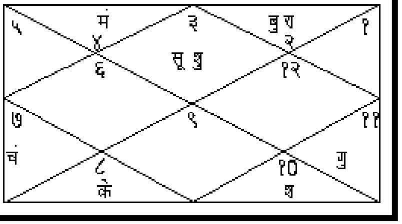

आषाढ़ कृष्णपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वोदितः, २५:६:२०२१;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
३४:२०:५५	१ शु	४१:१७	रा २२:०७:२९	**मूल**	०५:०६	दि ०७:३८:५३	ब्रह्म	४७:५७	रा २४:४७:२४	बाल १३:५३	कौल ४१:१७	धनु	अहोरात्र	५:३६:३८	७:२०:६०	प्रवर्द्ध	१०	२५	सिद्ध·१;
३४:२०:३७	२ श	३६:३८	रा २०:१६:०१	**पू·षा· उ·षा·**	**०१:५८ ५७:३७**	**दि ०६:२४:१८ रा २९:२७:०६**	ऐन्द्र	४१:४१	रा २२:१७:३०	तैति ०८:५२	गर ३६:३८	ध·१६:१८	दि १२:०८:११	५:३६:५४	७:२१:०९	मातङ्ग	११	२६	त्रिपुष्करः२+उषा; सर्वार्थ·श्र;
३४:२०:१४	३ र	३२:४८	दि १८:४४:३५	**श्रवण**	५८:०६	रा २८:५१:४२	वैधृ·	३६:०७	रा २०:०४:१०	वणि ०४:३६	विष ३२:४८	मकर	अहोरात्र	५:३७:११	७:२१:१६	मुसल	१२	२७	**भद्रा ७:२८–१८:४५घं·;पञ्चकारंभः२८:५२;**
३४:१९:४६	४ चं	२९:५९	दि १७:३६:५६	**धनि·**	५७:४०	रा २८:४१:३६	विष्कु·	३१:२२	दि १८:१०:२३	बव ०१:१५	बाल २९:५९	म·२७:४५	दि १६:४३:२२	५:३७:२९	७:२१:२३	शुभ	१३	२८	
३४:१९:१२	५ मं	२८:१७	दि १६:५६:३१	**शत·**	५८:२४	रा २८:५९:३०	प्रीति	२७:३२	दि १६:३८:४४	तैति २८:१७	गर ५७:५३	कुंभ	अहोरात्र	५:३७:४७	७:२१:२८	मृत्यु	१४	२९	रवियोगःपूभा;
३४:१८:३४	६ बु	२७:४८	दि १६:४५:२९	**पू·भा·**	६०:००	अहोरात्र	आयु·	२४:४१	दि १५:३०:३५	वणि २७:४८	विष ५८:०३	कु·४४:४६	रा २३:३२:२७	५:३८:०७	७:२१:३२	पद्म	१५	३०	**भद्रा १६:४५–२८:५१घं·;**
३४:१७:५०	७ गु	२८:३७	दि १७:०५:०८	**पू·भा·**	००:२२	दि ०५:४७:१९	सौभा·	२२:५१	दि १४:४६:४९	बव २८:३७	बाल ५९:२९	मीन	अहोरात्र	५:३८:२७	७:२१:३५	मुद्गर	१६	१	द·ति·८; अमृत·८;
३४:१७:०२	८ शु	३०:३९	दि १७:५४:३१	**उ·भा·**	०३:३५	दि ०७:०४:५८	शोभ·	२१:६०	दि १४:२६:३८	कौल ३०:३९	तैति ६०:००	मीन	अहोरात्र	५:३८:४८	७:२१:३७	ध्वज	१७	२	**गण्डान्तारम्भः२६:२१;** द·ति·८;
३४:१६:०८	९ श	३३:५०	दि १९:११:१६	**रेवती**	०७:५८	दि ०८:५०:११	अतिग·	२२:०३	दि १४:२८:१६	तैति ०२:०७	गर ३३:५०	मी·०७:५८	दि ०८:५०:११	५:३९:१०	७:२१:३७	धाता	१८	३	**गण्डान्तः१५:२१; पञ्चकान्तः८:५०;**
३४:१५:०९	१० र	३७:५८	रा २०:५०:३९	**अश्वि·**	१३:२१	दि १०:५९:५३	सुकर्मा	२२:५२	दि १४:४८:२२	वणि ०५:४८	विष ३७:५८	मेष	अहोरात्र	५:३९:३३	७:२१:३७	आनन्द	१९	४	**भद्रा ७:५९–२०:५१घं·;** सर्वार्थ·अ;
३४:१४:०६	११ चं	४२:४३	रा २२:४५:१४	**भरणी**	१९:२८	दि १३:२७:०२	धृति	२४:१४	दि १५:२१:३४	बव १०:१७	बाल ४२:४३	मे·३६:०४	रा २०:०५:३८	५:३९:५६	७:२१:३४	सुस्थिर	२०	५	सिद्ध·११;
३४:१२:५७	१२ मं	४७:४४	रा २४:४६:०२	**कृत्ति·**	२५:५८	दि १६:०३:३९	शूल	२५:५४	दि १६:०१:४७	कौल १५:१३	तैति ४७:४४	वृष	अहोरात्र	५:४०:२०	७:२१:३१	गद	२१	६	सर्वार्थ·कृ; अमृत·१२; सिद्ध·१३;
३४:११:४४	१३ बु	५२:३४	रा २६:४२:१२	**रोहि·**	३२:२६	दि १८:३९:१५	गण्ड	२७:३१	दि १६:४१:१२	गर २०:१२	वणि ५२:३४	वृष	अहोरात्र	५:४०:४५	७:२१:२६	शुभ	२२	७	**भद्रारंभः२६:४२घं·;** सर्वार्थ·रो;
३४:१०:२६	१४ गु	५६:४८	रा २८:२४:२१	**मृग·**	३८:२७	रा २१:०३:५४	वृद्धि	२८:४८	दि १७:१२:२१	विष २४:४६	बव ५६:४८	वृ·०५:३१	दि ०७:५३:३३	५:४१:१०	७:२१:२०	मृत्यु	२३	८	**भद्रांतः१५:३६घं·;**
३४:०९:०३	३० शु	६०:००	अहोरात्र	**आर्द्रा**	४३:४०	रा २३:०९:३७	ध्रुव	२९:२९	दि १७:२९:२१	चतु २८:३६	नाग ६०:००	मिथुन	अहोरात्र	५:४१:३६	७:२१:१३	पद्म	२४	९	सर्वार्थ·पुन;
३४:०७:३६	३० श	००:०८	दि ०५:४५:१०	**पुन·**	४७:५०	रा २४:५०:११	व्याघ·	२९:२२	दि १७:२६:५३	नाग ००:०८	किं ३१:२३	मि·३१:५४	दि १८:२७:३८	५:४२:०२	७:२१:०५	छत्र	२५	१०	अमृत·१;

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

तिथि	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मिःसे
१	०२:०९:१०:५७	०८:१२:०७:५१	०३:१३:४६:५६	०१:१९:२३:१४	१०:१०:२१:२२	०३:०४:३३:१९	०९:१५:०८:०७	०७:१७:५१:०८	४७:१०:२७	२०:०३:२२	उ·२३:५९:१०	– २:०१
२	०२:१०:०७:५०	०८:२६:१२:२०	०३:१४:२४:३३	०१:२०:१२:४४	१०:१०:२०:२८	०३:०५:४५:३४	०९:१५:०४:२९	०७:१७:४७:५८	४७:१०:१८	२०:५७:२२	उ·२३:५८:०७	– २:१३
३	०२:११:०४:४२	०९:१०:०५:४०	०३:१५:०२:१०	०१:२१:०६:५२	१०:१०:१९:२१	०३:०६:५७:४७	०९:१५:००:४७	०७:१७:४४:४७	४७:१०:०७	२१:४१:५०	उ·२३:५६:३९	– २:२६
४	०२:१२:०१:३४	०९:२३:४५:४४	०३:१५:३९:४९	०१:२२:०५:२१	१०:१०:१८:०२	०३:०८:०९:५८	०९:१४:५७:०१	०७:१७:४१:३६	४७:०९:५३	२२:२३:५९	उ·२३:५४:४६	– २:३८
५	०२:१२:५८:२६	१०:०७:११:०२	०३:१६:१७:२८	०१:२३:०७:५६	१०:१०:१६:३०	०३:०९:२२:०८	०९:१४:५३:११	०७:१७:३८:२५	४७:०९:३६	२३:०१:०१	उ·२३:५२:२८	– २:५०
६	०२:१३:५५:१७	१०:२०:२०:५२	०३:१६:५५:०९	०१:२४:१४:१९	१०:१०:१४:४५	०३:१०:३४:१७	०९:१४:४९:१७	०७:१७:३५:१५	४७:०९:१७	२३:३५:२९	उ·२३:४९:४५	– ३:०२
७	०२:१४:५२:०८	११:०३:१५:१७	०३:१७:३२:५०	०१:२५:२४:१६	१०:१०:१२:४८	०३:११:४६:२५	०९:१४:४५:१९	०७:१७:३२:०४	४७:०८:५५	२४:०९:१२	उ·२३:४६:३७	– ३:१३
८	०२:१५:४८:६०	११:१५:५५:०३	०३:१८:१०:३१	०१:२६:३७:३३	१०:१०:१०:३९	०३:१२:५८:३०	०९:१४:४१:१७	०७:१७:२८:५३	४७:०८:३१	००:४२:१८	उ·२३:४३:०४	– ३:२५
९	०२:१६:४५:५१	११:२८:२१:४४	०३:१८:४८:१४	०१:२७:५३:५६	१०:१०:०८:१८	०३:१४:१०:३५	०९:१४:३७:१२	०७:१७:२५:४२	४७:०८:०४	०१:१५:१७	उ·२३:३९:०७	– ३:३६
१०	०२:१७:४२:४२	००:१०:३७:३२	०३:१९:२५:५८	०१:२९:१३:१३	१०:१०:०५:४४	०३:१५:२२:३८	०९:१४:३३:०३	०७:१७:२२:३२	४७:०७:३५	०१:५२:४६	उ·२३:३४:४५	– ३:४७
११	०२:१८:३९:३३	००:२२:४५:११	०३:२०:०३:४२	०२:००:३५:१२	१०:१०:०२:५८	०३:१६:३४:४१	०९:१४:२८:५१	०७:१७:१९:२१	४७:०७:०३	०२:२९:५५	उ·२३:२९:५९	– ३:५७
१२	०२:१९:३६:२४	०१:०४:४७:५४	०३:२०:४१:२८	०२:०१:५९:४२	१०:०९:५९:५९	०३:१७:४६:४२	०९:१४:२४:३६	०७:१७:१६:१०	४७:०६:२९	०३:१२:५४	उ·२३:२४:४९	– ४:०८
१३	०२:२०:३३:१५	०१:१६:४९:१५	०३:२१:१९:१४	०२:०३:२६:३२	१०:०९:५६:४९	०३:१८:५८:४२	०९:१४:२०:१७	०७:१७:१२:५९	४७:०५:५२	०३:५८:५२	उ·२३:१९:१४	– ४:१८
१४	०२:२१:३०:०७	०१:२८:५३:१४	०३:२१:५७:०१	०२:०४:५५:३२	१०:०९:५३:२७	०३:२०:१०:४०	०९:१४:१५:५६	०७:१७:०९:४८	४७:०५:१३	०४:४७:१२	उ·२३:१३:१५	– ४:२७
१५	०२:२२:२६:५९	०२:११:०३:१७	०३:२२:३४:४९	०२:०६:२६:३३	१०:०९:४९:५३	०३:२१:२२:३६	०९:१४:११:३२	०७:१७:०६:३८	४७:०४:३२	०५:४१:२८	उ·२३:०६:५२	– ४:३७
१५	०२:२३:२३:५१	०२:२३:२२:२५	०३:२३:१२:३८	०२:०७:५९:२६	१०:०९:४६:०८	०३:२२:३४:३१	०९:१४:०७:०५	०७:१७:०३:२७	४७:०३:४८	०६:३६:४५	उ·२३:००:०५	– ४:४५

व्रतों में **एकादशी व्रत** प्रधान है। एकादशी और भगवत्महोत्सव एक व्रत में गिने जाते हैं। जब तक एकादशी और भगवत्महोत्सव हों तब तक उपवास रखना चाहिये। दशमी को असुरों तथा एकादशी में देवताओं की उत्पत्ति हुई है, दशमी में भी अर्धरात्र का समय असुरों की उत्पत्ति का कारण है। अतः एकादशी में दशमी का वेध निषिद्ध माना जाता है। कूर्मपुराण,

अर्धरात्रमति क्रम्य दशमी दृश्यते यदि।
तदाह्येकादशीं त्यक्त्वा द्वादशीं समुपोषयेत् ॥

जो सूर्योदय पूर्व ५५ घटी (४५ घटी निम्बार्क) के उपरान्त यदि दशमी हो तो निश्चय ही उस एकादशी को छोड़ कर द्वादशी में व्रत करे। वैष्णवाचार्यों ने पूर्वविद्धा तिथि का त्याग वैष्णवों का लक्षण माना है– *"पूर्वविद्धा तिथिस्त्यागो वैष्णवस्य हि लक्षणम्"*। इस नारदपंचरात्र के प्रमाणानुसार पूर्वविद्धा तिथि का त्याग ही वैष्णव का लक्षण है। अतः वैष्णव व्रतोपवासादि में पूर्वविद्धा तिथि छोड़ परविद्धा तिथि ही ग्राह्य है।

आषाढ़ कृष्णपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; २५ जून से १० जुल, २०२१ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपश्चिम । ऋतुःग्रीष्म, सौम्यगोलः, सौम्यायनं । ति·३० अयनांशाः२२:५०: १

तिथि दिन	दिनाङ्क अंग्रेजी	卐 व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि 卐
१ शु	२५	मृत्युबाण घं·१०:१०:७उ·;
२ श	२६	**अभिजितारम्भः४५:०७;** मृत्युबाण घं·८:५०:५७या·;
३ र	२७	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी; अभिजितान्तः३:२८;** सिद्ध·३;
४ चं	२८	अमृत·५;
५ मं	२९	मृगशिरायांबुधः११:१०,घं·१०:३२:३०; आश्लेषयांमङ्गलः३५:५३,घं·२०:२५:५३;
६ बु	३०	अमृत·६; रवियोगःपूभा; सिद्ध·७
७ गु	१	**श्रीकालाष्टमी;** रवियोगःपूभा;
८ शु	२	सर्वार्थ·रे; अमृत·९;
९ श	३	द·ति·८; सिद्ध·९; द·न·रे; मृत्यु·१०
१० र	४	मिथुनेबुधः३४:२९,घं·१९:५३:४७; अमृत·१०; द·न·भ; मृत्यु·११;
११ चं	५	**श्री योगिनी एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त) ;** आश्लेषयांशुक्रः०४:२६,घं·०७:५३:३; ①
१२ मं	६	**श्रीपक्षवर्द्धिनी महाद्वादशी;** पुनर्वसौरविः२४:५५,घं·१६:५:१; त्रिपुष्करः१२+कृ;②
१३ बु	७	**प्रदोष व्रतम्;** मृत्यु·१३; सर्वार्थ·मृ; ① मृत्युबाण घं·२०:५४:३उ·;
१४ गु	८	**मास शिवरात्रि;** सिद्ध·१५; ② मृत्युबाण घं·१९:३४:२६या·;
३० शु	९	**अमावस्या श्राद्ध;** आर्द्रायांबुधः०८:४६,घं·०९:३८:४६;
३० श	१०	**अमावस्या (स्नान, दान) ;**

ति	श्राद्धकाल घण्टादिः
१	१२:०१:२०–१३:५१:१५
१५	१२:०४:१५–१३:५३:२८

आषाढ़ मास कृत्य

◆ **वृष्टिविचार-** आषाढ़ कृष्णपक्ष प्रतिपदा के दिन आकाश में वर्षा सम्बन्धी यदि पञ्चनिमित्त न दिखें, तो दो मास तक वृष्टि नहीं होती है, ये पञ्चनिमित्त हैं- १.बादल २.गर्जन ३.वायु ४.विद्युत् तथा ५.वर्षण-

आषाढमासे प्रथमे च पक्षे निरभ्रदृष्टे रविमण्डले च। विद्युन्नगजर्त्यथ नैव मेघो मासद्वयं तत्र न वर्षणं स्यात् ।।

◆ **योगिनी एकादशी-** आषाढ कृष्ण एकादशी को योगिनी एकादशी कहते हैं। इस एकादशी व्रत के प्रभाव से कुष्ठनाश होता है। अत: इस व्रत को करने वाला त्वचारोग से रहित होता है-

आषाढे कृष्णपक्षे तु योगिनीव्रतमाचरेत्। अस्य व्रतस्य पुण्येन कुष्ठो नश्यति वै ध्रुवम् ।।

पंचगव्य निर्माण विधि

◆ **इससे गोमूत्र** - ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्यः धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। १० ग्राम

◆ **इससे गोबर** - ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ २ ग्राम

◆ **इससे दूध-** ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियम् । भवा वाजस्य संगथे।। ७० ग्राम

◆ **दही** - ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयूंषि तारिषत्॥ ३० ग्राम

◆ **इससे घृत** - ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि॥ १० ग्राम

◆ **इससे कुशोदक** - ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे ऽश्विनोर् बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् ।

◆ **मिलाएं-** ॐ आपो हि ष्ठा मयो भुवः। ता न ऊर्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसः। तस्य भाजयतेह नः।
उषतीरिव मातरः। तस्मा अरङ्गमाम वः। यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।

◆ **अभिमन्त्रण-** ॐ मानस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः ।
मा नो वीरान् रुद्रभामिनोऽबधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ॥

पञ्चगव्य में देवताओं का निवास है। गोमूत्र में वरुणदेव, गोबर में अग्निदेव, दही में वायुदेव, दूध में चन्द्र देव और घृत में सूर्यदेव का निवास होता है। वृद्धशातातप में कहा है, ब्रह्मकूर्च (पञ्चगव्य+कुशोदक) पीने से त्वचा, हड्डी, उदर में स्थित पाप जल कर भस्म हो जाता है। अभक्ष्य-अपेय शुद्धि तथा धर्मान्तरण-शुद्धि का दिव्य माध्यम पञ्चगव्य है।

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि ल·अं·	१ शु घं·मि·से	२ श घं·मि·से	३ र घं·मि·से	४ चं घं·मि·से	५ मं घं·मि·से	६ बु घं·मि·से	७ गु घं·मि·से	८ शु घं·मि·से
मिथुनः	०७:११:१९	०७:०७:२४	०७:०३:३०	०६:५९:३५	०६:५५:४०	०६:५१:४६	०६:४७:५१	०६:४३:५६
कर्कः	०९:३१:३१	०९:२७:३६	०९:२३:४१	०९:१९:४७	०९:१५:५२	०९:११:५७	०९:०८:०३	०९:०४:०८
सिंहः	११:४८:००	११:४४:०५	११:४०:११	११:३६:१६	११:३२:२१	११:२८:२७	११:२४:३२	११:२०:३७
कन्या	१४:०२:५९	१३:५९:०४	१३:५५:०९	१३:५१:१५	१३:४७:२०	१३:४३:२५	१३:३९:३१	१३:३५:३६
तुला	१६:२१:५०	१६:१७:५५	१६:१४:०१	१६:१०:०६	१६:०६:११	१६:०२:१७	१५:५८:२२	१५:५४:२७
वृश्चिकः	१८:४०:४५	१८:३६:५०	१८:३२:५५	१८:२९:०१	१८:२५:०६	१८:२१:११	१८:१७:१७	१८:१३:२२
धनुः	२०:४६:१२	२०:४२:१७	२०:३८:२३	२०:३४:२८	२०:३०:३३	२०:२६:३९	२०:२२:४४	२०:१८:४९
मकरः	२२:३०:४७	२२:२६:५२	२२:२२:५७	२२:१९:०३	२२:१५:०८	२२:११:१३	२२:०७:१८	२२:०३:२३
कुम्भः	२३:५९:५६	२३:५६:०१	२३:५२:०६	२३:४८:१२	२३:४४:१७	२३:४०:२२	२३:३६:२७	२३:३२:३२
मीनः	०१:२५:५०	०१:२१:५६	०१:१८:०१	०१:१४:०६	०१:१०:११	०१:०६:१७	०१:०२:२२	००:५८:२७
मेषः	०३:०१:४७	०२:५७:५३	०२:५३:५८	०२:५०:०३	०२:४६:०८	०२:४२:१४	०२:३८:१९	०२:३४:२४
वृष्	०४:५७:१९	०४:५३:२४	०४:४९:२९	०४:४५:३५	०४:४१:४०	०४:३७:४५	०४:३३:५०	०४:२९:५५

तिथि ल·अं·	९ श घं·मि·से	१० र घं·मि·से	११ चं घं·मि·से	१२ मं घं·मि·से	१३ बु घं·मि·से	१४ गु घं·मि·से	१५ शु घं·मि·से	१५ श घं·मि·से
मिथुनः	०६:४०:०२	०६:३६:०७	०६:३२:१२	०६:२८:१७	०६:२४:२२	०६:२०:२७	०६:१६:३२	०६:१२:३७
कर्कः	०९:००:१३	०८:५६:१८	०८:५२:२४	०८:४८:२९	०८:४४:३४	०८:४०:३९	०८:३६:४४	०८:३२:४९
सिंहः	११:१६:४३	११:१२:४८	११:०८:५३	११:०४:५८	११:०१:०३	१०:५७:०८	१०:५३:१३	१०:४९:१८
कन्या	१३:३१:४१	१३:२७:४६	१३:२३:५१	१३:१९:५६	१३:१६:०१	१३:१२:०६	१३:०८:११	१३:०४:१६
तुला	१५:५०:३२	१५:४६:३७	१५:४२:४३	१५:३८:४८	१५:३४:५३	१५:३०:५७	१५:२७:०२	१५:२३:०७
वृश्चिकः	१८:०९:२७	१८:०५:३२	१८:०१:३७	१७:५७:४२	१७:५३:४७	१७:४९:५२	१७:४५:५७	१७:४२:०१
धनुः	२०:१४:५४	२०:१०:५९	२०:०७:०४	२०:०३:०९	१९:५९:१४	१९:५५:१९	१९:५१:२४	१९:४७:२८
मकरः	२१:५९:२८	२१:५५:३४	२१:५१:३९	२१:४७:४३	२१:४३:४८	२१:३९:५३	२१:३५:५८	२१:३२:०३
कुम्भः	२३:२८:३८	२३:२४:४३	२३:२०:४८	२३:१६:५२	२३:१२:५७	२३:०९:०२	२३:०५:०७	२३:०१:११
मीनः	००:५४:३२	००:५०:३७	००:४६:४२	००:४२:४७	००:३८:५२	००:३४:५६	००:३१:०१	००:२७:०६
मेषः	०२:३०:२९	०२:२६:३४	०२:२२:३९	०२:१८:४४	०२:१४:४९	०२:१०:५३	०२:०६:५८	०२:०३:०३
वृष्	०४:२६:००	०४:२२:०५	०४:१८:१०	०४:१४:१५	०४:१०:२०	०४:०६:२५	०४:०२:२९	०३:५८:३४

सूर्योदयकालीन तिथिः४

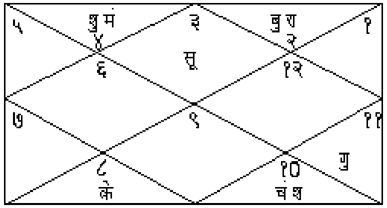

सूर्योदयकालीन तिथिः११

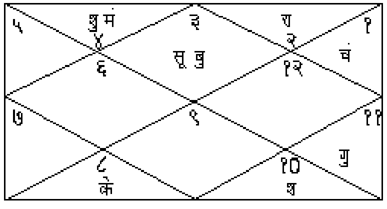

आषाढ़ शुक्लपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वोदितः, ११:७:२०२१;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
३४:०६:०४	१ र	०२:२१	दि ०६:३८:५६	**पुष्य**	५०:५०	रा २६:०२:४१	हर्षण	२८:२०	दि १७:०२:२८	बव ०२:२१	बाल ३३:०१	कर्क	अहोरात्र	५:४२:२९	७:२०:५५	श्रीवत्स	२६	११	सर्वार्थ·पु;
३४:०४:२७	२ चं	०३:२०	दि ०७:०३:०२	**आश्ले·**	५२:३५	रा २६:४४:५६	वज्र	२६:१८	दि १६:१३:५९	कौल ०३:२०	तैति ३३:२२	क·५२:३५	रा २६:४४:५६	५:४२:५७	७:२०:४३	सौम्य	२७	१२	**गण्डान्तारम्भः२०:३७;**
३४:०२:४६	३ मं	०३:०३	दि ०६:५६:३६	**मघा**	५३:०६	रा २६:५७:४३	सिद्धि	२३:१५	दि १५:०१:१३	गर ०३:०३	वणि ३२:२७	सिंह	अहोरात्र	५:४३:२४	७:२०:३१	कालदंड	२८	१३	**भद्रारंभः१८:४२घं·; गण्डान्तः८:५१;**
३४:०१:००	४ बु	**०१:३२ ५७:२१**	**दि ०६:२०:३० रा २९:१६:५४**	**पू·फा·**	५२:२७	रा २६:४२:५०	व्यति·	१९:१३	दि १३:२५:०९	विष ०१:३२	बव ३०:२०	सिंह	अहोरात्र	५:४३:५३	७:२०:१७	प्रवर्द्ध	२९	१४	**भद्रांतः६:२१घं·;** रवियोगःउफा;
३३:५९:१०	६ गु	५५:१०	रा २७:४८:२८	**उ·फा·**	५०:४७	रा २६:०३:०९	वरी·	१४:१८	दि ११:२७:२३	कौल २७:०८	तैति ५५:१०	सिं·०७:०७	दि ०८:३५:१२	५:४४:२१	७:२०:०२	मातङ्ग	३०	१५	रवियोगःउफा; द·न·उफा;
३३:५७:१६	७ शु	५०:३८	रा २५:५९:५२	**हस्त**	४८:१५	रा २५:०२:५०	परिघ	०८:३५	दि ०९:१०:४०	गर २२:५९	वणि ५०:३८	कन्या	अहोरात्र	५:४४:५१	७:१९:४५	अमृत	३१	१६	**भद्रारंभः२५:६०घं·;संक्रान्ति,मासान्तः;**
३३:५५:१८	८ श	४५:२२	रा २३:५४:१९	**चित्रा**	४५:००	रा २३:४५:२५	**शिव सिद्ध**	**०२:११ ५३:०४**	**दि ०६:३७:४२ रा २७:५१:१८**	विष १८:०४	बव ४५:२२	कं·१६:४२	दि १२:२६:०२	५:४५:२०	७:१९:२७	काण	१	१७	**भद्रांतः१२:५९घं·;**सर्वार्थ·स्वा;सिद्ध·९
३३:५३:१५	९ र	३९:३७	रा २१:३६:३०	**स्वाती**	४१:१४	रा २२:१५:३६	साध्य	४७:५५	रा २४:५५:५६	बाल १२:३२	कौल ३९:३७	तुला	अहोरात्र	५:४५:५०	७:१९:०८	लुम्ब	२	१८	**मासादिः;** रवियोगःस्वा;अमृत·१०;
३३:५१:०९	१० चं	३३:३१	दि १९:१०:४८	**विशा·**	३७:०९	रा २०:३८:०१	शुभ	४०:२०	रा २१:५४:२३	तैति ०६:३५	गर ३३:३१	तु·२३:११	दि १५:०२:५४	५:४६:२०	७:१८:४७	मित्र	३	१९	अमृत·१०; रवियोगःवि; सिद्ध·११;
३३:४८:५८	११ मं	२७:१८	दि १६:४१:५६	**अनु·**	३२:५७	दि १८:५७:३४	शुक्ल	३२:४०	दि १८:५०:४२	वणि ००:२४	विष २७:१८	वृश्चिक	अहोरात्र	५:४६:५०	७:१८:२५	वज्र	४	२०	**भद्रा ५:५६–१६:४२घं·;**
३३:४६:४४	१२ बु	२१:०९	दि १४:१५:०६	**ज्ये·**	२८:५१	दि १७:१९:४०	ब्रह्म	२५:०४	दि १५:४९:०५	बाल २१:०९	कौल ४८:१२	वृ·२८:५१	दि १७:१९:४०	५:४७:२१	७:१८:०२	ध्वांक्ष	५	२१	**गण्डान्तः११:४४–२२:५६;** सिद्ध·१२;
३३:४४:२६	१३ गु	१५:१८	दि ११:५५:१०	**मूल**	२५:०४	दि १३:४९:१८	ऐन्द्र	१७:४४	दि १२:५३:२५	तैति १५:१८	गर ४२:३३	धनु	अहोरात्र	५:४७:५१	७:१७:३८	धूम्र	६	२२	रवियोगःपूषा;
३३:४२:०४	१४ शु	०९:५५	दि ०९:४६:२५	**पू·षा·**	२१:४७	दि १४:३०:५९	वैधृ·	१०:४७	दि १०:०७:०६	वणि ०९:५५	विष ३७:२८	ध·३६:०४	रा २०:१३:५३	५:४८:२२	७:१७:१२	प्रवर्द्ध	७	२३	**भद्रा ९:४६–२०:४८घं·;** अमृत·१४;
३३:३९:३९	१५ श	०५:१२	दि ०७:५३:३२	**उ·षा·**	१९:१२	दि १३:२९:३४	**विष्कु· प्रीति**	**०४:२२ ५४:१७**	**दि ०७:३३:५२ रा २९:१६:४०**	बव ०५:१२	बाल ३३:०९	मकर	अहोरात्र	५:४८:५३	७:१६:४५	राक्षस	८	२४	**अभिजितः४:४६–२३:०३;**

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

तिथि	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से
१	०२:२४:२०:४४	०३:०५:५३:१६	०३:२३:५०:२७	०२:०९:३४:०४	१०:०९:४२:११	०३:२३:४६:२५	०९:१४:०२:३६	०७:१७:००:१६	४७:०३:०२	०६:३७:१२	उ·२२:५२:५५	– ४:५४
२	०२:२५:१७:३७	०३:१८:३७:४९	०३:२४:२८:१७	०२:११:१०:१९	१०:०९:३८:०२	०३:२४:५८:१७	०९:१३:५८:०५	०७:१६:५७:०५	४७:०२:१३	०७:३४:५१	उ·२२:४५:२१	– ५:०२
३	०२:२६:१४:३१	०४:०१:३७:२२	०३:२५:०६:०८	०२:१२:४८:०४	१०:०९:३३:४३	०३:२६:१०:०७	०९:१३:५३:३१	०७:१६:५३:५४	४७:०१:२३	०८:३३:५४	उ·२२:३७:२४	– ५:१०
४	०२:२७:११:२५	०४:१४:५२:२७	०३:२५:४३:६०	०२:१४:२७:११	१०:०९:२९:१२	०३:२७:२१:५६	०९:१३:४८:५६	०७:१६:५०:४४	४७:००:३०	०९:३२:५४	उ·२२:२९:०३	– ५:१७
६	०२:२८:०८:२०	०४:२८:२२:५३	०३:२६:२१:५२	०२:१६:०७:३६	१०:०९:२४:३०	०३:२८:३३:४३	०९:१३:४४:१८	०७:१६:४७:३३	४६:५९:३५	१०:३२:३८	उ·२२:२०:२०	– ५:२४
७	०२:२९:०५:१६	०५:१२:०७:४१	०३:२६:५९:४६	०२:१७:४९:१२	१०:०९:१९:३८	०३:२९:४५:२८	०९:१३:३९:३९	०७:१६:४४:२२	४६:५८:३८	११:३३:३३	उ·२२:११:१४	– ५:३०
८	०३:००:०२:१२	०५:२६:०५:१०	०३:२७:३७:४०	०२:१९:३१:५४	१०:०९:१४:३५	०४:००:५७:१२	०९:१३:३४:५८	०७:१६:४१:११	४६:५७:३९	१२:३५:३२	उ·२२:०१:४५	– ५:३६
९	०३:००:५९:०९	०६:१०:१२:५८	०३:२८:१५:३५	०२:२१:१५:३६	१०:०९:०९:२२	०४:०२:०८:५४	०९:१३:३०:१५	०७:१६:३८:००	४६:५६:३८	१३:३९:२६	उ·२१:५१:५४	– ५:४१
१०	०३:०१:५६:०७	०६:२४:२८:१४	०३:२८:५३:३०	०२:२३:००:१४	१०:०९:०३:५८	०४:०३:२०:३४	०९:१३:२५:३२	०७:१६:३४:५०	४६:५५:३४	१४:४४:५६	उ·२१:४१:४१	– ५:४६
११	०३:०२:५३:०६	०७:०८:४७:४३	०३:२९:३१:२७	०२:२४:४५:४२	१०:०८:५८:२५	०४:०४:३२:१३	०९:१३:२०:४७	०७:१६:३१:३९	४६:५४:२९	१५:४९:५८	उ·२१:३१:०६	– ५:५०
१२	०३:०३:५०:०५	०७:२३:०७:३९	०४:००:०९:२४	०२:२६:३१:५७	१०:०८:५२:४२	०४:०५:४३:५०	०९:१३:१६:०१	०७:१६:२८:२८	४६:५३:२२	१६:५४:१२	उ·२१:२०:०९	– ५:५३
१३	०३:०४:४७:०५	०८:०७:२४:०९	०४:००:४७:२२	०२:२८:१८:५५	१०:०८:४६:४९	०४:०६:५५:२४	०९:१३:११:१४	०७:१६:२५:१७	४६:५२:१३	१७:५३:४७	उ·२१:०८:५१	– ५:५६
१४	०३:०५:४४:०७	०८:२१:३३:५३	०४:०१:२५:२०	०३:००:०६:३०	१०:०८:४०:४७	०४:०८:०६:५८	०९:१३:०६:२७	०७:१६:२२:०६	४६:५१:०२	१८:४८:३२	उ·२०:५७:११	– ५:५९
१५	०३:०६:४१:०९	०९:०५:३३:५४	०४:०२:०३:२०	०३:०१:५४:४०	१०:०८:३४:३७	०४:०९:१८:२९	०९:१३:०१:३९	०७:१६:१८:५६	४६:४९:४९	१९:३७:५५	उ·२०:४५:११	– ६:०१

देवशयनी एकादशी को श्रीहरि क्षीरसागर में शयन करते हैं। इस मन्त्र से पूजा करें –

सुप्ते त्वयि जगन्नाथे जगत्सुप्तं भवेदिदम्।
विबुद्धे च विबुध्येत प्रसन्नो मे भवाव्यय॥

अभीष्ट फलप्राप्ति हेतु चातुर्मास में ४ माह के लिए लिये पदार्थों का त्याग और ग्रहण करे। स्वर्गप्राप्तिके लिये पुष्पादि भोगों का त्याग करे। देह–शुद्धि के लिये पंचगव्य पान करे, वंश–वृद्धिके लिये नियमित दूध का, सर्वपापक्षयपूर्वक सकल पुण्यफल प्राप्त करनेके लिये एकभुक्त, नक्तव्रत, अयाचित भोजन या सर्वथा उपवास का व्रत ग्रहण करे। आषाढ़ी **गुरु पूर्णिमा** पर समस्त आचार्य परम्परा सहित निजगुरुदेव का पूजन करना चाहिये। यह पूर्णिमा मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्य है। परंतु दोनों दिन मध्याह्नव्यापिनी हो तो परदिन की पूर्णिमा ग्रहण करनी चाहिये।

व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि

तिथि दिन	दिनाङ्क अंग्रेजी	व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि
१ र	११	**गुप्त नवरात्र आरम्भः;** चन्द्रर्शनम्;
२ चं	१२	**श्रीजगन्नाथ रथयात्रा;** रवियोगःम;
३ मं	१३	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी;** सिद्ध·३; रवियोगःम;
४ बु	१४	**व्यतिपात पुण्य;** अमृत·६; मृत्युबाण घं·१०:२२:२७उ·;
६ गु	१५	**श्रीस्कन्द षष्ठी;** मृत्युबाण घं·९:४:३८या·;
७ शु	१६	कर्केरविः५७:४२,घं·२९:१६:१८; दक्षिणायन आरम्भ, मघायांसिंहेशुक्रः१२:९,घं·११:३:२०;
८ श	१७	**श्रीदुर्गाष्टमी; संक्रान्ति पुण्यकालं,५:१८–१२:०५घं·;** पुनर्वसौबुधः१६:१९,घं·१२:४३; ①
९ र	१८	**आषाढ़ गुप्तनवरात्र समाप्तिः; भड़ल्या नवमी;** रवियोगःवि; मृत्युबाण घं·५:१३:१४उ·;
१० चं	१९	सर्वार्थ·अनु; मृत्युबाण घं·३:५६:४९या·; ① विशाखायांकेतुः२२:२५,घं·१५:१०; रवियोगःस्वा;
११ मं	२०	**श्रीहरिशयनी एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त);** पुष्येरविः२८:२०,घं·१७:३३; अमृत·१२; ②
१२ बु	२१	**प्रदोष व्रतम्; चातुर्मास्य व्रतारम्भः;** ② मघायांसिंहेमङ्गलः४५:१०,घं·०:१७;
१३ गु	२२	**श्रीशिवशयन चतुर्दशी;** कर्केबुधः५६:२४,घं·४:४८:१८; अमृत·१३;
१४ शु	२३	**पूर्णिमा व्रतम्; वायु धारिणी पूर्णिमा;** रवियोगःपूषा;
१५ श	२४	**पूर्णिमा (स्नान, दान); श्रीगुरुपूर्णिमा; श्रीवेदव्यास जयन्ती;** पुष्येबुधः४७:९,घं·१:७:१०; अमृत·१; सर्वार्थ·श्र;

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	१२:०४:२५–१३:५३:३२
१५	१२:०५:५३–१३:५३:३६

आषाढ़ मास कृत्य

◆ **आषाढ़ी गुप्तनवरात्रि-** आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा से लेकर नवमी पर्यन्त गुप्त नवरात्रि होती है। इसमें देवी आराधन करें। वासन्तिक (चैत्र) एवं शारदीय (आश्विन) नवरात्रि प्रकट, व आषाढ़ी एवं माघी नवरात्रि गुप्त होती हैं। - **चैत्रेऽश्विने तथाषाढे माघे कार्यो महोत्सवः नवरात्रे महाराज! पूजा कार्या विशेषतः।।** - श्रीमद्देवीभागवत, ३/२४/२१॥ गुप्त नवरात्रि में देवी की आराधना सिद्धिदायक होती है।

◆ **रथयात्रादर्शन-** आषाढ़ शुक्ल द्वितीया के दिन रथयात्रा उत्सव करें। तिथि का अभाव हो, अर्थात् द्वितीया तिथि न हो, तो केवल पुष्य नक्षत्र में ही उस उत्सव को नहीं करना चाहिये। क्योंकि, "तिथि के न होने पर जो मनुष्य (रथ यात्रा आदि) कर्म करते हैं, उनका किया हुआ सब कर्म वृथा हो जाता है, और वे अपने को नरक में ले जाते हैं।"-ऐसा गर्गाचार्य का कथन है। विद्धाधिक होने पर दूसरे दिन तृतीया में यह उत्सव करें।

◆ **श्रीहरि(विष्णु) शयन-** आषाढ़ शुक्ल एकादशी श्री हरिशयनी कहलाती है। इसका नाम पद्मा एकादशी भी है। इस दिन से भगवान् विष्णु क्षीरसागर के जल में शेषशैय्या पर चार मास के लिए शयन करते हैं। फलत: इन चार मासों में सभी प्रकार के शुभकर्म वर्जित होते हैं। श्री विष्णु शयनोत्सव में श्रीभगवान् की भली भाँति पूजा करे। वस्त्र-चन्दन आदि और छत्र, चामर, ध्वजा, पताका आदि अर्पण कर भगवान् को सन्तुष्ट करे। अनन्तर आगे नृत्य होता हो, ऐसे श्रीभगवान् को पालकी में बिठाकर जलाशय के निकट लेकर जावे। पूजा करके जूही के फूल से प्रार्थनापूर्वक श्रीठाकुरजी को पुष्पाञ्जलि दे -

सुप्ते त्वयि जगन्नाथे जगत्सुप्तं भवेदिदम् । विबुद्धे त्वयि बुध्येत तत्सर्वं सचराचरम् ।

(हे भगवान् विष्णु! आपके सोने से संसार सो जाता है। आपके जागने से यह चराचर जगत् जाग उठता है।) विष्णुशयनोत्सव रात्रि में मनाया जाता है।

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि ल·अं·	१ र घं·मि·से	२ चं घं·मि·से	३ मं घं·मि·से	४ बु घं·मि·से	६ गु घं·मि·से	७ शु घं·मि·से	लग्न अन्त	८ श घं·मि·से	९ र घं·मि·से	१० चं घं·मि·से	११ मं घं·मि·से	१२ बु घं·मि·से	१३ गु घं·मि·से	१४ शु घं·मि·से	१५ श घं·मि·से
मिथुनः	०६:०८:४२	०६:०४:४७	०६:००:५२	०५:५६:५६	०५:५३:०१	०५:४९:०५	कर्कः	०८:०५:२१	०८:०१:२५	०७:५७:२९	०७:५३:३४	०७:४९:३८	०७:४५:४२	०७:४१:४६	०७:३७:४९
कर्कः	०८:२८:५३	०८:२४:५८	०८:२१:०३	०८:१७:०८	०८:१३:१२	०८:०९:१६	सिंहः	१०:२१:५०	१०:१७:५४	१०:१३:५८	१०:१०:०२	१०:०६:०६	१०:०२:१०	०९:५८:१४	०९:५४:१८
सिंहः	१०:४५:२२	१०:४१:२७	१०:३७:३२	१०:३३:३६	१०:२९:४१	१०:२५:४५	कन्या	१२:३६:४८	१२:३२:५२	१२:२८:५६	१२:२५:००	१२:२१:०४	१२:१७:०८	१२:१३:१२	१२:०९:१५
कन्या	१३:००:२१	१२:५६:२५	१२:५२:३०	१२:४८:३४	१२:४४:३९	१२:४०:४३	तुला	१४:५५:३८	१४:५१:४२	१४:४७:४६	१४:४३:५०	१४:३९:५४	१४:३५:५८	१४:३२:०२	१४:२८:०६
तुला	१५:१९:१२	१५:१५:१६	१५:११:२१	१५:०७:२५	१५:०३:३०	१४:५९:३४	वृश्चिकः	१७:१४:३२	१७:१०:३६	१७:०६:४०	१७:०२:४४	१६:५८:४८	१६:५४:५२	१६:५०:५६	१६:४६:५९
वृश्चिकः	१७:३८:०६	१७:३४:११	१७:३०:१५	१७:२६:२०	१७:२२:२४	१७:१८:२८	धनुः	१९:१९:५९	१९:१६:०३	१९:१२:०७	१९:०८:११	१९:०४:१५	१९:००:१८	१८:५६:२२	१८:५२:२६
धनुः	१९:४३:३३	१९:३९:३७	१९:३५:४२	१९:३१:४६	१९:२७:५१	१९:२३:५५	मकरः	२१:०४:३३	२१:००:३७	२०:५६:४१	२०:५२:४५	२०:४८:४८	२०:४४:५२	२०:४०:५६	२०:३६:५९
मकरः	२१:२८:०७	२१:२४:१२	२१:२०:१६	२१:१६:२०	२१:१२:२५	२१:०८:२९	कुम्भः	२२:३३:४२	२२:२९:४६	२२:२५:५०	२२:२१:५३	२२:१७:५७	२२:१४:०१	२२:१०:०४	२२:०६:०८
कुम्भः	२२:५७:१६	२२:५३:२१	२२:४९:२५	२२:४५:२९	२२:४१:३३	२२:३७:३८	मीनः	२३:५९:३६	२३:५५:४०	२३:५१:४४	२३:४७:४७	२३:४३:५१	२३:३९:५५	२३:३५:५८	२३:३२:०२
मीनः	००:२३:१०	००:१९:१५	००:१५:१९	००:११:२३	००:०७:२८	००:०३:३२	मेषः	०१:३५:३२	०१:३१:३६	०१:२७:४०	०१:२३:४४	०१:१९:४७	०१:१५:५१	०१:११:५५	०१:०७:५८
मेषः	०१:५९:०७	०१:५५:११	०१:५१:१६	०१:४७:२०	०१:४३:२४	०१:३९:२८	वृष्	०३:३१:०३	०३:२७:०७	०३:२३:११	०३:१९:१५	०३:१५:१८	०३:११:२२	०३:०७:२५	०३:०३:२९
वृष्	०३:५४:३८	०३:५०:४३	०३:४६:४७	०३:४२:५१	०३:३८:५५	०३:३४:५९	मिथुनः	०५:४५:१०	०५:४१:१४	०५:३७:१८	०५:३३:२३	०५:२९:२७	०५:२५:३१	०५:२१:३५	०५:१७:४०

सूर्योदयकालीन तिथिः४

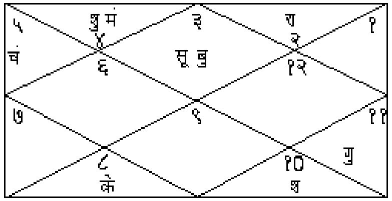

सूर्योदयकालीन तिथिः११

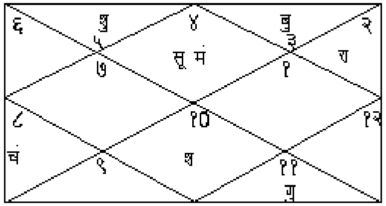

श्रावण कृष्णपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वास्तः, २५:७:२०२१;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
३३:३७:०९	१ र	०१:१८ ५७:०६	दि ०६:२०:३५ रा २९:१०:५९	**श्रवण**	१७:२८	दि १२:४८:३४	आयु·	५३:४३	रा २७:१८:४१	कौल ०१:१८	तैति २९:४३	म·४६:५९	रा २४:३७:०७	५:४९:२४	७:१६:१६	गद	९	२५	**पञ्चकारंभः१२:४९;**
३३:३४:३७	३ चं	५६:३७	रा २८:२८:३८	**धनि·**	१६:४६	दि १२:३२:०८	सौभा·	४९:४१	रा २५:४२:०९	वणि २७:२१	विष ५६:३७	कुंभ	अहोरात्र	५:४९:५६	७:१५:४६	शुभ	१०	२६	**भद्रा १६:४६–२८:२९घं·;**
३३:३२:०१	४ मं	५६:०२	रा २८:१५:२७	**शत·**	१७:१२	दि १२:४३:१४	शोभ·	४६:३६	रा २४:२८:५१	बव २६:१०	बाल ५६:०२	कुंभ	अहोरात्र	५:५०:२७	७:१५:१५	मृत्यु	११	२७	पूर्वफल्गुन्यांशुक्रः२२:५०,घं·१५:२५;
३३:२९:२१	५ बु	५६:४५	रा २८:३३:०३	**पू·भा·**	१८:५२	दि १३:२३:४४	अतिग·	४४:३२	रा २३:३९:४५	कौल २६:१३	तैति ५६:४५	कु·०३:१९	दि ०७:१०:४४	५:५०:५८	७:१४:४३	पद्म	१२	२८	अमृत·६;
३३:२६:३९	६ गु	५८:४३	दि २९:२०:३३	**उ·भा·**	२१:४७	दि १४:३४:२०	सुकर्मा	४३:२८	रा २३:१४:४०	गर २७:३५	वणि ५८:४३	मीन	अहोरात्र	५:५१:३०	७:१४:१०	छत्र	१३	२९	**भद्रारंभः२९:२१घं·;** द·ति·६;
३३:२३:५३	७ शु	६०:००	अहोरात्र	**रेवती**	२५:५३	दि १६:१३:१६	धृति	४३:१९	रा २३:११:२६	विष ३०:०७	बव ६०:००	मी·२५:५३	दि १६:१३:१६	५:५२:०१	७:१३:३५	श्रीवत्स	१४	३०	**भद्रांतः१७:५५घं·;पञ्चकान्तः१६:१३;**
३३:२१:०४	७ श	०१:४८	दि ०६:३५:४८	**अश्वि·**	३१:०२	दि १८:१७:३३	शूल	४३:५८	रा २३:२७:३८	बव ०१:४८	बाल ३३:४५	मेष	अहोरात्र	५:५२:३३	७:१२:५९	सौम्य	१५	३१	
३३:१८:१३	८ र	०५:५३	दि ०८:१४:११	**भरणी**	३७:००	रा २०:४१:०९	गण्ड	४५:१२	रा २३:५७:५५	कौल ०५:५३	तैति ३८:१२	मे·५३:३५	रा २७:१९:१२	५:५३:०५	७:१२:२२	कालदंड	१६	१	सिद्ध·८; द·न·भ;
३३:१५:१८	९ चं	१०:३७	दि १०:०८:२६	**कृत्ति·**	४३:२६	रा २३:१६:१०	वृद्धि	४६:४७	रा २४:३६:२६	गर १०:३७	वणि ४३:०८	वृष	अहोरात्र	५:५३:३६	७:११:४३	प्रवर्द्ध	१७	२	**भद्रारंभः२३:०९घं·;** अमृत·१०;
३३:१२:२०	१० मं	१५:३९	दि १२:०९:४३	**रोहि·**	४९:५७	रा २५:५२:४७	ध्रुव	४८:२४	रा २५:१५:४५	विष १५:३९	बव ४८:०९	वृष	अहोरात्र	५:५४:०७	७:११:०४	मातङ्ग	१८	३	**भद्रांतः१२:१०घं·;**
३३:०९:२०	११ बु	२०:३१	दि १४:०७:१२	**मृग·**	५६:०४	रा २८:२०:२७	व्याघ·	४९:४३	रा २५:४८:०३	बाल २०:३१	कौल ५२:४७	वृ·२३:०४	दि १५:०८:१५	५:५४:३९	७:१०:२३	अमृत	१९	४	सर्वार्थ·मृ; अमृत·११; सिद्ध·१२;
३३:०६:१७	१२ गु	२४:५०	दि १५:५१:२१	**आर्द्रा**	६०:००	अहोरात्र	हर्षण	५०:३०	रा २६:०७:१५	तैति २४:५०	गर ५६:४२	मिथुन	अहोरात्र	५:५५:१०	७:०९:४१	काण	२०	५	अमृत·१३;
३३:०३:११	१३ शु	२८:१७	दि १७:१४:२२	**आर्द्रा**	०१:२८	दि ०६:३०:५६	वज्र	५०:३१	रा २६:०७:५९	वणि २८:१७	विष ५९:३६	मि·४९:५४	रा २५:५३:२३	५:५५:४१	७:०८:५८	पद्म	२१	६	**भद्रा १७:१४–२९:४६घं·;** अमृत·१४;
३३:००:०३	१४ श	३०:३७	दि १८:१०:५१	**पुन·**	०५:५३	दि ०८:१७:१८	सिद्धि	४९:३७	रा २५:४६:५५	शकु ३०:३७	चतु ६०:००	कर्क	अहोरात्र	५:५६:१३	७:०८:१४	छत्र	२२	७	सिद्ध·१४;
३२:५६:५३	३० र	३१:४३	दि १८:३७:४८	**पुष्य**	०९:०९	दि ०९:३६:१५	व्यति·	४७:४४	रा २५:०२:१६	चतु ०१:१८	नाग ३१:४३	कर्क	अहोरात्र	५:५६:४४	७:०७:२९	श्रीवत्स	२३	८	**गण्डान्तारम्भः२८:१६;** सर्वार्थ·पु;

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	तिथि
	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि				
१	०३:०७:३८:१२	०९:१९:२१:४२	०४:०२:४१:२०	०३:०३:४३:२१	१०:०८:२८:१७	०४:१०:२९:५८	०९:१२:५६:५१	०७:१६:१५:४५	४६:४८:३५	२०:२०:४६	उ·२०:३२:४९	– ६:०२
३	०३:०८:३५:१६	१०:०२:५५:२८	०४:०३:१९:२१	०३:०५:३२:३०	१०:०८:२१:४९	०४:११:४१:२५	०९:१२:५२:०२	०७:१६:१२:३४	४६:४७:१८	२१:००:५२	उ·२०:२०:०८	– ६:०३
४	०३:०९:३२:२१	१०:१६:१४:०३	०४:०३:५७:२४	०३:०७:२२:०२	१०:०८:१५:१३	०४:१२:५२:५०	०९:१२:४७:१४	०७:१६:०९:२३	४६:४६:००	२१:३५:५६	उ·२०:०७:०५	– ६:०३
५	०३:१०:२९:२७	१०:२९:१७:०५	०४:०४:३५:२७	०३:०९:११:५५	१०:०८:०८:२९	०४:१४:०४:१३	०९:१२:४२:२५	०७:१६:०६:१२	४६:४४:४१	२२:१०:१३	उ·१९:५३:४४	– ६:०३
६	०३:११:२६:३४	११:१२:०४:५६	०४:०५:१३:३१	०३:११:०२:०५	१०:०८:०१:३७	०४:१५:१५:३४	०९:१२:३७:३७	०७:१६:०३:०२	४६:४३:१९	२२:४३:४५	उ·१९:४०:०२	– ६:०२
७	०३:१२:२३:४२	११:२४:३८:४५	०४:०५:५१:३७	०३:१२:५२:२९	१०:०७:५४:३८	०४:१६:२६:५३	०९:१२:३२:४९	०७:१५:५९:५१	४६:४१:५७	२३:१६:३७	उ·१९:२६:०१	– ६:००
७	०३:१३:२०:५१	००:०७:००:२३	०४:०६:२९:४३	०३:१४:४३:०५	१०:०७:४७:३२	०४:१७:३८:१०	०९:१२:२८:०१	०७:१५:५६:४०	४६:४०:३२	२३:५२:५३	उ·१९:११:४०	– ५:५८
८	०३:१४:१८:०२	००:१९:१२:१८	०४:०७:०७:५१	०३:१६:३३:४९	१०:०७:४०:२०	०४:१८:४९:२४	०९:१२:२३:१२	०७:१५:५३:२९	४६:३९:०६	२४:३०:१५	उ·१८:५७:०१	– ५:५५
९	०३:१५:१५:१३	०१:०१:१७:२९	०४:०७:४५:५९	०३:१८:२४:३८	१०:०७:३३:००	०४:२०:००:३६	०९:१२:१८:२४	०७:१५:५०:१८	४६:३७:३९	०१:१०:०१	उ·१८:४२:०४	– ५:५२
१०	०३:१६:१२:२६	०१:१३:१९:१६	०४:०८:२४:०९	०३:२०:१५:३०	१०:०७:२५:३५	०४:२१:११:४६	०९:१२:१३:३६	०७:१५:४७:०७	४६:३६:१०	०१:५५:५१	उ·१८:२६:४८	– ५:४८
११	०३:१७:०९:४०	०१:२५:२१:३३	०४:०९:०२:२०	०३:२२:०६:२१	१०:०७:१८:०४	०४:२२:२२:५४	०९:१२:०८:४८	०७:१५:४३:५७	४६:३४:४०	०२:४१:५६	उ·१८:११:१४	– ५:४३
१२	०३:१८:०६:५६	०२:०७:२८:०३	०४:०९:४०:३१	०३:२३:५७:०८	१०:०७:१०:२८	०४:२३:३३:५९	०९:१२:०४:०१	०७:१५:४०:४६	४६:३३:०९	०३:३४:५६	उ·१७:५५:२२	– ५:३८
१३	०३:१९:०४:१२	०२:१९:४२:०२	०४:१०:१८:४४	०३:२५:४७:४६	१०:०७:०२:४७	०४:२४:४५:०१	०९:११:५९:१४	०७:१५:३७:३५	४६:३१:३६	०४:२९:३३	उ·१७:३९:१३	– ५:३२
१४	०३:२०:०१:३०	०३:०२:०६:२३	०४:१०:५६:५८	०३:२७:३८:११	१०:०६:५५:०१	०४:२५:५६:०१	०९:११:५४:२९	०७:१५:३४:२४	४६:३०:०२	०५:२५:५५	उ·१७:२२:४६	– ५:२५
१५	०३:२०:५८:४९	०३:१४:४३:२५	०४:११:३५:१३	०३:२९:२८:२०	१०:०६:४७:१०	०४:२७:०६:५८	०९:११:४९:४४	०७:१५:३१:१३	४६:२८:२६	०६:२४:०४	उ·१७:०६:०३	– ५:१८

अशून्यशयन व्रत का आरम्भ श्रावण मासमें होता है। इसके प्रभावसे विवाहविच्छेद की संभावना नष्ट हो जाती है। श्रावण में जो श्रीशिवपार्वती की युग्मपूजा करेगा उसका शुभ विवाह होगा और उपवासपूर्वक कृष्ण द्वितीया की रात्रि में जो श्रीविष्णुलक्ष्मी की पूजा बिस्तर पर करेंगी उनका विवाहविच्छेद नहीं होगा–

यथा त्वशून्यं तव देव तल्पं समं हि लक्ष्म्या वरदाच्युतेश।
सत्येन तेनामितवीर्य विष्णो गार्हस्थ्यनाशो मम नास्तु देव।

हे विष्णु! आप और लक्ष्मीदेवी का गार्हस्थ्य जीवन कभी नष्ट नहीं होता फिर आपकी पूजा से मेरा भी नष्ट न हो।

नागपंचमी को नागों और सर्पों की पूजा कर कालसर्प दोष से मुक्ति की प्रार्थना की जायेगी।
सर्पदोष निवारक वैदिक मन्त्र –

ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये ऽन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

श्रावण कृष्णपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; २५ जुलाई से ८ अगस्त, २०२१ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपश्चिम । ऋतुःवर्षा, सौम्यगोलः, याम्यायनं । ति·३० अयनांशाः२२:५०: ५

तिथि दिन	दिनाङ्क अंग्रेजी	व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि
१ र	२५	**अशून्य शयन व्रतम्; हिण्डोला प्रारम्भ;** द्विपुष्करः२+ध; सिद्ध·३;
३ चं	२६	**श्रावण सोमवार व्रतम्;**
४ मं	२७	**संकष्टी श्रीगणेशचतुर्थी;** श्रावण मंगलवार व्रतम्; मृत्युबाण घं·१८:१:३उ·;
५ बु	२८	**नाग पञ्चमी (जयपुर स्थानीय परम्परागत);** मृत्युबाण घं·१८:१:२१या·;
६ गु	२९	सर्वार्थ·रे; रवियोगः रे;
७ शु	३०	**गण्डान्तः९:४६–२२:४२;** द·ति·६; सर्वार्थ·रे; मृत्यु·७; रवियोगःरे; सर्वार्थ·अ;
७ श	३१	**श्रीकालाष्टमी;**
८ र	१	आश्लेषयांबुधः०३:२१,घं·०७:४०:१८;
९ चं	२	**श्रावण सोमवार व्रतम्;** सर्वार्थ·रो;
१० मं	३	श्रावण मंगलवार व्रतम्; आश्लेषयांरविः२८:५५,घं·१७:५४:४६;
११ बु	४	**श्री कामदा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त);**
१२ गु	५	**प्रदोष व्रतम्;** मृत्युबाण घं·८:३८:१०उ·;
१३ शु	६	**मास शिवरात्रि व्रतम्;** सर्वार्थ·पुन; मृत्युबाण घं·७:३०:२२या·;
१४ श	७	उत्तरफल्गुन्यांशुक्रः३७:१२,घं·२१:१५:५७;
३० र	८	**हरियाली अमावस्या (स्नान, दान, श्राद्ध); श्रीसरसमाधुरीशरणजी जयन्ती; व्यतिपात पुण्य;** मघायांसिंहेबुधः१७:१७,घं·१३:१८; धनिष्ठायांगुरुः५४:३०,घं·४:११:२१; अमृत·१५;

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	१२:०५:५६–१३:५३:३१
१५	१२:०५:४५–१३:५१:११

श्रावण मास कृत्य

नागपंचमी- जयपुर में श्रावण कृष्णपक्ष की पंचमी को नागपंचमी मनाई जाती है, अन्य क्षेत्रों में परम्पराभेद से श्रावण शुक्लपक्ष अथवा भाद्र कृष्ण की पञ्चमी को मनाई जाती है। यह षष्ठीयुक्ता शुभ होती है, ***"पञ्चमी नागपूजायां कार्या षष्ठीसमन्विता।"*** आज के दिन सर्पों की पूजा की जाती है। अनन्त आदि प्रख्यात नागों की पूजा दूध, घी, नैवेद्य, दधि, दूर्वा, कुशा, गन्ध, पुष्प आदि से करके प्रार्थना की जाती है कि हमारे जीवन में सर्पों का भय न हो। आज के दिन घर के मुख्य दरवाजे के दोनों पार्श्वों में नागों के चित्र सटाते हैं अथवा गोबर से नागों की आकृति बनायी जाती है, तथा दही, दूर्वा, अक्षत, कुश, गंध व पुष्प से पूजा की जाती है। भक्ति पूर्वक नागपंचमी के दिन सर्पपूजा करने से जीवन में सर्पभय नहीं होता है। भविष्यपुराण में वर्णित है कि प्रत्येक पञ्चमी तिथि में नागों की पूजा करनी चाहिए। सर्पस्तोत्र के पाठ से कालसर्पदोष एवं सर्पशाप की शान्ति होती है।

सर्पस्तोत्रम्-

ब्रह्मलोके च ये सर्पाः शेषनागपुरोगमाः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।१।।
विष्णुलोके च ये सर्पा वासुकिप्रमुखाश्च ये। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।२।।
रुद्रलोके च ये सर्पास्तक्षकप्रमुखास्तथा। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।३।।
खाण्डवस्य तथा दाहे स्वर्गं ये च समाश्रिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।४।।
सर्पसत्रे च ये सर्पा आस्तिकेन च रक्षिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।५।।
मलये चैव ये सर्पाः कर्कोटकप्रमुखाश्च ये। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।६।।
धर्मलोके च ये सर्पा वैतरण्यां समाश्रिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।७।।
ये सर्पाः पार्वतीयेषु दरीसंधिषु संस्थिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।८।।
ग्रामे वा यदि वारण्ये ये सर्पाः प्रचरन्ति हि। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।९।।
पृथिव्यां चैव ये सर्पा ये सर्पा बिलसंस्थिताः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।१०।।
रसातले च ये सर्पा अनन्ताद्या महाबलाः। नमोस्तु तेभ्यः सुप्रीताः प्रसन्नाः सन्तु मे सदा ।।११।।

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि ल·अं·	१ र घं·मि·से	३ चं घं·मि·से	४ मं घं·मि·से	५ बु घं·मि·से	६ गु घं·मि·से	७ शु घं·मि·से	७ श घं·मि·से	८ र घं·मि·से	९ चं घं·मि·से	१० मं घं·मि·से	११ बु घं·मि·से	१२ गु घं·मि·से	१३ शु घं·मि·से	१४ श घं·मि·से	१५ र घं·मि·से
कर्कः	०७:३३:५३	०७:२९:५७	०७:२६:०१	०७:२२:०४	०७:१८:०८	०७:१४:११	०७:१०:१५	०७:०६:१८	०७:०२:२१	०६:५८:२५	०६:५४:२८	०६:५०:३१	०६:४६:३४	०६:४२:३७	०६:३८:४१
सिंहः	०९:५०:२१	०९:४६:२५	०९:४२:२९	०९:३८:३२	०९:३४:३६	०९:३०:३९	०९:२६:४३	०९:२२:४६	०९:१८:४९	०९:१४:५२	०९:१०:५६	०९:०६:५९	०९:०३:०२	०८:५९:०५	०८:५५:०८
कन्या	१२:०५:१९	१२:०१:२३	११:५७:२६	११:५३:३०	११:४९:३३	११:४५:३६	११:४१:४०	११:३७:४३	११:३३:४६	११:२९:४९	११:२५:५३	११:२१:५६	११:१७:५९	११:१४:०२	११:१०:०५
तुला	१४:२४:०९	१४:२०:१३	१४:१६:१६	१४:१२:२०	१४:०८:२३	१४:०४:२६	१४:००:३०	१३:५६:३३	१३:५२:३६	१३:४८:३९	१३:४४:४२	१३:४०:४५	१३:३६:४८	१३:३२:५१	१३:२८:५४
वृश्चिकः	१६:४३:०३	१६:३९:०६	१६:३५:१०	१६:३१:१३	१६:२७:१७	१६:२३:२०	१६:१९:२३	१६:१५:२६	१६:११:२९	१६:०७:३२	१६:०३:३५	१५:५९:३८	१५:५५:४१	१५:५१:४४	१५:४७:४७
धनुः	१८:४८:२९	१८:४४:३३	१८:४०:३६	१८:३६:३९	१८:३२:४३	१८:२८:४६	१८:२४:४९	१८:२०:५२	१८:१६:५५	१८:१२:५८	१८:०९:०१	१८:०५:०४	१८:०१:०७	१७:५७:१०	१७:५३:१३
मकरः	२०:३३:०३	२०:२९:०६	२०:२५:१०	२०:२१:१३	२०:१७:१६	२०:१३:१९	२०:०९:२२	२०:०५:२५	२०:०१:२८	१९:५७:३१	१९:५३:३४	१९:४९:३७	१९:४५:४०	१९:४१:४३	१९:३७:४६
कुम्भः	२२:०२:११	२१:५८:१५	२१:५४:१८	२१:५०:२१	२१:४६:२४	२१:४२:२७	२१:३८:३०	२१:३४:३३	२१:३०:३६	२१:२६:३९	२१:२२:४२	२१:१८:४५	२१:१४:४८	२१:१०:५१	२१:०६:५४
मीनः	२३:२८:०५	२३:२४:०८	२३:२०:१२	२३:१६:१५	२३:१२:१८	२३:०८:२१	२३:०४:२४	२३:००:२७	२२:५६:३०	२२:५२:३३	२२:४८:३६	२२:४४:३९	२२:४०:४१	२२:३६:४४	२२:३२:४७
मेषः	०१:०४:०१	०१:००:०५	००:५६:०८	००:५२:११	००:४८:१४	००:४४:१७	००:४०:२०	००:३६:२३	००:३२:२६	००:२८:२९	००:२४:३२	००:२०:३४	००:१६:३७	००:१२:४०	००:०८:४३
वृष्	०२:५९:३२	०२:५५:३५	०२:५१:३८	०२:४७:४२	०२:४३:४५	०२:३९:४८	०२:३५:५१	०२:३१:५३	०२:२७:५६	०२:२३:५९	०२:२०:०२	०२:१६:०५	०२:१२:०७	०२:०८:१०	०२:०४:१३
मिथुनः	०५:१३:४३	०५:०९:४६	०५:०५:५०	०५:०१:५३	०४:५७:५६	०४:५३:५९	०४:५०:०१	०४:४६:०४	०४:४२:०७	०४:३८:१०	०४:३४:१३	०४:३०:१५	०४:२६:१८	०४:२२:२१	०४:१८:२३

सूर्योदयकालीन तिथिः४

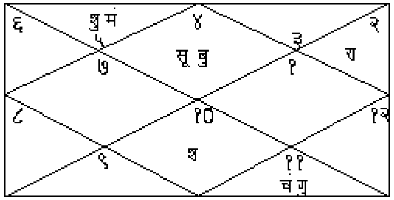

सूर्योदयकालीन तिथिः११

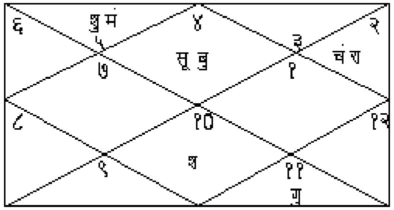

श्रावण शुक्लपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वास्त, ९:८:२०२१;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
३२:५३:४०	१ चं	३१:३२	दि १८:३४:०९	**आश्ले·**	११:१०	दि १०:२५:१२	वरी·	४४:५०	रा २३:५३:१४	बव ०१:४६	बाल ३१:३२	क·११:१०	दि १०:२५:१२	५:५७:१४	७:०६:४२	सौम्य	२४	९	**गण्डान्तः१६:३३;** सिद्ध·१;
३२:५०:२५	२ मं	३०:०८	दि १८:००:४५	**मघा**	११:५६	दि १०:४४:२१	परिघ	४०:५७	रा २२:२०:४२	बाल ००:५८	कौल ३०:०८	सिंह	अहोरात्र	५:५७:४५	७:०५:५५	कालदंड	२५	१०	अमृत·२; सिद्ध·३;
३२:४७:०७	३ बु	२७:३३	दि १६:५९:३१	**पू·फा·**	११:३३	दि १०:३५:२३	शिव	३६:०९	रा २०:२६:००	गर २७:३३	वणि ५५:५३	सिं·२६:१७	दि १६:२९:०३	५:५८:१६	७:०५:०७	प्रवर्द्ध	२६	११	**भद्रारंभः२८:१९घं·;**
३२:४३:४८	४ गु	२३:५७	दि १५:३३:२६	**उ·फा·**	१०:०५	दि १०:००:४७	सिद्ध	३०:३२	रा १८:११:४३	विष २३:५७	बव ५१:५०	कन्या	अहोरात्र	५:५८:४६	७:०४:१७	मातङ्ग	२७	१२	**भद्रांतः१५:३३घं·;**
३२:४०:२६	५ शु	१९:२९	दि १३:४६:४३	**हस्त**	०७:४३	दि ०९:०४:४०	साध्य	२४:१४	दि १५:४०:४९	बाल १९:२९	कौल ४६:५९	कं·३६:१६	रा २०:२९:३९	५:५९:१७	७:०३:२७	अमृत	२८	१३	द·ति·६; रवियोगःचि; सिद्ध·६;
३२:३७:०२	६ श	१४:१८	दि ११:४२:४९	**चित्रा**	०४:३७	दि ०७:५०:२८	शुभ	१७:२१	दि १२:५६:०४	तैति १४:१८	गर ४१:३०	तुला	अहोरात्र	५:५९:४७	७:०२:३६	काण	२९	१४	द·ति·६; अमृत·६; रवियोगःचि;
३२:३३:३६	७ र	०८:३५	दि ०९:२६:१४	**स्वाती विशा**	**००:५६ ५५:५९**	**दि ०६:२२:४९ रा २८:४६:२५**	शुक्ल	१०:०२	दि १०:०१:०५	वणि ०८:३५	विष ३५:३६	तु·४२:५७	रा २३:११:१२	६:००:१७	७:०१:४३	लुम्ब	३०	१५	**भद्रा ९:२६–२०:१५घं·;** सिद्ध·८;
३२:३०:०९	८ चं	**०२:३२ ५३:५०**	**दि ०७:०१:३३ रा २८:३३:३३**	**अनु·**	५२:४३	रा २७:०६:००	**ब्रह्म ऐन्द्र**	**०२:२७ ५२:१९**	**दि ०६:५९:२६ रा २७:५५:०२**	बव ०२:३२	बाल २९:२७	वृश्चिक	अहोरात्र	६:००:४७	७:००:५०	मानस	३१	१६	**मासान्तः;** सर्वार्थ·अनु; अमृत·१०;
३२:२६:४०	१० मं	५०:१४	रा २६:०७:०४	**ज्ये·**	४८:३४	रा २५:२६:४९	वैधृ·	४७:०६	रा २४:५१:३७	तैति २३:१६	गर ५०:१४	वृ·४८:३४	रा २५:२६:४९	६:०१:१६	६:५९:५६	मुद्गर	३२	१७	**संक्रान्ति पुण्यकालं,१२:२७–१८:३३घं·;**
३२:२३:०८	११ बु	४४:२४	रा २३:४७:१३	**मूल**	४४:४१	रा २३:५४:०४	विष्कु·	३९:३९	रा २१:५३:२५	वणि १७:१५	विष ४४:२४	धनु	अहोरात्र	६:०१:४६	६:५९:०१	ध्वज	१	१८	**भद्रा १२:५६–२३:४७घं·; मासादिः;**
३२:१९:३५	१२ गु	३९:००	रा २१:३८:१८	**पू·षा·**	४१:१५	रा २२:३२:१५	प्रीति	३२:३४	रा १९:०३:४९	बव ११:३७	बाल ३९:००	ध·५५:३०	रा २८:१४:०९	६:०२:१५	६:५८:०५	धाता	२	१९	अमृत·१३;
३२:१६:०१	१३ शु	३४:१६	रा १९:४५:०४	**उ·षा·**	३८:२९	रा २१:२६:१२	आयु·	२५:६०	दि १६:२६:३६	कौल ०६:३२	तैति ३४:१६	मकर	अहोरात्र	६:०२:४४	६:५७:०९	आनन्द	३	२०	**अभिजितः२४:०६–४२:१९;**
३२:१२:२५	१४ श	३०:२१	दि १८:११:३३	**श्रवण**	३६:३२	रा २०:३९:५९	सौभा·	२०:०४	दि १४:०४:४६	गर ०२:११	वणि ३०:२१	मकर	अहोरात्र	६:०३:१३	६:५६:११	प्रवर्द्ध	४	२१	**भद्रा १८:१२–२९:३१घं·;** सर्वार्थ·श्र;
३२:०८:४७	१५ र	२७:२४	दि १७:०१:२०	**धनि·**	३५:३४	रा २०:१७:१८	शोभ·	१४:५४	दि १२:०१:२४	बव २७:२४	बाल ५६:२१	म·०५:५४	दि ०८:२५:१९	६:०३:४२	६:५५:१३	मातङ्ग	५	२२	अमृत·१५;

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर
	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि				मि:से
१	०३:२१:५६:१०	०३:२७:३४:५१	०४:१२:१३:२८	०४:०१:१८:१०	१०:०६:३९:१६	०४:२८:१७:५३	०९:११:४५:००	०७:१५:२८:०३	४६:२६:५०	०६:२४:३७	उ·१६:४९:०३	– ५:१०
२	०३:२२:५३:३२	०४:१०:४१:३७	०४:१२:५१:४५	०४:०३:०७:३९	१०:०६:३१:१८	०४:२९:२८:४५	०९:११:४०:१८	०७:१५:२४:५२	४६:२५:१२	०७:२३:२९	उ·१६:३१:४७	– ५:०२
३	०३:२३:५०:५५	०४:२४:०३:५६	०४:१३:३०:०३	०४:०४:५६:४३	१०:०६:२३:१७	०५:००:३९:३४	०९:११:३५:३७	०७:१५:२१:४१	४६:२३:३४	०८:२२:२०	उ·१६:१४:१६	– ४:५३
४	०३:२४:४८:२०	०५:०७:४१:१५	०४:१४:०८:२२	०४:०६:४५:१९	१०:०६:१५:१३	०५:०१:५०:२०	०९:११:३०:५८	०७:१५:१८:३०	४६:२१:५४	०९:२२:२७	उ·१५:५६:२८	– ४:४४
५	०३:२५:४५:४७	०५:२१:३२:१४	०४:१४:४६:४२	०४:०८:३३:२५	१०:०६:०७:०६	०५:०३:०१:०३	०९:११:२६:२१	०७:१५:१५:१९	४६:२०:१३	१०:२३:४२	उ·१५:३८:२५	– ४:३४
६	०३:२६:४३:१४	०६:०५:३४:५४	०४:१५:२५:०३	०४:१०:२०:५६	१०:०५:५८:५७	०५:०४:११:४३	०९:११:२१:४६	०७:१५:१२:०८	४६:१८:३१	११:२६:०८	उ·१५:२०:०८	– ४:२३
७	०३:२७:४०:४४	०६:१९:४६:४०	०४:१६:०३:२५	०४:१२:०७:४९	१०:०५:५०:४७	०५:०५:२२:२०	०९:११:१७:१२	०७:१५:०८:५८	४६:१६:४८	१२:३१:११	उ·१५:०१:३५	– ४:१२
८	०३:२८:३८:१५	०७:०४:०४:२६	०४:१६:४१:४९	०४:१३:५४:०१	१०:०५:४२:३५	०५:०६:३२:५४	०९:११:१२:४१	०७:१५:०५:४७	४६:१५:०४	१३:३६:३४	उ·१४:४२:४८	– ४:००
१०	०३:२९:३५:४७	०७:१८:२४:४७	०४:१७:२०:१३	०४:१५:३९:२९	१०:०५:३४:२२	०५:०७:४३:२५	०९:११:०८:१२	०७:१५:०२:३६	४६:१३:२०	१४:४०:४६	उ·१४:२३:४७	– ३:४८
११	०४:००:३३:२२	०८:०२:४३:४४	०४:१७:५८:३८	०४:१७:२४:०८	१०:०५:२६:०८	०५:०८:५३:५२	०९:११:०३:४६	०७:१४:५९:२५	४६:११:३४	१५:४३:५७	उ·१४:०४:३३	– ३:३६
१२	०४:०१:३०:५७	०८:१६:५७:४१	०४:१८:३७:०५	०४:१९:०७:५५	१०:०५:१७:५४	०५:१०:०४:१६	०९:१०:५९:२२	०७:१४:५६:१४	४६:०९:४८	१६:३८:५८	उ·१३:४५:०५	– ३:२२
१३	०४:०२:२८:३५	०९:०१:०३:२७	०४:१९:१५:३२	०४:२०:५०:४५	१०:०५:०९:४१	०५:११:१४:३६	०९:१०:५५:०१	०७:१४:५३:०३	४६:०८:००	१७:३२:५२	उ·१३:२५:२४	– ३:०९
१४	०४:०३:२६:१४	०९:१४:५८:१७	०४:१९:५४:००	०४:२२:३२:३४	१०:०५:०१:२७	०५:१२:२४:५३	०९:१०:५०:४३	०७:१४:४९:५२	४६:०६:१२	१८:१६:०९	उ·१३:०५:३०	– २:५४
१५	०४:०४:२३:५५	०९:२८:३९:५९	०४:२०:३२:३०	०४:२४:१३:१७	१०:०४:५३:१४	०५:१३:३५:०६	०९:१०:४६:२८	०७:१४:४६:४२	४६:०४:२४	१८:५८:३४	उ·१२:४५:२३	– २:४०

पारण की अनिवार्यता– वारव्रत और श्रीगणेश (संकष्टी) चतुर्थीव्रत में रात्रि में भोजन करना आवश्यक होता है। पारणा व्रत का अंग है। पारणा दूसरे के अन्न से नहीं किया जाता है– *व्रतेरात्रिभोजनमेवकार्यम्। (धर्मसिन्धु)*

उदयातिथि का महत्व – स्नान, जप, दान, नवरात्र पाठ का हवन उदयातिथि में ही किया जाता है। यह सम्पूर्ण दिन ग्राह्य होती है–
यां तिथिम् समनुप्राप्य उदयं यातिभास्करः।
सा तिथिःसकला ज्ञेया स्नान दान जपादिषु।

प्रदोष व्रत– सूर्यास्त के बाद त्रयोदशी तिथि यदि प्रदोषकाल में होती है तो उसी दिन प्रदोष व्रत होता है। यह कभी द्वादशी तिथि में प्रदोषकाल में मिलती है तो कभी त्रयोदशी के दिन सायंकाल में मिलती है। जब दोनों दिन प्रदोषकाल में त्रयोदशी हो तो परा (बाद वाली) ग्राह्य है। प्रदोष व्रत के करने से संतान प्राप्ति, ऋणमुक्ति, समृद्धि, कष्टनिवारण तथा शिव सान्निध्य की प्राप्ति होती है।

श्रावण शुक्लपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; ९ से २२ अगस्त, २०२१ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःउत्तर । ऋतुःवर्षा, सौम्यगोलः, याम्यायनं । ति·१५ अयनांशाः२२:५०: ७

तिथि दिन	दिनाङ्क अंग्रेजी	卐 व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि 卐
१ चं	९	**श्रावण सोमवार व्रतम्;**
२ मं	१०	**सिंजारा;** श्रावण मंगलवार व्रतम्; कन्यायांशुक्रः२६:२९,घं·१७:०; पूर्वफल्गुन्यांमङ्गलः४४:१६,घं·०:०७;
३ बु	११	**हरियाली तीज; झूलनोत्सव;** रवियोगःउफा;
४ गु	१२	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी;** रवियोगःउफा; द·न·उफा; सिद्ध·५
५ शु	१३	**श्री कल्कि जयन्ती;** श्रीनागपञ्चमी (शास्त्रीय,अन्यक्षेत्रे) ;**पंचदिवसीय श्रीडिग्गी कल्याणजी यात्रारम्भ जयपुर से;**
६ श	१४	**श्री स्कन्दषष्ठी;** सर्वार्थ·स्वा;
७ र	१५	**गोस्वामी श्रीतुलसीदास जयन्ती; ७५वां स्वतन्त्रता दिवस;** पूर्वफल्गुन्यांबुधः४०:४५,घं·२२:४५; त्रिपुष्करः७+वि; ①
८ चं	१६	**श्रावण सोमवार व्रतम्; श्रीदुर्गाष्टमी;** रवियोगःअनु; रवियोगःज्ये; मृत्युबाण घं·२०:४८:३१या·;
१० मं	१७	श्रावण मंगलवार व्रतम्; **गण्डान्तारम्भः१९:५१;** मघायांसिंहेरविः२५:१५,घं·१६:३४; रवियोगःज्ये; रवियोगःमू;
११ बु	१८	**श्री पवित्रा एकादशी (स्मार्त्त) ; गण्डान्तः७:०३;** द·ति·१०; हस्तेशुक्रः५६:२३,घं·५:०१; अमृत·११; ②
१२ गु	१९	**श्री पवित्रा एकादशी (वैष्णव) ; पवित्रारोपण; दामोदर द्वादशी;** मृत्युबाण घं·१७:४९:५३या·;
१३ शु	२०	**प्रदोष व्रतम्;** अमृत·१४; सर्वार्थ·श्र; रवियोगःश्र; ① रवियोगःअनु; मृत्युबाण घं·२१:४९:३४उ·;
१४ श	२१	**पूर्णिमा व्रतम्; पञ्चकारंभः२०:४०;** सिद्ध·१४; रवियोगःश्र; ② रवियोगःमू; सिद्ध·१२; मृत्युबाण घं·१८:४८:४०उ·;
१५ र	२२	**श्रावण पूर्णिमा (स्नान, दान) ; रक्षाबन्धन (मुहूर्त्त–१३:४७ से १६:२१ तक); श्रावणी उपाकर्म;** संस्कृत दिवस;

श्रावण मास कृत्य

◆ **उपाकर्म (श्रावणी)-** श्रावण पूर्णिमा के दिन अथवा हस्त नक्षत्र युक्त श्रावण शुक्ल पंचमी के दिन श्रावणीकर्म किया जाता है। यदि पूर्णिमा भद्रा या ग्रहण से दूषित हो, तभी हस्त एवं पञ्चमी के योग में श्रावणी कर्म किया जाता है - ***भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा। श्रावणी नृपति हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी।।*** (पूर्णिमा में भद्रा होने पर श्रावणी और होलिकादाह नहीं करते हैं।) शुक्ल यजुर्वेदी उपनीत द्विज श्रावण पूर्णिमा को ही श्रावणी करते हैं। विधिपूर्वक वेदारम्भ कर्म का नाम उपाकर्म है। इसे ही श्रावणी-कर्म भी कहा गया है। द्विजों को इस दिन अधिकाधिक गायत्री जप करना चाहिए। इस दिन ऋषि-तर्पण भी करते हैं। इससे ऋषितेज की प्राप्ति होती हैं।

◆ **रक्षाबन्धन-** श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन रक्षाबन्धन का पर्व मनाया जाता है। रक्षा बन्धन का मंत्र इस प्रकार से है-

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

रक्षाबन्धन पर्व हमेशा भद्रारहित पूर्णिमा में मनाया जाता है। पूर्णिमा न्यूनतम त्रिमुहूर्तव्यापिनी होनी चाहिए। इससे कम होने पर पूर्व दिन प्रदोष काल में रक्षा बन्धन करने का विधान है (धर्मसिन्धु)।

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	१२:०५:४०–१३:५०:५५
१५	१२:०३:४५–१३:४६:३७

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि / ल·अं·	१ चं घं·मि·से	२ मं घं·मि·से	३ बु घं·मि·से	४ गु घं·मि·से	५ शु घं·मि·से	६ श घं·मि·से	७ र घं·मि·से	८ चं घं·मि·से	१० मं घं·मि·से	लग्न अन्त	११ बु घं·मि·से	१२ गु घं·मि·से	१३ शु घं·मि·से	१४ श घं·मि·से	१५ र घं·मि·से
कर्कः	०६:३४:४४	०६:३०:४७	०६:२६:५०	०६:२२:५३	०६:१८:५६	०६:१४:५९	०६:११:०२	०६:०७:०५	०६:०३:०८	सिंहः	०८:१५:३८	०८:११:४१	०८:०७:४४	०८:०३:४७	०७:५९:५०
सिंहः	०८:५१:११	०८:४७:१४	०८:४३:१७	०८:३९:२०	०८:३५:२३	०८:३१:२६	०८:२७:२९	०८:२३:३२	०८:१९:३५	कन्या	१०:३०:३४	१०:२६:३७	१०:२२:४०	१०:१८:४३	१०:१४:४६
कन्या	११:०६:०८	११:०२:११	१०:५८:१४	१०:५४:१७	१०:५०:२०	१०:४६:२३	१०:४२:२६	१०:३८:२९	१०:३४:३१	तुला	१२:४९:२३	१२:४५:२६	१२:४१:२९	१२:३७:३२	१२:३३:३५
तुला	१३:२४:५७	१३:२१:००	१३:१७:०३	१३:१३:०६	१३:०९:०९	१३:०५:१२	१३:०१:१५	१२:५७:१८	१२:५३:२१	वृश्चिकः	१५:०८:१६	१५:०४:१९	१५:००:२१	१४:५६:२४	१४:५२:२७
वृश्चिकः	१५:४३:५०	१५:३९:५३	१५:३५:५६	१५:३१:५९	१५:२८:०१	१५:२४:०४	१५:२०:०७	१५:१६:१०	१५:१२:१३	धनुः	१७:१३:४१	१७:०९:४३	१७:०५:४६	१७:०१:४९	१६:५७:५२
धनुः	१७:४९:१५	१७:४५:१८	१७:४१:२१	१७:३७:२४	१७:३३:२७	१७:२९:२९	१७:२५:३२	१७:२१:३५	१७:१७:३८	मकरः	१८:५८:१३	१८:५४:१६	१८:५०:१९	१८:४६:२२	१८:४२:२५
मकरः	१९:३३:४८	१९:२९:५१	१९:२५:५४	१९:२१:५७	१९:१७:५९	१९:१४:०२	१९:१०:०५	१९:०६:०८	१९:०२:१०	कुम्भः	२०:२७:२१	२०:२३:२४	२०:१९:२६	२०:१५:२९	२०:११:३२
कुम्भः	२१:०२:५६	२०:५८:५९	२०:५५:०२	२०:५१:०४	२०:४७:०७	२०:४३:१०	२०:३९:१३	२०:३५:१५	२०:३१:१८	मीनः	२१:५३:१४	२१:४९:१७	२१:४५:१९	२१:४१:२२	२१:३७:२५
मीनः	२२:२८:५०	२२:२४:५२	२२:२०:५५	२२:१६:५८	२२:१३:००	२२:०९:०३	२२:०५:०६	२२:०१:०८	२१:५७:११	मेषः	२३:२९:०९	२३:२५:१२	२३:२१:१५	२३:१७:१७	२३:१३:२०
मेषः	००:०४:४५	००:००:४८	२३:५६:५१	२३:५२:५३	२३:४८:५६	२३:४४:५९	२३:४१:०१	२३:३७:०४	२३:३३:०६	वृष्	०१:२४:३९	०१:२०:४१	०१:१६:४४	०१:१२:४७	०१:०८:५०
वृष्	०२:००:१५	०१:५६:१८	०१:५२:२१	०१:४८:२३	०१:४४:२६	०१:४०:२८	०१:३६:३१	०१:३२:३४	०१:२८:३६	मिथुनः	०३:३८:४९	०३:३४:५१	०३:३०:५४	०३:२६:५७	०३:२२:५९
मिथुनः	०४:१४:२६	०४:१०:२८	०४:०६:३१	०४:०२:३३	०३:५८:३६	०३:५४:३८	०३:५०:४१	०३:४६:४४	०३:४२:४६	कर्कः	०५:५९:११	०५:५५:१४	०५:५१:१७	०५:४७:२०	०५:४३:२४

सूर्योदयकालीन तिथिः४

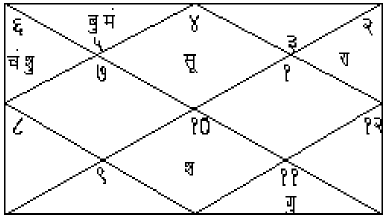

सूर्योदयकालीन तिथिः११

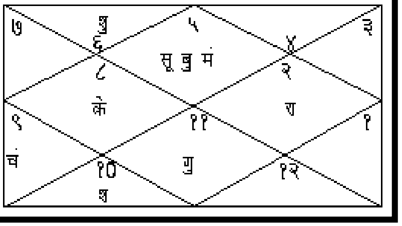

भाद्रपद कृष्णपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपश्चिमास्तः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः, २३:८:२०२१;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
३२:०५:०८	१ चं	२५:३५	दि १६:१८:०७	**शत·**	३५:४४	रा २०:२१:३८	अतिग·	१०:३७	दि १०:१९:००	कौल २५:३५	तैति ५५:०८	कुंभ	अहोरात्र	६:०४:११	६:५४:१४	अमृत	६	२३	सिद्ध·१;
३२:०१:२८	२ मं	२४:५९	दि १६:०४:०८	**पू·भा·**	३७:०६	रा २०:५४:५७	सुकर्मा	०७:१७	दि ०८:५९:३१	गर २४:५९	वणि ५५:१०	कु·२१:३८	दि १४:४३:४५	६:०४:३९	६:५३:१४	काण	७	२४	**भद्रारंभः२८:०९घं·;** अमृत·२;
३१:५७:४६	३ बु	२५:४०	दि १६:२०:५७	**उ·भा·**	३९:४३	रा २१:५८:२३	धृति	०४:५७	दि ०८:०४:०३	विष २५:४०	बव ५६:३०	मीन	अहोरात्र	६:०५:०७	६:५२:१४	लुम्ब	८	२५	**भद्रांतः१६:२१घं·;**
३१:५४:०३	४ गु	२७:३६	दि १७:०७:५८	**रेवती**	४३:३३	रा २३:३०:४९	शूल	०३:३८	दि ०७:३२:४४	बाल २७:३६	कौल ५९:०२	मी·४३:३३	रा २३:३०:४९	६:०५:३६	६:५१:१३	मित्र	९	२६	**गण्डान्तः१७:०५–२९:५८;** सर्वार्थ·रे;
३१:५०:१८	५ शु	३०:४२	दि १८:२३:००	**अश्वि·**	४८:२९	रा २५:२९:३०	गण्ड	०३:१४	दि ०७:२३:३९	तैति ३०:४२	गर ६०:००	मेष	अहोरात्र	६:०६:०४	६:५०:११	वज्र	१०	२७	सर्वार्थ·अ; सिद्ध·६; रवियोगःभ;
३१:४६:३३	६ श	३४:४८	रा २०:०१:३८	**भरणी**	५४:१६	रा २७:४९:०४	वृद्धि	०३:४०	दि ०७:३४:३३	गर ०२:३८	वणि ३४:४८	मेष	अहोरात्र	६:०६:३१	६:४९:०८	ध्वांक्ष	११	२८	**भद्रारंभः२०:०२घं·;** अमृत·६;
३१:४२:४६	७ र	३९:३४	रा २१:५६:३७	**कृत्ति·**	६०:००	अहोरात्र	ध्रुव	०४:४४	दि ०८:००:४६	विष ०७:०६	बव ३९:३४	मे·१०:४८	दि १०:२६:०८	६:०६:५९	६:४८:०५	धूम्र	१२	२९	**भद्रांतः८:५७घं·;** त्रिपुष्करः७+कृ;
३१:३८:५८	८ चं	४४:४०	रा २३:५९:१७	**कृत्ति·**	००:३६	दि ०६:२१:४२	व्याघ·	०६:१३	दि ०८:३६:३२	बाल १२:०५	कौल ४४:४०	वृष	अहोरात्र	६:०७:२७	६:४७:०२	प्रवर्द्ध	१३	३०	चित्रायांशुक्रः२२:४,घं·१५:२३:४०;
३१:३५:०९	९ मं	४९:३७	रा २५:५८:४४	**रोहि·**	०७:०७	दि ०८:५८:४०	हर्षण	०७:४७	दि ०९:१४:४४	तैति १७:१०	गर ४९:३७	वृ·४०:१९	रा २२:१५:२४	६:०७:५४	६:४५:५८	मातङ्ग	१४	३१	पूर्वफल्गुन्यांरविः१६:८,घं·१३:०२;
३१:३१:१९	१० बु	५४:०२	रा २७:४५:१५	**मृग·**	१३:२२	दि ११:२८:५७	वज्र	०९:०८	दि ०९:४७:२९	वणि २१:५४	विष ५४:०२	मिथुन	अहोरात्र	६:०८:२१	६:४४:५३	अमृत	१५	१	**भद्रा १४:५४–२७:४५घं·;** द·ति·१०;
३१:२७:२८	११ गु	५७:३५	रा २९:१०:६०	**आर्द्रा**	१८:५८	दि १३:४३:५२	सिद्धि	०९:५९	दि १०:०८:२०	बव २५:५५	बाल ५७:३५	मिथुन	अहोरात्र	६:०८:४८	६:४३:४८	काण	१६	२	द·ति·१०; सर्वार्थ·पुन;
३१:२३:३६	१२ शु	६०:००	अहोरात्र	**पुन·**	२३:३७	दि १५:३६:११	व्यति·	१०:०६	दि १०:११:४३	कौल २८:५७	तैति ६०:००	मि·०७:३३	दि ०९:१०:२५	६:०९:१५	६:४२:४२	लुम्ब	१७	३	सर्वार्थ·पुन;
३१:१९:४४	१२ श	००:०१	दि ०६:०९:५९	**पुष्य**	२७:०९	दि १७:०१:२१	वरी·	०९:२१	दि ०९:५४:०३	तैति ००:०१	गर ३०:४८	कर्क	अहोरात्र	६:०९:४२	६:४१:३६	मित्र	१८	४	
३१:१५:५०	१३ र	०१:१४	दि ०६:३९:५५	**आश्ले·**	२९:२७	दि १७:५७:०५	परिघ	०७:३७	दि ०९:१२:५६	वणि ०१:१४	विष ३१:२४	क·२९:२७	दि १७:५७:०५	६:१०:०९	६:४०:२९	वज्र	१९	५	**भद्रा ६:४०–१८:४४घं·;** सिद्ध·१३;
३१:११:५६	१४ चं	**०१:११ ५८:४४**	**दि ०६:३९:०७ रा ३०:०८:४३**	**मघा**	३०:३०	दि १८:२२:४४	शिव	०४:५३	दि ०८:०७:३९	शकु ०१:११	चतु ३०:४२	सिंह	अहोरात्र	६:१०:३६	६:३९:२२	ध्वांक्ष	२०	६	अमृत·१५; सिद्ध·१;

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

तिथि	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से
१	०४:०५:२१:३८	१०:१२:०७:०१	०४:२१:११:०१	०४:२५:५२:५०	१०:०४:४५:००	०५:१४:४५:१५	०९:१०:४२:१७	०७:१४:४३:३१	४६:०२:३४	१९:३४:३६	उ·१२:२५:०५	– २:२४
२	०४:०६:१९:२२	१०:२५:१८:३६	०४:२१:४९:३२	०४:२७:३१:०८	१०:०४:३६:४६	०५:१५:५५:२१	०९:१०:३८:०८	०७:१४:४०:२०	४६:००:४४	२०:०९:१७	उ·१२:०४:३४	– २:०९
३	०४:०७:१७:०८	११:०८:१४:४२	०४:२२:२८:०५	०४:२९:०८:०५	१०:०४:२८:३२	०५:१७:०५:२२	०९:१०:३४:०३	०७:१४:३७:०९	४५:५८:५३	२०:४३:१६	उ·११:४३:५२	– १:५३
४	०४:०८:१४:५७	११:२०:५६:०२	०४:२३:०६:३९	०५:००:४३:३५	१०:०४:२०:१९	०५:१८:१५:१९	०९:१०:३०:०२	०७:१४:३३:५८	४५:५७:०१	२१:१६:३४	उ·११:२२:५९	– १:३६
५	०४:०९:१२:४६	००:०३:२४:०६	०४:२३:४५:१४	०५:०२:१७:३२	१०:०४:१२:०७	०५:१९:२५:१३	०९:१०:२६:०४	०७:१४:३०:४७	४५:५५:०९	२१:५१:०८	उ·११:०१:५५	– १:१९
६	०४:१०:१०:३८	००:१५:४१:०३	०४:२४:२३:५०	०५:०३:४९:४९	१०:०४:०३:५६	०५:२०:३५:०१	०९:१०:२२:१०	०७:१४:२७:३७	४५:५३:१६	२२:२८:४७	उ·१०:४०:४१	– १:०२
७	०४:११:०८:३२	००:२७:४९:३४	०४:२५:०२:२७	०५:०५:२०:२१	१०:०३:५५:४७	०५:२१:४४:४६	०९:१०:१८:२१	०७:१४:२४:२६	४५:५१:२३	२३:०६:०४	उ·१०:१९:१६	– ०:४४
८	०४:१२:०६:२८	०१:०९:५२:५१	०४:२५:४१:०५	०५:०६:४८:५८	१०:०३:४७:४०	०५:२२:५४:२५	०९:१०:१४:३५	०७:१४:२१:१५	४५:४९:२९	२३:५१:२०	उ·०९:५७:४१	– ०:२६
९	०४:१३:०४:२५	०१:२१:५४:२५	०४:२६:१९:४५	०५:०८:१५:३४	१०:०३:३९:३५	०५:२४:०४:००	०९:१०:१०:५३	०७:१४:१८:०४	४५:४७:३५	००:३७:०८	उ·०९:३५:५७	– ०:०८
१०	०४:१४:०२:२५	०२:०३:५८:१८	०४:२६:५८:२५	०५:०९:३९:५९	१०:०३:३१:३३	०५:२५:१३:३१	०९:१०:०७:१६	०७:१४:१४:५३	४५:४५:४०	०१:२७:०७	उ·०९:१४:०३	+ ०:११
११	०४:१५:००:२६	०२:१६:०७:५६	०४:२७:३७:०७	०५:११:०२:०५	१०:०३:२३:३४	०५:२६:२२:५६	०९:१०:०३:४३	०७:१४:११:४२	४५:४३:४४	०२:२१:१२	उ·०८:५२:०१	+ ०:३०
१२	०४:१५:५८:३०	०२:२८:२६:२५	०४:२८:१५:४९	०५:१२:२१:४१	१०:०३:१५:३९	०५:२७:३२:१६	०९:१०:००:१५	०७:१४:०८:३१	४५:४१:४८	०३:१६:२५	उ·०८:२९:५०	+ ०:५०
१२	०४:१६:५६:३५	०३:१०:५६:२५	०४:२८:५४:३३	०५:१३:३८:३८	१०:०३:०७:४८	०५:२८:४१:३१	०९:०९:५६:५१	०७:१४:०५:२१	४५:३९:५२	०४:१३:४९	उ·०८:०७:३०	+ १:०९
१३	०४:१७:५४:४३	०३:२३:३९:५८	०४:२९:३३:१८	०५:१४:५२:४५	१०:०३:००:०१	०५:२९:५०:४१	०९:०९:५३:३२	०७:१४:०२:१०	४५:३७:५५	०५:१२:३०	उ·०७:४५:०३	+ १:२९
१४	०४:१८:५२:५२	०४:०६:३८:२६	०५:००:१२:०४	०५:१६:०३:५०	१०:०२:५२:१८	०६:००:५९:४५	०९:०९:५०:१८	०७:१३:५८:५९	४५:३५:५८	०६:१०:४२	उ·०७:२२:२८	+ १:४९

भाद्रपद कृष्ण अष्टमी के दिन नराकृति परब्रह्म स्वराटपुरुष भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का जन्मोत्सव है। "इस दिन चारों वर्णों को यथाशक्ति उपवास करना चाहिये। जो जानकर भी श्रीकृष्णजन्माष्टमी का व्रत नहीं करते हैं वे वनमें सर्प और व्याघ्र होते हैं। हे द्विजोत्तम्! जो मनुष्य **श्रीकृष्णजन्माष्टमी** के दिन भोजन कर लेता है, उसका वह भोजन नहीं है किंतु वह तीनों लोकों के पाप को भक्षण करता है इसमें कुछ भी संदेह नहीं है।" **–स्कन्द पुराण** "सप्तमी सहित अष्टमी यत्नपूर्वक वर्जित करें और बिना रोहिणी नक्षत्र के नवमी सहित अष्टमी का व्रत करें।" **–ब्रह्मवैवर्त** "पूर्व सप्तमी से विद्ध अष्टमी नवमी के दिन सूर्योदय में मुहूर्त्त मात्र भी हो तो वह अष्टमी संपूर्ण होती है। नवमी के दिन यदि कला, काष्ठा वा मुहूर्त्त मात्र भी अष्टमी तिथि हो तो वही अष्टमी ग्राह्य है, परंतु सप्तमी सहित अष्टमी कभी ग्रहण नहीं करना चाहिये।" **–पद्मपुराण**

ॐ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणतः क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः।

भाद्रपद कृष्णपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; २३ अगस्त से ६ सितम्बर, २०२१ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःउत्तर । ॠतुःवर्षा, सौम्यगोलः, याम्यायनं । ति·२९ अयनांशाः२२:५०: ९

卐 व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि 卐

तिथि / दिन	दिनाङ्क / अंग्रेजी	
१ चं	२३	**गोगामेड़ी मेला आरम्भ (हनुमानगढ़, राज·);** उत्तरफल्गुन्यांबुधः२८:४२,घं·१७:५९:५०;
२ मं	२४	त्रिपुष्करः२+पूभा; सिद्ध·३; सर्वार्थ·उभा;
३ बु	२५	**कज्जली तीज, चन्द्रोदय घं·२०:४३; संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी; श्रीबहुला चतुर्थी; ①**
४ गु	२६	**पञ्चकान्तः२३:३१;** सिद्ध·५; सर्वार्थ·अ;
५ शु	२७	मृत्युबाण घं·११:२१:२८उ·;
६ श	२८	**श्रीहल षष्ठी;** रवियोगःभ; त्रिपुष्करः७+कृ; मृत्युबाण घं·१०:२९:११या·;
७ र	२९	सिद्ध·८; **① तीज मेला प्रारम्भ (बूंदी, राज·);** कन्यायांबुधः३२:३१,घं·१९:३२;
८ चं	३०	**श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्णव, स्मार्त्त);** सर्वार्थ·रो;
९ मं	३१	**नन्दोत्सव; श्रीगोगानवमी;** उत्तरफल्गुन्यांमङ्गलः३१:२७,घं·१९:०९;
१० बु	१	हस्तेबुधः१४:२९,घं·१२:२२:३५; सर्वार्थ·मृ; अमृत·११;
११ गु	२	**श्री अजा एकादशी (स्मार्त्त, वैष्णव);**
१२ शु	३	**श्रीअजा एकादशी (निम्बार्कीय); श्रीवञ्जुलिनी महाद्वादशी; व्यतिपात पुण्य; ②**
१२ श	४	**श्री शनि प्रदोष व्रतम्; पर्यूषण पर्व आरम्भ;** ② उत्तराषाढ़ेशनिः०४:२१,घं·०८:२०:३०;
१३ र	५	**मास शिवरात्रि; गण्डान्तः११:४६–२४:०६;** तुलायांशुक्रः०८:६,घं·०९:५१; कन्यायांमङ्गलः४१:२१,घं·२३:९;
१४ चं	६	**कुशोत्पाटिनी अमावस्या (स्नान, दान, श्राद्ध);** मृत्युबाण घं·३:१७:५५उ·;

ति	श्राद्धकाल घण्टादिः
१	१२:०३:३२–१३:४६:१३
१४	१२:००:०१–१३:३९:५१

सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण के प्राकट्योत्सव जन्माष्टमी का संक्षिप्त कृत्य

जन्माष्टमी को पूरा दिन यथाशक्ति कठोर व्रत रखे। प्रात:काल उठकर स्नानादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर व्रत का निम्न संकल्प करे - ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः अद्य राक्षसनामसंवत्सरे सूर्य दक्षिणायने वर्षतौ भाद्रपदमासे कृष्णपक्षे श्रीकृष्णजन्माष्टम्यां तिथौ सोमवासरे ____ नामाहं मम चतुर्वर्गसिद्धिद्वारा श्रीकृष्णदेवप्रीतये जन्माष्टमीव्रताङ्गत्वेन श्रीकृष्णदेवस्य यथामिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये।

केले के खम्भे, आम-अशोक के पल्लव, बहुविध पुष्पादि से श्रीठाकुरजी की दिव्य झाँकी सजाए, सारा दिन संकीर्तन आदि से श्रीकृष्णचन्द्र परमानंदकंद की भक्ति करे। रात्रि में पञ्चामृत एवं दुग्धाभिषेक के साथ माता देवकीसहित श्रीबालकृष्ण का षोडशोपचार से पूजन करे। विविध शृङ्गारादिक वस्तुओं से विशेषरूप से अलंकृत करे। **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय'**-इस मन्त्र से पूजन करता हुआ सुसज्जित करके भगवान् को सुन्दर सजे हुए हिंडोले में प्रतिष्ठित करे। अन्नरहित नैवेद्य तथा सुस्वादु मिष्टान्न, नमकीन पदार्थों, फल, पुष्पों और नारियल, छुहारे, अनार, पंजीरी, नारियल के मिष्टान्न तथा नाना प्रकार के मेवे का प्रसाद सजाकर श्रीभगवान् को अर्पण करे। विशेषार्घ्य प्रदानपूर्वक धूप, दीप, नैवेद्य नीराजनपर्यन्त सेवासम्पादन करके पुष्पाञ्जलि अर्पण करे। जन्मोत्सव के पश्चात् कर्पूरादि प्रज्वलित कर समवेत स्वर से भगवान् की आरती-स्तुति करे, पश्चात् प्रसाद वितरण करे।

इसके द्वितीय दिन (अर्थात् नवमीको) दधिकांदो या (नन्दमहोत्सव) किया जाता है। इस समय भगवान् पर कपूर, हल्दी, दही, घी, जल, तेल तथा केसर आदि चढ़ाकर लोग परस्पर विलेपन तथा सेचन करते हैं। वाद्य यन्त्रों से कीर्तन करते हैं तथा मिठाइयाँ बाँटते हैं। **श्रीमद्भागवत में कहा है –**

हरिद्राचूर्णतैलाद्भिः सिङ्चन्त्यो जनमुजगुः॥ गोपाः परस्परं हृष्टा दधिक्षीरघृताम्बुभिः।
आसिञ्चन्तो विलिम्पन्तो नवनीतैश्च चिक्षिपुः ॥

इस प्रकार नन्दनन्दन भगवान् श्रीकृष्ण का प्राकट्योत्सव प्रीतिपूर्वक सम्पन्न करे।

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि / ल·अं·	१ चं घं·मि·से	२ मं घं·मि·से	३ बु घं·मि·से	४ गु घं·मि·से	५ शु घं·मि·से	६ श घं·मि·से	७ र घं·मि·से
सिंहः	०७:५५:५३	०७:५१:५७	०७:४८:००	०७:४४:०३	०७:४०:०६	०७:३६:०९	०७:३२:१२
कन्या	१०:१०:४९	१०:०६:५३	१०:०२:५६	०९:५८:५९	०९:५५:०२	०९:५१:०५	०९:४७:०८
तुला	१२:२९:३८	१२:२५:४१	१२:२१:४४	१२:१७:४७	१२:१३:५०	१२:०९:५४	१२:०५:५७
वृश्चिकः	१४:४८:३०	१४:४४:३३	१४:४०:३६	१४:३६:३९	१४:३२:४२	१४:२८:४५	१४:२४:४८
धनुः	१६:५३:५५	१६:४९:५८	१६:४६:०१	१६:४२:०४	१६:३८:०७	१६:३४:१०	१६:३०:१३
मकरः	१८:३८:२७	१८:३४:३०	१८:३०:३३	१८:२६:३६	१८:२२:३९	१८:१८:४२	१८:१४:४५
कुम्भः	२०:०७:३५	२०:०३:३८	१९:५९:४१	१९:५५:४३	१९:५१:४६	१९:४७:४९	१९:४३:५२
मीनः	२१:३३:२८	२१:२९:३०	२१:२५:३३	२१:२१:३६	२१:१७:३९	२१:१३:४२	२१:०९:४५
मेषः	२३:०९:२३	२३:०५:२६	२३:०१:२९	२२:५७:३१	२२:५३:३४	२२:४९:३७	२२:४५:४०
वृष्	०१:०४:५२	०१:००:५५	००:५६:५८	००:५३:०१	००:४९:०४	००:४५:०७	००:४१:१०
मिथुनः	०३:१९:०२	०३:१५:०५	०३:११:०८	०३:०७:१०	०३:०३:१३	०२:५९:१६	०२:५५:१९
कर्कः	०५:३९:२७	०५:३५:१४	०५:३१:१७	०५:२७:१९	०५:२३:२२	०५:१९:२५	०५:१५:२८

तिथि / ल·अं·	८ चं घं·मि·से	९ मं घं·मि·से	१० बु घं·मि·से	११ गु घं·मि·से	१२ शु घं·मि·से	१२ श घं·मि·से	१३ र घं·मि·से	१४ चं घं·मि·से
सिंहः	०७:२८:१६	०७:२४:१९	०७:२०:२२	०७:१६:२६	०७:१२:२९	०७:०८:३२	०७:०४:३६	०७:००:३९
कन्या	०९:४३:११	०९:३९:१५	०९:३५:१८	०९:३१:२१	०९:२७:२४	०९:२३:२८	०९:१९:३१	०९:१५:३५
तुला	१२:०२:००	११:५८:०३	११:५४:०६	११:५०:१०	११:४६:१३	११:४२:१६	११:३८:२०	११:३४:२३
वृश्चिकः	१४:२०:५२	१४:१६:५५	१४:१२:५८	१४:०९:०१	१४:०५:०४	१४:०१:०८	१३:५७:११	१३:५३:१४
धनुः	१६:२६:१६	१६:२२:१९	१६:१८:२२	१६:१४:२६	१६:१०:२९	१६:०६:३२	१६:०२:३५	१५:५८:३९
मकरः	१८:१०:४८	१८:०६:५१	१८:०२:५५	१७:५८:५८	१७:५५:०१	१७:५१:०४	१७:४७:०८	१७:४३:११
कुम्भः	१९:३९:५६	१९:३५:५९	१९:३२:०२	१९:२८:०५	१९:२४:०८	१९:२०:११	१९:१६:१५	१९:१२:१८
मीनः	२१:०५:४८	२१:०१:५१	२०:५७:५४	२०:५३:५८	२०:५०:०१	२०:४६:०४	२०:४२:०७	२०:३८:१०
मेषः	२२:४१:४३	२२:३७:४६	२२:३३:४९	२२:२९:५३	२२:२५:५६	२२:२१:५९	२२:१८:०२	२२:१४:०५
वृष्	००:३७:१३	००:३३:१६	००:२९:१९	००:२५:२२	००:२१:२५	००:१७:२८	००:१३:३१	००:०९:३५
मिथुनः	०२:५१:२२	०२:४७:२५	०२:४३:२८	०२:३९:३१	०२:३५:३४	०२:३१:३७	०२:२७:४१	०२:२३:४४
कर्कः	०५:११:३१	०५:०७:३४	०५:०३:३७	०४:५९:४०	०४:५५:४३	०४:५१:४६	०४:४७:४९	०४:४३:५२

सूर्योदयकालीन तिथिः४

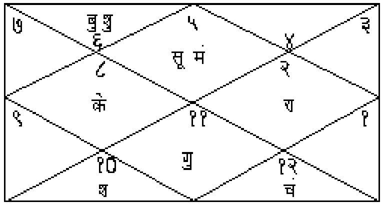

सूर्योदयकालीन तिथिः११

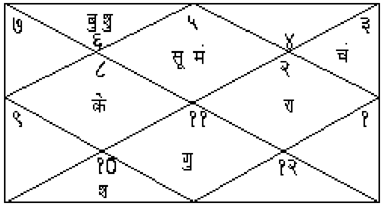

भाद्रपद शुक्लपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपश्चिमास्तः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः, ७:९:२०२१;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
३१:०८:००	१ मं	५७:२७	रा २९:०९:५९	**पू·फा·**	३०:२२	दि १८:१९:४९	सिद्ध साध्य	**०१:०९ ५५:२२**	**दि ०६:३८:४१ रा २८:४७:३४**	किं २८:४९	बव ५७:२७	सिं·४५:१०	रा २४:१५:०४	६:११:०२	६:३८:१४	धूम्र	२१	७	अमृत·२; त्रिपुष्करः२+उफा;
३१:०४:०५	२ बु	५३:५७	रा २७:४६:१३	**उ·फा·**	२९:०८	दि १७:५०:४९	शुभ	५१:०१	रा २६:३५:५४	बाल २५:४९	कौल ५३:५७	कन्या	अहोरात्र	६:११:२९	६:३७:०६	प्रवर्द्ध	२२	८	सिद्ध·२;
३१:००:०८	३ गु	४९:३४	रा २६:०१:३५	**हस्त**	२६:५८	दि १६:५९:०१	शुक्ल	४४:४८	रा २४:०७:०६	तैति २१:५१	गर ४९:३४	कं·५५:३५	रा २८:२६:०३	६:११:५५	६:३५:५८	राक्षस	२३	९	अमृत·३; रवियोगःचि;
३०:५६:११	४ शु	४४:२८	रा २३:५९:३५	**चित्रा**	२४:००	दि १५:४८:२८	ब्रह्म	३७:५९	रा २१:२३:४६	वणि १७:०५	विष ४४:२८	तुला	अहोरात्र	६:१२:२२	६:३४:५०	मुसल	२४	१०	**भद्रा १३:०२–२३:६०घं·**; अमृत·४;
३०:५२:१३	५ श	३८:५०	रा २१:४४:३९	**स्वाती**	२०:२६	दि १४:२३:१७	ऐन्द्र	३०:४१	दि १८:२९:२३	बव ११:४१	बाल ३८:५०	तुला	अहोरात्र	६:१२:४८	६:३३:४१	सिध्दि	२५	११	सर्वार्थ·स्वा;
३०:४८:१४	६ र	३२:५१	रा १९:२१:२८	**विशा·**	१६:२८	दि १२:४८:१८	वैधृ·	२३:०६	दि १५:२७:३४	कौल ०५:५१	तैति ३२:५१	तु·०२:२८	दि ०७:१२:३८	६:१३:१४	६:३२:३२	उत्पात	२६	१२	रवियोगःवि;
३०:४४:१५	७ चं	२६:४२	दि १६:५४:३३	**अनु·**	१२:१६	दि ११:०८:०४	विष्कु·	१५:२१	दि १२:२१:५३	वणि २६:४२	विष ५३:४०	वृश्चिक	अहोरात्र	६:१३:४१	६:३१:२३	मानस	२७	१३	**भद्रा १६:५५–२७:४२घं·;**
३०:४०:१६	८ मं	२०:३८	दि १४:२९:१२	**ज्ये·**	०८:०५	दि ०९:२७:५५	प्रीति	०७:३६	दि ०९:१६:३०	बव २०:३८	बाल ४७:४२	वृ·०८:०५	दि ०९:२७:५५	६:१४:०७	६:३०:१३	मुद्गर	२८	१४	उत्तरफल्गुन्यांरविः००:३६,घं·०६:५५;
३०:३६:१६	९ बु	१४:४९	दि १२:१०:२०	**मूल**	०४:०६	दि ०७:५३:०८	आयु· सौभा	**००:०२ ५२:४८**	**दि ०६:१५:२४ रा २७:२२:३६**	कौल १४:४९	तैति ४२:०६	धनु	अहोरात्र	६:१४:३३	६:२९:०४	ध्वज	२९	१५	द·ति·१०; रवियोगःपूषा;
३०:३२:१५	१० गु	०९:२८	दि १०:०२:२०	**पू·षा· उ·षा·**	**००:३३ ५७:०६**	**दि ०६:२८:१३ रा २९:१८:३७**	शोभ·	४६:०४	रा २४:४०:४१	गर ०९:२८	वणि ३७:०३	ध·१४:४६	दि १२:०९:१२	६:१४:६०	६:२७:५४	धाता	३०	१६	**भद्रारंभः२१:०४घं·; मासान्तः;**
३०:२८:१४	११ शु	०४:४६	दि ०८:०९:५४	**श्रवण**	५५:२९	रा २८:२७:०७	अतिग·	३९:५६	रा २२:१३:४५	विष ०४:४६	बव ३२:४४	मकर	अहोरात्र	६:१५:२६	६:२६:४४	कालदंड	३१	१७	**भद्रांतः८:१०घं·; पञ्चकारंभः२८:२७;**
३०:२४:१३	१२ श	**००:५३ ५७:०७**	**दि ०६:३७:०८ रा २९:२७:५६**	**धनि·**	५४:१७	रा २७:५८:४१	सुकर्मा	३४:३१	रा २०:०४:१२	बाल ००:५३	कौल २९:१९	म·२४:४४	दि १६:०९:३७	६:१५:५२	६:२५:३४	प्रवर्द्ध	१	१८	**मासादिः;** द्विपुष्करः१२+ध;
३०:२०:११	१४ र	५६:१३	रा २८:४५:३७	**शत·**	५४:१०	रा २७:५६:२४	धृति	२९:५७	दि १८:१५:११	गर २६:५७	वणि ५६:१३	कुंभ	अहोरात्र	६:१६:१९	६:२४:२४	राक्षस	२	१९	**भद्रारंभः२८:४६घं·;** रवियोगःश;
३०:१६:१०	१५ चं	५५:३९	रा २८:३२:३१	**पू·भा·**	५५:१५	रा २८:२२:४६	शूल	२६:२०	दि १६:४८:३९	विष २५:४६	बव ५५:३९	कु·३९:५१	रा २२:१३:१८	६:१६:४६	६:२३:१३	मुसल	३	२०	**भद्रांतः१६:३५घं·;** अमृत·१५;

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर
	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि				मि:से
१	०४:१९:५१:०४	०४:१९:५२:२६	०५:००:५०:५१	०५:१७:११:३९	१०:०२:४४:४१	०६:०२:०८:४३	०९:०९:४७:०९	०७:१३:५५:४८	४५:३४:००	०७:१०:०४	उ·०६:५९:४६	+ २:१०
२	०४:२०:४९:१८	०५:०३:२१:५०	०५:०१:२९:३९	०५:१८:१६:०१	१०:०२:३७:०८	०६:०३:१७:३६	०९:०९:४४:०५	०७:१३:५२:३७	४५:३२:०२	०७:१०:३२	उ·०६:३६:५७	+ २:३०
३	०४:२१:४७:३३	०५:१७:०५:४२	०५:०२:०८:२८	०५:१९:१६:४१	१०:०२:२९:४२	०६:०४:२६:२३	०९:०९:४१:०६	०७:१३:४९:२६	४५:३०:०४	०८:११:०७	उ·०६:१४:०१	+ २:५१
४	०४:२२:४५:५१	०६:०१:०२:२५	०५:०२:४७:१९	०५:२०:१३:२५	१०:०२:२२:२१	०६:०५:३५:०३	०९:०९:३८:१३	०७:१३:४६:१६	४५:२८:०५	०९:१२:४७	उ·०५:५०:५९	+ ३:१२
५	०४:२३:४४:११	०६:१५:०९:४१	०५:०३:२६:११	०५:२१:०५:५७	१०:०२:१५:०७	०६:०६:४३:३७	०९:०९:३५:२४	०७:१३:४३:०५	४५:२६:०६	१०:१६:४८	उ·०५:२७:५१	+ ३:३४
६	०४:२४:४२:३४	०६:२९:२४:४१	०५:०४:०५:०३	०५:२१:५४:०२	१०:०२:०७:५९	०६:०७:५२:०५	०९:०९:३२:४१	०७:१३:३९:५४	४५:२४:०७	११:२२:०६	उ·०५:०४:३७	+ ३:५५
७	०४:२५:४०:५८	०७:१३:४४:०९	०५:०४:४३:५७	०५:२२:३७:२३	१०:०२:००:५९	०६:०९:००:२६	०९:०९:३०:०४	०७:१३:३६:४३	४५:२२:०८	१२:२६:४४	उ·०४:४१:१८	+ ४:१६
८	०४:२६:३९:२५	०७:२८:०४:२५	०५:०५:२२:५२	०५:२३:१५:४५	१०:०१:५४:०५	०६:१०:०८:४०	०९:०९:२७:३२	०७:१३:३३:३२	४५:२०:०८	१३:३०:५४	उ·०४:१७:५४	+ ४:३८
९	०४:२७:३७:५४	०८:१२:२१:३२	०५:०६:०१:४९	०५:२३:४८:५१	१०:०१:४७:१९	०६:११:१६:४७	०९:०९:२५:०६	०७:१३:३०:२१	४५:१८:०८	१४:२८:५८	उ·०३:५४:२५	+ ४:००
१०	०४:२८:३६:२५	०८:२६:३२:०९	०५:०६:४०:४६	०५:२४:१६:२५	१०:०१:४०:४१	०६:१२:२४:४७	०९:०९:२२:४५	०७:१३:२७:१०	४५:१६:०८	१५:२३:४५	उ·०३:३०:५२	+ ५:२१
११	०४:२९:३४:५८	०९:१०:३३:१५	०५:०७:१९:४५	०५:२४:३८:१३	१०:०१:३४:१२	०६:१३:३२:३९	०९:०९:२०:३०	०७:१३:२३:६०	४५:१४:०७	१६:११:१५	उ·०३:०७:१५	+ ५:४३
१२	०५:००:३३:३३	०९:२४:२२:१९	०५:०७:५८:४४	०५:२४:५४:०१	१०:०१:२७:५०	०६:१४:४०:२४	०९:०९:१८:२१	०७:१३:२०:४९	४५:१२:०७	१६:५४:१५	उ·०२:४३:३५	+ ६:०५
१४	०५:०१:३२:११	१०:०७:५७:२८	०५:०८:३७:४५	०५:२५:०३:३७	१०:०१:२१:३७	०६:१५:४८:००	०९:०९:१६:१८	०७:१३:१७:३८	४५:१०:०६	१७:३३:१४	उ·०२:१९:५१	+ ६:२७
१५	०५:०२:३०:५१	१०:२१:१७:२९	०५:०९:१६:४७	०५:२५:०६:५२	१०:०१:१५:३३	०६:१६:५५:२९	०९:०९:१४:२१	०७:१३:१४:२७	४५:०८:०५	१८:०८:२७	उ·०१:५६:०४	+ ६:४९

भाद्रपद शुक्लचतुर्थी को श्रीगणेशजी प्रकटे,

नभस्ये मासि शुक्लायां चतुर्थ्यां मम जन्मनि।
दूर्वाभिः नामभिः पूजां तर्पणं विधिवत् चरेत्।।

श्रीगणेशजी को दूर्वा व शमी और मंदार के पुष्प बहुत प्रिय है। २१ नरकों से बचाव के लिए २१ दूर्वा उनको चढ़ाकर व्यक्ति अपने को कष्ट से बचा लेता है। दूर्वा नरक नाशक, वंशवर्धक, आयुवर्धक, तेजवर्धक होती है–

हरिता श्वेतवर्णा वा पंचत्रिपत्र संयुताः।
दूर्वांकुरा मया दत्ता एकविंशतिः सम्मिताः।

श्रीगणेशचतुर्थी पर चन्द्रमा दर्शन निषिद्ध है। दूसरों से कड़वे और अपशब्दवचन सुनकर व्यक्ति कलंक से मुक्त हो पाता है। गणेशजी का मन्त्र– “**ॐ गं गणपतये नमः**” है। श्रीगणेशजीकी आराधना निम्नलिखित क्रम में करे १· षोडशोपचार पूजन, २· श्रीगणेश स्तवराज पाठ, ३· श्रीगणेशकवच का पाठ, ४· श्रीगणपतिअथर्वशीर्ष पाठ, ५·श्रीगणेशशतनामपाठ और ६·श्रीगणेश सहस्रनाम का पाठ करें।

भाद्रपद शुक्लपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; ७ से २० सितम्बर,२०२१ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःउत्तर । ऋतुःवर्षा, कन्यार्कतः ऋतुःशरत, सौम्यगोलः, याम्यायनं । ति·१५ अयनांशाः२२:५०:११

तिथि दिन	दिनाङ्क अंग्रेजी	卐 व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि 卐
१मं	७	मृत्युबाण घं·२:३४:२९या·;
२बु	८	सर्वार्थ·ह;
३गु	९	**हरितालिका तीज; रोट तीज; श्री वाराह जयन्ती; सामवेदीय उपाकर्म;**
४शु	१०	**श्री महागणपति चतुर्थी; मोतीडूंगरी गणेशजी मेला जयपुर; चन्द्रदर्शन निषेध;** ①
५श	११	**श्रीऋषि पञ्चमी;** रवियोगःवि; अमृत·६; ① स्वात्यांशुक्रः५६:५२,घं·५:२३; रवियोगःचि;
६र	१२	**श्री बलराम जयन्ती; श्री लोलार्क सूर्यषष्ठी (पञ्चगव्य प्राशन) ; चन्दन षष्ठी;**
७चं	१३	**गण्डान्तारम्भः२७:५३; श्रीमहालक्ष्मी व्रतारम्भ;** सर्वार्थ·अनु;
८मं	१४	**श्रीराधाष्टमी; श्रीदूर्वाष्टमी; श्रीमद्भागवत सप्ताहारम्भः;** स्वामी श्रीहरिदास जयन्ती ②
९बु	१५	मृत्युबाण घं·२१:२०:३८उ·; ② **गण्डान्तः१५:०४;** चित्रायांबुधः०७:१०,घं·०९:३२:४४; सिद्ध·८;
१०गु	१६	**बाबा रामदेव जयन्ती; श्री तेजा दशमी; सुगंध दशमी; अभिजितारम्भः४३:१८;** ③
११शु	१७	**श्री पद्मा/जलझूलनी एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त) ; संक्रान्ति पुण्यकालं,१६:०४–१७:५९घं·;** ④
१२श	१८	**श्री वामन द्वादशी; श्री शनि प्रदोष व्रतम्; हरिवासराभावः;** रवियोगःश; सिद्ध·१४; मृत्युबाण घं·१९:३८:३५उ·;
१४र	१९	**श्री अनन्त चतुर्दशी;** अमृत·१५; मृत्युबाण घं·१९:६:२९या·; ③ द·ति·१०; सिद्ध·१०; रवियोगःपूषा; रवियोगःउषा; मृत्युबाण घं·२०:४५:३९या·;
१५चं	२०	**भाद्री पूर्णिमा (स्नान–दान–व्रत) ; पितृपक्ष आरम्भ–पूर्णिमा श्राद्ध; कुमारीणां साँझी–सन्ध्या पूजनारम्भः;** सिद्ध·१; ④ **अभिजितान्तः१:२७;** कन्यायांरविः२५:४०,घं·१६:५८; सर्वार्थ·श्र; सिद्ध·११;

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	११:५९:४४–१३:३९:२१
१५	११:५५:४७–१३:३२:३८

भाद्रपद मास कृत्य

हरितालिका तीज व्रत- भाद्रपद शुक्ल तृतीया यदि उदयकाल में मुहूर्त्तमात्र हो, तो भी परा ग्राह्य है। यदि क्षय के कारण द्वितीया में हो तो द्वितीयायुता ग्राह्य होती है। दो दिन होने पर परातिथि ग्राह्य है। *तत्र मुहूर्त्तमात्रा ततो न्यूनापि परा ग्राह्या। यदा क्षयवशात्परदिने नास्ति तदा द्वितीयायुतापि ग्राह्या॥*

श्री अनन्त चतुर्दशी व्रत – भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी तिथि के दिन अनन्तव्रत होता है। आज के दिन मध्याह्नकाल में भगवान् अनन्त की पूजा करे। इस व्रत में चौदह गाँठ की डोर में अनन्त भगवान् की स्थापना करके भुजा में धारण किया जाता है।

श्री वामन द्वादशी - भाद्रपद में शुक्ल द्वादशी के दिन अभिजित् मुहूर्त में अर्थात् श्रवण नक्षत्र के प्रथम पाद में ग्रह नक्षत्र तारा आदि अनुकूल होने पर द्वादशी को मध्याह्न में वामन भगवान् के आविर्भाव का उत्सव मनावें। श्रीसनकादिकों की आज्ञा है कि - भाद्रपद शुक्ला द्वादशी श्रवण युक्त हो तो उसे महाद्वादशी समझें, एकादशी तथा द्वादशी दोनों दिन उपवास करें। यहाँ विधि का लोप नहीं समझना चाहिये, क्योंकि दोनों के देवता एक ही हैं। अतः एकादशी व्रत की समाप्ति का पारणा किये बिना द्वादशी का व्रत कर सकते हैं। श्री वामन भगवान् को पञ्चामृत से महास्नान करवाकर महाभोग समर्पण करें। गायन-वादन आदि द्वारा श्रीवामन जयन्ती उत्सव मनावें प्रसाद वितरण करें।

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि ल·अं·	१ मं घं·मि·से	२ बु घं·मि·से	३ गु घं·मि·से	४ शु घं·मि·से	५ श घं·मि·से	६ र घं·मि·से	७ चं घं·मि·से	८ मं घं·मि·से	९ बु घं·मि·से	१० गु घं·मि·से	११ शु घं·मि·से	लग्न अन्त	१२ श घं·मि·से	१४ र घं·मि·से	१५ चं घं·मि·से
सिंहः	०६:५६:४३	०६:५२:४६	०६:४८:४९	०६:४४:५३	०६:४०:५७	०६:३७:००	०६:३३:०४	०६:२९:०७	०६:२५:११	०६:२१:१४	०६:१७:१८	कन्या	०८:२८:१७	०८:२४:२१	०८:२०:२४
कन्या	०९:११:३८	०९:०७:४२	०९:०३:४५	०८:५९:४८	०८:५५:५२	०८:५१:५६	०८:४७:५९	०८:४४:०३	०८:४०:०६	०८:३६:१०	०८:३२:१३	तुला	१०:४७:०५	१०:४३:०९	१०:३९:१२
तुला	११:३०:२६	११:२६:३०	११:२२:३३	११:१८:३७	११:१४:४०	११:१०:४४	११:०६:४७	११:०२:५१	१०:५८:५४	१०:५४:५८	१०:५१:०२	वृश्चिकः	१३:०५:५७	१३:०२:००	१२:५८:०४
वृश्चिकः	१३:४९:१८	१३:४५:२१	१३:४१:२५	१३:३७:२८	१३:३३:३२	१३:२९:३५	१३:२५:३९	१३:२१:४२	१३:१७:४६	१३:१३:४९	१३:०९:५३	धनुः	१५:११:२१	१५:०७:२४	१५:०३:२८
धनुः	१५:५४:४२	१५:५०:४६	१५:४६:४९	१५:४२:५२	१५:३८:५६	१५:३४:५९	१५:३१:०३	१५:२७:०६	१५:२३:१०	१५:१९:१४	१५:१५:१७	मकरः	१६:५५:५३	१६:५१:५६	१६:४८:००
मकरः	१७:३९:१४	१७:३५:१८	१७:३१:२१	१७:२७:२४	१७:२३:२८	१७:१९:३१	१७:१५:३५	१७:११:३८	१७:०७:४२	१७:०३:४५	१६:५९:४९	कुम्भः	१८:२५:००	१८:२१:०३	१८:१७:०७
कुम्भः	१९:०८:२१	१९:०४:२५	१९:००:२८	१८:५६:३१	१८:५२:३५	१८:४८:३८	१८:४४:४२	१८:४०:४५	१८:३६:४९	१८:३२:५२	१८:२८:५६	मीनः	१९:५०:५२	१९:४६:५६	१९:४२:५९
मीनः	२०:३४:१४	२०:३०:१७	२०:२६:२१	२०:२२:२४	२०:१८:२७	२०:१४:३१	२०:१०:३४	२०:०६:३८	२०:०२:४१	१९:५८:४५	१९:५४:४९	मेषः	२१:२६:४७	२१:२२:५१	२१:१८:५४
मेषः	२२:१०:०९	२२:०६:१२	२२:०२:१५	२१:५८:१९	२१:५४:२२	२१:५०:२६	२१:४६:२९	२१:४२:३३	२१:३८:३६	२१:३४:४०	२१:३०:४३	वृष्	२३:२२:१६	२३:१८:२०	२३:१४:२३
वृष्	००:०५:३८	००:०१:४१	२३:५७:४४	२३:५३:४८	२३:४९:५१	२३:४५:५५	२३:४१:५८	२३:३८:०२	२३:३४:०५	२३:३०:०९	२३:२६:१२	मिथुनः	०१:३६:२५	०१:३२:२९	०१:२८:३२
मिथुनः	०२:१९:४७	०२:१५:५०	०२:११:५४	०२:०७:५७	०२:०४:०१	०२:००:०४	०१:५६:०७	०१:५२:११	०१:४८:१४	०१:४४:१८	०१:४०:२२	कर्कः	०३:५६:३४	०३:५२:३७	०३:४८:४१
कर्कः	०४:३९:५६	०४:३५:५९	०४:३२:०२	०४:२८:०६	०४:२४:०९	०४:२०:१२	०४:१६:१६	०४:१२:१९	०४:०८:२३	०४:०४:२६	०४:००:३०	सिंहः	०६:१३:२२	०६:०९:२५	०६:०५:२९

सूर्योदयकालीन तिथिः४

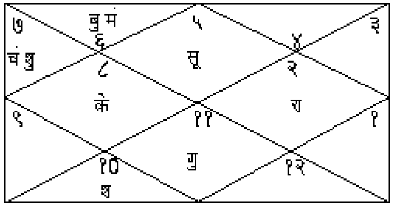

सूर्योदयकालीन तिथिः११

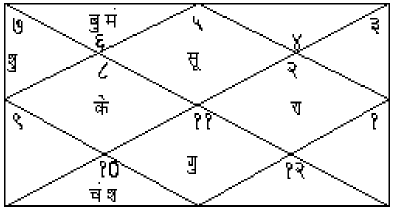

आश्विन कृष्णपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; वक्री शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपश्चिमास्तः; वक्री बुधःपश्चिमोदितः, २१:९:२०२१;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
३०:१२:०७	१ मं	५६:२३	रा २८:५०:२०	उ·भा·	५७:३५	रा ०५:१९:१३	गण्ड	२३:४२	दि १५:४५:५१	बाल २५:५०	कौल ५६:२३	मीन	अहोरात्र	६:१७:१२	६:२२:०३	सिद्धि	४	२१	सवोथे·उभा; अमृत·२;
३०:०८:०५	२ बु	५८:२२	रा २९:३८:३१	**रेवती**	६०:००	अहोरात्र	वृद्धि	२२:०४	दि १५:०७:०५	तैति २७:१३	गर ५८:२२	मीन	अहोरात्र	६:१७:३९	६:२०:५३	उत्पात	५	२२	**पञ्चकान्तः३०:४५;** सिद्ध·२;
३०:०४:०२	३ गु	६०:००	अहोरात्र	**रेवती**	०१:०६	दि ०६:४४:४१	ध्रुव	२१:२३	दि १४:५१:११	वणि २९:४८	विष ६०:००	मी·०१:०६	दि ०६:४४:४१	६:१८:०६	६:१९:४३	मित्र	६	२३	**भद्रा १८:१३–३०:५५घं·; पञ्चकान्तः६:४५;**
२९:५९:५९	३ शु	०१:३०	दि ०६:५४:३६	**अश्वि·**	०५:४८	दि ०८:३७:३४	व्याघ·	२१:३३	दि १४:५५:५४	विष ०१:३०	बव ३३:२९	मेष	अहोरात्र	६:१८:३३	६:१८:३२	वज्र	७	२४	**भद्रांतः६:५५घं·;** सर्वार्थ·अ;
२९:५५:५६	४ श	०५:४०	दि ०८:३४:५५	**भरणी**	११:२५	दि १०:५२:५४	हर्षण	२२:२५	दि १५:१७:०५	बाल ०५:४०	कौल ३८:०२	मे·२७:५६	दि १७:२९:३०	६:१८:६०	६:१७:२२	ध्वांक्ष	८	२५	सिद्ध·४;
२९:५१:५३	५ र	१०:३१	दि १०:३१:५०	**कृत्ति·**	१७:४०	दि १३:२३:२६	वज्र	२३:४४	दि १५:४९:१३	तैति १०:३१	गर ४३:०७	वृष	अहोरात्र	६:१९:२७	६:१६:१२	धूम्र	९	२६	अमृत·५; रवियोगःरो;
२९:४७:५०	६ चं	१५:४२	दि १२:३६:४३	**रोहि·**	२४:११	दि १६:००:२३	सिद्धि	२५:१४	दि १६:२५:३८	वणि १५:४२	विष ४८:१७	वृ·५७:२५	रा २९:१८:०४	६:१९:५५	६:१५:०३	प्रवर्द्ध	१०	२७	**भद्रा १२:३७–२५:३९घं·;** सर्वार्थ·रो;
२९:४३:४६	७ मं	२०:४६	दि १४:३८:३८	**मृग·**	३०:३२	रा १८:३३:०२	व्यति·	२६:३५	दि १६:५८:२७	बव २०:४६	बाल ५३:०८	मिथुन	अहोरात्र	६:२०:२२	६:१३:५३	राक्षस	११	२८	अमृत·७; रवियोगःमृ; द्विपुष्करः७+मृ;
२९:३९:४३	८ बु	२५:१७	दि १६:२७:४४	**आर्द्रा**	३६:१८	रा २०:५२:०७	वरी·	२७:३०	दि १७:२०:५१	कौल २५:१७	तैति ५७:१६	मिथुन	अहोरात्र	६:२०:५०	६:१२:४३	मुसल	१२	२९	द·ति·८;
२९:३५:४०	९ गु	२८:५७	दि १७:५६:०७	**पुन·**	४१:१२	रा २२:५०:०७	परिघ	२७:४४	दि १७:२७:०६	गर २८:५७	वणि ६०:००	मि·२५:०४	दि १६:२२:५१	६:२१:१८	६:११:३४	सिद्धि	१३	३०	**भद्रारंभः३०:३१घं·;** सर्वार्थ·पुन;
२९:३१:३६	१० शु	३१:३१	रा १८:५८:००	**पुष्य**	४५:००	रा २४:२१:४९	शिव	२७:०८	दि १७:१२:५६	वणि ००:२२	विष ३१:३१	कर्क	अहोरात्र	६:२१:४७	६:१०:२५	उत्पात	१४	१	**भद्रा ६:३०–१८:५८घं·;** सिद्ध·११;
२९:२७:३३	११ श	३२:५१	रा १९:३०:३०	**आश्ले·**	४७:३६	रा २५:२४:२८	सिद्ध	२५:३५	दि १६:३६:१४	बव ०२:१९	बाल ३२:५१	क·४७:३६	रा २५:२४:२८	६:२२:१५	६:०९:१६	मानस	१५	२	**गण्डान्तारम्भः१९:१२;** अमृत·११;
२९:२३:३०	१२ र	३२:५३	रा १९:३२:०६	**मघा**	४८:५६	रा २५:५७:०१	साध्य	२३:०१	दि १५:३५:१९	कौल ०३:०१	तैति ३२:५३	सिंह	अहोरात्र	६:२२:४४	६:०८:०८	मुद्गर	१६	३	**गण्डान्तः७:३५;** सिद्ध·१३;
२९:१९:२७	१३ चं	३१:४१	रा १९:०३:३८	**पू·फा·**	४९:०३	रा २६:००:३३	शुभ	१९:२८	दि १४:१०:३०	गर ०२:२५	वणि ३१:४१	सिंह	अहोरात्र	६:२३:१३	६:०६:६०	ध्वज	१७	४	**भद्रारंभः१९:०४घं·;**
२९:१५:२४	१४ मं	२९:१८	रा १८:०७:०२	**उ·फा·**	४८:०४	रा २५:३७:१०	शुक्ल	१४:५८	दि १२:२३:०२	विष ००:३७	बव २९:१८	सिं·०३:५३	दि ०७:५६:४९	६:२३:४२	६:०५:५२	धाता	१८	५	**भद्रांतः६:३८घं·;**
२९:११:२२	३० बु	२५:५३	दि १६:४५:१७	**हस्त**	४६:०५	रा २४:५०:२३	ब्रह्म	०९:३६	दि १०:१४:४५	नाग २५:५३	किं ५३:५१	कन्या	अहोरात्र	६:२४:१२	६:०४:४५	आनन्द	१९	६	मकरेगुरुः३३:५९, घं·२०:२६:४४;

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर
	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि				मि:से
१	०५:०३:२९:३३	११:०४:२१:५५	०५:०९:५५:५१	०५:२५:०३:४२	१०:०१:०९:३९	०६:१८:०२:४९	०९:०९:१२:३०	०७:१३:११:१६	४५:०६:०४	१८:४२:५१	उ·०१:३२:१५	+ ७:१०
२	०५:०४:२८:१७	११:१७:११:०७	०५:१०:३४:५५	०५:२४:५४:०६	१०:०१:०३:५३	०६:१९:१०:००	०९:०९:१०:४५	०७:१३:०८:०५	४५:०४:०२	१९:१६:२९	उ·०१:०८:२३	+ ७:३२
३	०५:०५:२७:०४	११:२९:४६:०९	०५:११:१४:०१	०५:२४:३८:०७	१०:००:५८:१८	०६:२०:१७:०३	०९:०९:०९:०६	०७:१३:०४:५४	४५:०२:०१	१९:४९:२६	उ·००:४४:२९	+ ७:५४
३	०५:०६:२५:५३	००:१२:०८:५०	०५:११:५३:०८	०५:२४:१५:५७	१०:००:५२:५२	०६:२१:२३:५६	०९:०९:०७:३३	०७:१३:०१:४४	४५:००:००	२०:२७:०९	उ·००:२०:३४	+ ८:१५
४	०५:०७:२४:४४	००:२४:२१:३३	०५:१२:३२:१६	०५:२३:४७:५५	१०:००:४७:३६	०६:२२:३०:४०	०९:०९:०६:०७	०७:१२:५८:३३	४४:५७:५८	२१:०४:३३	द·००:०३:२२	+ ८:३७
५	०५:०८:२३:३८	०१:०६:२७:१७	०५:१३:११:२५	०५:२३:१४:२४	१०:००:४२:३१	०६:२३:३७:१४	०९:०९:०४:४७	०७:१२:५५:२२	४४:५५:५६	२१:४६:३७	द·००:२७:२०	+ ८:५८
६	०५:०९:२२:३४	०१:१८:२९:१९	०५:१३:५०:३६	०५:२२:३५:६०	१०:००:३७:३६	०६:२४:४३:३८	०९:०९:०३:३३	०७:१२:५२:११	४४:५३:५५	२२:३२:२२	द·००:५१:१८	+ ९:१९
७	०५:१०:२१:३२	०२:००:३१:३०	०५:१४:२९:४७	०५:२१:५३:२३	१०:००:३२:५२	०६:२५:४९:५२	०९:०९:०२:२५	०७:१२:४९:००	४४:५१:५३	२३:१९:२४	द·०१:१५:१६	+ ९:४०
८	०५:११:२०:३२	०२:१२:३७:३८	०५:१५:०९:००	०५:२१:०७:२२	१०:००:२८:१९	०६:२६:५५:५५	०९:०९:०१:२४	०७:१२:४५:४९	४४:४९:५२	२४:१२:५६	द·०१:३९:१४	+१०:०१
९	०५:१२:१९:३५	०२:२४:५१:०१	०५:१५:४८:१५	०५:२०:१८:५२	१०:००:२३:५६	०६:२८:०१:४७	०९:०९:००:२९	०७:१२:४२:३९	४४:४७:५०	०१:०७:०९	द·०२:०३:११	+१०:२२
१०	०५:१३:१८:४०	०३:०७:१४:३२	०५:१६:२७:३०	०५:१९:२८:५३	१०:००:१९:४६	०६:२९:०७:२७	०९:०८:५९:४१	०७:१२:३९:२८	४४:४५:४८	०२:०३:३०	द·०२:२७:०७	+१०:४२
११	०५:१४:१७:४८	०३:१९:५०:३४	०५:१७:०६:४७	०५:१८:३८:३३	१०:००:१५:४६	०७:००:१२:५६	०९:०८:५८:५९	०७:१२:३६:१७	४४:४३:४७	०३:०१:२०	द·०२:५१:०२	+११:०२
१२	०५:१५:१६:५७	०४:०२:४०:५३	०५:१७:४६:०५	०५:१७:४९:०७	१०:००:११:५८	०७:०१:१८:१३	०९:०८:५८:२४	०७:१२:३३:०६	४४:४१:४५	०३:५९:२६	द·०३:१४:५६	+११:२२
१३	०५:१६:१६:०९	०४:१५:४६:३०	०५:१८:२५:२४	०५:१७:०१:३९	१०:००:०८:२१	०७:०२:२३:१८	०९:०८:५७:५५	०७:१२:२९:५५	४४:३९:४४	०४:५७:५७	द·०३:३८:४७	+११:४२
१४	०५:१७:१५:२२	०४:२९:०७:४०	०५:१९:०४:४४	०५:१६:१७:०५	१०:००:०४:५७	०७:०३:२८:१०	०९:०८:५७:३२	०७:१२:२६:४४	४४:३७:४२	०५:५७:४६	द·०४:०२:३६	+१२:०१
१५	०५:१८:१४:३८	०५:१२:४३:५४	०५:१९:४४:०६	०५:१५:३६:२०	१०:००:०१:४४	०७:०४:३२:४८	०९:०८:५७:१६	०७:१२:२३:३३	४४:३५:४१	०६:५८:४५	द·०४:२६:२३	+१२:२०

कन्याराशिस्थ सूर्य और आश्विन कृष्णपक्ष का जब सम्मिलन होता है तब एक त्रिकोण में सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी की स्थिति बनती है और पितृगण सीधे धरती पर उतर आते हैं। यह खगोलीय स्थिति **पितृपक्ष** के लिए अनिवार्य होती है। अदृष्ट भाग दिखने वाले से करोड़ों करोड़ गुणा महत्वपूर्ण है। अतः **वेद–शास्त्र को प्रमाण मानकर श्राद्ध करना चाहिए।** संतुष्ट पितृगण राज्य, वंश और आयु प्रदान करते हैं। जिस वंश में पितृगण मुक्त नहीं होते, उसके वंशधर मोक्ष नहीं प्राप्त कर सकते। मोक्ष तो बड़ी बात है उनका पुनर्जन्म तक नहीं होता, अंततः श्रीमद्भागवत का सप्ताहयज्ञ कराना पड़ता है। “जिनके घर श्राद्ध नहीं होता उनके कुल में वीर पुत्र उत्पन्न नहीं होते, कोई निरोग नहीं रहता, दीर्घायु नहीं होती और किसी तरह का कल्याण नहीं होता।” –मार्कण्डेयपुराण

न तत्र वीराः जायन्ते निरोगी न शतायुषः।
न तत्र श्रेयः कांक्षन्ते यत्र श्राद्धः विवर्जितः॥

आश्विन कृष्णपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; २१ सितम्बर से ६ अक्टूबर, २०२१ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःउत्तर । ऋतुःशरत, सौम्यगोलः, याम्यायनं । ति·३० अयनांशाः२२:५०:१४

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	११:५५:२८–१३:३२:०७
१५	११:५१:०७–१३:२४:३१

तिथि दिन	दिनाङ्क अंग्रेजी	व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि
१ मं	२१	**प्रतिपदा श्राद्ध; हस्ते**मङ्गलः०६:२३,घं·०९:१७:१८;
२ बु	२२	**द्वितीया श्राद्ध; अशून्य शयन व्रत; गण्डान्तारम्भः२४:२१;** ①
३ गु	२३	**तृतीया श्राद्ध; गण्डान्तः१३:११;** सर्वार्थ·रे; अमृत·३; सर्वार्थ·अ
३ शु	२४	**चतुर्थी श्राद्ध; भरणी श्राद्ध; संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी;** अमृत·४;
४ श	२५	**पञ्चमी श्राद्ध;** हस्तेबुधः५०:४२,घं·३:२:३२;
५ र	२६	**षष्ठी श्राद्ध;** ① विशाखायांशुक्रः४४:४५,घं·०:३८:३४;
६ चं	२७	**हस्ते**रविः३८:७,घं·२२:१; सिद्ध·६; रवियोगःरो; सर्वार्थ·मृ; ②
७ मं	२८	**सप्तमी श्राद्ध; व्यतिपात; श्रीमहालक्ष्मीव्रत; श्रीमहालक्ष्मी व्रतसमापन;** द·ति·८; ③
८ बु	२९	**अष्टमी श्राद्ध; जीमूतवाहन पूजा;** ② रवियोगःमृ; मृत्युबाण घं·१५:४९:४०उ·;
९ गु	३०	**नवमी श्राद्ध; मातृनवमी श्राद्ध;** सिद्ध·१०; सर्वार्थ·पु;
१० शु	१	**दशमी श्राद्ध;** वृश्चिकेशुक्रः४८:९,घं·२:४:१७; ③ सिद्ध·८; मृत्युबाण घं·१५:२५:१९या·;
११ श	२	**एकादशी श्राद्ध; श्री इन्दिरा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त);** गाँधी जयन्ती;
१२ र	३	**द्वादशी श्राद्ध; संन्यासी–यति श्राद्ध; वैष्णवानां एकादशी श्राद्ध; मघा श्राद्ध;**
१३ चं	४	**त्रयोदशी श्राद्ध; सोम प्रदोषव्रतम्; मास शिवरात्रि व्रतम्; कलियुगादि;** ④
१४ मं	५	**चतुर्दशी श्राद्ध (केवल शस्त्रहत पितरों के लिए);**
३० बु	६	**सर्वपितृ अमावस्या (स्नान, दान, श्राद्ध); महालय समाप्ति; पितृ विसर्जन;** सर्वार्थ·ह; अमृत·१; मृत्युबाण घं·१२:४४:२७उ·; ④ अनुराधायांशुक्रः५२:२८,घं·३:४९:१८;

।। सर्वश्रेष्ठ कर्म है श्राद्ध ।।

◆ **ब्रह्म पुराण**—जो अपनी संपत्ति के अनुकूल व्यय करता हुआ श्राद्ध करता है वह ब्रह्माण्ड को प्रसन्न कर लेता है। श्राद्ध का फल कभी भी व्यर्थ नहीं जाता--*न किंचिद् व्यर्थतां ब्रजेत्।।* जो लोग देवता, पितर, अग्नि और ब्राह्मण की पूजा करते हैं वे सभी प्राणियों के आत्मा विष्णु की ही आराधना करते हैं--*विष्णुमेव यजन्ति ते।*- यमस्मृति। **इच्छा शक्ति होने पर श्राद्ध कराना पहाड़ तोड़ना नहीं बल्कि फूल तोड़ने जैसा कार्य है।**

◆ **देव कार्य से भी महत्त्वपूर्ण है श्राद्ध कार्य --** देवता से पूर्व पितरों का पूजन करना चाहिए। पितृपूजा देवपूजा से अधिक महत्त्वपूर्ण है-- *देवकार्यादपि सदा पितृकार्यं विशिष्यते। देवताभ्यः पितृनां हि पूर्वमाप्यायनं शुभम्।* (ब्रह्मवैवर्त पुराण)। ब्रह्मपुराण और अधिक महत्त्व को बतलाते हुए कहता है यदि कोई "शाक" से भी श्राद्ध करता है तो उसके कुल में कोई कष्ट नहीं भोगता-- *शाकैरपि यथाविधिः।*

◆ **अशक्ति में श्राद्ध कैसे करायें** सरकारी नौकरी में या छुट्टी न मिलने की स्थिति में, कारागार में रहने पर, रोग से ग्रस्त रहने पर या अन्य किसी भी अवरोध के होने पर सुयोग्य ब्राह्मण को संकल्प पूर्वक धन दे कर श्राद्ध कराना चाहिए- *राजकार्येनियुक्तस्य बन्धनिग्रहवर्तिनः ।*
व्यसनेषु च सर्वेषु श्राद्धं विप्रेणकारयेत्।। -धर्मसिन्धु, परि. ३

◆ **श्राद्ध त्याग का दुष्परिणाम** आदित्य पुराण में लिखा है कि जो लोग मन में यह सोचते हैं कि पितर नहीं होते हैं श्राद्ध क्या करना? ऐसे लोगों का तथा उसके परिवार का रक्त पितृगण पीते हैं---

न सन्ति पितरश्चेति कृत्वा मनसि यो नरः। श्राद्धन् न कुरुते तत्र तस्य रक्तं पिबन्ति ते।।

वंश हीनता और निर्धनता से बचने के लिए श्राद्ध अवश्य करना चाहिए। सुमन्तु मुनि ने भी कहा है कि- **"श्राद्ध से पुण्यशाली अन्य कोई कर्म नहीं होता"** -- श्राद्धात्परतरं नान्यत् श्रेयस्करमुदाहृतम् ।

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि ल·अं·	१ मं घं·मि·से	२ बु घं·मि·से	३ गु घं·मि·से	३ शु घं·मि·से	४ श घं·मि·से	५ र घं·मि·से	६ चं घं·मि·से	७ मं घं·मि·से	८ बु घं·मि·से	९ गु घं·मि·से	१० शु घं·मि·से	११ श घं·मि·से	१२ र घं·मि·से	१३ चं घं·मि·से	१४ मं घं·मि·से	१५ बु घं·मि·से
कन्या	०८:१६:२८	०८:१२:३१	०८:०८:३५	०८:०४:३८	०८:००:४२	०७:५६:४५	०७:५२:४९	०७:४८:५२	०७:४४:५६	०७:४०:५९	०७:३७:०३	०७:३३:०६	०७:२९:०९	०७:२५:१३	०७:२१:१६	०७:१७:१९
तुला	१०:३५:१६	१०:३१:२०	१०:२७:२३	१०:२३:२७	१०:१९:३०	१०:१५:३४	१०:११:३७	१०:०७:४१	१०:०३:४४	०९:५९:४८	०९:५५:५१	०९:५१:५४	०९:४७:५८	०९:४४:०१	०९:४०:०४	०९:३६:०८
वृश्चिकः	१२:५४:०७	१२:५०:११	१२:४६:१४	१२:४२:१८	१२:३८:२२	१२:३४:२५	१२:३०:२९	१२:२६:३२	१२:२२:३६	१२:१८:३९	१२:१४:४३	१२:१०:४६	१२:०६:४९	१२:०२:५३	११:५८:५६	११:५४:५९
धनुः	१४:५९:३१	१४:५५:३५	१४:५१:३९	१४:४७:४२	१४:४३:४६	१४:३९:४९	१४:३५:५३	१४:३१:५६	१४:२८:००	१४:२४:०३	१४:२०:०७	१४:१६:१०	१४:१२:१४	१४:०८:१७	१४:०४:२१	१४:००:२४
मकरः	१६:४४:०३	१६:४०:०७	१६:३६:११	१६:३२:१४	१६:२८:१८	१६:२४:२१	१६:२०:२५	१६:१६:२८	१६:१२:३२	१६:०८:३५	१६:०४:३९	१६:००:४२	१५:५६:४६	१५:५२:४९	१५:४८:५३	१५:४४:५६
कुम्भः	१८:१३:१०	१८:०९:१४	१८:०५:१८	१८:०१:२१	१७:५७:२५	१७:५३:२८	१७:४९:३२	१७:४५:३५	१७:४१:३९	१७:३७:४३	१७:३३:४६	१७:२९:४९	१७:२५:५३	१७:२१:५६	१७:१८:००	१७:१४:०३
मीनः	१९:३९:०३	१९:३५:०६	१९:३१:१०	१९:२७:१४	१९:२३:१७	१९:१९:२१	१९:१५:२४	१९:११:२८	१९:०७:३२	१९:०३:३५	१८:५९:३९	१८:५५:४२	१८:५१:४६	१८:४७:४९	१८:४३:५२	१८:३९:५६
मेषः	२१:१४:५८	२१:११:०१	२१:०७:०५	२१:०३:०९	२०:५९:१२	२०:५५:१६	२०:५१:१९	२०:४७:२३	२०:४३:२६	२०:३९:३०	२०:३५:३४	२०:३१:३७	२०:२७:४१	२०:२३:४४	२०:१९:४८	२०:१५:५१
वृष्	२३:१०:२७	२३:०६:३०	२३:०२:३४	२२:५८:३८	२२:५४:४१	२२:५०:४५	२२:४६:४८	२२:४२:५२	२२:३८:५६	२२:३४:५९	२२:३१:०३	२२:२७:०६	२२:२३:१०	२२:१९:१३	२२:१५:१७	२२:११:२०
मिथुनः	०१:२४:३६	०१:२०:४०	०१:१६:४३	०१:१२:४७	०१:०८:५१	०१:०४:५४	०१:००:५८	००:५७:०१	००:५३:०५	००:४९:०९	००:४५:१२	००:४१:१६	००:३७:१९	००:३३:२३	००:२९:२६	००:२५:३०
कर्कः	०३:४४:४४	०३:४०:४८	०३:३६:५२	०३:३२:५५	०३:२८:५९	०३:२५:०३	०३:२१:०६	०३:१७:१०	०३:१३:१३	०३:०९:१७	०३:०५:२१	०३:०१:२४	०२:५७:२८	०२:५३:३१	०२:४९:३५	०२:४५:३९
सिंहः	०६:०१:३२	०५:५७:३६	०५:५३:३९	०५:४९:२१	०५:४५:२५	०५:४१:२९	०५:३७:३२	०५:३३:३६	०५:२९:४०	०५:२५:४३	०५:२१:४७	०५:१७:५१	०५:१३:५४	०५:०९:५८	०५:०६:०१	०५:०२:०५

सूर्योदयकालीन तिथिः४

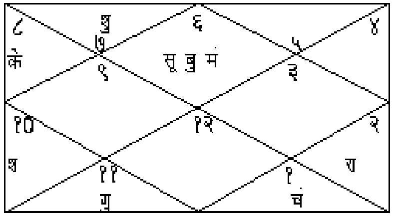

सूर्योदयकालीन तिथिः११

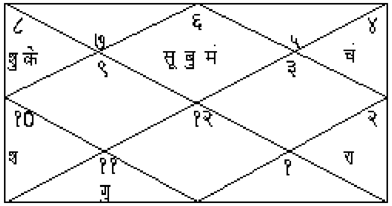

आश्विन शुक्लपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–वक्री गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपश्चिमास्त; वक्री बुधःपश्चिमास्तः, ७:१०:२०२१;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
२९:०७:२०	१ गु	२१:३५	दि १५:०२:३६	**चित्रा**	४३:१८	रा २३:४३:४९	ऐन्द्र वैधृति	०३:३० ५३:१७	दि ०७:४८:३५ रा २८:०९:०१	बव २१:३५	बाल ४९:१०	कं·१४:४६	दि १२:१९:०८	६:२४:४२	६:०३:३८	सुस्थिर	२०	७	मृत्युबाण घं·१२:२८:२९या·;
२९:०३:१८	२ शु	१६:३३	दि १३:०२:२७	**स्वाती**	३९:५१	रा २२:२१:३७	विष्कु·	४९:३२	रा २६:१४:०९	कौल १६:३३	तैति ४३:५०	तुला	अहोरात्र	६:२५:१२	६:०२:३१	गद	२१	८	रवियोगःवि;
२८:५९:१६	३ श	१०:५९	दि १०:४९:१८	**विशा·**	३५:५७	रा २०:४८:३३	प्रीति	४१:५७	रा २३:१२:३६	गर १०:५९	वणि ३८:०५	तु·२१:५७	दि १५:१२:३३	६:२५:४३	६:०१:२५	शुभ	२२	९	**भद्रारंभः२१:४०घं·;** रवियोगःवि;
२८:५५:१५	४ र	०५:०४ ५३:५८	दि ०८:२७:५३ रा ३०:०३:०५	**अनु·**	३१:४७	रा १९:०९:११	आयु·	३४:१०	रा २०:०६:१४	विष ०५:०४	बव ३२:०३	वृश्चिक	अहोरात्र	६:२६:१४	६:००:२०	मृत्यु	२३	१०	**भद्रांतः८:२८घं·;** अमृत·५;
२८:५१:१४	६ चं	५३:०२	रा २७:३९:२४	**ज्ये·**	२७:३५	दि १७:२८:३५	सौभा·	२६:२१	दि १६:५८:६०	कौल २५:५९	तैति ५३:०२	वृ·२७:३५	दि १७:२८:३५	६:२६:४५	५:५९:१४	पद्म	२४	११	**गण्डान्तः११:५३–२३:०४;** सिद्ध·६;
२८:४७:१४	७ मं	४७:१८	रा २५:२२:२०	**मूल**	२३:३२	दि १५:५२:१२	शोभ·	१८:४०	दि १३:५५:०६	गर २०:०६	वणि ४७:१८	धनु	अहोरात्र	६:२७:१७	५:५८:१०	छत्र	२५	१२	**भद्रारंभः२५:२२घं·;** अमृत·७;
२८:४३:१४	८ बु	४२:०१	रा २३:१६:११	**पू·षा·**	१९:५२	दि १४:२४:४५	अतिग·	११:१६	दि १०:५८:०४	विष १४:३४	बव ४२:०१	ध·३४:०३	रा २०:०४:५१	६:२७:४९	५:५७:०६	श्रीवत्स	२६	१३	**भद्रांतः१२:१७घं·;** द·ति·८;
२८:३९:१५	९ गु	३७:२३	रा २१:२५:४२	**उ·षा·**	१६:४६	दि १३:१०:५२	सुकर्मा धृति	०४:१८ ५३:३९	दि ०८:११:३४ रा २९:३९:१०	बाल ०९:३६	कौल ३७:२३	मकर	अहोरात्र	६:२८:२१	५:५६:०३	सौम्य	२७	१४	**अभिजितः२:२९–२०:३६;** द·ति·८;
२८:३५:१६	१० शु	३३:३५	रा १९:५४:६०	**श्रवण**	१४:२६	दि १२:१५:०७	शूल	५२:१६	रा २७:२३:२२	तैति ०५:२२	गर ३३:३५	म·४३:३६	रा २३:५५:११	६:२८:५४	५:५५:००	धूम्र	२८	१५	**पञ्चकारंभः१२:१५;** सर्वार्थ·श्र;
२८:३१:१८	११ श	३०:४६	दि १८:४७:४५	**धनि·**	१२:५९	दि ११:४१:०२	गण्ड	४७:२४	रा २५:२७:१२	वणि ०२:०१	विष ३०:४६	कुंभ	अहोरात्र	६:२९:२७	५:५३:५८	प्रवर्द्ध	२९	१६	**भद्रा ७:१८–१८:४८घं·;** अमृत·११;
२८:२७:२१	१२ र	२९:०४	दि १८:०७:३७	**शत·**	१२:३७	दि ११:३२:३८	वृद्धि	४३:२७	रा २३:५३:०१	बाल २९:०४	कौल ५८:४१	कु·५८:०७	रा २९:४४:५४	६:३०:०१	५:५२:५७	राक्षस	३०	१७	**तुला संक्रान्ति, मासान्तः;**
२८:२३:२४	१३ चं	२८:३६	दि १७:५६:५९	**पू·भा·**	१३:२५	दि ११:५२:२४	ध्रुव	४०:२९	रा २२:४२:०९	तैति २८:३६	गर ५८:५२	मीन	अहोरात्र	६:३०:३५	५:५१:५७	मुसल	१	१८	**संक्रान्ति पुण्यकालं,०६:०३–११:४४घं·;**
२८:१९:२९	१४ मं	२९:२६	दि १८:१७:२६	**उ·भा·**	१५:२७	दि १२:४२:०३	व्याघ·	३८:३१	रा २१:५५:२५	वणि २९:२६	विष ६०:००	मीन	अहोरात्र	६:३१:१०	५:५०:५७	सिद्धि	२	१९	**भद्रा १८:१७–३०:३९घं·; मासादिः;**
२८:१५:३४	१५ बु	३१:३२	रा १९:०८:२१	**रेवती**	१८:४५	दि १४:०१:३५	हर्षण	३७:३०	रा २१:३१:४८	विष ००:१९	बव ३१:३२	मी·१८:४५	दि १४:०१:३५	६:३१:४५	५:४९:५८	उत्पात	३	२०	**भद्रांतः६:३९घं·; पञ्चकान्तः१४:०२;**

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर
	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि				मि:से
१	०५:१९:१३:५७	०५:२६:३३:५७	०५:२०:२३:२८	०५:१५:००:०७	०९:२९:५८:४३	०७:०५:३७:१३	०९:०८:५७:०७	०७:१२:२०:२३	४४:३३:४०	०६:५९:१७	द·०४:५०:०६	+१२:३८
२	०५:२०:१३:१७	०६:१०:३५:५२	०५:२१:०२:५२	०५:१४:२९:०६	०९:२९:५५:५४	०७:०६:४१:२३	०९:०८:५७:०४	०७:१२:१७:१२	४४:३१:३९	०८:०१:५५	द·०५:१३:४६	+१२:५६
३	०५:२१:१२:४०	०६:२४:४७:०४	०५:२१:४२:१६	०५:१४:०३:४५	०९:२९:५३:१८	०७:०७:४५:१९	०९:०८:५७:०८	०७:१२:१४:०१	४४:२९:३८	०९:०६:५०	द·०५:३७:२२	+१३:१४
४	०५:२२:१२:०५	०७:०९:०४:३३	०५:२२:२१:४२	०५:१३:४४:२७	०९:२९:५०:५४	०७:०८:४९:००	०९:०८:५७:१८	०७:१२:१०:५०	४४:२७:३७	१०:११:५३	द·०६:००:५४	+१३:३१
६	०५:२३:११:३३	०७:२३:२४:५४	०५:२३:०१:०९	०५:१३:३१:२५	०९:२९:४८:४२	०७:०९:५२:२६	०९:०८:५७:३५	०७:१२:०७:३९	४४:२५:३७	११:१६:०६	द·०६:२४:२१	+१३:४८
७	०५:२४:११:०३	०८:०७:४४:०९	०५:२३:४०:३७	०५:१३:२४:४७	०९:२९:४६:४२	०७:१०:५५:३५	०९:०८:५७:५८	०७:१२:०४:२८	४४:२३:३७	१२:१७:५१	द·०६:४७:४३	+१४:०५
८	०५:२५:१०:३५	०८:२१:५८:४१	०५:२४:२०:०६	०५:१३:२४:३५	०९:२९:४४:५५	०७:११:५८:२८	०९:०८:५८:२८	०७:१२:०१:१७	४४:२१:३७	१३:१३:०२	द·०७:१०:६०	+१४:२१
९	०५:२६:१०:०९	०९:०६:०५:१५	०५:२४:५९:३६	०५:१३:३०:४४	०९:२९:४३:२१	०७:१३:०१:०४	०९:०८:५९:०५	०७:११:५८:०७	४४:१९:३७	१४:०५:१०	द·०७:३४:११	+१४:३६
१०	०५:२७:०९:४६	०९:२०:०१:०५	०५:२५:३९:०७	०५:१३:४३:०८	०९:२९:४१:५९	०७:१४:०३:२२	०९:०८:५९:४८	०७:११:५४:५६	४४:१७:३८	१४:४८:४०	द·०७:५७:१६	+१४:५१
११	०५:२८:०९:२५	१०:०३:४३:५५	०५:२६:१८:३९	०५:१४:०१:३५	०९:२९:४०:५०	०७:१५:०५:२२	०९:०९:००:३७	०७:११:५१:४५	४४:१५:३९	१५:३०:३८	द·०८:२०:१४	+१५:०५
१२	०५:२९:०९:०६	१०:१७:१२:११	०५:२६:५८:१३	०५:१४:२५:५२	०९:२९:३९:५३	०७:१६:०७:०२	०९:०९:०१:३३	०७:११:४८:३४	४४:१३:४०	१६:०६:२३	द·०८:४३:०६	+१५:१९
१३	०६:००:०८:४९	११:००:२५:०२	०५:२७:३७:४७	०५:१४:५५:४४	०९:२९:३९:१०	०७:१७:०८:२३	०९:०९:०२:३६	०७:११:४५:२३	४४:११:४२	१६:४१:१९	द·०९:०५:५०	+१५:३२
१४	०६:०१:०८:३५	११:१३:२२:२१	०५:२८:१७:२३	०५:१५:३०:५६	०९:२९:३८:३८	०७:१८:०९:२४	०९:०९:०३:४५	०७:११:४२:१२	४४:०९:४४	१७:१५:२८	द·०९:२८:२७	+१५:४५
१५	०६:०२:०८:२२	११:२६:०४:५०	०५:२८:५६:६०	०५:१६:११:१२	०९:२९:३८:२०	०७:१९:१०:०४	०९:०९:०५:००	०७:११:३९:०१	४४:०७:४७	१७:४८:५३	द·०९:५०:५६	+१५:५७

नवार्ण मन्त्र की व्यापकता

मूलनवार्ण – **"ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"**

यह सांसारिक सुख और मोक्ष दोनों को देने वाला मन्त्र है। इस मन्त्र का जप किसी भी वर्ण, जाति, धर्म, सम्प्रदाय वाला व्यक्ति कर सकता है। यह गायत्री मन्त्र की तरह अपने भीतर गुप्तरूप से २४ वर्णाक्षरों को समेटे है। ऐ, म्, ह, र, ई, म्, क, ल, ई, म्, च, आ, म, उ, म्, ड, आ, य, ऐ, व, इ, च्, च, ए। सावित्री मन्त्र की तरह इसमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश समाहित हैं। यह ब्रह्मस्वरूपिणी महाशक्ति का मन्त्र है, जो सगुणरूप में महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती होती है। ॐ रहित नवार्ण का जप श्रेयस्कर है। इसी से सप्तशती का सम्पुटित पाठ, हवन किया जाता है। यह भगवती महाशक्ति का ब्रह्ममय विग्रह है।

आश्विन शुक्लपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; ७ से २० अक्टूबर,२०२१ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःउत्तर । ऋतुःशरत, सौम्यगोलः तुलार्कतः याम्यगोलः, याम्यायनं । ति·१५ अयनांशाः२२:५०:१६

तिथि / दिन	दिनाङ्क / अंग्रेजी	卐 व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि 卐
१ गु	७	**शारदीय नवरात्रारम्भः; कलशस्थापना(अभिजित्मुहूर्त्त–११:३५ से १२:२० तक); श्री शैलपुत्री दर्शन;** ①
२ शु	८	**श्री ब्रह्मचारिणीदेवी दर्शन;** ① **महाराजा श्री अग्रसेन जयन्ती;**
३ श	९	**श्री चन्द्रघण्टादेवी दर्शन; वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी;** सिद्ध·४;
४ र	१०	**श्री कूष्माण्डादेवी दर्शन; उपांग ललिता व्रत;** रवियोगःज्ये;
६ चं	११	**श्री स्कन्दमातादेवी दर्शन; श्री कात्यायनीदेवी दर्शन; आमेर मेला; श्रीसरस्वती आवाहन(मूलेषु);** चित्रायांरविः०८:३२,घं·१०:१८; ②
७ मं	१२	**श्री कालरात्रिदेवी दर्शन; श्री बिल्वसप्तमी; श्रीसरस्वती पूजन(पू·षाढ़ासु);** रवियोगःमू; सिद्ध·८;
८ बु	१३	**श्री महागौरी दर्शन; श्री महाष्टमी; श्रीदुर्गाष्टमी; श्रीसरस्वतीबलिदान(उ·षाढ़ासु);**
९ गु	१४	**श्री सिद्धिदात्रीदेवी दर्शन; श्री महानवमी; श्रीदुर्गा नवमी; श्रीसरस्वतीविसर्जन(श्रवणेषु);** रवियोगःश्र; सिद्ध·१०;
१० शु	१५	**नवरात्रोत्थापन; नवरात्र व्रतपारणा; श्री विजयादशमी; श्रीसुदर्शनादि सर्वायुध पूजा; श्री अपराजितापूजा; शमीपूजन;** ③
११ श	१६	**श्रीपापाङ्कुशा एकादशी(वैष्णव,स्मार्त्त);** रवियोगःध; मृत्युबाण घं·१०:४६:४७या·; ② चित्रायांमङ्गलः२८:४१,घं·१८:२१; रवियोगःज्ये; रवियोगःमू;
१२ र	१७	**प्रदोषव्रतम्; श्री पद्मनाभद्वादशी;** तुलायांरविः५१:१०,घं·३:२४; ज्येष्ठायांशुक्रः३२:१३,घं·१९:४९; ④
१३ चं	१८	मार्गी बुधः३३:१३; रवियोगःउभा; मृत्युबाण घं·१०:३४:१५उ·; ③ रवियोगःश्र; रवियोगःध; सिद्ध·११; मृत्युबाण घं·१०:५४:२४उ·;
१४ मं	१९	**कोजागरी लक्ष्मी पूजा;** सर्वार्थ·उभा; रवियोगःउभा; मृत्युबाण घं·१०:२९:१८या·; ④ मार्गी बुधः३३:१३; त्रिपुष्करः१२+पूभा; सिद्ध·१३;
१५ बु	२०	**शरदपूर्णिमा(स्नान–दान–व्रत); गण्डान्तः७:३९–२०:२६; महर्षि वाल्मीकि जयन्ती; कार्तिकस्नान आरम्भ; मेला सालासर बालाजी;**अमृत·१;

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	११:५०:५२–१३:२४:०३
१५	११:४८:१५–१३:१८:४१

आश्विन मास कृत्य

शारदीय नवरात्रि- आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त। प्रथम दिन वैधृति एवं चित्रा रहित शुभमुहूर्त में कलशस्थापन करे, यदि वैधृति या चित्रा नक्षत्र सम्पूर्ण दिन हो तो अभिजित् मुहूर्त में कलश स्थापन करें। नवरात्रि में देवी की प्रीति के लिए सप्तशती पाठ करें व अखण्ड दीप जलाएं- **अखण्डदीपकं देव्याः प्रीतये नवरात्रिकम्। प्रज्वालयेद् अहोरात्रं एकचित्तं दृढव्रतः।।**

शमीवृक्षपूजन- दशहरा के दिन शमीवृक्ष पूजन से पाप, दुःस्वप्न तथा यात्राकष्ट का निवारण होता है- अमंगलानां शमनीं शमनीं दुष्कृतस्य च। दुःस्वप्ननाशिनीं धन्यां प्रपद्येऽहं शमीं शुभाम्।।

शरद पूर्णिमा –आज मनुष्यों को आयु देने वाली चन्द्र किरणों का वर्षण होता है। आज की रात में भगवती लक्ष्मी जागने वाले अपने भक्तों को ढूंढती रहती हैं- **को जागर्ति इति भाषिणी।** *मेरी आराधना में कौन जाग रहा है, उसे मैं धन समृद्धि दूंगी।* यही कोजागरी है। कोजागरी में ऐरावत हाथी पर सवार लक्ष्मी की पूजा करे। शरदपूर्णिमा को **रासोत्सव** करे। नारद पुराण में कहा है- **'हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! जो रासलीला महोत्सव करता है उसके मन में जब तक इन्द्र का राज्य है तब तक श्रीकृष्ण भगवान् परम भक्ति देते हैं।'** "वह पूर्णिमा विद्ध होकर अधिक हो तो पर दिन में करे। चतुर्दशी से विद्ध हुई अमावस्या और पूर्णिमा व्रत को कभी ग्रहण नहीं करे।", यह ब्रह्मवैवर्त में कहा है।

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि / ल·अं·	१ गु घं·मि·से	२ शु घं·मि·से	३ श घं·मि·से	४ र घं·मि·से	६ चं घं·मि·से	७ मं घं·मि·से	८ बु घं·मि·से	९ गु घं·मि·से	१० शु घं·मि·से	११ श घं·मि·से	१२ र घं·मि·से	लग्न अन्त	१३ चं घं·मि·से	१४ मं घं·मि·से	१५ बु घं·मि·से
कन्या	०७:१३:२२	०७:०९:२६	०७:०५:२९	०७:०१:३२	०६:५७:३५	०६:५३:३८	०६:४९:४१	०६:४५:४४	०६:४१:४६	०६:३७:४९	०६:३३:५२	तुला	०८:४८:४४	०८:४४:४७	०८:४०:४९
तुला	०९:३२:११	०९:२८:१४	०९:२४:१७	०९:२०:२०	०९:१६:२४	०९:१२:२७	०९:०८:३०	०९:०४:३२	०९:००:३५	०८:५६:३८	०८:५२:४१	वृश्चिकः	११:०७:३६	११:०३:३९	१०:५९:४२
वृश्चिकः	११:५१:०३	११:४७:०६	११:४३:०९	११:३९:१२	११:३५:१५	११:३१:१८	११:२७:२२	११:२३:२५	११:१९:२७	११:१५:३०	११:११:३३	धनुः	१३:१३:०१	१३:०९:०४	१३:०५:०७
धनुः	१३:५६:२७	१३:५२:३०	१३:४८:३४	१३:४४:३७	१३:४०:४०	१३:३६:४३	१३:३२:४६	१३:२८:४९	१३:२४:५२	१३:२०:५५	१३:१६:५८	मकरः	१४:५७:३४	१४:५३:३६	१४:४९:३९
मकरः	१५:४०:५९	१५:३७:०३	१५:३३:०६	१५:२९:०९	१५:२५:१२	१५:२१:१५	१५:१७:१९	१५:१३:२२	१५:०९:२५	१५:०५:२८	१५:०१:३१	कुम्भः	१६:२६:४१	१६:२२:४४	१६:१८:४७
कुम्भः	१७:१०:०७	१७:०६:१०	१७:०२:१३	१६:५८:१६	१६:५४:२०	१६:५०:२३	१६:४६:२६	१६:४२:२९	१६:३८:३२	१६:३४:३५	१६:३०:३८	मीनः	१७:५२:३४	१७:४८:३७	१७:४४:४०
मीनः	१८:३५:५९	१८:३२:०३	१८:२८:०६	१८:२४:०९	१८:२०:१२	१८:१६:१६	१८:१२:१९	१८:०८:२२	१८:०४:२५	१८:००:२८	१७:५६:३१	मेषः	१९:२८:३०	१९:२४:३३	१९:२०:३६
मेषः	२०:११:५४	२०:०७:५८	२०:०४:०१	२०:००:०४	१९:५६:०८	१९:५२:११	१९:४८:१४	१९:४४:१७	१९:४०:२०	१९:३६:२४	१९:३२:२७	वृष्	२१:२३:५९	२१:२०:०२	२१:१६:०५
वृष्	२२:०७:२४	२२:०३:२७	२१:५९:३०	२१:५५:३४	२१:५१:३७	२१:४७:४०	२१:४३:४४	२१:३९:४७	२१:३५:५०	२१:३१:५३	२१:२७:५६	मिथुनः	२३:३८:१०	२३:३४:१३	२३:३०:१६
मिथुनः	००:२१:३३	००:१७:३७	००:१३:४०	००:०९:४४	००:०५:४७	००:०१:५०	२३:५७:५४	२३:५३:५७	२३:५०:००	२३:४६:०३	२३:४२:०६	कर्कः	०१:५८:१९	०१:५४:२२	०१:५०:२५
कर्कः	०२:४१:४२	०२:३७:४६	०२:३३:४९	०२:२९:५२	०२:२५:५६	०२:२१:५९	०२:१८:०३	०२:१४:०६	०२:१०:०९	०२:०६:१२	०२:०२:१६	सिंहः	०४:१४:४६	०४:१०:४९	०४:०६:५२
सिंहः	०४:५८:०९	०४:५४:१२	०४:५०:१६	०४:४६:१९	०४:४२:२२	०४:३८:२६	०४:३४:२९	०४:३०:३३	०४:२६:३६	०४:२२:३९	०४:१८:४३	कन्या	०६:२९:५५	०६:२५:५७	०६:२२:००

सूर्योदयकालीन तिथिः४

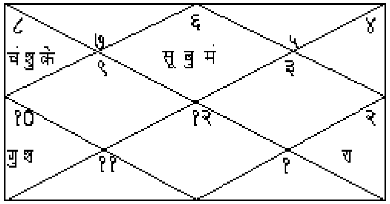

सूर्योदयकालीन तिथिः११

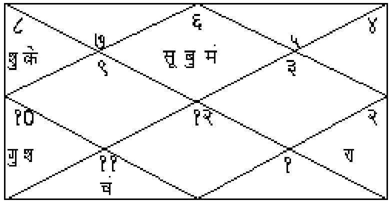

कार्तिक कृष्णपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः– ५७:५०,मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपश्चिमास्त; मार्गी बुधःपूर्वोदितः, २१:१०:२०२१;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
२८:११:४०	१ गु	३४:४८	रा २०:२७:३९	**अश्वि·**	२३:११	दि १५:४८:३२	वज्र	३७:२३	रा २१:२९:२९	बाल ०३:०१	कौल ३४:४८	मेष	अहोरात्र	६:३२:२०	५:४९:००	मानस	४	२१	तुलायांमङ्गलः३५:२३,घं·२१:८:२०;
२८:०७:४७	२ शु	३९:०५	रा २२:१०:४९	**भरणी**	२८:३६	दि १७:५९:३२	सिद्धि	३८:००	रा २१:४४:५९	तैति ०६:४९	गर ३९:०५	मे·४५:०६	रा २४:३५:१४	६:३२:५६	५:४८:०३	मुद्गर	५	२२	मार्गी गुरुः०५:४०घं·;
२८:०३:५५	३ श	४४:०३	रा २४:१०:३४	**कृत्ति·**	३४:४५	रा २०:२७:२६	व्यति·	३९:०८	रा २२:१२:५६	वणि ११:२९	विष ४४:०३	वृष	अहोरात्र	६:३३:३३	५:४७:०७	ध्वज	६	२३	**भद्रा ११:०९–२४:११घं·**; सर्वार्थ·रो;
२८:००:०५	४ र	४९:२०	रा २६:१८:०९	**रोहि·**	४१:१५	रा २३:०४:०२	वरी·	४०:३३	रा २२:४७:१३	बव १६:३९	बाल ४९:२०	वृष	अहोरात्र	६:३४:०९	५:४६:११	धाता	७	२४	स्वात्यांरविः३२:७,घं·१९:५१:४०;
२७:५६:१५	५ चं	५४:२९	रा २८:२२:३०	**मृग·**	४७:४०	रा २५:३८:४८	परिघ	४१:५३	रा २३:२०:०३	कौल २१:५६	तैति ५४:२९	वृ·१४:२९	दि १२:२२:१४	६:३४:४७	५:४५:१७	आनन्द	८	२५	सर्वार्थ·मृ; अमृत·५;
२७:५२:२७	६ मं	५९:०६	रा ३०:१३:५१	**आर्द्रा**	५३:३६	रा २८:०१:५७	शिव	४२:५२	रा २३:४४:१२	गर २६:५२	वणि ५९:०६	मिथुन	अहोरात्र	६:३५:२५	५:४४:२३	सुस्थिर	९	२६	**भद्रारंभः३०:१४घं·**;
२७:४८:४०	७ बु	६०:००	अहोरात्र	**पुन·**	५८:४४	रा ३०:०५:३५	सिद्ध	४३:१५	रा २३:५३:५८	विष ३१:०५	बव ६०:००	मि·४२:३२	रा २३:३६:५५	६:३६:०३	५:४३:३१	गद	१०	२७	**भद्रांतः१९:०२घं·**; सिद्ध·७;
२७:४४:५४	७ गु	०२:४८	दि ०७:४४:०५	**पुष्य**	६०:००	अहोरात्र	साध्य	४२:४९	रा २३:४४:१३	बव ०२:४८	बाल ३४:१७	कर्क	अहोरात्र	६:३६:४२	५:४२:४०	शुभ	११	२८	सर्वार्थ·पु; अमृत·८;
२७:४१:१०	८ शु	०५:२६	दि ०८:४७:४८	**पुष्य**	०२:४६	दि ०७:४३:४३	शुभ	४१:२८	रा २३:१२:३८	कौल ०५:२६	तैति ३६:१८	कर्क	अहोरात्र	६:३७:२१	५:४१:४९	उत्पात	१२	२९	**गण्डान्तारम्भः२६:३९**; अमृत·९;
२७:३७:२७	९ श	०६:४९	दि ०९:२१:४८	**आश्ले·**	०५:३९	दि ०८:५३:३१	शुक्ल	३९:०८	रा २२:१७:१२	गर ०६:४९	वणि ३७:०३	क·०५:३९	दि ०८:५३:३१	६:३८:०१	५:४१:००	मानस	१३	३०	**भद्रारंभः२१:२७घं·**; **गण्डान्तः१५:०६**;
२७:३३:४६	१० र	०६:५५	दि ०९:२४:५१	**मघा**	०७:१६	दि ०९:३३:१२	ब्रह्म	३५:४८	रा २०:५७:४२	विष ०६:५५	बव ३६:३१	सिंह	अहोरात्र	६:३८:४१	५:४०:१२	मुद्गर	१४	३१	**भद्रांतः९:२५घं·**; अमृत·१०;
२७:३०:०७	११ चं	०५:४६	दि ०८:५७:४८	**पू·फा·**	०७:४१	दि ०९:४३:३४	ऐन्द्र	३१:३०	रा १९:१५:१७	बाल ०५:४६	कौल ३४:४५	सिं·२२:३६	दि १५:४१:४८	६:३९:२२	५:३९:२५	ध्वज	१५	१	तुलायांबुधः३३:३२,घं·२०:३१:१;
२७:२६:२९	१२ मं	०३:२६	दि ०८:०२:३३	**उ·फा·**	०६:५६	दि ०९:२६:२८	वैधृ·	२६:१९	दि १७:११:३०	तैति ०३:२६	गर ३१:५३	कन्या	अहोरात्र	६:४०:०३	५:३८:३९	धाता	१६	२	अमृत·१२; त्रिपुष्करः१२+उफा;
२७:२२:५४	१३ बु	**००:०४** **५५:४७**	**दि ०६:४२:०९** **रा २९:००:५७**	**हस्त**	०५:१०	दि ०८:४४:५२	विष्कु·	२०:२१	दि १४:४९:०४	वणि ००:०४	विष २८:०३	कं·३३:५९	रा २०:१६:१७	६:४०:४५	५:३७:५५	आनन्द	१७	३	**भद्रा ६:४२–१७:५४घं·**; सर्वार्थ·ह;
२७:१९:२०	३० गु	५०:५२	रा २७:०२:०९	**चित्रा** **स्वाति**	**०२:३४** **५६:४३**	**दि ०७:४२:५७** **रा ३०:२४:०९**	प्रीति	१३:४३	दि १२:१०:३९	चतु २३:२५	नाग ५०:५२	तुला	अहोरात्र	६:४१:२७	५:३७:११	सुस्थिर	१८	४	कुम्भेगुरुः२१:५४,घं·१५:५३;सिद्ध·१५;

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

तिथि	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर
	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि	रा अं क वि				मि:से
१	०६:०३:०८:१२	००:०८:३३:५३	०५:२९:३६:३८	०५:१६:५६:१३	०९:२९:३८:१४	०७:२०:१०:२२	०९:०९:०६:२२	०७:११:३५:५१	४४:०५:५०	१८:२४:५७	द·१०:१३:१६	+१६:०८
२	०६:०४:०८:०४	००:२०:५१:३८	०६:००:१६:१७	०५:१७:४५:४४	०९:२९:३८:२१	०७:२१:१०:१८	०९:०९:०७:५०	०७:११:३२:४०	४४:०३:५४	१९:०२:४२	द·१०:३५:२७	+१६:१८
३	०६:०५:०७:५९	०१:०३:००:४३	०६:००:५५:५७	०५:१८:३९:२९	०९:२९:३८:४१	०७:२२:०९:५०	०९:०९:०९:२५	०७:११:२९:२९	४४:०१:५८	१९:४१:४५	द·१०:५७:२९	+१६:२८
४	०६:०६:०७:५५	०१:१५:०४:१८	०६:०१:३५:३९	०५:१९:३७:११	०९:२९:३९:१३	०७:२३:०८:५९	०९:०९:११:०६	०७:११:२६:१८	४४:००:०२	२०:२७:३६	द·११:१९:२१	+१६:३८
५	०६:०७:०७:५४	०१:२७:०५:५१	०६:०२:१५:२२	०५:२०:३८:३६	०९:२९:३९:५८	०७:२४:०७:४२	०९:०९:१२:५३	०७:११:२३:०७	४३:५८:०८	२१:१३:२३	द·११:४१:०३	+१६:४६
६	०६:०८:०७:५५	०२:०९:०९:२५	०६:०२:५५:०६	०५:२१:४३:३०	०९:२९:४०:५५	०७:२५:०५:५९	०९:०९:१४:४७	०७:११:१९:५६	४३:५६:१३	२२:०४:५७	द·१२:०२:३४	+१६:५४
७	०६:०९:०७:५८	०२:२१:१८:२८	०६:०३:३४:५१	०५:२२:५१:३७	०९:२९:४२:०६	०७:२६:०३:५०	०९:०९:१६:४७	०७:११:१६:४६	४३:५४:२०	२२:५८:४२	द·१२:२३:५५	+१७:०१
७	०६:१०:०८:०३	०३:०३:३६:०९	०६:०४:१४:३८	०५:२४:०२:४६	०९:२९:४३:२८	०७:२७:०१:१३	०९:०९:१८:५३	०७:११:१३:३५	४३:५२:२७	२३:५३:५२	द·१२:४५:०४	+१७:०७
८	०६:११:०८:१०	०३:१६:०५:०९	०६:०४:५४:२५	०५:२५:१६:४४	०९:२९:४५:०४	०७:२७:५८:०७	०९:०९:२१:०५	०७:११:१०:२४	४३:५०:३५	००:५०:५०	द·१३:०६:०१	+१७:१३
९	०६:१२:०८:१९	०३:२८:४७:३३	०६:०५:३४:१४	०५:२६:३३:१९	०९:२९:४६:५१	०७:२८:५४:३१	०९:०९:२३:२४	०७:११:०७:१३	४३:४८:४४	०१:४८:५०	द·१३:२६:४६	+१७:१७
१०	०६:१३:०८:३०	०४:११:४४:४७	०६:०६:१४:०५	०५:२७:५२:२१	०९:२९:४८:५२	०७:२९:५०:२४	०९:०९:२५:४८	०७:११:०४:०२	४३:४६:५३	०२:४६:२९	द·१३:४७:१८	+१७:२१
११	०६:१४:०८:४३	०४:२४:५७:३१	०६:०६:५३:५६	०५:२९:१३:३९	०९:२९:५१:०४	०८:००:४५:४४	०९:०९:२८:१९	०७:११:००:५१	४३:४५:०४	०३:४५:२८	द·१४:०७:३८	+१७:२४
१२	०६:१५:०८:५८	०५:०८:२५:४२	०६:०७:३३:४९	०६:००:३७:०५	०९:२९:५३:२९	०८:०१:४०:३२	०९:०९:३०:५५	०७:१०:५७:४०	४३:४३:१५	०४:४५:४२	द·१४:२७:४४	+१७:२७
१३	०६:१६:०९:१६	०५:२२:०८:२६	०६:०८:१३:४३	०६:०२:०२:२८	०९:२९:५६:०६	०८:०२:३४:४४	०९:०९:३३:३८	०७:१०:५४:३०	४३:४१:२७	०५:४७:०३	द·१४:४७:३६	+१७:२८
१५	०६:१७:०९:३५	०६:०६:०४:१०	०६:०८:५३:३८	०६:०३:२९:४१	०९:२९:५८:५५	०८:०३:२८:२१	०९:०९:३६:२६	०७:१०:५१:१९	४३:३९:४०	०६:५१:१३	द·१५:०७:१४	+१७:२९

दीपावली का समय– दीपावली में दीपप्रदीपन और लक्ष्मीपूजा के तीन काल महत्वपूर्ण हैं – प्रदोषकाल, वृष और सिंह लग्न। सूर्यास्त के एक घण्टा बारह मिनट बाद तक प्रदोषकाल श्रेष्ठ होता है। इसके तत्काल बाद वृषलग्न होता है और सिंहलग्न प्रायः ढलती रात में आता है।

पूजन सामग्री– धूप, गोघृतदीप, नैवेद्य,ऋतुफल, वस्त्र, रोली, मिष्ठान्न, लाजा, पंचामृत, बिल्व पत्र, कमल, कनेर, जाती, चंपक, जूही, मालती, पारिजात पुष्प, तुलसी आदि।

हवन– दीपावली की रात्रि में आम, बेल, अनार की लकड़ी पर खीर, बेलफल, लाजा,कमलगट्टा, लोंग, इलायची, कमलपुष्प से हवन करने का अमोघ फल होता है। **श्रीसूक्त के मन्त्रों का पाठ–हवन चमत्कारी होता है।** बिल्ववृक्ष के **मूल** में बैठकर जो श्रीसूक्त का जप करता है एक वर्ष के भीतर सुखी, धनाढ्य, प्रभावशाली हो जाता है। **“श्रीम्”** एकाक्षर मन्त्र का जप हवनकर्ता समृद्ध, दानदाता हो जाता है।

कार्तिक कृष्णपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; २१ अक्टूबर से ४ नवम्बर, २०२१ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःउत्तर । ऋतुःशरत, याम्यगोलः, याम्यायनं । ति·३० अयनांशाः२२:५०:१८

तिथि दिन	दिनाङ्क अंग्रेजी	व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि
१ गु	२१	**त्याग व्रतारम्भः; आकाश दीपदान आरम्भ;** सर्वार्थ·अ;
२ शु	२२	**अशून्यशयन व्रत;**
३ श	२३	**व्यतिपात पुण्य;** सिद्ध·४;
४ र	२४	**करवा चौथ; करक संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी; श्रीललिता चतुर्थी व्रत;** अमृत·५;
५ चं	२५	सिद्ध·६;
६ मं	२६	**श्री स्कन्द षष्ठी;** रवियोगःपुन; अमृत·७; त्रिपुष्करः७+पुन;
७ बु	२७	चित्रायांबुधः२४:१५,घं·१६:४४:५०; रवियोगःपुन; मृत्युबाण घं·१०:२०:५९उ·;
७ गु	२८	**श्री अहोई अष्टमी;** मृत्युबाण घं·१०:२३:४३या·;
८ शु	२९	**श्री राधाकुण्ड स्नान(गोवर्धन);**
९ श	३०	सिद्ध·९;
१० र	३१	मूलेधनुषिशुक्रः१०:२३,घं·११:१४:३४; स्वात्यांमङ्गलः३९:३,घं·२२:४२:३९;
११ चं	१	**श्री रमा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त); श्रीगोवत्सद्वादशी;** द·ति·१२; सिद्ध·११;
१२ मं	२	**भौम प्रदोषव्रतम्; धनत्रयोदशी; धनतेरस; यमनिमित्त चौमुखा दीपदान;** द·ति·१२; सिद्ध·१३;
१३ बु	३	**नरक चतुर्दशी; रूप चौदस; मास शिवरात्रि व्रतम्;**
३० गु	४	**दीपावली; कार्तिक अमावस्या (स्नान, दान,श्राद्ध); सायं दीपदान; लक्ष्मी–इन्द्र–कुबेर पूजा;**

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	११:४८:०७–१३:१८:२०
१५	११:४७:२८–१३:१४:५४

कार्तिक मास कृत्य

कार्तिक मास श्रीकृष्ण भागवान को अत्यधिक प्रिय है। जो गृहस्थ कार्तिक मास में व्रत नहीं करता है, उसके इष्ट-पूर्तादि सब कर्म नाश हो जाते हैं। संन्यासी हो, विधवा हो, अथवा बालक ही क्यों न हो, ये वैष्णव होने पर कार्तिक में व्रत न करें तो वे नरक को अवश्य जाते हैं। अतः कार्तिक में स्नान दान ध्यान आदि नियमपूर्वक अवश्य करें। **कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी** को श्रीधन्वन्तरि भगवान् का पूजन करें। संध्या समय धर्मराज के निमित्त घृत दीपक प्रज्वलित करें। **कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी** को प्रातःकाल तैलाभ्यंग करके स्नान करें तथा रात्रि को दीप दान करें।

कार्तिक अमावस्या दीपावली- उबटन प्रयोग- चतुर्दशी, अमावस्या या प्रतिपदा में से किसी भी दिन प्रातःकाल में स्वाति नक्षत्र हो तो उबटन अवश्य लगावें, इससे शीत काल तक स्वास्थ्य, सुख बना रहता है। ब्रह्मपुराण में इसका वर्णन है। **सफेद रंग की प्रधानता-** दीपावली में सफेद रंग का महत्त्व अधिक है। पूजनकर्त्ता को श्वेत वस्त्र व सफेदमाला पहननी चाहिए- *सित वस्त्रोपशोभिना।।* सफेद चूना से दीवाल को लीपना चाहिए ऐसा कहा गया है- *सुधाधवलिताकार्या पुष्पमालोपशोभिता।* सुधा अर्थात् चूना। दीपावली के दिन प्रदोषकाल में भगवती लक्ष्मी, इन्द्र एवं कुबेर की पूजा करें व दीपोत्सव करें। लक्ष्मीपूजन में प्रदोषकाल मुख्य है और अर्धरात्रिकाल गौण है। लक्ष्मी प्रार्थना मंत्र- **नमस्ते सर्वदेवानां वरदासि हरिप्रिये। या गतिस्त्वत्प्रपन्नानां सा मे भूयात् त्वदर्चनात्।।** निर्णय सिन्धु के अनुसार पहले लक्ष्मी पूजन करे, बाद में दीप दान करे। *प्रदोषसमये लक्ष्मीं पूजयित्वा ततः क्रमात्। दीप वृक्षाश्च दातव्याः शक्त्या देवगृहेषु च।।* चौराहे, नदी, पर्वत, वृक्ष, गृह, गोशाला तथा चबूतरा आदि सभी जगहों पर दीप जलाना चाहिए। कमल और पान के पत्ते की माला भगवती लक्ष्मी को अतिशय प्रिय है। लाजा, गुड़, मिष्ठान्न, मेवा, देवी को चढ़ाएं और प्रसाद खाएं। **कार्तिक मास में आकाश दीप दान करने वाले को समस्त दानों का फल मधुसूदन देते हैं।**

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि ल·अं·	१ गु घं·मि·से	२ शु घं·मि·से	३ श घं·मि·से	४ र घं·मि·से	५ चं घं·मि·से	६ मं घं·मि·से	७ बु घं·मि·से	७ गु घं·मि·से	८ शु घं·मि·से	९ श घं·मि·से	१० र घं·मि·से	११ चं घं·मि·से	१२ मं घं·मि·से	१३ बु घं·मि·से	१५ गु घं·मि·से
तुला	०८:३६:५२	०८:३२:५४	०८:२८:५७	०८:२५:००	०८:२१:०२	०८:१७:०४	०८:१३:०७	०८:०९:०९	०८:०५:१२	०८:०१:१४	०७:५७:१६	०७:५३:१९	०७:४९:२१	०७:४५:२३	०७:४१:२६
वृश्चिकः	१०:५५:४४	१०:५१:४७	१०:४७:५०	१०:४३:५२	१०:३९:५५	१०:३५:५७	१०:३२:००	१०:२८:०२	१०:२४:०५	१०:२०:०७	१०:१६:१०	१०:१२:१२	१०:०८:१४	१०:०४:१७	१०:००:१९
धनुः	१३:०१:०९	१२:५७:१२	१२:५३:१५	१२:४९:१७	१२:४५:२०	१२:४१:२३	१२:३७:२५	१२:३३:२८	१२:२९:३०	१२:२५:३३	१२:२१:३५	१२:१७:३८	१२:१३:४०	१२:०९:४३	१२:०५:४५
मकरः	१४:४५:४२	१४:४१:४५	१४:३७:४८	१४:३३:५०	१४:२९:५३	१४:२५:५६	१४:२१:५८	१४:१८:०१	१४:१४:०३	१४:१०:०६	१४:०६:०९	१४:०२:११	१३:५८:१४	१३:५४:१६	१३:५०:१९
कुम्भः	१६:१४:५०	१६:१०:५३	१६:०६:५५	१६:०२:५८	१५:५९:०१	१५:५५:०३	१५:५१:०६	१५:४७:०९	१५:४३:११	१५:३९:१४	१५:३५:१७	१५:३१:१९	१५:२७:२२	१५:२३:२४	१५:१९:२७
मीनः	१७:४०:४३	१७:३६:४६	१७:३२:४९	१७:२८:५१	१७:२४:५४	१७:२०:५७	१७:१७:००	१७:१३:०२	१७:०९:०५	१७:०५:०८	१७:०१:१०	१६:५७:१३	१६:५३:१५	१६:४९:१८	१६:४५:२१
मेषः	१९:१६:३८	१९:१२:४१	१९:०८:४४	१९:०४:४७	१९:००:५०	१८:५६:५३	१८:५२:५५	१८:४८:५८	१८:४५:०१	१८:४१:०४	१८:३७:०६	१८:३३:०९	१८:२९:१२	१८:२५:१४	१८:२१:१७
वृष्	२१:१२:०८	२१:०८:११	२१:०४:१४	२१:००:१७	२०:५६:२०	२०:५२:२३	२०:४८:२६	२०:४४:२९	२०:४०:३१	२०:३६:३४	२०:३२:३७	२०:२८:४०	२०:२४:४२	२०:२०:४५	२०:१६:४८
मिथुनः	२३:२६:१९	२३:२२:२२	२३:१८:२५	२३:१४:२८	२३:१०:३१	२३:०६:३४	२३:०२:३७	२२:५८:३९	२२:५४:४२	२२:५०:४५	२२:४६:४८	२२:४२:५१	२२:३८:५४	२२:३४:५६	२२:३०:५९
कर्कः	०१:४६:२८	०१:४२:३१	०१:३८:३४	०१:३४:३७	०१:३०:४०	०१:२६:४३	०१:२२:४६	०१:१८:४९	०१:१४:५२	०१:१०:५५	०१:०६:५८	०१:०३:०१	००:५९:०४	००:५५:०७	००:५१:१०
सिंहः	०४:०२:५५	०३:५८:५९	०३:५५:०२	०३:५१:०५	०३:४७:०८	०३:४३:११	०३:३९:१४	०३:३५:१७	०३:३१:२०	०३:२७:२३	०३:२३:२६	०३:१९:२९	०३:१५:३२	०३:११:३५	०३:०७:३८
कन्या	०६:१८:०३	०६:१४:०५	०६:१०:०८	०६:०६:०१	०६:०२:०५	०५:५८:०८	०५:५४:११	०५:५०:१४	०५:४६:१७	०५:४२:२०	०५:३८:२३	०५:३४:२६	०५:३०:२९	०५:२६:३२	०५:२२:३६

सूर्योदयकालीन तिथिः४

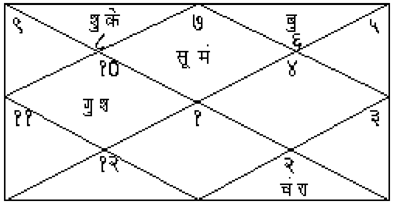

सूर्योदयकालीन तिथिः११

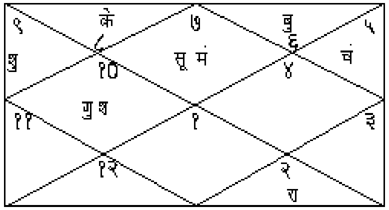

कार्तिक शुक्लपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपश्चिमास्त; मार्गी बुधःपूर्वोदितः, ५:११:२०२१;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
२७:१५:४८	१ शु	४५:२१	रा २४:५०:३५	विशा·	५५:२९	रा २८:५३:३४	आयु· सौभा	०६:३३ ५२:२९	दि ०९:१९:१९ रा ३०:१८:५५	किं १८:०९	बव ४५:२१	तु·४१:२७	रा २३:१७:०६	६:४२:१०	५:३६:२९	मातङ्ग	१९	५	सिद्ध·१; सर्वार्थ·अनु;
२७:१२:१९	२ श	३९:३०	रा २२:३०:५१	अनु·	५१:२२	रा २७:१५:३१	शोभ·	५१:१४	रा २७:१२:२३	बाल १२:२७	कौल ३९:३०	वृश्चिक	अहोरात्र	६:४२:५३	५:३५:४९	अमृत	२०	६	विशाखायांरविः४९:२२,घं·२:५४:३४;
२७:०८:५१	३ र	३३:३०	रा २०:०७:३२	ज्ये·	४७:०९	रा २५:३५:०२	अतिग·	४३:२१	रा २४:०३:५७	तैति ०६:२९	गर ३३:३०	वृ·४७:०९	रा २५:३५:०२	६:४३:३७	५:३५:०९	काण	२१	७	**गण्डान्तारम्भः२०:००;** सिद्ध·३;
२७:०५:२६	४ चं	२७:३४	रा १७:४६:०२	मूल	४३:०३	रा २३:५७:३३	सुकर्मा	३५:३३	रा २०:५७:३९	वणि ००:३०	विष २७:३४	धनु	अहोरात्र	६:४४:२१	५:३४:३१	लुम्ब	२२	८	**भद्रा ६:५६–१७:४६घं·;गण्डान्तः७:१०;**
२७:०२:०३	५ मं	२१:५५	दि १५:३१:१५	पू·षा·	३९:१७	रा २२:२७:५८	धृति	२८:०१	रा १७:५७:१८	बाल २१:५५	कौल ४९:१६	ध·५३:२६	रा २८:०७:२१	६:४५:०५	५:३३:५४	मित्र	२३	९	रवियोगःउषा; द·न·उषा;
२६:५८:४३	६ बु	१६:४४	दि १३:२७:३५	उ·षा·	३६:०३	रा २१:१०:५४	शूल	२०:५१	दि १५:०६:१२	तैति १६:४४	गर ४४:२४	मकर	अहोरात्र	६:४५:५०	५:३३:१९	वज्र	२४	१०	**अभिजितः२१:४८–३९:५१;**अमृत·६;
२६:५५:२५	७ गु	१२:१३	दि ११:३९:५१	श्रवण	३३:३१	रा २०:११:०२	गण्ड	१४:१४	दि १२:२८:०५	वणि १२:१३	विष ४०:१७	मकर	अहोरात्र	६:४६:३५	५:३२:४५	ध्वज	२५	११	**भद्रा ११:४०–२२:५३घं·;** अमृत·८;
२६:५२:१०	८ शु	०८:३२	दि १०:१२:०८	धनि·	३१:५१	रा १९:३१:५३	वृद्धि	०८:१७	दि १०:०५:६०	बव ०८:३२	बाल ३७:०४	म·०२:३३	दि ०७:४८:३५	६:४७:२०	५:३२:१३	धाता	२६	१२	अमृत·९; रवियोगःश;
२६:४८:५८	९ श	०५:५०	दि ०९:०८:०४	शत·	३१:१४	रा १९:१७:३९	ध्रुव· व्याघ	०३:०६ ५५:४४	दि ०८:०२:३३ रा ३०:२०:०९	कौल ०५:५०	तैति ३४:५५	कुंभ	अहोरात्र	६:४८:०६	५:३१:४२	आनन्द	२७	१३	सिद्ध·९; रवियोगःश;
२६:४५:४९	१० र	०४:१६	दि ०८:३१:२५	पू·भा·	३१:४६	रा १९:३१:०९	हर्षण	५५:३१	रा २९:०१:०६	गर ०४:१६	वणि ३३:५८	कु·१६:३१	दि १३:२५:०७	६:४८:५३	५:३१:१२	सुस्थिर	२८	१४	**भद्रारंभः२०:२४घं·;** अमृत·१०;
२६:४२:४३	११ चं	०३:५७	दि ०८:२४:२४	उ·भा·	३३:३१	रा २०:१४:१०	वज्र	५३:११	रा २८:०५:५१	विष ०३:५७	बव ३४:१७	मीन	अहोरात्र	६:४९:३९	५:३०:४४	गद	२९	१५	**भद्रांतः८:२४घं·;** द·ति·१२;
२६:३९:३९	१२ मं	०४:५६	दि ०८:४८:४०	रेवती	३६:३२	रा २१:२७:२४	सिद्धि	५१:५०	रा २७:३४:१८	बाल ०४:५६	कौल ३५:५५	मी·३६:३२	रा २१:२७:२४	६:५०:२६	५:३०:१८	शुभ	३०	१६	**संक्रान्ति,मासान्तः;** द·ति·१२;
२६:३६:३९	१३ बु	०७:११	दि ०९:४३:२६	अश्वि·	४०:४४	रा २३:०८:३८	व्यति·	५१:२३	रा २७:२४:२२	तैति ०७:११	गर ३८:४६	मेष	अहोरात्र	६:५१:१३	५:२९:५३	मृत्यु	१	१७	**संक्रान्ति पुण्यकालं,०६:२४–११:४३घं·;**
२६:३३:४३	१४ गु	१०:३६	दि ११:०६:२८	भरणी	४५:५७	रा २५:१४:५८	वरी·	५१:४४	रा २७:३३:४३	वणि १०:३६	विष ४२:४३	मेष	अहोरात्र	६:५२:००	५:२९:२९	पद्म	२	१८	**भद्रा ११:०६–२३:५७घं·; मासादिः;**
२६:३०:४९	१५ शु	१५:०१	दि १२:५३:०७	कृत्ति·	५१:५८	रा २७:४०:०२	परिघ	५२:४१	रा २७:५७:०९	बव १५:०१	बाल ४७:३०	मे·०२:२३	दि ०७:४९:५७	६:५२:४८	५:२९:०७	छत्र	३	१९	सिद्ध·१;

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

तिथि	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से
१	०६:१८:०९:५६	०६:२०:१०:३९	०६:०९:३३:३५	०६:०४:५८:३७	१०:००:०१:५७	०८:०४:२१:२०	०९:०९:३९:२१	०७:१०:४८:०८	४३:३७:५४	०६:५१:५७	द·१५:२६:३७	+१७:२८
२	०६:१९:१०:१९	०७:०४:२५:०५	०६:१०:१३:३३	०६:०६:२९:०७	१०:००:०५:१०	०८:०५:१३:४०	०९:०९:४२:२१	०७:१०:४४:५७	४३:३६:०९	०७:५७:०४	द·१५:४५:४४	+१७:२७
३	०६:२०:१०:४४	०७:१८:४४:१५	०६:१०:५३:३२	०६:०८:०१:०४	१०:००:०८:३५	०८:०६:०५:२०	०९:०९:४५:२७	०७:१०:४१:४६	४३:३४:२६	०९:०१:२२	द·१६:०४:३७	+१७:२५
४	०६:२१:११:११	०८:०३:०४:३२	०६:११:३३:३३	०६:०९:३४:२३	१०:००:१२:१३	०८:०६:५६:१८	०९:०९:४८:३९	०७:१०:३८:३५	४३:३२:४३	१०:०५:३२	द·१६:२३:१३	+१७:२२
५	०६:२२:११:३९	०८:१७:२१:५८	०६:१२:१३:३५	०६:११:०८:५८	१०:००:१६:०२	०८:०७:४६:३२	०९:०९:५१:५६	०७:१०:३५:२५	४३:३१:०२	११:०२:०९	द·१६:४१:३२	+१७:१८
६	०६:२३:१२:१०	०९:०१:३३:०८	०६:१२:५३:३८	०६:१२:४४:४२	१०:००:२०:०२	०८:०८:३६:००	०९:०९:५५:१९	०७:१०:३२:१४	४३:२९:२२	११:५७:०५	द·१६:५९:३५	+१७:१४
७	०६:२४:१२:४२	०९:१५:३४:६०	०६:१३:३३:४३	०६:१४:२१:३०	१०:००:२४:१५	०८:०९:२४:४२	०९:०९:५८:४८	०७:१०:२९:०३	४३:२७:४३	१२:४२:५०	द·१७:१७:२१	+१७:०८
८	०६:२५:१३:१६	०९:२९:२५:०१	०६:१४:१३:४९	०६:१५:५९:१८	१०:००:२८:३९	०८:१०:१२:३४	०९:१०:०२:२२	०७:१०:२५:५२	४३:२६:०५	१३:२६:०१	द·१७:३४:४९	+१७:०१
९	०६:२६:१३:५२	१०:१३:०१:१४	०६:१४:५३:५६	०६:१७:३७:६०	१०:००:३३:१४	०८:१०:५९:३५	०९:१०:०६:०२	०७:१०:२२:४१	४३:२४:२९	१४:०३:५८	द·१७:५१:५८	+१६:५४
१०	०६:२७:१४:३०	१०:२६:२२:२३	०६:१५:३४:०५	०६:१९:१७:३२	१०:००:३८:०१	०८:११:४५:४३	०९:१०:०९:४७	०७:१०:१९:३०	४३:२२:५४	१४:३९:२४	द·१८:०८:४९	+१६:४६
११	०६:२८:१५:०९	११:०९:२७:५८	०६:१६:१४:१६	०६:२०:५७:५०	१०:००:४२:५८	०८:१२:३०:५६	०९:१०:१३:३७	०७:१०:१६:२०	४३:२१:२१	१५:१४:०१	द·१८:२५:२२	+१६:३६
१२	०६:२९:१५:५०	११:२२:१८:१६	०६:१६:५४:२७	०६:२२:३८:४९	१०:००:४८:०७	०८:१३:१५:१०	०९:१०:१७:३३	०७:१०:१३:०९	४३:१९:५०	१६:२१:२१	द·१८:४१:३४	+१६:२६
१३	०७:००:१६:३२	००:०४:५४:१६	०६:१७:३४:४०	०६:२४:२०:२५	१०:००:५३:२७	०८:१३:५८:२५	०९:१०:२१:३४	०७:१०:०९:५८	४३:१८:२०	१६:२२:०९	द·१८:५७:२७	+१६:१५
१४	०७:०१:१७:१७	००:१७:१७:४४	०६:१८:१४:५५	०६:२६:०२:३६	१०:००:५८:५८	०८:१४:४०:३८	०९:१०:२५:४०	०७:१०:०६:४७	४३:१६:५१	१७:००:१३	द·१९:१३:००	+१६:०३
१५	०७:०२:१८:०२	००:२९:३१:०३	०६:१८:५५:११	०६:२७:४५:१६	१०:०१:०४:४०	०८:१५:२१:४५	०९:१०:२९:५१	०७:१०:०३:३६	४३:१५:२५	१७:३७:४५	द·१९:२८:१२	+१५:५१

जो पाप आदि अपकर्म से तार दे उसे तीर्थ कहते हैं– तारयति पापादिकेभ्यः। जहाँ जाने से, दर्शन करने से लौकिक–पारलौकिक दुःखोंसे मुक्ति मिलती हो उसे तीर्थ कहते हैं। गुरु, ऋषि की तप–स्थली, जल–प्रवाह और पवित्र क्षेत्र का सम्मिलन तीर्थ कहलाता है। भक्त, गुरु, माता–पिता, पति–पत्नी यह छह भी तीर्थ हैं। गुरु ज्ञान मूर्ति होने से तीर्थ होते हैं।

तीर्थ भेद– तपस्वी ब्राह्मण चलता फिरता जंगम तीर्थ है। पवित्र भाव को मानस तीर्थ कहते हैं। पृथ्वी पर विद्यमान पूज्यस्थल भौम तीर्थ हैं।

तीर्थ यात्रा का फल– भगवान परशुराम जी ने अपने तेज हरण के बाद तीर्थ यात्रा कर पुनः सभी लोकों को प्राप्त कर लिया।

तीर्थ यात्रा तप है पिकनिक नहीं– बिना जूता चप्पल पहने पैदल, उपवास पूर्वक, स्नान करके तीर्थदर्शन से अपूर्व फल की प्राप्ति होती है। तीर्थ में किया हुआ पाप वज्रलेप हो जाता है।

कार्तिक शुक्लपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; ५ से १९ नवम्बर, २०२१ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपूर्व । ऋतुःशरत वृश्चिकार्कतः ऋतुःहेमन्त, याम्यगोलः, याम्यायनं । ति·१५ अयनांशाः२२:५०:२०

तिथि दिन	दिनाङ्क अंग्रेजी	卐 व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि 卐
१ शु	५	**श्री गोवर्धन पूजा; श्री अन्नकूटमहोत्सव; जैन नवसंवत् २०५९ आरम्भः;** मृत्युबाण घं·११:१४:३उ·;
२ श	६	**भ्रातृ द्वितीया; भैया दूज; यम द्वितीया; कलमदान पूजा; चित्रगुप्त पूजा;** ①
३ र	७	सर्वार्थ·मू; रवियोगःमू; ① स्वात्यांबुधः०७:९,घं·१०:१:२९; मृत्युबाण घं·११:२३:४५या·;
४ चं	८	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी; श्री सूर्यषष्ठी व्रतारम्भः;** रवियोगःमू; अमृत·५;
५ मं	९	**सूर्यषष्ठी व्रत द्वितीयदिन; सौभाग्यपञ्चमी;**
६ बु	१०	**श्री सूर्यषष्ठी व्रतम्; सायंकालीनअर्घ्यदान; अरुणोदये द्वितीयअर्घ्यदान;** रवियोगःउषा;सिद्ध·७;
७ गु	११	**पञ्चकारंभः२०:११; श्री सूर्यषष्ठी व्रतपारणा; श्री कार्तवीर्य सहस्रार्जुन जयन्ती;** ②
८ शु	१२	**श्री गोपाष्टमी;** ② श्रवणायांशनिः२०:२१,घं·१५:२१:५२;
९ श	१३	**अक्षय नवमी; कृतयुगादि; श्री आँवला नवमी;** रवियोगःपूभा;
१० र	१४	विशाखायांबुधः२५:२८,घं·१७:२६:५८; रवियोगःपूभा; सर्वार्थ·उभा; मृत्युबाण घं·१३:६:३७उ·;
११ चं	१५	**श्री देवप्रबोधिनी एकादशी (वैष्णव,स्मार्त्त) ; श्रीतुलसी विवाह; भीष्मपञ्चक आरम्भ;** सिद्ध·११; मृत्युबाण घं·१३:२२:२८या·;
१२ मं	१६	**गण्डान्तः१५:०६–२७:५०; पञ्चकान्तः२१:२७; प्रदोष व्रतम्; चातुर्मास्य व्रत समाप्तिः; गोवत्सद्वादशी; हरिवासराभावः;** अमृत·१२; ③
१३ बु	१७	**व्यतिपात पुण्य; श्रीकाशीविश्वनाथ प्रतिष्ठादिवस;** रवियोगःअ; मृत्युबाण घं·१३:५६:१उ·;
१४ गु	१८	**श्रीवैकुण्ठचतुर्दशी व्रतम्; पूर्णिमा व्रतम्;** सिद्ध·१५; मृत्युबाण घं·१४:१३:४२या·; ③ वृश्चिकेरविः४३:४०,घं·०:४५; पूर्वाषाढेशुक्रः०६:३८,घं·०९:५६; सिद्ध·१३; सर्वार्थ·अ; रवियोगःअ;
१५ शु	१९	**कार्तिक पूर्णिमा (स्नान–दान) ; देव दीपावली; आद्याचार्य श्रीमद्निम्बार्काचार्य जयन्ती; श्री कार्तिकेय जयन्ती; भीष्मपञ्चक समाप्त; कार्तिक स्नान समाप्तिः;**

कार्तिक मास कृत्य

यमद्वितीया- कार्तिक शुक्ल द्वितीया के दिन यमद्वितीया होती है। आज के दिन यमुना जी में स्नान कर यम का पूजन करने से यमलोक का दर्शन नहीं होता है। आज बहन का सत्कार करना चाहिए।

सूर्यषष्ठी (छठ व्रत)- षष्ठी तिथि में सायं सूर्यार्घ्य दान तथा सप्तमी तिथि में उदित सूर्य को अर्घ्य दान देकर पारणा की जाती है। यह व्रत त्रिदिनात्मक होता है। बिहार में यह प्रमुख पर्व है।

कार्तिक शुक्ल नवमी – धात्री नवमी को आंवला वृक्ष की छाया में बैठकर भोजन करे, आंवला वृक्षारोपण करे। "पीपल और आंवले को अगल बगल लगावे, बड़े हो जाने पर पीपल से धात्री का विवाह करे। इससे वही पुण्य होता है जो श्री तुलसी शालग्राम विवाह कराने का होता है।"-व्रतराज

कार्तिक शुक्ल प्रबोधिनी एकादशी- रात्रि में स्नानादि करके शयन करते हुए भगवान् श्रीहरि का शुद्धभक्ति सहित अभिषेक कर, नृत्य-गीत-वाद्य और पुरुषसूक्त व विष्णुस्तोत्रों से भगवान् को जगावे। आज श्रीविष्णु एवं तुलसीजी का विवाह सम्पन्न करे।

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविंद उत्तिष्ठ गरुडध्वज। उत्तिष्ठ कमलाकान्त त्रैलोक्यं मंगलं कुरु।।

आज से विवाह का शुभकाल आरम्भ होता है।

कार्तिकपूर्णिमा (देवदीपावली)- यह पराग्राह्य होती है- *कार्तिकीपौर्णमासीपराग्राह्या* -निर्णयसिन्धु

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	११:४७:३१–१३:१४:४६
१५	११:४९:४५–१३:१४:३५

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि ल·अं·	१ शु घं·मि·से	२ श घं·मि·से	३ र घं·मि·से	४ चं घं·मि·से	५ मं घं·मि·से	६ बु घं·मि·से	७ गु घं·मि·से	८ शु घं·मि·से	९ श घं·मि·से	१० र घं·मि·से	११ चं घं·मि·से	१२ मं घं·मि·से	लग्न अन्त	१३ बु घं·मि·से	१४ गु घं·मि·से	१५ शु घं·मि·से
तुला	०७:३७:२८	०७:३३:३०	०७:२९:३२	०७:२५:३५	०७:२१:३७	०७:१७:३९	०७:१३:४१	०७:०९:४४	०७:०५:४६	०७:०१:४८	०६:५७:५१	०६:५३:५३	वृश्चिकः	०९:०८:५०	०९:०४:५३	०९:००:५५
वृश्चिकः	०९:५६:२१	०९:५२:२४	०९:४८:२६	०९:४४:२८	०९:४०:३१	०९:३६:३३	०९:३२:३६	०९:२८:३८	०९:२४:४०	०९:२०:४३	०९:१६:४५	०९:१२:४८	धनुः	११:१४:१७	११:१०:२०	११:०६:२२
धनुः	१२:०१:४८	११:५७:५०	११:५३:५२	११:४९:५५	११:४५:५७	११:४२:००	११:३८:०२	११:३४:०५	११:३०:०७	११:२६:१०	११:२२:१२	११:१८:१५	मकरः	१२:५८:५१	१२:५४:५४	१२:५०:५७
मकरः	१३:४६:२१	१३:४२:२४	१३:३८:२६	१३:३४:२९	१३:३०:३१	१३:२६:३४	१३:२२:३६	१३:१८:३९	१३:१४:४१	१३:१०:४४	१३:०६:४६	१३:०२:४९	कुम्भः	१४:२८:००	१४:२४:०३	१४:२०:०६
कुम्भः	१५:१५:२९	१५:११:३२	१५:०७:३४	१५:०३:३७	१४:५९:४०	१४:५५:४२	१४:५१:४५	१४:४७:४७	१४:४३:५०	१४:३९:५२	१४:३५:५५	१४:३१:५८	मीनः	१५:५३:५५	१५:४९:५८	१५:४६:००
मीनः	१६:४१:२३	१६:३७:२६	१६:३३:२८	१६:२९:३१	१६:२५:३४	१६:२१:३६	१६:१७:३९	१६:१३:४२	१६:०९:४४	१६:०५:४७	१६:०१:५०	१५:५७:५२	मेषः	१७:२९:५२	१७:२५:५५	१७:२१:५८
मेषः	१८:१७:२०	१८:१३:२२	१८:०९:२५	१८:०५:२८	१८:०१:३०	१७:५७:३३	१७:५३:३६	१७:४९:३८	१७:४५:४१	१७:४१:४४	१७:३७:४७	१७:३३:४९	वृष्	१९:२५:२४	१९:२१:२७	१९:१७:३०
वृष्	२०:१२:५१	२०:०८:५३	२०:०४:५६	२०:००:५९	१९:५७:०२	१९:५३:०४	१९:४९:०७	१९:४५:१०	१९:४१:१३	१९:३७:१५	१९:३३:१८	१९:२९:२१	मिथुनः	२१:३९:३६	२१:३५:३९	२१:३१:४२
मिथुनः	२२:२७:०२	२२:२३:०५	२२:१९:०८	२२:१५:१०	२२:११:१३	२२:०७:१६	२२:०३:१९	२१:५९:२२	२१:५५:२५	२१:५१:२८	२१:४७:३१	२१:४३:३३	कर्कः	२३:५९:४८	२३:५५:५१	२३:५१:५४
कर्कः	००:४७:१३	००:४३:१६	००:३९:१८	००:३५:२१	००:३१:२४	००:२७:२७	००:२३:३०	००:१९:३३	००:१५:३६	००:११:३९	००:०७:४२	००:०३:४५	सिंहः	०२:१६:१७	०२:१२:२०	०२:०८:२४
सिंहः	०३:०३:४१	०२:५९:४४	०२:५५:४७	०२:५१:५०	०२:४७:५३	०२:४३:५६	०२:३९:५९	०२:३६:०२	०२:३२:०५	०२:२८:०८	०२:२४:११	०२:२०:१४	कन्या	०४:३१:१६	०४:२७:१९	०४:२३:२२
कन्या	०५:१८:३९	०५:१४:४२	०५:१०:४५	०५:०६:४८	०५:०२:५१	०४:५८:५४	०४:५४:५७	०४:५१:००	०४:४७:०३	०४:४३:०६	०४:३९:१०	०४:३५:१३	तुला	०६:४९:५५	०६:४५:५८	०६:४२:००

सूर्योदयकालीन तिथिः४

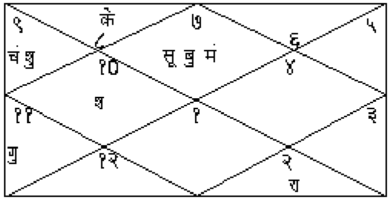

सूर्योदयकालीन तिथिः११

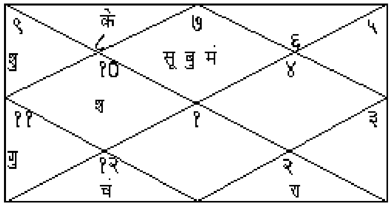

मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपश्चिमास्त; मार्गी बुधःपूर्वास्तः, २०:११:२०२१;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
२६:२७:६०	१ श	२०:०६	दि १४:५५:६०	रोहि·	५८:२६	रा ३०:१५:५१	शिव	५३:५८	रा २८:२८:५७	कौल २०:०६	तैति ५२:४८	वृष	अहोरात्र	६:५३:३५	५:२८:४७	श्रीवत्स	४	२०	अनुराधायांरविः०१:९,घं·०७:४८:४;
२६:२५:१४	२ र	२५:२९	दि १७:०६:०७	मृग·	६०:००	अहोरात्र	सिद्ध	५५:१९	रा २९:०१:५४	गर २५:२९	वणि ५८:१०	वृ·३१:४१	रा १९:३४:५२	६:५४:२३	५:२८:२८	सौम्य	५	२१	**भद्रारंभः३०:१०घं·;** सिद्ध·३;
२६:२२:३१	३ चं	३०:४३	रा १९:१२:२३	मृग·	०४:५४	दि ०८:५२:४०	साध्य	५६:२३	रा २९:२८:१४	विष ३०:४३	बव ६०:००	मिथुन	अहोरात्र	६:५५:११	५:२८:११	आनन्द	६	२२	**भद्रांतः१९:१२घं·;** सर्वार्थ·मृ;
२६:१९:५३	४ मं	३५:२३	रा २१:०५:०४	आर्द्रा	१०:५९	दि ११:१९:३६	शुभ	५६:५५	रा २९:४१:५८	बव ०३:०८	बाल ३५:२३	मिथुन	अहोरात्र	६:५५:५९	५:२७:५६	सुस्थिर	७	२३	
२६:१७:१८	५ बु	३९:०९	रा २२:३६:१४	पुन·	१६:२०	दि १३:२८:५१	शुक्ल	५६:४२	रा २९:३७:४५	कौल ०७:२३	तैति ३९:०९	मि·००:०५	दि ०६:५८:४१	६:५६:४७	५:२७:४२	गद	८	२४	अमृत·६;
२६:१४:४८	६ गु	४१:४७	रा २३:४०:२६	पुष्य	२०:४०	दि १५:१३:३३	ब्रह्म	५५:३६	रा २९:१२:०८	गर १०:३६	वणि ४१:४७	कर्क	अहोरात्र	६:५७:३५	५:२७:३०	शुभ	९	२५	**भद्रारंभः२३:४०घं·;** सर्वार्थ·पु;
२६:१२:२१	७ शु	४३:१०	रा २४:१४:३३	आश्ले·	२३:५१	दि १६:३०:३७	ऐन्द्र	५३:३३	रा २८:२३:२५	विष १२:३८	बव ४३:१०	क·२३:५१	दि १६:३०:३७	६:५८:२३	५:२७:२०	मृत्यु	१०	२६	**भद्रांतः१२:०२घं·;**
२६:०९:६०	८ श	४३:१६	रा २४:१७:३९	मघा	२५:४६	दि १७:१७:३७	वैधृ·	५०:२९	रा २७:१०:३७	बाल १३:२३	कौल ४३:१६	सिंह	अहोरात्र	६:५९:११	५:२७:११	पद्म	११	२७	सिद्ध·९;
२६:०७:४२	९ र	४२:०७	रा २३:५०:३८	पू·फा·	२६:२७	रा १७:३४:५९	विष्कु·	४६:२६	रा २५:३४:३२	तैति १२:५०	गर ४२:०७	सिं·४१:२७	रा २३:३४:४८	६:५९:५९	५:२७:०४	छत्र	१२	२८	सर्वार्थ·उफा;
२६:०५:२९	१० चं	३९:४७	रा २२:५५:२९	उ·फा·	२५:५९	दि १७:२४:२२	प्रीति	४१:२९	रा २३:३६:३३	वणि ११:०४	विष ३९:४७	कन्या	अहोरात्र	७:००:४७	५:२६:५८	श्रीवत्स	१३	२९	**भद्रा ११:२७–२२:५५घं·;** द·ति·१०;
२६:०३:२१	११ मं	३६:२४	रा २१:३५:१९	हस्त	२४:२७	दि १६:४८:२४	आयु·	३५:४३	रा २१:१८:५२	बव ०८:१२	बाल ३६:२४	कं·५३:२२	रा २८:२२:११	७:०१:३४	५:२६:५४	सौम्य	१४	३०	द·ति·१०; अमृत·१२;
२६:०१:१७	१२ बु	३२:१०	रा १९:५४:२५	चित्रा	२२:०२	दि १५:५१:१६	सौभा·	२९:१६	रा १८:४४:४०	कौल ०४:२३	तैति ३२:१०	तुला	अहोरात्र	७:०२:२१	५:२६:५२	कालदंड	१५	१	सिद्ध·१२;
२५:५९:१८	१३ गु	२७:१३	रा १७:५६:१७	स्वाती	१८:५३	दि १४:३६:२८	शोभ·	२२:१३	दि १५:५६:३२	वणि २७:१३	विष ५४:३२	तुला	अहोरात्र	७:०३:०८	५:२६:५२	प्रवर्द्ध	१६	२	**भद्रा १७:५६–२८:५२घं·;** अमृत·१३;
२५:५७:२४	१४ शु	२१:४४	दि १५:४५:३९	विशा·	१५:११	दि १३:०८:२९	अतिग·	१४:४५	दि १२:५७:५५	शकु २१:४४	चतु ४८:५२	तु·०१:०९	दि ०७:३१:३२	७:०३:५५	५:२६:५३	मातङ्ग	१७	३	अमृत·१४; सर्वार्थ·अनु;
२५:५५:३५	३० श	१५:५६	दि १३:२७:०२	अनु·	११:०९	दि ११:३२:०८	सुकर्मा धृति	०६:५९ ५२:०७	दि ०९:५२:२७ रा ३०:४३:१५	नाग १५:५६	किं ४२:५८	वृश्चिक	अहोरात्र	७:०४:४२	५:२६:५६	अमृत	१८	४	**गण्डान्तारम्भः२८:१७;**

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

तिथि	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से
१	०७:०३:१८:५०	०१:११:३७:०६	०६:१९:३५:२९	०६:२९:२८:२४	१०:०१:१०:३३	०८:१६:०१:४५	०९:१०:३४:०७	०७:१०:००:२६	४३:१४:००	१८:२२:०७	द·१९:४३:०३	+१५:३७
२	०७:०४:१९:३९	०१:२३:३९:१०	०६:२०:१५:४८	०७:०१:११:५४	१०:०१:१६:३६	०८:१६:४०:३४	०९:१०:३८:२८	०७:०९:५७:१५	४३:१२:३७	१९:०७:५३	द·१९:५७:३३	+१५:२२
३	०७:०५:२०:२९	०२:०५:४१:०३	०६:२०:५६:०८	०७:०२:५५:४४	१०:०१:२२:४९	०८:१७:१८:०९	०९:१०:४२:५४	०७:०९:५४:०४	४३:११:१६	१९:५६:३८	द·२०:११:४१	+१५:०७
४	०७:०६:२१:२१	०२:१७:४६:३६	०६:२१:३६:३०	०७:०४:३९:५१	१०:०१:२९:१३	०८:१७:५४:२९	०९:१०:४७:२५	०७:०९:५०:५३	४३:०९:५६	२०:५०:०२	द·२०:२५:२७	+१४:५१
५	०७:०७:२२:१५	०२:२९:५९:०७	०६:२२:१६:५३	०७:०६:२४:१२	१०:०१:३५:४७	०८:१८:२९:२८	०९:१०:५२:०१	०७:०९:४७:४२	४३:०८:३९	२१:४४:१८	द·२०:३८:५०	+१४:३३
६	०७:०८:२३:०९	०३:१२:२१:३३	०६:२२:५७:१८	०७:०८:०८:४२	१०:०१:४२:३२	०८:१९:०३:०५	०९:१०:५६:४२	०७:०९:४४:३१	४३:०७:२४	२२:४०:४४	द·२०:५१:५०	+१४:१६
७	०७:०९:२४:०६	०३:२४:५६:१९	०६:२३:३७:४५	०७:०९:५३:२०	१०:०१:४९:२६	०८:१९:३५:१५	०९:११:०१:२७	०७:०९:४१:२१	४३:०६:११	२३:३८:२२	द·२१:०४:२७	+१३:५७
८	०७:१०:२५:०३	०४:०७:४५:१४	०६:२४:१८:१३	०७:११:३८:०३	१०:०१:५६:३०	०८:२०:०५:५६	०९:११:०६:१६	०७:०९:३८:१०	४३:०५:००	००:३५:५८	द·२१:१६:४०	+१३:३७
९	०७:११:२६:०२	०४:२०:४९:२२	०६:२४:५८:४३	०७:१३:२२:४६	१०:०२:०३:४४	०८:२०:३५:०३	०९:११:११:११	०७:०९:३४:५९	४३:०३:५१	०१:३४:१६	द·२१:२८:२९	+१३:१७
१०	०७:१२:२७:०२	०५:०४:०९:०४	०६:२५:३९:१४	०७:१५:०७:२५	१०:०२:११:०८	०८:२१:०२:३४	०९:११:१६:०९	०७:०९:३१:४८	४३:०२:४५	०२:३३:५१	द·२१:३९:५४	+१२:५६
११	०७:१३:२८:०४	०५:१७:४३:५२	०६:२६:१९:४७	०७:१६:५१:५७	१०:०२:१८:४१	०८:२१:२८:२३	०९:११:२१:१२	०७:०९:२८:३७	४३:०१:४०	०३:३४:३८	द·२१:५०:५४	+१२:३४
१२	०७:१४:२९:०६	०६:०१:३२:३७	०६:२७:००:२१	०७:१८:३६:१८	१०:०२:२६:२४	०८:२१:५२:२८	०९:११:२६:२०	०७:०९:२५:२७	४३:००:३८	०४:३७:२९	द·२२:०१:२९	+१२:११
१३	०७:१५:३०:१०	०६:१५:३३:२३	०६:२७:४०:५७	०७:२०:२०:२५	१०:०२:३४:१६	०८:२२:१४:४४	०९:११:३१:३१	०७:०९:२२:१६	४२:५९:३९	०५:४२:१७	द·२२:११:३९	+११:४८
१४	०७:१६:३१:१५	०६:२९:४३:४०	०६:२८:२१:३५	०७:२२:०४:१६	१०:०२:४२:१७	०८:२२:३५:०८	०९:११:३६:४७	०७:०९:१९:०५	४२:५८:४२	०६:४७:०२	द·२२:२१:२३	+११:२४
१५	०७:१७:३२:२२	०७:१४:००:२९	०६:२९:०२:१४	०७:२३:४७:४७	१०:०२:५०:२८	०८:२२:५३:३४	०९:११:४२:०७	०७:०९:१५:५४	४२:५७:४८	०७:५१:१६	द·२२:३०:४१	+१०:५९

व्रत के भेद– व्रत के तीन भेद होते हैं, १· एकभुक्त व्रत, २·नक्तव्रत और ३·अयाचितव्रत।

एकभुक्त व्रत– में रात्रि में उपवास कर दूसरे दिन दोपहर बाद पारणा करते हैं– *मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या एकभुक्ते सदा तिथिः।*

नक्तव्रत– दिन में उपवास रहकर रात्रि में पारणा करते हैं। इसमें प्रदोष में पारणा की जाती है– *प्रदोष व्यापिनी ग्राह्या तिथिः नक्तव्रते सदा।*

अयाचित व्रत– बिना मांगे जो कुछ मिल जाये उसे खाकर रहना, न मिले तो नहीं खाना अयाचित व्रत कहलाता है। दूसरों से प्राप्त व्रत भी अयाचित कहलाता है। इसमें केवल उपवास होता है पूजन गौण होता है।

व्रत निषेध– अधिक मास, क्षय मास, गुरु, शुक्र के अस्त होनेपर नया व्रत आरम्भ नहीं करते हैं न ही उद्यापन करते हैं।

व्रत में ग्राह्य– सावा, नीवार, सिंघाड़ा, तिल, कंद, आलू, केला, नारियल, हरड़, पिपली, आवंला, गन्ना रस हमेशा व्रत में ग्राह्य होता है।

मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; २० नवम्बर से ४ दिसम्बर, २०२१ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपूर्व । ऋतुःहेमन्त, याम्यगोलः, याम्यायनं । ति·३० अयनांशाः२२:५०:२२

तिथि दिन	दिनाङ्क अंग्रेजी	व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि
१ श	२०	**श्री कार्तिकमास व्रत पारणा;** वृश्चिकेबुधः१८:२१,घं·१४:४०:४८; सर्वार्थ·रो; (१)
२ र	२१	द्विपुष्करः२+मृ;
३ चं	२२	अनुराधायांबुधः१३:६०,घं·१२:५७:५७;
४ मं	२३	**अंगारकी संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी;**
५ बु	२४	; (१) विशाखायांमङ्गलः३६:३१,घं·२१:५६; अमृत·१; द्विपुष्करः२+मृ;
६ गु	२५	रवियोगःआश्ले;
७ शु	२६	**गण्डान्तः१०:१४–२२:४५;** रवियोगःआश्ले; मृत्युबाण घं·१६:५५:३२उ·;
८ श	२७	**श्री कालभैरवाष्टमी; श्री कालाष्टमी;** मृत्युबाण घं·१७:१८:७या·;
९ र	२८	अमृत·१०;
१० चं	२९	ज्येष्ठायांबुधः५३:९,घं·४:४३:१९; अमृत·१०; सिद्ध·११;
११ मं	३०	**श्री उत्पन्ना एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त) ;** द्विपुष्करः१२+चि;
१२ बु	१	मृत्यु·१३;
१३ गु	२	**प्रदोष व्रतम्;**
१४ शु	३	ज्येष्ठायांरविः०८:३५,घं·१०:५६:५३;
३० श	४	**अमावस्या (स्नान, दान, श्राद्ध) ;** अमृत·१;

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	११:५०:०१–१३:१४:४२
१५	११:५५:०४–१३:१८:०२

मार्गशीर्ष मास कृत्य

इसके नाम से ही सिद्ध होता है कि यह मासों में शीर्ष पर स्थित होने के कारण अग्रणी एवं महत्त्वपूर्ण है।

तत्रादौ मार्गशीर्षे तु प्रभातस्नानपूर्वकम्। पूजयेद्राधिकाकृष्णौ भक्त्या परमया सुधीः॥ (वाराहपुराण)

मार्गशीर्ष मास में प्रभातकाल में स्नानादिपूर्वक परम अनन्य भक्ति के साथ श्रीराधाकृष्ण की समर्चना करें।

आठ-महाद्वादशी

उन्मीलिनी वञ्जुलिनी त्रिस्पर्शा पक्षवर्द्धिनी। जया च विजया चैव जयन्ती पापनाशिनी॥
द्वादश्योऽष्टौ महापुण्याः सर्वपापहरा द्विज॥ (ब्रह्मवैवर्त)

उन्मीलिनी, वञ्जुलिनी, त्रिस्पर्शा, पक्षवर्धिनी, जया, विजया, जयन्ती और पापनाशिनी ये आठ महाद्वादशियां पुण्यप्रद हैं और सम्पूर्ण पापों को हरण करने वाली हैं। इनका योग जानने का क्रम निम्नप्रकार से हैं -

१.जैसे एकादशी पूर्ण हो दूसरे दिन भी कुछ एकादशी हो, तो वह महाद्वादशी **'उन्मीलिनी'** कहलाती है।

२.एकादशी तथा द्वादशी सम्पूर्ण हो और फिर त्रयोदशी को भी कुछ अवशिष्ट हो, तो **'वञ्जुलिनी'** महाद्वादशी होती है।

३.प्रातःकाल एकादशी हो फिर द्वादशी का क्षय होकर रात्रि शेष में त्रयोदशी हो, तो वह महाद्वादशी **'त्रिस्पर्शा'** होती है।

४.अमावस्या या पूर्णिमा तिथि यदि दो हो जाय तो वह महाद्वादशी **'पक्षवर्द्धिनी'** नाम से कही जाती है।

५.किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी यदि पुनर्वसु नक्षत्र से युक्त हो तो वह **'जया'** नाम महाद्वादशी होती है।

६.किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी यदि श्रवण नक्षत्र से युक्त हो तो वह **'विजया'** नाम की महाद्वादशी होती है।

७.किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी रोहिणी नक्षत्र से युक्त हो, तो वह **'जयन्ती'** नाम की महाद्वादशी कहलाती है।

८.किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी पुष्य नक्षत्र से युक्त हो तो वह **'पापनाशिनी'** महाद्वादशी कहलाती है।

अतः इन आठों महाद्वादशियों में से किसी का भी योग आ जावे तो शुद्धा वेध रहित एकादशी को भी छोड़कर महाद्वादशी में व्रत करना चाहिये। **"शुद्धाप्येकादशी त्याज्या द्वादश्या समुपोषणम्"**(ब्रह्मवैवर्त)। **यह इस पञ्चांग में यथास्थान दी गईं हैं।**

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि ल·अं·	१ श घं·मि·से	२ र घं·मि·से	३ चं घं·मि·से	४ मं घं·मि·से	५ बु घं·मि·से	६ गु घं·मि·से	७ शु घं·मि·से	८ श घं·मि·से	९ र घं·मि·से	१० चं घं·मि·से	११ मं घं·मि·से	१२ बु घं·मि·से	१३ गु घं·मि·से	१४ शु घं·मि·से	१५ श घं·मि·से
वृश्चिकः	०८:५६:५८	०८:५३:००	०८:४९:०३	०८:४५:०६	०८:४१:०८	०८:३७:११	०८:३३:१४	०८:२९:१६	०८:२५:१९	०८:२१:२२	०८:१७:२५	०८:१३:२८	०८:०९:३१	०८:०५:३४	०८:०१:३७
धनुः	११:०२:२५	१०:५८:२८	१०:५४:३०	१०:५०:३३	१०:४६:३६	१०:४२:३९	१०:३८:४१	१०:३४:४४	१०:३०:४७	१०:२६:५०	१०:२२:५३	१०:१८:५६	१०:१४:५९	१०:११:०२	१०:०७:०५
मकरः	१२:४६:५९	१२:४३:०२	१२:३९:०५	१२:३५:०८	१२:३१:१०	१२:२७:१३	१२:२३:१६	१२:१९:१९	१२:१५:२२	१२:११:२५	१२:०७:२८	१२:०३:३१	११:५९:३४	११:५५:३७	११:५१:४०
कुम्भः	१४:१६:०९	१४:१२:११	१४:०८:१४	१४:०४:१७	१४:००:२०	१३:५६:२३	१३:५२:२६	१३:४८:२९	१३:४४:३२	१३:४०:३५	१३:३६:३८	१३:३२:४१	१३:२८:४४	१३:२४:४७	१३:२०:५०
मीनः	१५:४२:०३	१५:३८:०६	१५:३४:०९	१५:३०:१२	१५:२६:१५	१५:२२:१८	१५:१८:२१	१५:१४:२४	१५:१०:२७	१५:०६:३०	१५:०२:३३	१४:५८:३६	१४:५४:३९	१४:५०:४२	१४:४६:४६
मेषः	१७:१८:०१	१७:१४:०३	१७:१०:०६	१७:०६:०९	१७:०२:१२	१६:५८:१५	१६:५४:१८	१६:५०:२१	१६:४६:२४	१६:४२:२८	१६:३८:३१	१६:३४:३४	१६:३०:३७	१६:२६:४०	१६:२२:४४
वृष्	१९:१३:३३	१९:०९:३६	१९:०५:३९	१९:०१:४२	१८:५७:४५	१८:५३:४८	१८:४९:५१	१८:४५:५४	१८:४१:५७	१८:३८:००	१८:३४:०३	१८:३०:०७	१८:२६:१०	१८:२२:१३	१८:१८:१७
मिथुनः	२१:२७:४५	२१:२३:४८	२१:१९:५१	२१:१५:५५	२१:११:५८	२१:०८:०१	२१:०४:०४	२१:००:०७	२०:५६:१०	२०:५२:१४	२०:४८:१७	२०:४४:२०	२०:४०:२४	२०:३६:२७	२०:३२:३०
कर्कः	२३:४७:५७	२३:४४:००	२३:४०:०४	२३:३६:०७	२३:३२:१०	२३:२८:१३	२३:२४:१६	२३:२०:२०	२३:१६:२३	२३:१२:२६	२३:०८:३०	२३:०४:३३	२३:००:३६	२२:५६:४०	२२:५२:४३
सिंहः	०२:०४:२७	०२:००:३०	०१:५६:३३	०१:५२:३६	०१:४८:४०	०१:४४:४३	०१:४०:४६	०१:३६:५०	०१:३२:५३	०१:२८:५६	०१:२५:००	०१:२१:०३	०१:१७:०७	०१:१३:१०	०१:०९:१४
कन्या	०४:१९:२६	०४:१५:२९	०४:११:३२	०४:०७:३६	०४:०३:३९	०३:५९:४२	०३:५५:४६	०३:५१:४९	०३:४७:५३	०३:४३:५६	०३:४०:००	०३:३६:०३	०३:३२:०७	०३:२८:१०	०३:२४:१४
तुला	०६:३८:०३	०६:३४:०५	०६:३०:०८	०६:२६:२८	०६:२२:३१	०६:१८:३४	०६:१४:३८	०६:१०:४१	०६:०६:४५	०६:०२:४८	०५:५८:५२	०५:५४:५६	०५:५०:५९	०५:४७:०३	०५:४३:०६

सूर्योदयकालीन तिथिः४

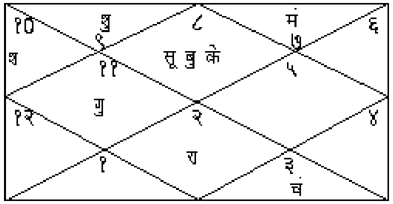

सूर्योदयकालीन तिथिः११

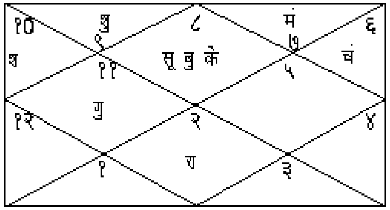

मार्गशीर्ष शुक्लपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वास्त, ५:१२:२०२१;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
२५:५३:५२	१ र	०९:५९	दि ११:०५:१३	**ज्ये·**	०६:५७	दि ०९:५२:०६	शूल	५१:१४	रा २७:३५:१५	बव ०९:५९	बाल ३७:०३	वृ·०६:५७	दि ०९:५२:०६	७:०५:२८	५:२७:००	काण	१९	५	**गण्डान्तः१५:२७;**
२५:५२:१३	२ चं	**०४:०८ ५४:२७**	**दि ०८:४५:३२ रा ३०:३२:२०**	मूल· पू·षा·	**०२:४९ ५६:१०**	**दि ०८:१३:५२ रा ३०:४१:५२**	गण्ड	४३:३४	रा २४:३२:०१	कौल ०४:०८	तैति ३१:१९	धनु	अहोरात्र	७:०६:१३	५:२७:०७	लुम्ब	२०	६	रवियोगःउषा;
२५:५०:४०	४ मं	५३:३१	रा २८:३१:१७	**उ·षा·**	५५:३७	रा २९:२१:५७	वृद्धि	३६:१५	रा २१:३६:५४	वणि २५:५८	विष ५३:३१	ध·१३:०५	दि १२:२१:०४	७:०६:५९	५:२७:१४	मानस	२१	७	**भद्रा १७:३०–२८:३१घं·;** द·न·उषा;
२५:४९:१२	५ बु	४९:०७	रा २६:४६:२३	**श्रवण**	५२:५६	रा २८:१८:०४	ध्रुव	२९:२५	रा १८:५३:३७	बव २१:१३	बाल ४९:०७	मकर	अहोरात्र	७:०७:४३	५:२७:२४	छत्र	२२	८	**पञ्चकारंभः२८:१८;** अमृत·६;
२५:४७:४९	६ गु	४५:३३	रा २५:२१:४७	**धनि·**	५१:०५	रा २७:३४:१५	व्याघ·	२३:१२	दि १६:२५:२४	कौल १७:१३	तैति ४५:३३	म·२१:५३	दि १५:५३:४२	७:०८:२७	५:२७:३५	श्रीवत्स	२३	९	रवियोगःध;
२५:४६:३३	७ शु	४३:००	रा २४:२१:१३	**शत·**	५०:१३	रा २७:१४:१९	हर्षण	१७:४४	दि १४:१४:५२	गर १४:०८	वणि ४३:००	कुंभ	अहोरात्र	७:०९:११	५:२७:४८	सौम्य	२४	१०	**भद्रारंभः२४:२१घं·;**
२५:४५:२१	८ श	४१:३६	रा २३:४८:१६	**पू·भा·**	५०:२९	रा २७:२१:३६	वज्र	१३:०८	दि १२:२४:५६	विष १२:०९	बव ४१:३६	कु·३५:१८	रा २१:१७:१५	७:०९:५४	५:२८:०२	कालदंड	२५	११	**भद्रांतः१२:०१घं·;** सिद्ध·९;
२५:४४:१६	९ र	४१:२७	रा २३:४५:१५	**उ·भा·**	५१:५९	रा २७:५८:०७	सिद्धि	०९:२७	दि १०:५७:२५	बाल ११:२१	कौल ४१:२७	मीन	अहोरात्र	७:१०:३६	५:२८:१८	प्रवर्द्ध	२६	१२	सर्वार्थ·उभा; रवियोगःउभा;
२५:४३:१६	१० चं	४२:३६	रा २४:१३:३१	**रेवती**	५४:४३	रा २९:०४:३४	व्यति·	०६:४६	दि ०९:५३:३२	तैति ११:५१	गर ४२:३६	मी·५४:४३	रा २९:०४:३४	७:११:१७	५:२८:३५	मातङ्ग	२७	१३	**पञ्चकान्तः२९:०५;** द·ति·१०;
२५:४२:२२	११ मं	४५:०१	रा २५:१२:१०	**अश्वि·**	५८:४०	रा ३०:४०:०१	वरी·	०५:०४	दि ०९:१३:३८	वणि १३:३९	विष ४५:०१	मेष	अहोरात्र	७:११:५८	५:२८:५४	अमृत	२८	१४	**भद्रा १२:४०–२५:१२घं·;** द·ति·१०;
२५:४१:३४	१२ बु	४८:३६	रा २६:३८:५०	**भरणी**	६०:००	अहोरात्र	परिघ	०४:१९	दि ०८:५६:०२	बव १६:४०	बाल ४८:३६	मेष	अहोरात्र	७:१२:३७	५:२९:१५	काण	२९	१५	**मासान्तः;** सिद्ध·१२;
२५:४०:५१	१३ गु	५३:०९	रा २८:२८:४१	**भरणी**	०३:४१	दि ०८:४१:४८	शिव	०४:२४	दि ०८:५८:४०	कौल २०:४६	तैति ५३:०९	मे·२०:०६	दि १५:१५:३३	७:१३:१६	५:२९:३७	पद्म	३०	१६	**संक्रान्ति पुण्यकालं,११:५३–१७:०२घं·;**
२५:४०:१५	१४ शु	५८:२०	रा ३०:३४:०५	**कृत्ति·**	०९:३४	दि ११:०३:३४	सिद्ध	०५:०९	दि ०९:१७:२२	गर २५:४१	वणि ५८:२०	वृष	अहोरात्र	७:१३:५४	५:३०:००	छत्र	१	१७	**भद्रारंभः३०:३४घं·; मासादिः;**
२५:३९:४५	१५ श	६०:००	अहोरात्र	**रोहि·**	१५:५९	दि १३:३८:०१	साध्य	०६:२०	दि ०९:४६:२५	विष ३१:०४	बव ६०:००	वृ·४९:१६	रा २६:५६:५४	७:१४:३२	५:३०:२५	श्रीवत्स	२	१८	**भद्रांतः१९:४०घं·;** सर्वार्थ·रो;
२५:३९:२०	१५ र	०३:४८	दि ०८:४६:२२	**मृग·**	२२:३१	दि १६:१५:४०	शुभ	०७:४०	दि १०:१९:०९	बव ०३:४८	बाल ३६:२९	मिथुन	अहोरात्र	७:१५:०८	५:३०:५२	सौम्य	३	१९	अमृत·१५;

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

तिथि	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से
१	०७:१८:३३:२९	०७:२८:२०:२८	०६:२९:४२:५५	०७:२५:३०:५४	१०:०२:५८:४७	०८:२३:१०:००	०९:११:४७:३१	०७:०९:१२:४३	४२:५६:५६	०७:५२:०३	द·२२:३९:३३	+१०:३४
२	०७:१९:३४:३७	०८:१२:३९:४१	०७:००:२३:३७	०७:२७:१३:३४	१०:०३:०७:१५	०८:२३:२४:२१	०९:११:५२:५९	०७:०९:०९:३३	४२:५६:०६	०८:५२:२८	द·२२:४७:५८	+१०:०८
४	०७:२०:३५:४७	०८:२६:५४:२७	०७:०१:०४:२१	०७:२८:५५:४५	१०:०३:१५:५२	०८:२३:३६:३४	०९:११:५८:३०	०७:०९:०६:२२	४२:५५:२०	०९:४७:४६	द·२२:५५:५६	+ ९:४२
५	०७:२१:३६:५७	०९:११:०१:३१	०७:०१:४५:०७	०८:००:३७:२१	१०:०३:२४:३८	०८:२३:४६:३३	०९:१२:०४:०६	०७:०९:०३:११	४२:५४:३६	१०:३८:१५	द·२३:०३:२८	+ ९:१४
६	०७:२२:३८:०९	०९:२४:५८:०४	०७:०२:२५:५५	०८:०२:१८:१९	१०:०३:३३:३२	०८:२३:५४:१६	०९:१२:०९:४५	०७:०९:००:००	४२:५३:५५	११:२१:५६	द·२३:१०:३२	+ ८:४७
७	०७:२३:३९:२२	१०:०८:४१:४७	०७:०३:०६:४४	०८:०३:५८:३६	१०:०३:४२:३४	०८:२३:५९:३९	०९:१२:१५:२८	०७:०८:५६:५०	४२:५३:१६	१२:०२:५५	द·२३:१७:०८	+ ८:१९
८	०७:२४:४०:३५	१०:२२:११:०३	०७:०३:४७:३५	०८:०५:३८:०७	१०:०३:५१:४५	०८:२४:०२:३९	०९:१२:२१:१५	०७:०८:५३:३९	४२:५२:४१	१२:३८:४९	द·२३:२३:१७	+ ७:५०
९	०७:२५:४१:४९	११:०५:२४:५६	०७:०४:२८:२८	०८:०७:१६:४८	१०:०४:०१:०३	०८:२४:०३:१२	०९:१२:२७:०५	०७:०८:५०:२८	४२:५२:०८	१३:१३:५५	द·२३:२८:५८	+ ७:२१
१०	०७:२६:४३:०५	११:१८:२३:१६	०७:०५:०९:२२	०८:०८:५४:३५	१०:०४:१०:३०	०८:२४:०१:१५	०९:१२:३२:५९	०७:०८:४७:१७	४२:५१:३८	१४:२१:००	द·२३:३४:११	+ ६:५२
११	०७:२७:४४:२१	००:०१:०६:४१	०७:०५:५०:१८	०८:१०:३१:२२	१०:०४:२०:०५	०८:२३:५६:४८	०९:१२:३८:५६	०७:०८:४४:०६	४२:५१:११	१४:२१:४१	द·२३:३८:५५	+ ६:२२
१२	०७:२८:४५:३८	००:१३:३६:३२	०७:०६:३१:१६	०८:१२:०७:०४	१०:०४:२९:४७	०८:२३:४९:४८	०९:१२:४४:५६	०७:०८:४०:५६	४२:५०:४७	१४:५९:०५	द·२३:४३:११	+ ५:५२
१३	०७:२९:४६:५६	००:२५:५४:५१	०७:०७:१२:१६	०८:१३:४१:३७	१०:०४:३९:३७	०८:२३:४०:१४	०९:१२:५०:६०	०७:०८:३७:४५	४२:५०:२६	१५:३६:५०	द·२३:४६:५८	+ ५:२१
१४	०८:००:४८:१४	०१:०८:०४:१५	०७:०७:५३:१७	०८:१५:१४:५४	१०:०४:४९:३५	०८:२३:२८:०६	०९:१२:५७:०६	०७:०८:३४:३४	४२:५०:०८	१६:१७:५६	द·२३:५०:१७	+ ४:५१
१५	०८:०१:४९:३४	०१:२०:०७:५१	०७:०८:३४:२१	०८:१६:४६:४९	१०:०४:५९:४०	०८:२३:१३:२५	०९:१३:०३:१६	०७:०८:३१:२३	४२:४९:५२	१७:०३:३८	द·२३:५३:०७	+ ४:२०
१५	०८:०२:५०:५४	०२:०२:०९:०५	०७:०९:१५:२६	०८:१८:१७:१६	१०:०५:०९:५२	०८:२२:५६:१२	०९:१३:०९:२९	०७:०८:२८:१३	४२:४९:४०	१७:४९:२६	द·२३:५५:२७	+ ३:४८

भगवान् श्रीकृष्ण ने गीताजी में स्वयं कहा है कि मासानां *"मार्गशीर्षोऽहं"* अतएव यह माह अत्यंत पवित्र है। श्रीसनत्कुमार कहते हैं– मार्गशीर्ष माह जो परमपवित्र है, उसमें यत्नपूर्वक तुलसी के पवित्र वन में जाकर परम भक्ति से भगवान् श्रीविष्णु की पूजा करें।

श्रीमोक्षदा एकादशी व्रत एवं **श्रीगीता जयन्ती** मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी के दिन कुरुक्षेत्र में भगवान् ने अर्जुन को युद्धकाल में मोह होने पर श्रीगीताजी का उपदेश किया। मार्गशीर्ष शुक्ल द्वादशी **श्रीव्यंजन द्वादशी** कहलाती है, विभिन्न प्रकार के व्यञ्जन सिद्ध करके श्रीठाकुर जी के भोग लगावें। इसी दिन कल्पभेद से **श्रीनारद जयन्ती** होती है, भक्ति–ज्ञान–वैराग्य आदि समस्त साधनों का समस्त लोकों में घूम–घूमकर प्रचार–प्रसार करने वाले कीर्तनकला विशेषज्ञ देवर्षिवर्य श्रीनारद जी के नाम को कौन नहीं जनता। आप सभी जीवों पर समान भाव रखते हुए सबका हितचिन्तन किया करते हैं।

तिथि दिन	दिनाङ्क अंग्रेजी	व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि
१ र	५	वृश्चिकेमङ्गलः२५:१२,घं·१७:३७:३; सर्वार्थ·मू; मृत्युबाण घं·२१:२:११उ·;
२ चं	६	मृत्युबाण घं·२१:२९:७या·;
४ मं	७	**अंगारकी वैनायकी श्री गणेश चतुर्थी; अभिजितः४१:२५–५९:२६; ①**
५ बु	८	**श्री विवाहपञ्चमी; श्री सीताराम विवाहोत्सव;** रवियोगःध; द·न·ध;
६ गु	९	**श्री स्कन्दषष्ठी; चम्पा षष्ठी;**
७ शु	१०	अनुराधायांमङ्गलः१९:३०,घं·१५:२३:५४;
८ श	११	रवियोगःउभा;
९ र	१२	**श्री स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (अंग्रेजी);** अमृत·१०; रवियोगःरे;
१० चं	१३	**गण्डान्तारम्भः२२:४५; व्यतिपात पुण्य;** अमृत·१०; रवियोगःरे; सिद्ध·११;
११ मं	१४	**श्री मोक्षदा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त); श्री गीता जयन्ती; गण्डान्तः११:२६;** सर्वार्थ·अ; अमृत·१२; मृत्युबाण घं·१:१७:४उ·;
१२ बु	१५	**श्री मत्स्य द्वादशी; श्री व्यञ्जन द्वादशी; श्री पक्षवर्द्धिनी महाद्वादशी;** पूर्वाषाढ़ेबुधः४६:१३,घं·२:८:४४; वक्रःशुक्रः३८:१०; मृत्युबाण घं·१:४६:५७या·;
१३ गु	१६	**श्री नारद जयन्ती (सम्प्रदायभेद); प्रदोष व्रतम्; मूलेधनुषिरविः१२:४८,घं·१२:४७:९;** वक्रःशुक्रः३८:१०; अमृत·१३; रवियोगःकृ;
१४ शु	१७	**खर मास आरम्भ;** अमृत·१४; रवियोगःरो; मृत्युबाण घं·२:४७:३१उ·;
१५ श	१८	**पूर्णिमा व्रतम्; श्री दत्तात्रेय जयन्ती;** रवियोगःरो; मृत्युबाण घं·३:१८:१०या·;
१५ र	१९	**पूर्णिमा (स्नान–दान); श्री त्रिपुरभैरवी जयन्ती;**

① मूलेधनुषिबुधः३७:५५,घं·२२:४३:४०; रवियोगःउषा;

मार्गशीर्ष मास कृत्य

धनुसंक्रान्ति- मार्गशीर्ष मास में धनु संक्रान्ति होने के कारण किसी भी प्रकार का शुभकर्म वर्जित है। धनु एवं मीन राशि बृहस्पति ग्रह की राशियाँ हैं। इनमें सूर्य के प्रवेश करते ही खरमास दोष लगता है। अतः समस्त शुभकर्म वर्जित हो जाते हैं। १६ दिसम्बर २०२१, दिन १२.४७ बजे से, १४ जनवरी २०२२ रात्रि ८.४१ बजे तक धनुसंक्रान्तिजनित खरमास(मलमास) दोष रहेगा।

बाल दृष्टि (नजर) दोष निवारण

छोटे, सुकुमार, सुन्दर, सजे, हंसमुख और वाचाल बच्चों पर दृष्टि (नजर) दोष लग जाने से वे बीमार हो जाते हैं, या रुदन करने लगते हैं। दृष्टिदोष उतारने की विधि यहाँ दी जा रही है -

भस्मधारणविधि- हवन के भस्म या पवित्राग्नि भस्म को अभिमंत्रित कर बच्चे के शिर, ललाट, हृदय आदि अंगों पर लगाना चाहिए। मंत्र यह है-

वासुदेवो जगन्नाथः पूतना तर्जनो हरिः। रक्षतु त्वरितो बालं मुञ्च मुञ्च कुमारकम् ।१।
कृष्ण रक्ष शिशुं शंख-मधु-कैटभमर्दन। प्रातः संगव-मध्याह्न-सायांह्नेषु संध्ययोः ।२।
महानिशि सदा रक्ष कंसारिष्टनिषूदन। पद्मोरगपिशाचांश्च ग्रहान्मातृग्रहान्नपि ।३।
बालग्रहान् विशेषेण छिन्धि छिन्धि महाभयान्। त्राहि-त्राहि हरे! नित्यं त्वद्रक्षाभूषितं शिशुम् ।४।

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	११:५५:३१–१३:१८:२३
१५	१२:०२:२८–१३:२४:३४

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि ल·अं·	१ र घं·मि·से	२ चं घं·मि·से	४ मं घं·मि·से	५ बु घं·मि·से	६ गु घं·मि·से	७ शु घं·मि·से	८ श घं·मि·से	९ र घं·मि·से	१० चं घं·मि·से	११ मं घं·मि·से	१२ बु घं·मि·से	१३ गु घं·मि·से	लग्न अन्त	१४ शु घं·मि·से	१५ श घं·मि·से	१५ र घं·मि·से
वृश्चिकः	०७:५७:४०	०७:५३:४३	०७:४९:४६	०७:४५:४९	०७:४१:५३	०७:३७:५६	०७:३३:५९	०७:३०:०२	०७:२६:०६	०७:२२:०९	०७:१८:१२	०७:१४:१६	धनुः	०९:१५:४८	०९:११:५१	०९:०७:५४
धनुः	१०:०३:०८	०९:५९:११	०९:५५:१५	०९:५१:१८	०९:४७:२१	०९:४३:२४	०९:३९:२८	०९:३५:३१	०९:३१:३४	०९:२७:३८	०९:२३:४१	०९:१९:४४	मकरः	११:००:२३	१०:५६:२७	१०:५२:३०
मकरः	११:४७:४४	११:४३:४७	११:३९:५०	११:३५:५३	११:३१:५६	११:२८:००	११:२४:०३	११:२०:०६	११:१६:१०	११:१२:१३	११:०८:१६	११:०४:२०	कुम्भः	१२:२९:३३	१२:२५:३७	१२:२१:४०
कुम्भः	१३:१६:५३	१३:१२:५७	१३:०९:००	१३:०५:०३	१३:०१:०६	१२:५७:१०	१२:५३:१३	१२:४९:१७	१२:४५:२०	१२:४१:२३	१२:३७:२७	१२:३३:३०	मीनः	१३:५५:२९	१३:५१:३३	१३:४७:३६
मीनः	१४:४२:४९	१४:३८:५२	१४:३४:५५	१४:३०:५९	१४:२७:०२	१४:२३:०५	१४:१९:०९	१४:१५:१२	१४:११:१५	१४:०७:१९	१४:०३:२२	१३:५९:२६	मेषः	१५:३१:२८	१५:२७:३१	१५:२३:३४
मेषः	१६:१८:४७	१६:१४:५०	१६:१०:५४	१६:०६:५७	१६:०३:००	१५:५९:०४	१५:५५:०७	१५:५१:१०	१५:४७:१४	१५:४३:१७	१५:३९:२१	१५:३५:२४	वृष्	१७:२७:०१	१७:२३:०४	१७:१९:०८
वृष्	१८:१४:२०	१८:१०:२३	१८:०६:२७	१८:०२:३०	१७:५८:३३	१७:५४:३७	१७:५०:४०	१७:४६:४४	१७:४२:४७	१७:३८:५१	१७:३४:५४	१७:३०:५८	मिथुनः	१९:४१:१५	१९:३७:१९	१९:३३:२२
मिथुनः	२०:२८:३४	२०:२४:३७	२०:२०:४०	२०:१६:४४	२०:१२:४७	२०:०८:५१	२०:०४:५४	२०:००:५८	१९:५७:०१	१९:५३:०५	१९:४९:०८	१९:४५:१२	कर्कः	२२:०१:२९	२१:५७:३२	२१:५३:३६
कर्कः	२२:४८:४७	२२:४४:५०	२२:४०:५४	२२:३६:५७	२२:३३:०१	२२:२९:०४	२२:२५:०८	२२:२१:११	२२:१७:१५	२२:१३:१८	२२:०९:२२	२२:०५:२५	सिंहः	००:१८:००	००:१४:०३	००:१०:०७
सिंहः	०१:०५:१७	०१:०१:२१	००:५७:२४	००:५३:२८	००:४९:३१	००:४५:३५	००:४१:३९	००:३७:४२	००:३३:४६	००:२९:४९	००:२५:५३	००:२१:५६	कन्या	०२:३३:००	०२:२९:०४	०२:२५:०७
कन्या	०३:२०:१७	०३:१६:२१	०३:१२:२४	०३:०८:२८	०३:०४:३२	०३:००:३५	०२:५६:३९	०२:५२:४२	०२:४८:४६	०२:४४:५०	०२:४०:५३	०२:३६:५७	तुला	०४:५१:५४	०४:४७:५७	०४:४४:०१
तुला	०५:३९:१०	०५:३५:१४	०५:३१:१७	०५:२७:२१	०५:२३:२५	०५:१९:२८	०५:१५:३२	०५:११:३६	०५:०७:३९	०५:०३:४३	०४:५९:४६	०४:५५:५०	वृश्चिकः	०७:१०:१९	०७:०६:२२	०७:०२:२६

सूर्योदयकालीन तिथिः४

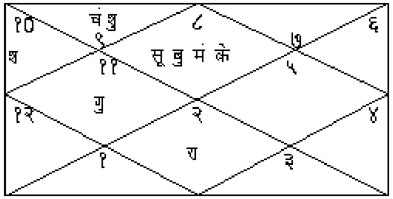

सूर्योदयकालीन तिथिः११

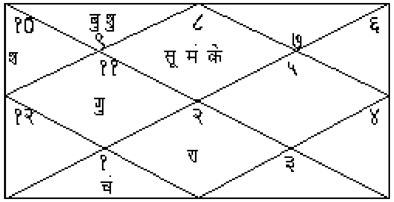

पौष कृष्णपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; वक्री शुक्रःपश्चिमोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः, २०:१२:२०२१;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
२५:३९:०२	१ चं	०९:०४	दि १०:५३:१७	**आर्द्रा**	२८:४५	रा १८:४५:५१	शुक्ल	०८:५०	दि १०:४७:४७	कौल ०९:०४	तैति ४१:३०	मिथुन	अहोरात्र	७:१५:४३	५:३१:२०	कालदंड	४	२०	सिद्ध·१;
२५:३८:५०	२ मं	१३:४४	दि १२:४५:५०	**पुन·**	३४:२०	रा २१:००:०६	ब्रह्म	०९:३४	दि ११:०५:४२	गर १३:४४	वणि ४५:४४	मि·१८:०१	दि १४:२८:३५	७:१६:१७	५:३१:४९	प्रवर्द्ध	५	२१	**भद्रारंभः२५:३४घं·;** द·ति·२;
२५:३८:४४	३ बु	१७:२९	दि १४:१६:१५	**पुष्य**	३८:५६	रा २२:५१:१३	ऐन्द्र	०९:३६	दि ११:०७:२२	विष १७:२९	बव ४८:५५	कर्क	अहोरात्र	७:१६:५०	५:३२:१९	मातङ्ग	६	२२	**भद्रांतः१४:१६घं·;**
२५:३८:४४	४ गु	२०:०५	दि १५:१९:१४	**आश्ले·**	४२:२४	रा २४:१५:०१	वैधृ·	०८:४८	दि १०:४८:३८	बाल २०:०५	कौल ५०:५५	क·४२:२४	रा २४:१५:०१	७:१७:२१	५:३२:५१	अमृत	७	२३	**गण्डान्तः१७:५७–३०:३१;**
२५:३८:५०	५ शु	२१:२५	दि १५:५१:५२	**मघा**	४४:३८	रा २५:०९:११	विष्कु·	०७:०४	दि १०:०७:२३	तैति २१:२५	गर ५१:३६	सिंह	अहोरात्र	७:१७:५२	५:३३:२४	काण	८	२४	उत्तराषाढ़ेबुधः५८:१६,घं·७:३:४;
२५:३९:०२	६ श	२१:२८	दि १५:५३:२३	**पू·फा·**	४५:३८	रा २५:३३:२४	प्रीति	०४:२०	दि ०९:०२:१०	वणि २१:२८	विष ५१:००	सिंह	अहोरात्र	७:१८:२१	५:३३:५८	लुम्ब	९	२५	**भद्रा १५:५३–२७:४२घं·;** अमृत·६;
२५:३९:२०	७ र	२०:१५	दि १५:२४:४८	**उ·फा·**	४५:२६	रा २५:२९:१०	आयु· सौभा	**००:३६ ५५:२१**	**दि ०७:३३:२१ रा २९:४१:४५**	बव २०:१५	बाल ४९:१२	सिं·००:४१	दि ०७:३५:२२	७:१८:४९	५:३४:३४	मित्र	१०	२६	सर्वार्थ·उफा; त्रिपुष्करः७+उफा;
२५:३९:४५	८ चं	१७:५२	दि १४:२८:१२	**हस्त**	४४:०९	रा २४:५९:०४	शोभ·	५०:२७	रा २७:२९:५३	कौल १७:५२	तैति ४६:१७	कन्या	अहोरात्र	७:१९:१६	५:३५:१०	वज्र	११	२७	मकरेबुधः३९:४१,घं·२३:३८:३९;
२५:४०:१५	९ मं	१४:२८	दि १३:०६:५८	**चित्रा**	४१:५७	रा २४:०६:३४	अतिग·	४४:१२	रा २५:००:३९	गर १४:२८	वणि ४२:२६	कं·१३:१०	दि १२:३५:३२	७:१९:४२	५:३५:४८	ध्वांक्ष	१२	२८	**भद्रारंभः२४:१८घं·;**
२५:४०:५१	१० बु	१०:१३	दि ११:२५:०९	**स्वाती**	३८:५९	रा २२:५५:३१	सुकर्मा	३७:२१	रा २२:१६:२९	विष १०:१३	बव ३७:४८	तुला	अहोरात्र	७:२०:०६	५:३६:२७	धूम्र	१३	२९	**भद्रांतः११:२५घं·;** अमृत·११;
२५:४१:३४	११ गु	**०५:१५ ५४:३२**	**दि ०९:२६:२४ रा ३१:१५:१२**	**विशा·**	३५:२४	रा २१:३०:१७	धृति	३०:००	रा १९:२०:३८	बाल ०५:१५	कौल ३२:३४	तु·२१:२१	दि १५:५२:४६	७:२०:२९	५:३७:०६	प्रवर्द्ध	१४	३०	सर्वार्थ·अनु; अमृत·१३;
२५:४२:२२	१३ शु	५३:५९	रा २८:५६:३६	**अनु·**	३१:२७	रा १९:५५:३४	शूल	२२:२०	दि १६:१६:४७	गर २६:५५	वणि ५३:५९	वृश्चिक	अहोरात्र	७:२०:५०	५:३७:४७	राक्षस	१५	३१	**भद्रारंभः२८:५७घं·;** द·न·ज्ये;
२५:४३:१६	१४ श	४८:०५	रा २६:३५:२१	**ज्ये·**	२७:१७	रा १८:१६:०१	गण्ड	१४:२८	दि १३:०८:२२	विष २१:०३	बव ४८:०५	वृ·२७:१७	रा १८:१६:०१	७:२१:१०	५:३८:२९	मुसल	१६	१	**भद्रांतः१५:४६घं·;**
२५:४४:१६	३० र	४२:१८	रा २४:१६:४०	**मूल**	२३:०९	दि १६:३६:५९	वृद्धि· ध्रुव	**०६:३४ ५२:१५**	**दि ०९:५९:१६ रा ३०:५३:१६**	चतु १५:१०	नाग ४२:१८	धनु	अहोरात्र	७:२१:२९	५:३९:११	सिद्धि	१७	२	सर्वार्थ·मू; अमृत·१५;

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

तिथि	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से
१	०८:०३:५२:१४	०२:१४:११:५७	०७:०९:५६:३३	०८:१९:४६:०९	१०:०५:२०:११	०८:२२:३६:३१	०९:१३:१५:४५	०७:०८:२५:०२	४२:४९:३१	१८:४२:२०	द·२३:५७:१९	+ ३:१७
२	०८:०४:५३:३५	०२:२६:२०:०१	०७:१०:३७:४२	०८:२१:१३:१९	१०:०५:३०:३८	०८:२२:१४:२४	०९:१३:२२:०४	०७:०८:२१:५१	४२:४९:२५	१९:३५:४८	द·२३:५८:४१	+ २:४५
३	०८:०५:५४:५७	०३:०८:३६:२५	०७:११:१८:५३	०८:२२:३८:४०	१०:०५:४१:११	०८:२१:४९:५८	०९:१३:२८:२५	०७:०८:१८:४०	४२:४९:२२	२०:३०:५१	द·२३:५९:३५	+ २:१४
४	०८:०६:५६:२०	०३:२१:०३:५३	०७:१२:००:०५	०८:२४:०२:०२	१०:०५:५१:५२	०८:२१:२३:१८	०९:१३:३४:५०	०७:०८:१५:३०	४२:४९:२२	२१:२७:३६	द·२३:५९:५९	+ १:४२
५	०८:०७:५७:४३	०४:०३:४४:३४	०७:१२:४१:२०	०८:२५:२३:१७	१०:०६:०२:३९	०८:२०:५४:३२	०९:१३:४१:१७	०७:०८:१२:१९	४२:४९:२५	२२:२५:१६	द·२३:५९:५३	+ १:१०
६	०८:०८:५९:०६	०४:१६:३९:५८	०७:१३:२२:३६	०८:२६:४२:१५	१०:०६:१३:३२	०८:२०:२३:४९	०९:१३:४७:४६	०७:०८:०९:०८	४२:४९:३१	२३:२२:५९	द·२३:५९:१९	+ ०:३८
७	०८:१०:००:३०	०४:२९:५०:४९	०७:१४:०३:५५	०८:२७:५८:४६	१०:०६:२४:३२	०८:१९:५१:२०	०९:१३:५४:१८	०७:०८:०५:५७	४२:४९:४०	२४:२१:५९	द·२३:५८:१५	+ ०:०७
८	०८:११:०१:५४	०५:१३:१७:०७	०७:१४:४५:१५	०८:२९:१२:३९	१०:०६:३५:३९	०८:१९:१७:१५	०९:१४:००:५३	०७:०८:०२:४७	४२:४९:५२	०१:२२:२७	द·२३:५६:४२	– ०:२५
९	०८:१२:०३:१९	०५:२६:५८:०४	०७:१५:२६:३७	०९:००:२३:४४	१०:०६:४६:५२	०८:१८:४१:४९	०९:१४:०७:३०	०७:०७:५९:३६	४२:५०:०८	०२:२३:५७	द·२३:५४:३९	– ०:५७
१०	०८:१३:०४:४४	०६:१०:५२:१०	०७:१६:०८:०१	०९:०१:३१:४६	१०:०६:५८:१०	०८:१८:०५:१५	०९:१४:१४:०९	०७:०७:५६:२५	४२:५०:२६	०३:२८:२५	द·२३:५२:०८	– १:२८
११	०८:१४:०६:०९	०६:२४:५७:१४	०७:१६:४९:२७	०९:०२:३६:३४	१०:०७:०९:३५	०८:१७:२७:४७	०९:१४:२०:५१	०७:०७:५३:१४	४२:५०:४७	०४:३३:३५	द·२३:४९:०७	– १:००
१३	०८:१५:०७:३४	०७:०९:१०:३१	०७:१७:३०:५६	०९:०३:३७:५४	१०:०७:२१:०६	०८:१६:४९:४२	०९:१४:२७:३४	०७:०७:५०:०४	४२:५१:११	०५:३७:५०	द·२३:४५:३८	– २:३१
१४	०८:१६:०८:५९	०७:२३:२८:५२	०७:१८:१२:२६	०९:०४:३५:३१	१०:०७:३२:४३	०८:१६:११:१५	०९:१४:३४:२०	०७:०७:४६:५३	४२:५१:३८	०६:४२:०३	द·२३:४१:३९	– ३:०२
१५	०८:१७:१०:२४	०८:०७:४८:४२	०७:१८:५३:५८	०९:०५:२९:११	१०:०७:४४:२५	०८:१५:३२:४६	०९:१४:४१:०८	०७:०७:४३:४२	४२:५२:०८	०७:३७:४४	द·२३:३७:१२	– ३:३२

व्रत परिभाषा– ऋषि, मुनि, सिद्ध एवं परमाचार्यों द्वारा प्रसिद्धि प्राप्त विषय के संकल्प विशेष को व्रत कहते हैं। अतः सामान्य व्यक्ति नया व्रत नहीं बना सकता। *अभियुक्तप्रसिद्धिविषयो यः संकल्पविशेषः स एव व्रतम्।*

व्रतके अंग– किसी भी व्रत के तीन अंग होते हैं १· उपवास, २· पूजन और ३· पारणा। तत् पूजनोपवासपारणारूपम्। वस्तुतः उपवासही मुख्य रूप से व्रत होता है पर पूजन और पारणा के बिना यह पूर्ण नहीं होता है। “उपवासएवव्रतम्”

व्रत फल– व्रत करने से जीवन में अलभ्य का लाभ तथा असाध्य की प्राप्ति होती है।

व्रतनाशक तत्व– बारबार जल पीना, पान खाना, दिनमें सोना, मैथुन, मिथ्याभाषण, जुआ खेलना, पाप करना, दो बार अल्पाहार लेना मना है।

व्रत में अनिवार्य– प्रत्येक व्रत के देवता की पूजा अवश्य करनी चाहिए। क्षमा, सत्य, दया, दान, शौच, इन्द्रियनिग्रह, देवपूजा, हवन, संतोष और अचौर्य ये दशतत्व व्रत में अनिवार्य हैं।

पौष कृष्णपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; २० दिसम्बर से २ जनवरी,२०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपूर्व । ऋतुःहेमन्त, याम्यगोलः, याम्यायनं । ति·३० अयनांशाः२३:५०:२७

तिथि / दिन	दिनाङ्क / अंग्रेजी	व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि
१ चं	२०	द·ति·२;
२ मं	२१	अमृत·२; त्रिपुष्कर:२+पुन; सिद्ध·३;
३ बु	२२	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी;**
४ गु	२३	सिद्ध·५;
५ शु	२४	सिद्ध·६; रवियोग:पूफा;
६ श	२५	**म·म·पं· मदनमोहन मालवीय जयन्ती;** रवियोग:पूफा; ①
७ र	२६	**श्री कालाष्टमी;** सिद्ध·८; सर्वार्थ·ह; मृत्युबाण घं·७:३०:५५या·;
८ चं	२७	शतभिषायांगुरुः२३:२२,घं·१७:६:४४; द·न·चि;
९ मं	२८	; ① त्रिपुष्कर:७+उफा; मृत्युबाण घं·७:३१:३१उ·;
१० बु	२९	**श्रीपार्श्वनाथ जन्मकल्याणक जयन्ती (जैन) ;** ②
११ गु	३०	**श्री सफला एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त) ; त्रिस्पर्शा महाद्वादशी;**
१३ शु	३१	**प्रदोष व्रतम्;** सर्वार्थ·अनु; अमृत·१४;
१४ श	१	**गण्डान्तः१२:४१–२३:५१; मासशिवरात्रि व्रतम्; ईस्वी वर्ष सन् २०२२ आरम्भ;** सिद्ध·१४;
३० र	२	**अमावस्या (स्नान, दान, श्राद्ध) ;** ② पूर्वाषाढ़ेरविः१४:५५,घं·१३:४४:५८; ज्येष्ठायांमङ्गलः४६:१८,घं·२:१८:१३;

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	१२:०२:६०–१३:२५:०५
१५	१२:०९:४५–१३:३२:०६

प्राणायाम की सही विधि

- आचार्य श्री विनय झा

प्राणायाम की दुर्लभ एवं पूर्ण विधि का उल्लेख कम जगह मिलता है अतः पूर्ण विधि दी जा रही है :--

क्रम:-- **१. पूरक,** **२. अन्तः-कुम्भक,** **३. रेचक,** **४. बाह्य कुम्भक**

पूरक - तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए सम गति से श्वास अन्दर लेना।

अन्तः-कुम्भक - तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए श्वास अन्दर रोकना।

रेचक - तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए सम गति से श्वास बाहर त्यागना।

बाह्य कुम्भक - तीन सावित्री मन्त्र तेजी से पढ़ते हुए श्वास बाहर त्यागकर रोकना।

गायत्री मन्त्र का ही विस्तारित रूप है सावित्री मन्त्र। प्राणायाम में जप हेतु **सावित्री मन्त्र-**

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यम्। भर्गो देवस्य धीमहि। धि यो यो नः प्रचोदयात्॥

ॐ आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वर्॥ ॐ॥

"स्वर्॥ ॐ" का उच्चारण है "स्वरोम्"॥

बाह्य कुम्भक कष्टदायक होता है, अतः अधिकाँश जगह लिखा नहीं होता है। बाह्य कुम्भक जितना कष्टदायक होता है उतने ही पिछले और वर्तमान जन्मों के प्रकट (क्रियमाण) और छुपे हुए (सञ्चित) कुसंस्कार नष्ट होते हैं और सद्-बुद्धि बढती है। प्राणायाम वैदिक सन्ध्यावन्दन का अनिवार्य भाग है। प्रातः (और सम्भव हो तो सन्ध्याकाल में भी) नित्यकर्म के पश्चात न्यूनतम तीन प्राणायाम बाएँ नाक से और तीन दाहिने नाक से करने चाहिए: बारी-बारी से, अर्थात पहले बाएँ, फिर दाँए, फिर बाएँ..। बाह्य कुम्भक अचेतन मन के कुसंस्कारों को ध्वस्त करने और पूर्ण चैतन्य बनने का सर्वोत्तम साधन है। जो जनेऊ नहीं पहनते हैं वे उतने ही काल तक अपने इष्टदेव के मन्त्र का जप कर सकते हैं।

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि / ल·अं·	१ चं घं·मि·से	२ मं घं·मि·से	३ बु घं·मि·से	४ गु घं·मि·से	५ शु घं·मि·से	६ श घं·मि·से	७ र घं·मि·से	८ चं घं·मि·से	९ मं घं·मि·से	१० बु घं·मि·से	११ गु घं·मि·से	१३ शु घं·मि·से	१४ श घं·मि·से	१५ र घं·मि·से
धनुः	०९:०३:५८	०९:००:०१	०८:५६:०५	०८:५२:०८	०८:४८:११	०८:४४:१५	०८:४०:१८	०८:३६:२१	०८:३२:२५	०८:२८:२८	०८:२४:३१	०८:२०:३५	०८:१६:३८	०८:१२:४१
मकरः	१०:४८:३३	१०:४४:३७	१०:४०:४०	१०:३६:४४	१०:३२:४७	१०:२८:५०	१०:२४:५४	१०:२०:५७	१०:१७:००	१०:१३:०४	१०:०९:०७	१०:०५:१०	१०:०१:१४	०९:५७:१७
कुम्भः	१२:१७:४४	१२:१३:४७	१२:०९:५०	१२:०५:५४	१२:०१:५७	११:५८:०१	११:५४:०४	११:५०:०७	११:४६:११	११:४२:१४	११:३८:१७	११:३४:२०	११:३०:२४	११:२६:२७
मीनः	१३:४३:३९	१३:३९:४३	१३:३५:४६	१३:३१:५०	१३:२७:५३	१३:२३:५६	१३:२०:००	१३:१६:०३	१३:१२:०६	१३:०८:१०	१३:०४:१३	१३:००:१६	१२:५६:१९	१२:५२:२३
मेषः	१५:१९:३८	१५:१५:४१	१५:११:४५	१५:०७:४८	१५:०३:५१	१४:५९:५५	१४:५५:५८	१४:५२:०१	१४:४८:०५	१४:४४:०८	१४:४०:११	१४:३६:१५	१४:३२:१८	१४:२८:२१
वृष्	१७:१५:११	१७:११:१५	१७:०७:१८	१७:०३:२२	१६:५९:२५	१६:५५:२८	१६:५१:३२	१६:४७:३५	१६:४३:३८	१६:३९:४२	१६:३५:४५	१६:३१:४८	१६:२७:५१	१६:२३:५४
मिथुनः	१९:२९:२६	१९:२५:२९	१९:२१:३२	१९:१७:३६	१९:१३:३९	१९:०९:४३	१९:०५:४६	१९:०१:४९	१८:५७:५३	१८:५३:५६	१८:४९:५९	१८:४६:०२	१८:४२:०५	१८:३८:०९
कर्कः	२१:४९:३९	२१:४५:४३	२१:४१:४६	२१:३७:४९	२१:३३:५३	२१:२९:५६	२१:२६:००	२१:२२:०३	२१:१८:०६	२१:१४:०९	२१:१०:१३	२१:०६:१६	२१:०२:१९	२०:५८:२२
सिंहः	००:०६:१०	००:०२:१४	२३:५८:१७	२३:५४:२१	२३:५०:२४	२३:४६:२७	२३:४२:३१	२३:३८:३४	२३:३४:३७	२३:३०:४१	२३:२६:४४	२३:२२:४७	२३:१८:५०	२३:१४:५३
कन्या	०२:२१:११	०२:१७:१४	०२:१३:१८	०२:०९:२१	०२:०५:२५	०२:०१:२८	०१:५७:३१	०१:५३:३४	०१:४९:३८	०१:४५:४१	०१:४१:४४	०१:३७:४७	०१:३३:५०	०१:२९:५३
तुला	०४:४०:०४	०४:३६:०८	०४:३२:११	०४:२८:१५	०४:२४:१८	०४:२०:२१	०४:१६:२५	०४:१२:२८	०४:०८:३१	०४:०४:३४	०४:००:३७	०३:५६:४१	०३:५२:४४	०३:४८:४७
वृश्चिकः	०६:५८:२९	०६:५४:३२	०६:५०:३६	०६:४७:११	०६:४३:१४	०६:३९:१८	०६:३५:२१	०६:३१:२४	०६:२७:२८	०६:२३:३१	०६:१९:३४	०६:१५:३७	०६:११:४०	०६:०७:४३

सूर्योदयकालीन तिथिः४

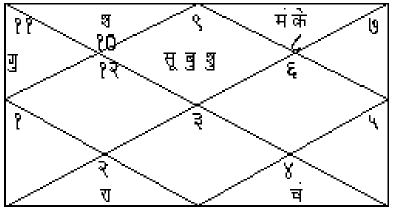

सूर्योदयकालीन तिथिः११

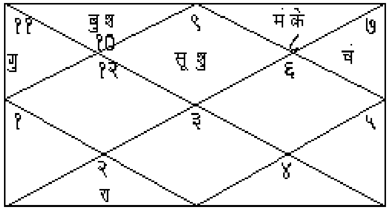

पौष शुक्लपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; वक्री शुक्रःपश्चिमास्तः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपश्चिमोदितः, ३:१:२०२२;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
२५:४५:२२	१ चं	३६:४९	रा २२:०५:२७	पू·षा·	१९:१५	दि १५:०३:४१	व्याघ·	५१:२२	रा २७:५४:३३	बव ०९:३१	बाल ३६:४९	ध·३३:२०	रा २०:४१:४०	७:२१:४६	५:३९:५५	उत्पात	१८	३	सिद्ध·१;
२५:४६:३४	२ मं	३१:५०	रा २०:०६:०२	उ·षा·	१५:४७	दि १३:४०:३८	हर्षण	४४:२१	रा २५:०६:३४	बाल ०४:१५	कौल ३१:५०	मकर	अहोरात्र	७:२२:०२	५:४०:३९	मानस	१९	४	**अभिजितः१:३६–१९:३४;** द·ति·२;
२५:४७:५१	३ बु	२७:३३	रा १८:२३:२४	श्रवण	१२:५६	दि १२:३२:४१	वज्र	३७:५६	रा २२:३२:३७	गर २७:३३	वणि ५५:४३	म·४१:४८	रा २४:०५:३३	७:२२:१६	५:४१:२४	छत्र	२०	५	**भद्रारंभः२९:३९घं·;पञ्चकारंभः१२:३३;**
२५:४९:१४	४ गु	२४:०७	दि १७:०१:१३	धनि·	१०:५४	दि ११:४३:५७	सिद्धि	३२:१२	रा २०:१५:१५	विष २४:०७	बव ५२:४६	कुंभ	अहोरात्र	७:२२:२८	५:४२:१०	श्रीवत्स	२१	६	**भद्रांतः१७:०१घं·;**
२५:५०:४२	५ शु	२१:४२	दि १६:०३:२७	शत·	०९:४९	दि ११:१८:१२	व्यति·	२७:१८	रा १८:१७:४०	बाल २१:४२	कौल ५०:५५	कु·५४:४३	रा २९:१५:४८	७:२२:३९	५:४२:५६	सौम्य	२२	७	रवियोगःपूभा;
२५:५२:१६	६ श	२०:२७	दि १५:३३:३६	पू·भा·	०९:५०	दि ११:१८:५९	वरी·	२३:१८	दि १६:४१:५९	तैति २०:२७	गर ५०:१७	मीन	अहोरात्र	७:२२:४९	५:४३:४३	कालदंड	२३	८	अमृत·६;
२५:५३:५५	७ र	२०:२७	दि १५:३३:४४	उ·भा·	११:०४	दि ११:४८:३०	परिघ	२०:१७	दि १५:२९:३५	वणि २०:२७	विष ५०:५६	मीन	अहोरात्र	७:२२:५७	५:४४:३१	प्रवर्द्ध	२४	९	**भद्रा १५:३४–२७:४५घं·;** सर्वार्थ·उभा;
२५:५५:४०	८ चं	२१:४५	दि १६:०५:०८	रेवती	१३:३३	दि १२:४८:१४	शिव	१८:१५	दि १४:४१:१४	बव २१:४५	बाल ५२:५३	मी·१३:३३	दि १२:४८:१४	७:२३:०३	५:४५:१९	मातङ्ग	२५	१०	**पञ्चकान्तः१२:४८;** रवियोगःअ;
२५:५७:२९	९ मं	२४:१९	दि १७:०६:४८	अश्वि·	१७:१५	दि १४:१७:०६	सिद्ध	१७:१२	दि १४:१५:५३	कौल २४:१९	तैति ५६:०२	मेष	अहोरात्र	७:२३:०८	५:४६:०८	अमृत	२६	११	सर्वार्थ·अ;
२५:५९:२४	१० बु	२८:०२	रा १८:३६:०२	भरणी	२२:०४	दि १६:१२:४४	साध्य	१७:०१	दि १४:११:४२	गर २८:०२	वणि ६०:००	मे·३८:२५	रा २२:४५:१३	७:२३:११	५:४६:५७	काण	२७	१२	**भद्रारंभः३१:२९घं·;** रवियोगःभ;
२६:०१:२४	११ गु	३२:४१	रा २०:२७:४४	कृत्ति·	२७:४८	रा १८:३०:२०	शुभ	१७:३५	दि १४:२५:१५	वणि ००:१६	विष ३२:४१	वृष	अहोरात्र	७:२३:१३	५:४७:४६	लुम्ब	२८	१३	**भद्रा ७:३०–२०:२८घं·; मासान्तः;**
२६:०३:२८	१२ शु	३७:५७	रा २२:३४:११	रोहि·	३४:०८	रा २१:०२:३१	शुक्ल	१८:४०	दि १४:५१:१०	बव ०५:१७	बाल ३७:५७	वृष	अहोरात्र	७:२३:१३	५:४८:३६	मित्र	२९	१४	मृत्यु·१२;
२६:०५:३८	१३ श	४३:२७	रा २४:४५:५३	मृग·	४०:४३	रा २३:४०:१७	ब्रह्म	२०:००	दि १५:२३:२१	कौल १०:४३	तैति ४३:२७	वृ·०७:२६	दि १०:२१:३४	७:२३:११	५:४९:२६	वज्र	१	१५	**मासादिः;** द·ति·१२; रवियोगःआ;
२६:०७:५२	१४ र	४८:४१	रा २६:५१:४२	आर्द्रा	४७:०४	रा २६:१२:५५	ऐन्द्र	२१:१७	दि १५:५४:०६	गर १६:०८	वणि ४८:४१	मिथुन	अहोरात्र	७:२३:०८	५:५०:१७	ध्वांक्ष	२	१६	**भद्रारंभः२६:५२घं·;** अमृत·१५;
२६:१०:११	१५ चं	५३:१८	रा २८:४२:१६	पुन·	५२:५१	रा २८:३१:२१	वैधृ·	२२:१३	दि १६:१६:१४	विष २१:०६	बव ५३:१८	मि·३६:२९	रा २१:५८:३७	७:२३:०३	५:५१:०८	धूम्र	३	१७	**भद्रांतः१५:५०घं·;** अमृत·१५;

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

तिथि	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से
१	०८:१८:११:४९	०८:२२:०६:०१	०७:१९:३५:३३	०९:०६:१८:३७	१०:०७:५६:१३	०८:१४:५४:३६	०९:१४:४७:५८	०७:०७:४०:३२	४२:५२:४१	०७:३८:००	द·२३:३२:१६	– ४:०२
२	०८:१९:१३:१५	०९:०६:१७:२५	०७:२०:१७:१०	०९:०७:०३:३३	१०:०८:०८:०६	०८:१४:१७:०१	०९:१४:५४:४९	०७:०७:३७:२१	४२:५३:१७	०८:३३:११	द·२३:२६:५२	– ४:३२
३	०८:२०:१४:४०	०९:२०:१९:४८	०७:२०:५८:४९	०९:०७:४३:४२	१०:०८:२०:०५	०८:१३:४०:१७	०९:१५:०१:४३	०७:०७:३४:१०	४२:५३:५६	०९:१७:२९	द·२३:२०:६०	– ५:०२
४	०८:२१:१६:०४	१०:०४:१०:३४	०७:२१:४०:३०	०९:०८:१८:४८	१०:०८:३२:०९	०८:१३:०४:३९	०९:१५:०८:३८	०७:०७:३०:५९	४२:५४:३७	१०:००:५६	द·२३:१४:३९	– ५:३१
५	०८:२२:१७:२९	१०:१७:४७:४२	०७:२२:२२:१३	०९:०८:४८:३५	१०:०८:४४:१९	०८:१२:३०:२२	०९:१५:१५:३५	०७:०७:२७:४९	४२:५५:२१	१०:३८:००	द·२३:०७:५०	– ५:००
६	०८:२३:१८:५३	११:०१:०९:५४	०७:२३:०३:५८	०९:०९:१२:४६	१०:०८:५६:३३	०८:११:५७:३७	०९:१५:२२:३३	०७:०७:२४:३८	४२:५६:०८	११:१३:३८	द·२३:००:३४	– ६:२८
७	०८:२४:२०:१६	११:१४:१६:३३	०७:२३:४५:४५	०९:०९:३१:०७	१०:०९:०८:५२	०८:११:२६:३७	०९:१५:२९:३३	०७:०७:२१:२७	४२:५६:५८	१२:२२:१७	द·२२:५२:५०	– ६:५६
८	०८:२५:२१:४०	११:२७:०७:५२	०७:२४:२७:३५	०९:०९:४३:२४	१०:०९:२१:१७	०८:१०:५७:३३	०९:१५:३६:३५	०७:०७:१८:१७	४२:५७:५०	१२:२२:२३	द·२२:४४:३९	– ७:२३
९	०८:२६:२३:०२	००:०९:४४:४६	०७:२५:०९:२६	०९:०९:४९:२७	१०:०९:३३:४५	०८:१०:३०:३४	०९:१५:४३:३७	०७:०७:१५:०६	४२:५८:४५	१२:५७:६०	द·२२:३६:०१	– ७:५०
१०	०८:२७:२४:२५	००:२२:०८:५६	०७:२५:५१:२०	०९:०९:४९:०९	१०:०९:४६:१९	०८:१०:०५:४८	०९:१५:५०:४२	०७:०७:११:५५	४२:५९:४२	१३:३६:०७	द·२२:२६:५७	– ८:१६
११	०८:२८:२५:४६	०१:०४:२२:४१	०७:२६:३३:१६	०९:०९:४२:२५	१०:०९:५८:५७	०८:०९:४३:२२	०९:१५:५७:४७	०७:०७:०८:४५	४३:००:४२	१४:१४:०६	द·२२:१७:२५	– ८:४२
१२	०८:२९:२७:०७	०१:१६:२८:५१	०७:२७:१५:१४	०९:०९:२९:१८	१०:१०:११:४०	०८:०९:२३:२०	०९:१६:०४:५३	०७:०७:०५:३४	४३:०१:४४	१४:५९:५६	द·२२:०७:२८	– ९:०७
१३	०९:००:२८:२७	०१:२८:३०:४१	०७:२७:५७:१५	०९:०९:०९:५५	१०:१०:२४:२६	०८:०९:०५:४७	०९:१६:१२:०१	०७:०७:०२:२३	४३:०२:४९	१५:४५:३१	द·२१:५७:०५	– ९:३१
१४	०९:०१:२९:४७	०२:१०:३१:५४	०७:२८:३९:१७	०९:०८:४४:२९	१०:१०:३७:१७	०८:०८:५०:४६	०९:१६:१९:१०	०७:०६:५९:१३	४३:०३:५६	१६:३५:३८	द·२१:४६:१६	– ९:५५
१५	०९:०२:३१:०६	०२:२२:३६:२३	०७:२९:२१:२२	०९:०८:१३:२४	१०:१०:५०:१३	०८:०८:३८:१८	०९:१६:२६:१९	०७:०६:५६:०२	४३:०५:०५	१७:२८:३९	द·२१:३५:०२	–१०:१८

"**उत्तरायण** और दक्षिणायन में तीस घड़ी कर्क की और बीस घड़ी मकर की पुण्य काल की कही हैं।"–वृद्धवशिष्ठ, "रात्रि में **मकर संक्रान्ति** हो तो परदिन में सूर्योदय उपरान्त दिन के पूर्वभाग में अर्थात् दोपहर तक पुण्यकाल होता है। प्रदोष वा अर्धरात्रि के समय यदि धनुराशि छोड़कर मकर राशि पर सूर्य आये तो परदिन में स्नान दान करे।"–भविष्योत्तर, इस प्रकार परदिन में पुण्यकाल कहने पर भी दिन के पूर्वभाग में ही पुण्यकाल सिद्ध हुआ। क्योंकि आसन्न संक्रमण का पुण्य दिनार्ध तक स्नान दान का है ऐसा वचन है। मकरराशिमें सूर्य के प्रवेशके साथ ही देवमार्ग खुलता है। गीता८/२४–

अग्निज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणः।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ।।

अनेक आकाशीय वीथियों का वर्णन वैदिक वाङ्मय में वर्णित है। उत्तरायण शुभ आत्मा का सहचर पथ है। इस पथ पर आरूढ़ आत्मा भटकती नहीं, शुभलोक में जाती है।

पौष शुक्लपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; ३ से १७ जनवरी, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपूव । ऋतुःहेमन्त, याम्यगोलः, याम्यायनं ।
मकरार्कतः सौम्यायनं ऋतुःशिशिर । ति·१५ अयनांशाः२२:५०:२९

तिथि दिन	दिनाङ्क अंग्रेजी	व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि
१ चं	३	मृत्युबाण घं·११:५१:४उ·;
२ मं	४	अमृत·२; त्रिपुष्करः२+उषा; द·न·उषा; सिद्ध·३; मृत्युबाण घं·१२:२३:३६या·;
३ बु	५	मूलेशुक्रः३३:५४,घं·२१:२२:४६; रवियोगःध; द·न·ध;
४ गु	६	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी;** रवियोगःध; सिद्ध·५;
५ शु	७	**व्यतिपात पुण्य;** सिद्ध·६;
६ श	८	रवियोगःपूभा;
७ र	९	**गण्डान्तारम्भः३०:३०;** सिद्ध·८;
८ चं	१०	**गण्डान्तः१९:०८;**
९ मं	११	उत्तराषाढ़ेरविः१६:३५,घं·१४:२७:४७; रवियोगःअ; रवियोगःभ;
१० बु	१२	सर्वार्थ·कृ; रवियोगःकृ; अमृत·११; मृत्युबाण घं·१६:३९:३७उ·;
११ गु	१३	**श्री पुत्रदा एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त);** रवियोगःकृ; मृत्युबाण घं·१७:१०:४८या·;
१२ शु	१४	**श्री कूर्म द्वादशी; श्रीजयन्ती महाद्वादशी; मकरेरविः३२:९,घं·२०:४१:४४;**
१३ श	१५	**मकर संक्रान्ति (पुण्यकाल मध्याह्न तक); शनि प्रदोष व्रतम्; घृतदानत्रयोदशी;** ①
१४ र	१६	रवियोगःआ; मृत्युबाण घं·१८:४२:५२या·;
१५ चं	१७	**पौष पूर्णिमा (स्नान–दान–व्रत); श्री शाकम्भरी जयन्ती; माघ स्नान आरम्भ;** मूलेधनुषिमङ्गलः५५:१,घं·५:५०:८; सर्वार्थ·पु; सिद्ध·१; ① सिद्ध·१४; मृत्युबाण घं·१८:१२:२६उ·;

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	१२:१०:१४–१३:३२:३९
१५	१२:१६:०९–१३:३९:५४

मकर संक्रान्ति कृत्य

◆ **मकर संक्रान्ति-** पौष मास में मकरसंक्रान्ति लगती है। सूर्यास्त के बाद मकरसंक्रान्ति होने पर पुण्यकाल अगले दिन होता है, *"यद्यस्तमयवेलायां मकरं याति भास्करः। प्रदोषे वाऽर्धरात्रे वा स्नानं दानं परेऽहनि।"* (धर्मसिन्धु)। **सूर्यसिद्धान्तीय गणना से सूर्य १४ जनवरी को सूर्यास्त के पश्चात् रात्रि ८ बजके ४१ मिनट के बाद मकर में प्रवेश करेगा अतः जयपुर में मकर संक्रान्ति परदिन अर्थात् १५ जनवरी को ही मान्य होगी, उसी दिन मध्याह्न तक पुण्यकाल स्नान दान होगा। अतः संशयरहित होकर मकर संक्रान्ति १५ जनवरी २०२२ को ही मनाएं।**

मकर संक्रान्ति लगने के समय से २० घटी (८ घण्टा) पूर्व और २० घटी (८ घण्टा) पश्चात् पुण्य काल होता है। इसी में तीर्थादि स्नान तथा दान करना चाहिए। मकर संक्रान्ति से ही देवताओं का दिन आरम्भ होता है। यहीं से उत्तरायण का शुभारम्भ होता है। अतः पौष मास में सर्वाधिक महत्त्व मकर संक्रान्ति का होता है।

◆ **मकर संक्रान्ति के दिन स्नान न करने वाला व्यक्ति जन्म-जन्मान्तर में रोगी तथा निर्धन होता है-**

रविसंक्रमणे प्राप्ते न स्नायाद्यस्तु मानवः । सप्तजन्मनि रोगी स्यान्निर्धनश्चैव जायते। (धर्मसिन्धु)

◆ मकर-संक्रान्ति भगवान सूर्य नारायण का विशेष व्रत है। अतः **मकर संक्रान्ति के दिन स्नान, दान, हवन करने का शुभफल जन्मजन्मान्तर में भगवान् श्री सूर्यनारायण द्वारा प्रदान किया जाता है-**

संक्रान्तौ यानि दत्तानि हव्यकव्यानि दातृभिः। तानि नित्यं ददात्यर्कः पुनर्जन्मनि जन्मनि। (धर्मसिन्धु)

◆ मकर संक्रान्ति के दिन भगवान शिव का घी से अभिषेक करने का विशेषफल होता है। स्वर्ण दान तथा तिल से भरे पात्र का दान करना अक्षय फल देता है। इस दिन श्रीआदित्यहृदयस्तोत्र के पाठ करें और भगवान् श्री सूर्यनारायण को तांबे के कलश में लाल चन्दन, लाल पुष्प, चावल, तिल डालकर अर्घ्य देवें।

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि ल·अं·	१ चं घं·मि·से	२ मं घं·मि·से	३ बु घं·मि·से	४ गु घं·मि·से	५ शु घं·मि·से	६ श घं·मि·से	७ र घं·मि·से
धनुः	०८:०८:४५	०८:०४:४८	०८:००:५१	०७:५६:५४	०७:५२:५८	०७:४९:०१	०७:४५:०४
मकरः	०९:५३:२०	०९:४९:२३	०९:४५:२७	०९:४१:३०	०९:३७:३३	०९:३३:३६	०९:२९:३९
कुम्भः	११:२२:३०	११:१८:३३	११:१४:३७	११:१०:४०	११:०६:४३	११:०२:४६	१०:५८:४९
मीनः	१२:४८:२६	१२:४४:२९	१२:४०:३२	१२:३६:३५	१२:३२:३८	१२:२८:४१	१२:२४:४५
मेषः	१४:२४:२४	१४:२०:२७	१४:१६:३०	१४:१२:३४	१४:०८:३७	१४:०४:४०	१४:००:४३
वृष्	१६:१९:५८	१६:१६:०१	१६:१२:०४	१६:०८:०७	१६:०४:१०	१६:००:१३	१५:५६:१६
मिथुनः	१८:३४:१२	१८:३०:१५	१८:२६:१८	१८:२२:२१	१८:१८:२४	१८:१४:२७	१८:१०:३०
कर्कः	२०:५४:२५	२०:५०:२८	२०:४६:३१	२०:४२:३४	२०:३८:३७	२०:३४:४०	२०:३०:४३
सिंहः	२३:१०:५६	२३:०६:५९	२३:०३:०२	२२:५९:०५	२२:५५:०८	२२:५१:११	२२:४७:१४
कन्या	०१:२५:५६	०१:२१:५९	०१:१८:०२	०१:१४:०५	०१:१०:०८	०१:०६:११	०१:०२:१४
तुला	०३:४४:५०	०३:४०:५३	०३:३६:५६	०३:३२:५८	०३:२९:०१	०३:२५:०४	०३:२१:०७
वृश्चिकः	०६:०३:४६	०५:५९:४९	०५:५५:५२	०५:५१:५५	०५:४७:५७	०५:४४:००	०५:४०:०३

तिथि ल·अं·	८ चं घं·मि·से	९ मं घं·मि·से	१० बु घं·मि·से	११ गु घं·मि·से	१२ शु घं·मि·से	लग्न अन्त	१३ श घं·मि·से	१४ र घं·मि·से	१५ चं घं·मि·से
धनुः	०७:४१:०७	०७:३७:१०	०७:३३:१३	०७:२९:१७	०७:२५:२०	मकरः	०९:०५:५८	०९:०२:०१	०८:५८:०४
मकरः	०९:२५:४२	०९:२१:४६	०९:१७:४९	०९:१३:५२	०९:०९:५५	कुम्भः	१०:३५:०८	१०:३१:११	१०:२७:१४
कुम्भः	१०:५४:५२	१०:५०:५५	१०:४६:५८	१०:४३:०२	१०:३९:०५	मीनः	१२:०१:०३	११:५७:०६	११:५३:०९
मीनः	१२:२०:४८	१२:१६:५१	१२:१२:५४	१२:०८:५७	१२:०५:००	मेषः	१३:३७:०१	१३:३३:०४	१३:२९:०७
मेषः	१३:५६:४६	१३:५२:४९	१३:४८:५२	१३:४४:५५	१३:४०:५८	वृष्	१५:३२:३४	१५:२८:३७	१५:२४:३९
वृष्	१५:५२:१९	१५:४८:२२	१५:४४:२५	१५:४०:२८	१५:३६:३१	मिथुनः	१७:४६:४७	१७:४२:५०	१७:३८:५३
मिथुनः	१८:०६:३३	१८:०२:३६	१७:५८:३९	१७:५४:४२	१७:५०:४४	कर्कः	२०:०७:००	२०:०३:०३	१९:५९:०६
कर्कः	२०:२६:४६	२०:२२:४९	२०:१८:५२	२०:१४:५५	२०:१०:५७	सिंहः	२२:२३:३०	२२:१९:३३	२२:१५:३६
सिंहः	२२:४३:१७	२२:३९:२०	२२:३५:२२	२२:३१:२५	२२:२७:२८	कन्या	००:३८:३०	००:३४:३३	००:३०:३५
कन्या	००:५८:१७	००:५४:१९	००:५०:२२	००:४६:२५	००:४२:२८	तुला	०२:५७:२३	०२:५३:२५	०२:४९:२८
तुला	०३:१७:१०	०३:१३:१२	०३:०९:१५	०३:०५:१८	०३:०१:२०	वृश्चिकः	०५:१६:१८	०५:१२:२१	०५:०८:२३
वृश्चिकः	०५:३६:०६	०५:३२:०८	०५:२८:११	०५:२४:१३	०५:२०:१६	धनुः	०७:२१:२३	०७:१७:२६	०७:१३:२९

सूर्योदयकालीन तिथिः४

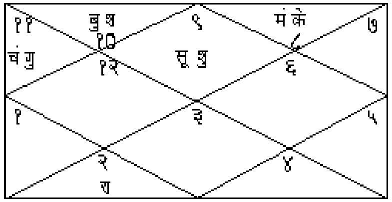

सूर्योदयकालीन तिथिः११

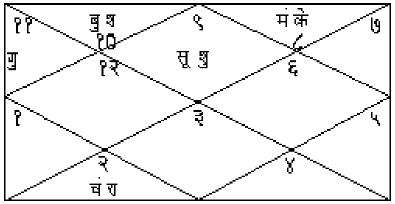

माघ कृष्णपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; वक्री शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपश्चिमास्तः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; वक्री बुधःपश्चिमास्तः, १८:१:२०२२;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
२६:१२:३४	१ मं	५६:५७	रा ३०:०९:५५	**पुष्य**	५७:४३	रा ३०:२८:०५	विष्कु·	२२:३३	दि १६:२४:०४	बाल २५:१७	कौल ५६:५७	कर्क	अहोरात्र	७:२२:५७	५:५१:५८	प्रवर्द्ध	४	१८	अमृत·२; सर्वार्थ·आश्ले;
२६:१५:०१	२ बु	५९:२७	दि ३१:०९:४४	**आश्ले·**	६०:००	अहोरात्र	प्रीति	२२:०४	दि १६:१२:३१	तैति २८:२२	गर ५९:२७	कर्क	अहोरात्र	७:२२:४९	५:५२:४९	राक्षस	५	१९	सिद्ध·२;
२६:१७:३३	३ गु	६०:००	अहोरात्र	**आश्ले·**	०१:३०	दि ०७:५८:३३	आयु·	२०:४२	दि १५:३९:१९	वणि ३०:१५	विष ६०:००	क·०१:३०	दि ०७:५८:३३	७:२२:३९	५:५३:४१	अमृत	६	२०	**भद्रा १९:२९–३१:३९घं·;** अमृत·३
२६:२०:०९	३ शु	००:४३	दि ०७:३९:३२	**मघा**	०४:०३	दि ०८:५९:३३	सौभा·	१८:२०	दि १४:४२:२३	विष ००:४३	बव ३०:५०	सिंह	अहोरात्र	७:२२:२८	५:५४:३२	काण	७	२१	**भद्रांत:७:४०घं·;** अमृत·४;
२६:२२:४९	४ श	**००:३९** **५८:४०**	**दि ०७:३७:४०** **रा ३१:०५:४०**	**पू·फा·**	०५:२०	दि ०९:३०:२३	शोभ·	१४:५८	दि १३:२१:३३	बाल ००:३९	कौल ३०:०७	सिं·२०:२८	दि १५:३३:२५	७:२२:१६	५:५५:२३	लुम्ब	८	२२	सिद्ध·४;
२६:२५:३३	६ र	५६:५०	रा ३०:०५:५७	**उ·फा·**	०५:२६	दि ०९:३२:२०	अतिग·	१०:४०	दि ११:३७:५४	गर २८:१३	वणि ५६:५०	कन्या	अहोरात्र	७:२२:०१	५:५६:१४	मित्र	९	२३	**भद्रारंभ:३०:०६घं·;** सर्वार्थ·उफा;
२६:२८:२०	७ चं	५३:२१	रा २८:४२:०६	**हस्त**	०४:२४	दि ०९:०७:३२	सुकर्मा धृति	**०५:२८** **५४:०१**	**दि ०९:३३:०१** **रा ३१:०९:२५**	विष २५:१३	बव ५३:२१	कं·३३:३१	रा २०:४६:०१	७:२१:४५	५:५७:०५	वज्र	१०	२४	**भद्रांत:१७:२७घं·;** द·न·चि;
२६:३१:१२	८ मं	४९:०१	रा २६:५७:५३	**चित्रा** **स्वाति**	**०२:२६** **५७:११**	**दि ०८:१९:४०** **रा ३१:१२:०४**	शूल	५२:५१	रा २८:२९:५७	बाल २१:१७	कौल ४९:०१	तुला	अहोरात्र	७:२१:२८	५:५७:५६	ध्वांक्ष	११	२५	सिद्ध·८; रवियोग:चि;
२६:३४:०७	९ बु	४३:६०	रा २४:५७:०८	**विशा·**	५६:१०	रा २९:४९:२१	गण्ड	४५:४१	रा २५:३७:४५	तैति १६:३६	गर ४३:६०	तु·४२:०५	रा २४:११:१४	७:२१:०९	५:५८:४७	धाता	१२	२६	सर्वार्थ·अनु;
२६:३७:०५	१० गु	३८:३०	रा २२:४४:४६	**अनु·**	५२:१८	रा २८:१६:१०	वृद्धि	३८:०९	रा २२:३६:२३	वणि ११:१९	विष ३८:३०	वृश्चिक	अहोरात्र	७:२०:४८	५:५९:३८	आनन्द	१३	२७	**भद्रा ११:५२–२२:४५घं·;** सिद्ध·१०;
२६:४०:०७	११ शु	३२:४२	रा २०:२५:०७	**ज्ये·**	४८:११	रा २६:३७:०२	ध्रुव	३०:२२	रा १९:२९:११	बव ०५:३८	बाल ३२:४२	वृ·४८:११	रा २६:३७:०२	७:२०:२६	६:००:२९	सुस्थिर	१४	२८	**गण्डान्तारम्भ:२१:०२;** सिद्ध·११;
२६:४३:१२	१२ श	२६:४८	रा १८:०३:०८	**मूल**	४४:०३	रा २४:५७:०५	व्याघ·	२२:३०	दि १६:१९:५७	तैति २६:४८	गर ५३:५२	धनु	अहोरात्र	७:२०:०३	६:०१:१९	गद	१५	२९	**गण्डान्त:८:१२;** द·ति·१२;
२६:४६:२०	१३ र	२१:०१	दि १५:४४:०८	**पू·षा·**	४०:०५	रा २३:२१:४३	हर्षण	१४:४३	दि १३:१२:५०	वणि २१:०१	विष ४८:१४	ध·५४:०९	रा २८:५९:०७	७:१९:३८	६:०२:१०	शुभ	१६	३०	**भद्रा १५:४४–२६:३७घं·;** सिद्ध·१३;
२६:४९:३२	१४ चं	१५:३४	दि १३:३२:५६	**उ·षा·**	३६:३१	रा २१:५५:३६	वज्र	०७:११	दि १०:११:३९	शकु १५:३४	चतु ४३:०१	मकर	अहोरात्र	७:१९:११	६:०२:६०	मृत्यु	१७	३१	**अभिजित:२२:२२–४०:१८;**
२६:५२:४६	३० मं	१०:३८	दि ११:३३:६०	**श्रवण**	३३:३२	रा २०:४३:२७	सिद्धि व्यति	**००:०२** **५३:२२**	**दि ०७:१९:४२** **रा २८:४०:३०**	नाग १०:३८	किं ३८:२५	मकर	अहोरात्र	७:१८:४३	६:०३:४९	लुम्ब	१८	१	**पञ्चकारंभ:२०:४३;**

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

तिथि	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से
१	०९:०३:३२:२४	०३:०४:४७:३०	०८:००:०३:२९	०९:०७:३७:०९	१०:११:०३:१२	०८:०८:२८:२४	०९:१६:३३:३०	०७:०६:५२:५१	४३:०६:१७	१८:२२:३७	द·२१:२३:२४	–१०:४०
२	०९:०४:३३:४१	०३:१७:०८:१३	०८:००:४५:३९	०९:०६:५६:२२	१०:११:१६:१५	०८:०८:२१:०५	०९:१६:४०:४१	०७:०६:४९:४०	४३:०७:३१	१९:१८:२३	द·२१:११:२०	–११:०१
३	०९:०५:३४:५७	०३:२९:४१:०१	०८:०१:२७:५१	०९:०६:११:४८	१०:११:२९:२२	०८:०८:१६:१९	०९:१६:४७:५३	०७:०६:४६:३०	४३:०८:४६	२०:१५:१६	द·२०:५८:५३	–११:२२
३	०९:०६:३६:१३	०४:१२:२७:४६	०८:०२:१०:०५	०९:०५:२४:२०	१०:११:४२:३३	०८:०८:१४:०४	०९:१६:५५:०६	०७:०६:४३:१९	४३:१०:०४	२१:११:३६	द·२०:४६:०१	–११:४२
४	०९:०७:३७:२७	०४:२५:२९:३९	०८:०२:५२:२१	०९:०४:३४:५६	१०:११:५५:४७	०८:०८:१४:१९	०९:१७:०२:२०	०७:०६:४०:०८	४३:११:२४	२२:०९:५१	द·२०:३२:४६	–१२:०१
६	०९:०८:३८:४१	०५:०८:४७:०४	०८:०३:३४:४०	०९:०३:४४:३९	१०:१२:०९:०५	०८:०८:१७:०१	०९:१७:०९:३३	०७:०६:३६:५८	४३:१२:४६	२३:०९:२३	द·२०:१९:०८	–१२:२०
७	०९:०९:३९:५३	०५:२२:१९:४०	०८:०४:१७:०१	०९:०२:५४:४५	१०:१२:२२:२६	०८:०८:२२:०७	०९:१७:१६:४८	०७:०६:३३:४७	४३:१४:१०	२४:१०:०८	द·२०:०५:०७	–१२:३७
८	०९:१०:४१:०५	०६:०६:०६:२१	०८:०४:५९:२४	०९:०२:०६:२१	१०:१२:३५:५१	०८:०८:२९:३४	०९:१७:२४:०३	०७:०६:३०:३६	४३:१५:३६	०१:१३:२४	द·१९:५०:४४	–१२:५४
९	०९:११:४२:१६	०६:२०:०५:१७	०८:०५:४१:५०	०९:०१:२०:२६	१०:१२:४९:१९	०८:०८:३९:१८	०९:१७:३१:१८	०७:०६:२७:२६	४३:१७:०३	०२:१८:१४	द·१९:३५:५९	–१३:१०
१०	०९:१२:४३:२५	०७:०४:१४:०३	०८:०६:२४:१८	०९:००:३७:५७	१०:१३:०२:५०	०८:०८:५१:१६	०९:१७:३८:३३	०७:०६:२४:१५	४३:१८:३३	०३:२२:५०	द·१९:२०:५२	–१३:२५
११	०९:१३:४४:३४	०७:१८:२९:४३	०८:०७:०६:४८	०८:२९:५९:४०	१०:१३:१६:२५	०८:०९:०५:२३	०९:१७:४५:४९	०७:०६:२१:०४	४३:२०:०३	०४:२७:१३	द·१९:०५:२४	–१३:४०
१२	०९:१४:४५:४१	०८:०२:४८:५६	०८:०७:४९:२१	०८:२९:२६:१८	१०:१३:३०:०२	०८:०९:२१:३६	०९:१७:५३:०५	०७:०६:१७:५४	४३:२१:३६	०५:२६:३३	द·१८:४९:३५	–१३:५३
१३	०९:१५:४६:४८	०८:१७:०७:५३	०८:०८:३१:५६	०८:२८:५८:२४	१०:१३:४३:४२	०८:०९:३९:५०	०९:१८:००:२१	०७:०६:१४:४३	४३:२३:१०	०६:२२:०८	द·१८:३३:२६	–१४:०६
१४	०९:१६:४७:५३	०९:०१:२२:४६	०८:०९:१४:३४	०८:२८:३६:२४	१०:१३:५७:२५	०८:१०:००:०२	०९:१८:०७:३७	०७:०६:११:३२	४३:२४:४६	०७:११:१५	द·१८:१६:५६	–१४:१७
१५	०९:१७:४८:५७	०९:१५:३०:२१	०८:०९:५७:१४	०८:२८:२०:३४	१०:१४:११:११	०८:१०:२२:०६	०९:१८:१४:५२	०७:०६:०८:२२	४३:२६:२३	०७:५५:१४	द·१८:००:०७	–१४:२८

माघ मास में कम्बल दान का बहुत पुण्य कहा गया है। रजाई, तूल, ऊन, लाल कपड़ा, जूता चप्पल आदि का दान इस मास में करने का अपूर्व लाभ होता है। प्रातः स्नान सम्पूर्ण माघ में व्रती करते हैं। माघ में **मूली** खाने का निषेध है, धर्म शास्त्र कहता है– "माघे त्यजेन्**मूल**कम्।", यह ऊर्जा संचयन और तप का अपूर्व मास है। पद्मपुराण में भगवान् के वचन हैं कि, **"माघस्नान से बढ़कर पापनाशक और कोई तप नहीं हैं।"**

भगवान गणेश का प्रादुर्भाव **माघ कृष्ण चतुर्थी** को मानते हैं। यह तृतीया विद्ध तिथि होती है – *"चतुर्थी गणनाथस्य मातृविद्धा प्रशस्यते।"* कृष्ण पक्ष की षट्तिला एकादशी, और तिल द्वादशी भी माघ मास में होती है। मौनी अमावस्या माघ में आती है। आज के दिन प्रातः जागरण से स्नान काल तक मौन रहा जाता है। यह वाक् तप में आता है।

माघ कृष्णपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; १८ जनवरी से १ फरवरी, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःपूर्व । ऋतुःशिशिर, याम्यगोलः, सौम्यायनं । ति·३० अयनांशाः२२:५०:३१

तिथि / दिन	दिनाङ्क / अंग्रेजी	व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि
१ मं	१८	;
२ बु	१९	**गण्डान्तारम्भः२५:३९;**
३ गु	२०	**गण्डान्तः१४:१७;**
३ शु	२१	**तिलकुट संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी;**
४ श	२२	अमृत·६;
६ र	२३	सर्वार्थ·ह; रवियोगःह;
७ चं	२४	**श्रीमद् रामानन्दाचार्य जयन्ती; श्रीस्वामी विवेकानन्द जयन्ती;** ⑨
८ मं	२५	**श्रीकालाष्टमी;** मृत्युबाण घं·२३:३०:३३या·;
९ बु	२६	**७३वां भारतीय गणतन्त्र दिवस;** मार्गी शुक्रक्रः२९:२२;
१० गु	२७	मूलेधनुषिबुधः५९:२४,घं·७:३३:१९; मार्गी शुक्रक्रः२९:२२; सर्वार्थ·अनु;
११ शु	२८	**श्री षट्तिला एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त) ;** द·न·ज्ये;
१२ श	२९	**शनि प्रदोष व्रतम्;**
१३ र	३०	**मास शिवरात्रि व्रतम्;** सर्वार्थ·उषा;
१४ चं	३१	**अमावस्या श्राद्ध;** अमृत·१५; सर्वार्थ·श्र;
३० मं	१	**भौमवती अमावस्या (स्नान, दान) ; व्यतिपात पुण्य; मौनी अमावस्या;** ⑨ श्रवणायांरविः१९:४३,घं·१५:४१:३४; रवियोगःह; रवियोगःचि; मृत्युबाण घं·२३:३:२५उ·;

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	१२:१६:३०–१३:४०:२२
१५	१२:१९:४६–१३:४५:४७

माघमास में स्नान दान व्रत नियम का महत्व

पद्मपुराण के उत्तरखण्ड में माघमास के माहात्म्य का वर्णन करते हुए कहा है कि व्रत, दान और तपस्या से भी भगवान् श्रीहरि को उतनी प्रसन्नता नहीं होती, जितनी कि माघ महीने में स्नानमात्र से होती है। इसलिये स्वर्गलाभ, **सभी पापों से मुक्ति और भगवान् वासुदेव की प्रीति प्राप्त करने के लिये प्रत्येक मनुष्य को माघस्नान करना चाहिये।**

व्रतैर्दानैस्तपोभिश्च न तथा प्रीयते हरिः। माघस्नानमात्रेण यथा प्रीणाति केशवः॥
प्रीतये वासुदेवस्य सर्वपापापनुत्तये। माघस्नानं प्रकुर्वीत स्वर्गलाभाय मानवः॥ (पद्मपुराण)

- **इस माघमास में पूर्णिमा को जो व्यक्ति ब्रह्मवैवर्त पुराण का दान करता है, उसे ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है,**

पुराणं ब्रह्मवैवर्त यो दद्यान्माघमासि च। पौर्णमास्यां शुभदिने ब्रह्मलोके महीयते॥ (मत्स्यपुराण ५३।३५)

- **माघ मास में स्नान, दान, उपवास और भगवान् माधव की पूजा अत्यन्त फलदायी है। महाभारत के अनुशासनपर्व में कहा है-**

दशतीर्थसहस्राणि तिस्रः कोट्यस्तथा पराः॥ समागच्छन्ति माघ्यां तु प्रयागे भरतर्षभ।
माघमासं प्रयागे तु नियतः संशितव्रतः॥ स्नात्वा तु भरतश्रेष्ठ निर्मलः स्वर्गमाप्नुयात्। (महा, अनु २५।३६-३८)

हे भरतश्रेष्ठ ! माघमास की अमावास्या को प्रयागराज में तीन करोड़ दस हजार अन्य तीर्थों का समागम होता है। जो नियमपूर्वक उत्तम व्रत का पालन करते हुए माघमास में प्रयाग में स्नान करता है, वह सब पापों से मुक्त होकर स्वर्ग में जाता है।

- **जो माघमास में ब्राह्मणों को तिल दान करता है, वह समस्त जन्तुओं से भरे हुए नरक का दर्शन नहीं करता,**

माघमासे तिलान् यस्तु ब्राह्मणेभ्यः प्रयच्छति। सर्वसत्त्वसमाकीर्णं नरकं स न पश्यति ॥(महा०, अनु० ६६।८)

- **जो माघ मास को नियमपूर्वक एक समय के भोजन से व्यतीत करता है, वह धनवान् कुल में जन्म लेकर अपने कुटुम्बीजनों में महत्त्व को प्राप्त होता है,**

माघं तु नियतो मासमेकभक्तेन यः क्षिपेत् । श्रीमत्कुले ज्ञातिमध्ये स महत्त्वं प्रपद्यते ॥(महा०, अनु० १०६। २१)

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि / ल·अं·	१ मं घं·मि·से	२ बु घं·मि·से	३ गु घं·मि·से	३ शु घं·मि·से	४ श घं·मि·से	६ र घं·मि·से	७ चं घं·मि·से	८ मं घं·मि·से
मकरः	०८:५४:०७	०८:५०:१०	०८:४६:१३	०८:४२:१६	०८:३८:१९	०८:३४:२२	०८:३०:२५	०८:२६:२८
कुम्भः	१०:२३:१७	१०:१९:२०	१०:१५:२२	१०:११:२५	१०:०७:२८	१०:०३:३१	०९:५९:३४	०९:५५:३७
मीनः	११:४९:१२	११:४५:१५	११:४१:१७	११:३७:२०	११:३३:२३	११:२९:२६	११:२५:२९	११:२१:३२
मेषः	१३:२५:१०	१३:२१:१२	१३:१७:१५	१३:१३:१८	१३:०९:२१	१३:०५:२४	१३:०१:२६	१२:५७:२९
वृष्	१५:२०:४२	१५:१६:४५	१५:१२:४८	१५:०८:५१	१५:०४:५३	१५:००:५६	१४:५६:५९	१४:५३:०१
मिथुनः	१७:३४:५६	१७:३०:५८	१७:२७:०१	१७:२३:०४	१७:१९:०६	१७:१५:०९	१७:११:१२	१७:०७:१४
कर्कः	१९:५५:०८	१९:५१:११	१९:४७:१४	१९:४३:१६	१९:३९:१९	१९:३५:२१	१९:३१:२४	१९:२७:२६
सिंहः	२२:११:३८	२२:०७:४१	२२:०३:४४	२१:५९:४६	२१:५५:४९	२१:५१:५१	२१:४७:५४	२१:४३:५६
कन्या	००:२६:३८	००:२२:४०	००:१८:४३	००:१४:४५	००:१०:४८	००:०६:५०	००:०२:५३	२३:५८:५५
तुला	०२:४५:३०	०२:४१:३३	०२:३७:३५	०२:३३:३८	०२:२९:४०	०२:२५:४२	०२:२१:४५	०२:१७:४७
वृश्चिकः	०५:०४:२६	०५:००:२८	०४:५६:३१	०४:५२:३३	०४:४८:३५	०४:४४:३७	०४:४०:४०	०४:३६:४२
धनुः	०७:०९:३२	०७:०५:३५	०७:०१:३८	०६:५७:४१	०६:५४:०३	०६:५०:०५	०६:४६:०७	०६:४२:०९

तिथि / ल·अं·	९ बु घं·मि·से	१० गु घं·मि·से	११ शु घं·मि·से	१२ श घं·मि·से	१३ र घं·मि·से	१४ चं घं·मि·से	१५ मं घं·मि·से
मकरः	०८:२२:३१	०८:१८:३३	०८:१४:३६	०८:१०:३९	०८:०६:४२	०८:०२:४५	०७:५८:४७
कुम्भः	०९:५१:४०	०९:४७:४३	०९:४३:४५	०९:३९:४८	०९:३५:५१	०९:३१:५४	०९:२७:५६
मीनः	११:१७:३४	११:१३:३७	११:०९:४०	११:०५:४३	११:०१:४५	१०:५७:४८	१०:५३:५१
मेषः	१२:५३:३२	१२:४९:३५	१२:४५:३७	१२:४१:४०	१२:३७:४३	१२:३३:४५	१२:२९:४८
वृष्	१४:४९:०४	१४:४५:०७	१४:४१:०९	१४:३७:१२	१४:३३:१५	१४:२९:१७	१४:२५:२०
मिथुनः	१७:०३:१७	१६:५९:१९	१६:५५:२२	१६:५१:२५	१६:४७:२७	१६:४३:३०	१६:३९:३२
कर्कः	१९:२३:२९	१९:१९:३१	१९:१५:३४	१९:११:३६	१९:०७:३९	१९:०३:४१	१८:५९:४४
सिंहः	२१:३९:५८	२१:३६:०१	२१:३२:०३	२१:२८:०६	२१:२४:०८	२१:२०:१०	२१:१६:१३
कन्या	२३:५४:५७	२३:५१:००	२३:४७:०२	२३:४३:०४	२३:३९:०७	२३:३५:०९	२३:३१:११
तुला	०२:१३:४९	०२:०९:५१	०२:०५:५४	०२:०१:५६	०१:५७:५८	०१:५४:००	०१:५०:०२
वृश्चिकः	०४:३२:४४	०४:२८:४६	०४:२४:४८	०४:२०:५०	०४:१६:५३	०४:१२:५५	०४:०८:५७
धनुः	०६:३८:११	०६:३४:१३	०६:३०:१५	०६:२६:१७	०६:२२:१९	०६:१८:२१	०६:१४:२३

सूर्योदयकालीन तिथिः४

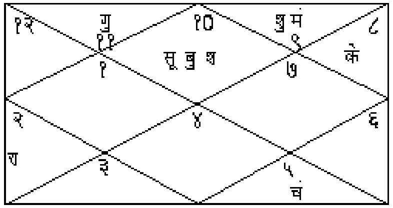

सूर्योदयकालीन तिथिः११

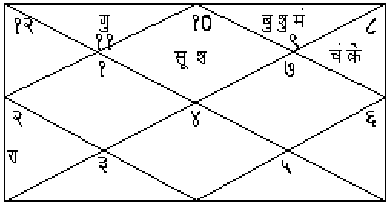

माघ शुक्लपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः—मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपश्चिमास्त; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; ०५१८१३,मार्गी बुधःपूर्वोदितः, २:२:२०२२;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
२६:५६:०३	१ बु	०६:२५	दि ०९:५२:०९	**धनि·**	३१:१९	रा १९:४९:३८	वरी·	४७:२८	रा २६:१७:३२	बव ०६:२५	बाल ३४:३६	म·०२:२०	दि ०८:१४:०९	७:१८:१४	६:०४:३९	मित्र	१९	२	अमृत·१; द·न·ध; सिद्ध·२;
२६:५९:२३	२ गु	०३:०३	दि ०८:३०:५४	**शत·**	३०:०१	रा १९:१७:५७	परिघ	४२:१९	रा २४:१३:११	कौल ०३:०३	तैति ३१:४४	कुंभ	अहोरात्र	७:१७:४३	६:०५:२८	वज्र	२०	३	अमृत·३; रवियोगःपूभा;
२७:०२:४५	३ शु	**००:४३ ५८:४९**	**दि ०७:३४:३० रा ३१:०६:०६**	**पू·भा·**	२९:४७	रा १९:१२:०३	शिव	३८:०२	रा २२:३०:०९	गर ००:४३	वणि २९:५८	कु·१४:४४	दि १३:१०:५८	७:१७:१०	६:०६:१७	ध्वांक्ष	२१	४	**भद्रा १९:१७—३१:०६घं·;** अमृत·४;
२७:०६:११	५ श	५९:३८	दि ३१:०७:४१	**उ·भा·**	३०:४५	रा १९:३४:२९	सिद्ध	३४:४३	रा २१:१०:००	बव २९:२६	बाल ५९:३८	मीन	अहोरात्र	७:१६:३७	६:०७:०५	धूम्र	२२	५	रवियोगःरे; द·न·रे;
२७:०९:३८	६ र	६०:००	अहोरात्र	**रेवती**	३२:५७	रा २०:२६:५०	साध्य	३२:२५	रा २०:१३:५०	कौल ३०:१०	तैति ६०:००	मी·३२:५७	रा २०:२६:५०	७:१६:०२	६:०७:५३	प्रवर्द्ध	२३	६	**पञ्चकान्तः२०:२७;**
२७:१३:०८	६ चं	०१:०३	दि ०७:४०:३०	**अश्वि·**	३६:२४	रा २१:४८:५३	शुभ	३१:०५	रा १९:४१:२४	तैति ०१:०३	गर ३२:१३	मेष	अहोरात्र	७:१५:२६	६:०८:४१	राक्षस	२४	७	सिद्ध·६; रवियोगःअ;
२७:१६:४०	७ मं	०३:४१	दि ०८:४३:२१	**भरणी**	४०:५९	रा २३:३८:१६	शुक्ल	३०:४०	रा १९:३०:४०	वणि ०३:४१	विष ३५:२६	मे·५७:१७	रा १८:०९:२८	७:१४:४८	६:०९:२८	मुसल	२५	८	**भद्रा ८:४३—२१:२५घं·;** अमृत·७;
२७:२०:१४	८ बु	०७:२८	दि १०:१३:२५	**कृत्ति·**	४६:३२	रा २५:५१:०६	ब्रह्म	३१:०३	रा १९:३९:१९	बव ०७:२८	बाल ३९:४२	वृष	अहोरात्र	७:१४:०९	६:१०:१५	सिद्धि	२६	९	सर्वार्थ·कृ; सर्वार्थ·रो;
२७:२३:५१	९ गु	१२:०९	दि १२:०५:१२	**रोहि·**	५२:४७	रा २८:२०:१३	ऐन्द्र	३२:०२	रा २०:०२:११	कौल १२:०९	तैति ४४:४३	वृष	अहोरात्र	७:१३:२९	६:११:०१	उत्पात	२७	१०	रवियोगःरो; सिद्ध·१०;
२७:२७:२९	१० शु	१७:२५	दि १४:१०:५६	**मृग·**	५९:२१	दि ३०:५७:१७	वैधृ·	३३:२२	रा २०:३३:३५	गर १७:२५	वणि ५०:०८	वृ·२६:०४	रा १७:३८:२३	७:१२:४७	६:११:४७	मानस	२८	११	**भद्रारंभः२७:१६घं·;** सिद्ध·११;
२७:३१:०९	११ श	२२:५२	दि १६:२०:६०	**आर्द्रा**	६०:००	अहोरात्र	विष्कु·	३४:४६	रा २१:०६:१९	विष २२:५२	बव ५५:३०	मिथुन	अहोरात्र	७:१२:०५	६:१२:३२	मुद्गर	२९	१२	**भद्रांतः१६:२१घं·; कुम्भ संक्रान्ति;**
२७:३४:५१	१२ र	२८:०२	रा १८:२४:१४	**आर्द्रा**	०५:५१	दि ०९:३१:३९	प्रीति	३५:५३	रा २१:३२:३७	बाल २८:०२	कौल ६०:००	मि·५५:२१	रा २९:१९:४०	७:११:२१	६:१३:१७	ध्वांक्ष	३०	१३	**संक्रान्ति पुण्यकालं,६:४४—१२:१५घं·;**
२७:३८:३५	१३ चं	३२:३२	रा २०:११:३५	**पुन·**	११:४८	दि ११:५३:३९	आयु·	३६:३०	रा २१:४६:२७	कौल ००:२४	तैति ३२:३२	कर्क	अहोरात्र	७:१०:३६	६:१४:०२	धूम्र	१	१४	**मासादिः;** सर्वार्थ·पु; रवियोगःपु;
२७:४२:२०	१४ मं	३६:०४	रा २१:३५:३३	**पुष्य**	१६:५४	दि १३:५५:३२	सौभा·	३६:२२	रा २१:४२:२८	गर ०४:२७	वणि ३६:०४	कर्क	अहोरात्र	७:०९:५०	६:१४:४६	प्रवर्द्ध	२	१५	**भद्रारंभः२१:३६घं·;** रवियोगःपु;
२७:४६:०७	१५ बु	३८:२६	रा २२:३१:२१	**आश्ले·**	२०:५७	दि १५:३१:४४	शोभ·	३५:२०	रा २१:१७:१०	विष ०७:२५	बव ३८:२६	क·२०:५७	दि १५:३१:४४	७:०९:०२	६:१५:२९	राक्षस	३	१६	**भद्रांतः१०:०७घं·;** अमृत·१;

दि— सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा— सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

तिथि	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से
१	०९:१८:४९:५९	०९:२९:२७:४३	०८:१०:३९:५७	०८:२८:११:०६	१०:१४:२४:५९	०८:१०:४६:०१	०९:१८:२२:०८	०७:०६:०५:११	४३:२८:०२	०७:५४:४४	द·१७:४२:५९	—१४:३८
२	०९:१९:५१:०१	१०:१३:१२:३३	०८:११:२२:४२	०८:२८:०८:०५	१०:१४:३८:५०	०८:११:११:४०	०९:१८:२९:२४	०७:०६:०२:००	४३:२९:४१	०८:३४:५५	द·१७:२५:३३	—१४:४७
३	०९:२०:५२:०१	१०:२६:४३:०५	०८:१२:०५:३०	०८:२८:११:२८	१०:१४:५२:४३	०८:११:३९:०१	०९:१८:३६:३९	०७:०५:५८:५०	४३:३१:२३	०९:११:०५	द·१७:०७:४७	—१४:५६
५	०९:२१:५३:००	११:०९:५८:२०	०८:१२:४८:२०	०८:२८:२१:१२	१०:१५:०६:३९	०८:१२:०७:५९	०९:१८:४३:५५	०७:०५:५५:३९	४३:३३:०५	०९:४६:२७	द·१६:४९:४४	—१५:०३
६	०९:२२:५३:५८	११:२२:५८:०३	०८:१३:३१:१३	०८:२८:३७:०६	१०:१५:२०:३७	०८:१२:३८:३२	०९:१८:५१:११	०७:०५:५२:२८	४३:३४:४९	१०:५५:३३	द·१६:३१:२४	—१५:०९
६	०९:२३:५४:५४	००:०५:४२:४६	०८:१४:१४:०८	०८:२८:५९:००	१०:१५:३४:३७	०८:१३:१०:३४	०९:१८:५८:२७	०७:०५:४९:१८	४३:३६:३४	१०:५४:५५	द·१६:१२:४६	—१५:१५
७	०९:२४:५५:४९	००:१८:१३:४३	०८:१४:५७:०५	०८:२९:२६:४०	१०:१५:४८:३९	०८:१३:४४:०३	०९:१९:०५:४३	०७:०५:४६:०७	४३:३८:२०	११:३३:३४	द·१५:५३:५२	—१५:२०
८	०९:२५:५६:४२	०१:००:३२:५२	०८:१५:४०:०५	०८:२९:५९:५२	१०:१६:०२:४३	०८:१४:१८:५६	०९:१९:१२:५९	०७:०५:४२:५७	४३:४०:०७	१२:११:३०	द·१५:३४:४२	—१५:२४
९	०९:२६:५७:३५	०१:१२:४२:४७	०८:१६:२३:०८	०९:००:३८:१८	१०:१६:१६:४९	०८:१४:५५:०९	०९:१९:२०:१५	०७:०५:३९:४६	४३:४१:५५	१२:५४:४९	द·१५:१५:१६	—१५:२७
१०	०९:२७:५८:२५	०१:२४:४६:३०	०८:१७:०६:१३	०९:०१:२१:४४	१०:१६:३०:५७	०८:१५:३२:३८	०९:१९:२७:३१	०७:०५:३६:३५	४३:४३:४४	१३:४०:३८	द·१४:५५:३४	—१५:२९
११	०९:२८:५९:१४	०२:०६:४७:२५	०८:१७:४९:२१	०९:०२:०९:५३	१०:१६:४५:०७	०८:१६:११:२२	०९:१९:३४:४६	०७:०५:३३:२५	४३:४५:३५	१४:२८:०८	द·१४:३५:३८	—१५:३०
१२	१०:००:००:०२	०२:१८:४९:२८	०८:१८:३२:३२	०९:०३:०२:२८	१०:१६:५९:१९	०८:१६:५१:१६	०९:१९:४२:०१	०७:०५:३०:१४	४३:४७:२६	१५:२०:५९	द·१४:१५:२७	—१५:३१
१३	१०:०१:००:४८	०३:००:५६:१८	०८:१९:१५:४५	०९:०३:५९:१५	१०:१७:१३:३२	०८:१७:३२:१८	०९:१९:४९:१६	०७:०५:२७:०३	४३:४९:१७	१६:१४:१९	द·१३:५५:०२	—१५:३१
१४	१०:०२:०१:३२	०३:१३:११:०६	०८:१९:५९:००	०९:०४:५९:५८	१०:१७:२७:४६	०८:१८:१४:२६	०९:१९:५६:३०	०७:०५:२३:५३	४३:५१:१०	१७:०९:२९	द·१३:३४:२४	—१५:३०
१५	१०:०३:०२:१५	०३:२५:३६:३८	०८:२०:४२:१८	०९:०६:०४:२२	१०:१७:४२:०२	०८:१८:५७:३७	०९:२०:०३:४३	०७:०५:२०:४२	४३:५३:०४	१८:०५:४७	द·१३:१३:३२	—१५:२८

माघ शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक **गुप्त नवरात्रि** की आराधना चलती है। चैत्रेश्विने तथाषाढे माघे कार्यो महोत्सवः।।
कुंदचतुर्थी, वरदचतुर्थी, **तिलचतुर्थी** में गणेश जी को तिल का लड्डू चढ़ाया जाता है। गौरी माता को कुंद अर्पित किया जाता है। **माघ शुक्ल पञ्चमी** के दिन विद्या की अधिष्ठात्री भगवती सरस्वती का पूजन करें। नैवेद्य भी अधिकाधिक पीले व्यंजनों का भोग लगावें। **वसंत पंचमी** के दिन से संवत् होलिका गाड़कर उसमें ईंधन डालने की प्रक्रिया लोक में शुरू होती है जो होलिकादाह के दिन जलाई जाती है। **माघी पूर्णिमा** को कल्पवास की समाप्ति व भगवती ललिता महात्रिपुरसुन्दरी की जयन्ती मनाई जाती है। माघी पूर्णिमा को पितृलोक का द्वार खुला रहता है, इस दिन दान—धर्म, श्राद्ध—तर्पण का अपूर्व महत्व है। संत रविदास जी की जयंती आज ही मनाई जाती है। माघ स्नान और दान का मास है।

तिथि / दिन	दिनाङ्क / अंग्रेजी	卐 व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि 卐
१ बु	२	**गुप्त नवरात्र आरम्भः;** मार्गी बुधः००:१८; मृत्युबाण घं·२:५२:५४उ·;
२ गु	३	मार्गी बुधः००:१८; मृत्युबाण घं·३:१६:१२या·;
३ शु	४	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी; तिल चौथ;** रवियोगःपूभा;
५ श	५	**श्रीवसन्तपञ्चमी; श्रीसरस्वती पूजन; श्रीगोविन्ददेवजी पाटोत्सव,जयपुर; रतिकाममहोत्सव;** ①
६ र	६	**श्रीवसन्तोत्सव (निम्बार्कमते) ; गण्डान्तः१४:११–२६:४५;** धनिष्ठायांरविः२५:३७,घं·१७:५७:४४; ②
६ चं	७	पूर्वाषाढ़ेशुक्रः१७:९,घं·१४:३३:४६;
७ मं	८	**भानुसप्तमी; रथसप्तमी; श्री देवनारायण जयन्ती; श्री भीष्माष्टमी;** सिद्ध·८; सर्वार्थ·कृ;
८ बु	९	**श्रीदुर्गाष्टमी व्रतम्;** मकरेबुधः००:१४,घं·०७:४६:२८; रवियोगःरो;
९ गु	१०	**गुप्त नवरात्र समाप्तिः;** रवियोगःमृ; ① **मदनपञ्चमी;** पूर्वाषाढ़ेमङ्गलः४४:१८,घं·०१:२६; अमृत·६;
१० शु	११	रवियोगःमृ; मृत्युबाण घं·६:४:३१उ·; ② रवियोगःरे; सर्वार्थ·अ; रवियोगःअ;
११ श	१२	**श्री जया एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त) ; मासान्तः;** कुम्भेरविः५९:५६,घं·७:३७; द·ति·१२; ③
१२ र	१३	**श्री भीष्म द्वादशी; तिलद्वादशी;** त्रिपुष्करः१२+पुन; सिद्ध·१३; मृत्युबाण घं·०६:४१:१०उ·;
१३ चं	१४	**सोम प्रदोष व्रतम्;** मृत्युबाण घं·६:५८:३७या·; ③ अमृत·११; मृत्युबाण घं·६:४१:५५या·;
१४ मं	१५	**पूर्णिमा व्रतम्;** सर्वार्थ·आश्ले;
१५ बु	१६	**माघी पूर्णिमा (स्नान–दान) ; माघस्नान समाप्त; होलिका रोपण; श्री महात्रिपुरसुन्दरी राजराजेश्वरी ललिता जयन्ती; बेणेश्वर मेला डूंगरपुर; गण्डान्तः९:१०–२१:५१;**

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	१२:१९:५३–१३:४६:०५
१५	१२:२०:०३–१३:४८:५५

वसन्त पञ्चमी सरस्वती पूजन

विद्यार्थी यदि एक पीत पुष्प चढ़ाकर भगवती सरस्वती का कोई स्तोत्र पाठ करले तब भी वह विद्या के क्षेत्र में सफलता को प्राप्त करता है। सरस्वती देवी की आराधना से साधारण व्यक्ति को विशिष्ट प्रतिभा प्राप्त होती है और विशिष्ट बुद्धि वाला अतीन्द्रिय ज्ञान सम्पन्न हो जाता है।

महर्षि आश्वलायन कृत स्तोत्र

ॐ चतुर्मुख-मुखाम्भोज-वनहंस-वधूर्मम । मानसे रमतां नित्यं सर्वशुक्ला सरस्वती ।।
ॐ नमस्ते शारदे देवि काश्मीर-पुर-वासिनी । त्वामहं प्रार्थये नित्यं विद्यादानं च देहि मे ।।
ॐ अक्षसूत्र-धरा पाश- पुस्तक- धारिणी । मुक्ताहार-समायुक्ता वाचि तिष्ठतु मे सदा ।।
ॐ कम्बुकण्ठी सुताम्रोष्ठी सर्वाभरणभूषिता । महासरस्वती देवी जिह्वाग्रे संनिविश्यताम् ।।
ॐ या श्रद्धा धारणा मेधा वाग्देवी विधिवल्लभा। भक्तजिह्वाग्र-सदना शमादि-गुणदायिनी ।।
ॐ नमामि यामिनीनाथ लेखालंकृत-कुन्तलाम् । भवानीं भव- संताप -निर्वापण -सुधानदीम् ।।

सरस्वती - स्तोत्र

या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला या शुभ्रवस्त्रावृता। या वीणा वर दण्ड मण्डित करा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता। सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।
शुक्लां ब्रह्म विचारसार परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं। वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फटिकमालिकां च दधतीम् पद्मासनेसंस्थितां। वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।
सरस्वति महाभागे विद्ये कमल-लोचने । विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोस्तुते ।।

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि / ल·अं·	१ बु घं·मि·से	२ गु घं·मि·से	३ शु घं·मि·से	५ श घं·मि·से	६ र घं·मि·से	६ च घं·मि·से	७ म घं·मि·से	८ बु घं·मि·से	९ गु घं·मि·से	१० शु घं·मि·से	११ श घं·मि·से	लग्न अन्त	१२ र घं·मि·से	१३ च घं·मि·से	१४ म घं·मि·से	१५ बु घं·मि·से
मकरः	०७:५४:५०	०७:५०:५३	०७:४६:५६	०७:४२:५९	०७:३९:०१	०७:३५:०४	०७:३१:०७	०७:२७:१०	०७:२३:१२	०७:१९:१५	०७:१५:१८	कुम्भः	०८:४०:२९	०८:३६:३२	०८:३२:३४	०८:२८:३७
कुम्भः	०९:२३:५९	०९:२०:०२	०९:१६:०४	०९:१२:०७	०९:०८:१०	०९:०४:१३	०९:००:१५	०८:५६:१८	०८:५२:२१	०८:४८:२३	०८:४४:२६	मीनः	१०:०६:२३	१०:०२:२५	०९:५८:२८	०९:५४:३१
मीनः	१०:४९:५३	१०:४५:५६	१०:४१:५९	१०:३८:०१	१०:३४:०४	१०:३०:०७	१०:२६:०९	१०:२२:१२	१०:१८:१५	१०:१४:१७	१०:१०:२०	मेषः	११:४२:१९	११:३८:२२	११:३४:२५	११:३०:२७
मेषः	१२:२५:५०	१२:२१:५३	१२:१७:५६	१२:१३:५८	१२:१०:०१	१२:०६:०४	१२:०२:०६	११:५८:०९	११:५४:११	११:५०:१४	११:४६:१७	वृष्	१३:३७:५०	१३:३३:५३	१३:२९:५५	१३:२५:५८
वृष्	१४:२१:२२	१४:१७:२५	१४:१३:२७	१४:०९:३०	१४:०५:३२	१४:०१:३५	१३:५७:३७	१३:५३:४०	१३:४९:४३	१३:४५:४५	१३:४१:४८	मिथुनः	१५:५२:०२	१५:४८:०४	१५:४४:०७	१५:४०:०९
मिथुनः	१६:३५:३४	१६:३१:३७	१६:२७:३९	१६:२३:४२	१६:१९:४४	१६:१५:४७	१६:११:४९	१६:०७:५२	१६:०३:५४	१५:५९:५७	१५:५५:५९	कर्कः	१८:१२:१२	१८:०८:१५	१८:०४:१७	१८:००:१९
कर्कः	१८:५५:४६	१८:५१:४८	१८:४७:५१	१८:४३:५३	१८:३९:५५	१८:३५:५८	१८:३२:००	१८:२८:०२	१८:२४:०५	१८:२०:०७	१८:१६:१०	सिंहः	२०:२८:४०	२०:२४:४३	२०:२०:४५	२०:१६:४७
सिंहः	२१:१२:१५	२१:०८:१७	२१:०४:१९	२१:००:२२	२०:५६:२४	२०:५२:२६	२०:४८:२९	२०:४४:३१	२०:४०:३३	२०:३६:३६	२०:३२:३८	कन्या	२२:४३:३८	२२:३९:४०	२२:३५:४२	२२:३१:४५
कन्या	२३:२७:१३	२३:२३:१५	२३:१९:१८	२३:१५:२०	२३:११:२२	२३:०७:२४	२३:०३:२६	२२:५९:२९	२२:५५:३१	२२:५१:३३	२२:४७:३५	तुला	०१:०२:२८	००:५८:३०	००:५४:३२	००:५०:३५
तुला	०१:४६:०४	०१:४२:०७	०१:३८:०९	०१:३४:११	०१:३०:१३	०१:२६:१५	०१:२२:१७	०१:१८:१९	०१:१४:२१	०१:१०:२४	०१:०६:२६	वृश्चिकः	०३:२१:२१	०३:१७:२४	०३:१३:२६	०३:०९:२८
वृश्चिकः	०४:०४:५९	०४:०१:०१	०३:५७:०३	०३:५३:०५	०३:४९:०७	०३:४५:०९	०३:४१:११	०३:३७:१३	०३:३३:१५	०३:२९:१७	०३:२५:१९	धनुः	०५:२६:४७	०५:२२:४९	०५:१८:५१	०५:१४:५३
धनुः	०६:१०:२५	०६:०६:२७	०६:०२:२९	०५:५८:३१	०५:५४:३३	०५:५०:३५	०५:४६:३७	०५:४२:३९	०५:३८:४१	०५:३४:४३	०५:३०:४५	मकरः	०७:११:२१	०७:०७:२४	०७:०३:२६	०६:५९:२९

सूर्योदयकालीन तिथिः२

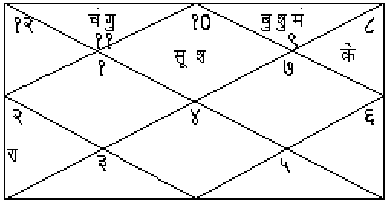

सूर्योदयकालीन तिथिः११

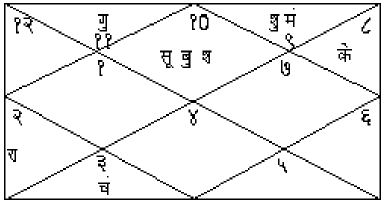

फाल्गुन कृष्णपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–मार्गी गुरुःपूर्वोदितः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपश्चिमास्त; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वोदितः, १७:२:२०२२;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
२७:४९:५६	१ गु	३९:३१	रा २२:५६:४६	मघा	२३:४७	दि १६:३९:०४	अतिग·	३३:२२	रा २०:२८:५१	बाल ०९:०९	कौल ३९:३१	सिंह	अहोरात्र	७:०८:१४	६:१६:१२	मुसल	४	१७	;
२७:५३:४५	२ शु	३९:१९	रा २२:५०:५४	पू·फा·	२५:२३	दि १७:१६:२६	सुकर्मा	३०:२३	रा १९:१६:२७	तैति ०९:३५	गर ३९:१९	सिं·४०:३४	रा २३:२१:११	७:०७:२५	६:१६:५५	सिद्धि	५	१८	;
२७:५७:३७	३ श	३७:५२	रा २२:१५:१६	उ·फा·	२५:४५	दि १७:२४:३२	धृति	२६:२६	दि १७:४०:४७	वणि ०८:४५	विष ३७:५२	कन्या	अहोरात्र	७:०६:३४	६:१७:३७	उत्पात	६	१९	**भद्रा १०:३७–२२:१५घं·;** सिद्ध·४;
२८:०१:२९	४ र	३५:१६	रा २१:१२:०८	हस्त	२४:५९	दि १७:०५:१८	शूल	२१:३४	दि १५:४३:१३	बव ०६:४३	बाल ३५:१६	कं·५४:१२	रा २८:४६:२८	७:०५:४३	६:१८:१९	मानस	७	२०	द·ति·४;
२८:०५:२३	५ चं	३१:४१	रा १९:४५:११	चित्रा	२३:१३	दि १६:२१:५६	गण्ड	१५:५३	दि १३:२५:५६	कौल ०३:३६	तैति ३१:४१	तुला	अहोरात्र	७:०४:५१	६:१८:६०	मुद्गर	८	२१	द·ति·४;
२८:०९:१८	६ मं	२७:१५	दि १७:५८:०३	स्वाती	२०:३६	दि १५:१८:२५	वृद्धि	०९:३०	दि १०:५२:०७	वणि २७:१५	विष ५४:४६	तुला	अहोरात्र	७:०३:५७	६:१९:४०	ध्वज	९	२२	**भद्रा १७:५८–२८:५८घं·;**
२८:१३:१४	७ बु	२२:०९	दि १५:५४:४८	विशा·	१७:१८	दि १३:५८:२४	ध्रुव व्याघ·	०२:३३ ५२:३५	दि ०८:०४:२१ रा २९:०६:२१	बव २२:०९	बाल ४९:२४	तु·०३:१२	दि ०८:१९:४२	७:०३:०३	६:२०:२१	धाता	१०	२३	सिद्ध·७; रवियोगःवि; सर्वार्थ·अनु;
२८:१७:११	८ गु	१६:३५	दि १३:४०:१७	अनु·	१३:३२	दि १२:२६:५३	हर्षण	४७:२७	रा २६:०१:०४	कौल १६:३५	तैति ४३:४०	वृश्चिक	अहोरात्र	७:०२:०८	६:२१:००	आनन्द	११	२४	**गण्डान्तारम्भः२९:१३;** अमृत·८;
२८:२१:०८	९ शु	१०:४४	दि ११:१८:५०	ज्ये·	०९:२८	दि १०:४८:१८	वज्र	३९:३८	रा २२:५२:३५	गर १०:४४	वणि ३७:४५	वृ·०९:२८	दि १०:४८:१८	७:०१:१२	६:२१:३९	सुस्थिर	१२	२५	**भद्रारंभः२२:०७घं·;गण्डान्तः१६:२३;**
२८:२५:०७	१० श	०४:४८ ५४:१०	दि ०८:५५:२३ रा ३०:३५:२३	मूल	०५:१९	दि ०९:०७:४०	सिद्धि	३१:५२	रा १९:४४:५६	विष ०४:४८	बव ३१:५१	धनु	अहोरात्र	७:००:१५	६:२२:१८	गद	१३	२६	**भद्रांतः८:५५घं·;**
२८:२९:०७	१२ र	५३:३०	रा २८:२३:२४	पू·षा· उ·षा·	०१:१८ ५६:१८	दि ०७:३०:२७ रा ३०:०१:३९	व्यति·	२४:१७	दि १६:४२:०४	कौल २६:१२	तैति ५३:३०	ध·१५:२०	दि १३:०७:१७	६:५९:१८	६:२२:५६	शुभ	१४	२७	सर्वार्थ·उषा; त्रिपुष्करः१२+उषा;
२८:३३:०७	१३ चं	४८:३४	रा २६:२३:५९	श्रवण	५४:२८	रा २८:४५:२९	वरी·	१७:०३	दि १३:४७:२०	गर २०:५९	वणि ४८:३४	मकर	अहोरात्र	६:५८:१९	६:२३:३४	काण	१५	२८	**भद्रारंभः२६:२४घं·;पञ्चकारंभः२८:४५;**
२८:३७:०८	१४ मं	४४:२१	रा २४:४१:५१	धनि·	५२:०४	रा २७:४६:५१	परिघ	१०:१८	दि ११:०४:२९	विष १६:२३	बव ४४:२१	म·२३:११	दि १६:१३:३४	६:५७:२०	६:२४:१२	उत्पात	१६	१	**भद्रांतः१३:३०घं·;**
२८:४१:१०	३० बु	४१:००	रा २३:२०:२८	शत·	५०:३२	रा २७:०९:१५	शिव सिद्ध	०४:११ ५४:३६	दि ०८:३६:४६ रा ३०:२७:१०	चतु १२:३४	नाग ४१:००	कुंभ	अहोरात्र	६:५६:२१	६:२४:४९	मानस	१७	२	अमृत·१;

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

❋ औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः ❋

तिथि	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से
१	१०:०४:०२:५६	०४:०८:१५:०९	०८:२१:२५:३९	०९:०७:१२:१४	१०:१७:५६:२०	०८:१९:४१:४८	०९:२०:१०:५६	०७:०५:१७:३१	४३:५४:५८	१९:०२:१३	द·१२:५२:२७	–१५:२५
२	१०:०५:०३:३६	०४:२१:०८:१३	०८:२२:०९:०२	०९:०८:२३:२०	१०:१८:१०:३८	०८:२०:२६:५७	०९:२०:१८:०८	०७:०५:१४:२१	४३:५६:५३	१९:५९:०४	द·१२:३१:११	–१५:२२
३	१०:०६:०४:१४	०५:०४:१६:४१	०८:२२:५२:२८	०९:०९:३७:२८	१०:१८:२४:५८	०८:२१:१३:०१	०९:२०:२५:२०	०७:०५:११:१०	४३:५८:४८	२०:५७:१३	द·१२:०९:४२	–१५:१८
४	१०:०७:०४:५०	०५:१७:४०:३८	०८:२३:३५:५७	०९:१०:५४:२७	१०:१८:३९:१९	०८:२१:५९:५९	०९:२०:३२:३०	०७:०५:०७:५९	४४:००:४५	२१:५६:५४	द·११:४८:०२	–१५:१३
५	१०:०८:०५:२५	०६:०१:१९:२२	०८:२४:१९:२८	०९:१२:१४:०५	१०:१८:५३:४१	०८:२२:४७:४९	०९:२०:३९:४०	०७:०५:०४:४९	४४:०२:४१	२२:५८:२७	द·११:२६:११	–१५:०७
६	१०:०९:०५:५७	०६:१५:११:३०	०८:२५:०३:०२	०९:१३:३६:१२	१०:१९:०८:०४	०८:२३:३६:२७	०९:२०:४६:४९	०७:०५:०१:३८	४४:०४:३९	२४:०२:४०	द·११:०४:०९	–१५:०१
७	१०:१०:०६:२८	०६:२९:१४:५४	०८:२५:४६:३८	०९:१५:००:३८	१०:१९:२२:२८	०८:२४:२५:५४	०९:२०:५३:५६	०७:०४:५८:२८	४४:०६:३७	०१:०७:२३	द·१०:४१:५७	–१४:५४
८	१०:११:०६:५७	०७:१३:२६:५५	०८:२६:३०:१७	०९:१६:२७:१५	१०:१९:३६:५२	०८:२५:१६:०५	०९:२१:०१:०३	०७:०४:५५:१७	४४:०८:३५	०२:११:३३	द·१०:१९:३५	–१४:४६
९	१०:१२:०७:२५	०७:२७:४४:२५	०८:२७:१३:५९	०९:१७:५५:५३	१०:१९:५१:१८	०८:२६:०७:०१	०९:२१:०८:०८	०७:०४:५२:०६	४४:१०:३४	०३:१४:२४	द·०९:५७:०४	–१४:३८
१०	१०:१३:०७:५०	०८:१२:०३:५६	०८:२७:५७:४३	०९:१९:२६:२५	१०:२०:०५:४४	०८:२६:५८:३९	०९:२१:१५:१२	०७:०४:४८:५६	४४:१२:३४	०४:१०:१०	द·०९:३४:२४	–१४:२९
१२	१०:१४:०८:१४	०८:२६:२१:२७	०८:२८:४१:३०	०९:२०:५८:४४	१०:२०:२०:१०	०८:२७:५०:५७	०९:२१:२२:१५	०७:०४:४५:४५	४४:१४:३३	०५:०३:५५	द·०९:११:३६	–१४:१९
१३	१०:१५:०८:३६	०९:१०:३३:२८	०८:२९:२५:१९	०९:२२:३२:४२	१०:२०:३४:३७	०८:२८:४३:५५	०९:२१:२९:१६	०७:०४:४२:३४	४४:१६:३४	०५:४८:१९	द·०८:४८:३९	–१४:०९
१४	१०:१६:०८:५५	०९:२४:३६:५३	०९:००:०९:१२	०९:२४:०८:१२	१०:२०:४९:०५	०८:२९:३७:३०	०९:२१:३६:१६	०७:०४:३९:२४	४४:१८:३४	०६:३१:३२	द·०८:२५:३५	–१३:५८
१५	१०:१७:०९:१३	१०:०८:२९:०१	०९:००:५३:०६	०९:२५:४५:१०	१०:२१:०३:३२	०९:००:३१:४२	०९:२१:४३:१५	०७:०४:३६:१३	४४:२०:३५	०७:०८:१३	द·०८:०२:२४	–१३:४७

फाल्गुन मास का नाम उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के नाम पर पड़ा है। फाल्गुन पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा प्रायः पूर्वा या उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र पर स्थित होता है। **महाशिवरात्रि** व्रत १ मार्च को पड़ रहा है। यह मध्यरात्रिव्यापिनी चतुर्दशी में मानी जाती है। शिवरात्रिव्रत की पारणा चतुर्दशी में ही की जाती है। मध्यरात्रि में शिवशक्ति की पूजा करके पारण किया जाता है। यदि अगले दिन भी चतुर्दशी हो तो अगले दिन पारण करते हैं। यह फाल्गुन का सबसे महत्वपूर्ण व्रत है।

नमः प्रदानेन मनः ददासि – हे आशुतोष भगवान् शिव शंकर! आप नमः कहते ही अपना मनः (प्रेम) प्रदान कर देते हैं।

र व प्रदानेन वरं ददासि – हे भगवान् शिव! आप र व शब्द उच्चारण करने पर वर दे देते हैं। ज्ञात हो गाल फुलाकर बकरे की आवाज में गाल बजाने से भगवान् शिव प्रसन्न होते हैं। यह शब्द दक्ष प्रजापति के मुख से निकलने के कारण भूतभावन भगवान् भोलेनाथ को प्रिय है।

फाल्गुन कृष्णपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; १७ फरवरी से २ मार्च, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःदक्षिण । ऋतुःशिशिर, याम्यगोलः, सौम्यायनं । ति·३० अयनांशाः२२:५०:३५

तिथि दिन	दिनाङ्क अंग्रेजी	卐 व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि 卐
१ गु	१७	;
२ शु	१८	;
३ श	१९	**संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी;** शतभिषायांरविः३५:२३,घं·२१:४२:४३; ⓟ
४ र	२०	सर्वार्थ·ह; अमृत·५; ⓟ श्रवणायांबुधः१७:४७,घं·१४:३९:६०;
५ चं	२१	अमृत·५; द·न·चि; सिद्ध·६;
६ मं	२२	रवियोगःवि; अमृत·७; त्रिपुष्करः७+वि; मृत्युबाण घं·८:५५:४७उ·;
७ बु	२३	**श्रीकालाष्टमी; श्रीनाथजी पाटोत्सव,नाथद्वारा;** मृत्युबाण घं·९:७:२८या·;
८ गु	२४	उत्तराषाढ़ेमङ्गलः१३:२०,घं·१२:४९:५; सर्वार्थ·अनु; मृत्यु·९;
९ शु	२५	उत्तराषाढ़ेशुक्रः३८:२४,घं·२२:४९:३८; पूर्वभाद्रेगुरुः३६:१०,घं·२१:५६:१०;अमृत·९; द·न·ज्ये;
१० श	२६	**श्री विजया एकादशी (स्मार्त्त) ;** अमृत·११;
१२ र	२७	**श्री विजया एकादशी (वैष्णव) ; व्यतिपात पुण्य; अभिजितारम्भः४३:२९;** सिद्ध·१३;
१३ चं	२८	**सोम प्रदोष व्रतम्; अभिजितान्तः१:२४;** धनिष्ठायांबुधः२९:४९,घं·१९:२०:४९; मकरेमङ्गलः४७:२४,घं·२:२२:५३; सर्वार्थ·श्र;
१४ मं	१	**श्री महाशिवरात्रि; सर्वत्रशिवपूजन–अभिषेक;** मकरेशुक्रः२४:५९,घं·१७:२३:३५;
३० बु	२	**अमावस्या (स्नान, दान, श्राद्ध) ;**

फाल्गुन मास कृत्य

महाशिवरात्रि व्रत- फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को मध्यरात्रि में चतुर्दशी विद्यमान् होने पर महाशिवरात्रि व्रत होता है। यह त्रयोदशी विद्धा श्रेष्ठ होती है- ***पूर्वविद्धैवकर्तव्याशिवरात्रिः*** *(निर्णयसिन्धु)*। १. यदि दोनों दिन अर्धरात्रि में चतुर्दशी न हो तब दूसरे दिन व्रत करे। २. यदि दोनों दिन अर्धरात्रि में चतुर्दशी हो तो पूर्व दिन व्रत करे। ऐसा हेमाद्रि और कौस्तुभ का वचन है। ३. परातिथि अर्थात् चतुर्दशी उदया में ही महाशिवरात्रि करनी चाहिए यह मत माधव, निर्णयसिन्धु और पुरुषार्थचिन्तामणि आदि बहुतों का है। ४. यदि पूर्व दिन मध्यरात्रि में चतुर्दशी हो, दूसरे दिन मध्यरात्रि में न हो तो पूर्वदिन ही व्रत करना चाहिए। ५. पूर्व मध्यरात्रि में न हो और अगले दिन मध्यरात्रि में चतुर्दशी हो तो पर (अगले) दिन ही व्रत करना चाहिए। ६. महाशिवरात्रि की पारणा चतुर्दशी में ही की जाती है। रविवार अथवा मंगलवार के दिन यह व्रत पड़ने पर अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है- ***इदं व्रतं रविवार- भौमवार-योगे चातिप्रशस्तम्।***

इसी पर्व के दिन पद्मासन लगाकर मार्कण्डेय महामुनि ने महामृत्युञ्जय मंत्र द्वारा भगवान् शिव की आराधना की थी। परिणामस्वरूप उन्हें कल्पायु की प्राप्ति हुई-

शिवरात्रौ शिवं पूज्य मृत्युमोचनविद्यया। कल्पायुरभवत् पूर्वं मार्कण्डेयो महामुनिः॥

यह व्रत नित्य और काम्य दोनों है अर्थात् इसे प्रतिवर्ष शिव की आराधना के रूप में किया जा सकता है। साथ ही पुत्र प्राप्ति तथा दीर्घायु प्राप्ति की कामना से भी इसे किया जाता है। काम्य व्रत में १२ वर्ष अथवा २४ वर्ष का संकल्प लिया जाता है- ***एवमेतद् व्रतं कुर्यात् प्रतिसंवत्सरं व्रती। द्वादशाब्दिकमेव स्याच्चतुर्विंशाब्दिकं तु वा॥***

ति	श्राद्धकाल घण्टादिः
१	१२:१९:५७–१३:४९:०१
१५	१२:१७:३८–१३:४९:२५

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि ल·अं·	१ गु घं·मि·से	२ शु घं·मि·से	३ श घं·मि·से	४ र घं·मि·से	५ चं घं·मि·से	६ मं घं·मि·से	७ बु घं·मि·से	८ गु घं·मि·से	९ शु घं·मि·से	१० श घं·मि·से	१२ र घं·मि·से	१३ चं घं·मि·से	१४ मं घं·मि·से	१५ बु घं·मि·से
कुम्भः	०८:२४:४०	०८:२०:४३	०८:१६:४६	०८:१२:४९	०८:०८:५२	०८:०४:५५	०८:००:५७	०७:५७:००	०७:५३:०४	०७:४९:०७	०७:४५:१०	०७:४१:१३	०७:३७:१६	०७:३३:१९
मीनः	०९:५०:३४	०९:४६:३६	०९:४२:३९	०९:३८:४२	०९:३४:४५	०९:३०:४८	०९:२६:५१	०९:२२:५४	०९:१८:५७	०९:१५:००	०९:११:०३	०९:०७:०६	०९:०३:०९	०८:५९:१२
मेषः	११:२६:३०	११:२२:३३	११:१८:३५	११:१४:३८	११:१०:४१	११:०६:४४	११:०२:४७	१०:५८:५०	१०:५४:५३	१०:५०:५६	१०:४६:५९	१०:४३:०२	१०:३९:०५	१०:३५:०८
वृष्	१३:२२:०१	१३:१८:०३	१३:१४:०६	१३:१०:०९	१३:०६:१२	१३:०२:१४	१२:५८:१७	१२:५४:२०	१२:५०:२३	१२:४६:२६	१२:४२:२९	१२:३८:३२	१२:३४:३५	१२:३०:३८
मिथुनः	१५:३६:१२	१५:३२:१४	१५:२८:१७	१५:२४:२०	१५:२०:२२	१५:१६:२५	१५:१२:२८	१५:०८:३१	१५:०४:३४	१५:००:३६	१४:५६:३९	१४:५२:४२	१४:४८:४५	१४:४४:४८
कर्कः	१७:५६:२२	१७:५२:२५	१७:४८:२७	१७:४४:३०	१७:४०:३२	१७:३६:३५	१७:३२:३८	१७:२८:४०	१७:२४:४३	१७:२०:४६	१७:१६:४९	१७:१२:५२	१७:०८:५५	१७:०४:५८
सिंहः	२०:१२:५०	२०:०८:५२	२०:०४:५५	२०:००:५७	१९:५७:००	१९:५३:०२	१९:४९:०५	१९:४५:०८	१९:४१:११	१९:३७:१३	१९:३३:१६	१९:२९:१९	१९:२५:२२	१९:२१:२५
कन्या	२२:२७:४७	२२:२३:४९	२२:१९:५२	२२:१५:५४	२२:११:५७	२२:०७:५९	२२:०४:०२	२२:००:०५	२१:५६:०७	२१:५२:१०	२१:४८:१३	२१:४४:१५	२१:४०:१८	२१:३६:२१
तुला	००:४६:३७	००:४२:३९	००:३८:४२	००:३४:४४	००:३०:४७	००:२६:४९	००:२२:५१	००:१८:५४	००:१४:५७	००:१०:५९	००:०७:०२	००:०३:०५	२३:५९:०८	२३:५५:१०
वृश्चिकः	०३:०५:३०	०३:०१:३२	०२:५७:३५	०२:५३:३७	०२:४९:३९	०२:४५:४२	०२:४१:४४	०२:३७:४७	०२:३३:४९	०२:२९:५२	०२:२५:५४	०२:२१:५७	०२:१८:००	०२:१४:०३
धनुः	०५:१०:५६	०५:०६:५८	०५:०३:००	०४:५९:०२	०४:५५:०५	०४:५१:०७	०४:४७:०९	०४:४३:१२	०४:३९:१४	०४:३५:१७	०४:३१:१९	०४:२७:२२	०४:२३:२५	०४:१९:२७
मकरः	०६:५५:३२	०६:५१:३५	०६:४७:३८	०६:४३:४१	०६:३९:४४	०६:३५:४०	०६:३१:४२	०६:२७:४४	०६:२३:४७	०६:१९:४९	०६:१५:५२	०६:११:५४	०६:०७:५७	०६:०४:००

भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः
तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः।
कालो न यातो वयमेव याताः
तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः ॥

अर्थात, हमने भोग नहीं भुगते, बल्कि भोगों ने ही हमें भुगता है; हमने तप नहीं किया, बल्कि हम स्वयं ही तप्त हो गये हैं; काल समाप्त नहीं हुआ हम ही समाप्त हो गये; तृष्णा जीर्ण नहीं हुई, पर हम ही जीर्ण हुए हैं !

सूर्योदयकालीन तिथिः४

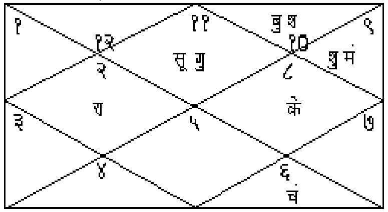

फाल्गुन शुक्लपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–मार्गी गुरुःपश्चिमास्तः; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वोदितः, ३:३:२०२२;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः				चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१	द·प·	क२	द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
२८:४५:१३	१ गु	३८:४२	रा २२:२४:०५	पू·भा·	५०:०४	रा २६:५६:४८	साध्य	५४:१६	रा २८:३७:४७	बव	०९:४४	बाल	३८:४२	कु·३५:०५	रा २०:५७:२०	६:५५:२०	६:२५:२५	मुद्गर	१८	३	;
२८:४९:१६	२ शु	३७:३४	रा २१:५५:५०	उ·भा·	५०:४५	रा २७:१२:१४	शुभ	५०:४२	रा २७:११:०७	बाल	०७:६०	कौल	३७:३४	मीन	अहोरात्र	६:५४:१९	६:२६:०१	ध्वज	१९	४	सर्वार्थ·रे;
२८:५३:१९	३ श	३७:४१	रा २१:५७:३७	रेवती	५२:४०	रा २७:५७:१७	शुक्ल	४८:०७	रा २६:०८:१२	तैति	०७:२८	गर	३७:४१	मी·५२:४०	रा २७:५७:१७	६:५३:१७	६:२६:३७	धाता	२०	५	**गण्डान्तारम्भ:२१:४३;पञ्चकान्त:२७:५७;**
२८:५७:२३	४ र	३९:०५	रा २२:३०:१९	अश्वि·	५५:५०	रा २९:१२:२५	ब्रह्म	४६:३३	रा २५:२९:२६	वणि	०८:१४	विष	३९:०५	मेष	अहोरात्र	६:५२:१५	६:२७:१२	आनन्द	२१	६	**भद्रा १०:१०–२२:३०घं·;गण्डान्त:१०:१३;**
२९:०१:२८	५ चं	४१:४४	रा २३:३२:५४	भरणी	६०:००	अहोरात्र	ऐन्द्र	४५:५५	रा २५:१३:०७	बव	१०:१७	बाल	४१:४४	मेष	अहोरात्र	६:५१:१२	६:२७:४७	सुस्थिर	२२	७	द·ति·४;
२९:०५:३३	६ मं	४५:३०	रा २५:०२:१५	भरणी	००:१२	दि ०६:५५:०६	वैधृ·	४६:०८	रा २५:१७:१२	कौल	१३:३१	तैति	४५:३०	मे·१६:२७	दि १३:२४:५९	६:५०:०९	६:२८:२२	मुसल	२३	८	सर्वार्थ·कृ; रवियोग:कृ;
२९:०९:३८	७ बु	५०:१०	रा २६:५२:५७	कृत्ति·	०५:३४	दि ०९:०२:४८	विष्कु·	४७:०१	रा २५:३७:२८	गर	१७:४६	वणि	५०:१०	वृष	अहोरात्र	६:४९:०५	६:२८:५६	सिद्धि	२४	९	**भद्रारंभ:२६:५३घं·;** सर्वार्थ·कृ;
२९:१३:४३	८ गु	५५:२२	रा २८:५६:५९	रोहि·	११:४१	दि ११:२८:३१	प्रीति	४८:२०	रा २६:०८:११	विष	२२:४४	बव	५५:२२	वृ·४४:५५	रा २४:४५:५४	६:४८:०१	६:२९:३०	उत्पात	२५	१०	**भद्रांत:१५:५४घं·;** अमृत·८;
२९:१७:४९	९ शु	६०:००	अहोरात्र	मृग·	१८:१३	दि १४:०४:२०	आयु·	४९:४९	रा २६:४२:३९	बाल	२८:०५	कौल	६०:००	मिथुन	अहोरात्र	६:४६:५६	६:३०:०४	मानस	२६	११	अमृत·९; रवियोग:आ;
२९:२१:५५	९ श	००:४६	दि ०७:०४:२३	आर्द्रा	२४:४५	दि १६:३९:५७	सौभा·	५१:०८	रा २७:१३:०१	कौल	००:४६	तैति	३३:२१	मिथुन	अहोरात्र	६:४५:५१	६:३०:३७	मुद्गर	२७	१२	सिद्ध·९; रवियोग:आ;
२९:२६:०१	१० र	०५:५०	दि ०९:०४:३९	पुन·	३०:५१	रा १९:०५:१२	शोभ·	५१:६०	रा २७:३२:३८	गर	०५:५०	वणि	३८:०६	मि·१४:२४	दि १२:३०:१४	६:४४:४५	६:३१:१०	ध्वज	२८	१३	**भद्रारंभ:२१:५९घं·;** अमृत·१०;
२९:३०:०८	११ चं	१०:१२	दि १०:४८:३७	पुष्य	३६:११	रा २१:१२:०८	अतिग·	५२:११	रा २७:३५:५५	विष	१०:१२	बव	४२:०१	कर्क	अहोरात्र	६:४३:३९	६:३१:४२	धाता	२९	१४	**भद्रांत:१०:४९घं·; मीन संक्रान्ति;**
२९:३४:१४	१२ मं	१३:३६	दि १२:०८:५८	आश्ले·	४०:२९	रा २२:५४:१०	सुकर्मा	५१:३०	रा २७:१८:४५	बाल	१३:३६	कौल	४४:५०	क·४०:२९	रा २२:५४:१०	६:४२:३३	६:३२:१५	आनन्द	१	१५	**संक्रान्ति पुण्यकालं,०६:१५–१२:१०घं·;**
२९:३८:२०	१३ बु	१५:४९	दि १३:०१:०७	मघा	४३:३७	रा २४:०८:२१	धृति	४९:५४	रा २६:३८:५६	तैति	१५:४९	गर	४६:२६	सिंह	अहोरात्र	६:४१:२७	६:३२:४७	सुस्थिर	२	१६	**मासादि:;** रवियोग:म;
२९:४२:२७	१४ गु	१६:४६	दि १३:२२:४७	पू·फा·	४५:३०	रा २४:५२:१९	शूल	४७:१७	रा २५:३५:०८	वणि	१६:४६	विष	४६:४४	सिंह	अहोरात्र	६:४०:२०	६:३३:१९	गद	३	१७	**भद्रा १३:२३–२५:२२घं·;**
२९:४६:३३	१५ शु	१६:२५	दि १३:१३:२०	उ·फा·	४६:०९	रा २५:०६:४६	गण्ड	४३:४१	रा २४:०७:३७	बव	१६:२५	बाल	४५:४६	सिं·००:४८	दि ०६:५८:२६	६:३९:१३	६:३३:५०	शुभ	४	१८	सिद्ध·१;

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

तिथि	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से
१	१०:१८:०९:२९	१०:२२:०७:४७	०९:०१:३७:०४	०९:२७:२३:२९	१०:२१:१८:०१	०९:०१:२६:२८	०९:२१:५०:११	०७:०४:३३:०२	४४:२२:३६	०७:०७:१२	द·०७:३९:०५	–१३:३५
२	१०:१९:०९:४३	११:०५:३१:४५	०९:०२:२१:०४	०९:२९:०३:०३	१०:२१:३२:२९	०९:०२:२१:४७	०९:२१:५७:०६	०७:०४:२९:५२	४४:२४:३८	०७:४३:०६	द·०७:१५:४०	–१३:२२
३	१०:२०:०९:५५	११:१८:४०:१३	०९:०३:०५:०६	१०:००:४३:४७	१०:२१:४६:५७	०९:०३:१७:४०	०९:२२:०३:६०	०७:०४:२६:४१	४४:२६:४०	०८:१८:११	द·०६:५२:०९	–१३:०९
४	१०:२१:१०:०५	००:०१:३३:१८	०९:०३:४९:१२	१०:०२:२५:३८	१०:२२:०१:२५	०९:०४:१४:०३	०९:२२:१०:५१	०७:०४:२३:३०	४४:२८:४२	०८:५२:२७	द·०६:२८:३३	–१२:५६
५	१०:२२:१०:१३	००:१४:११:५०	०९:०४:३३:१९	१०:०४:०८:२९	१०:२२:१५:५४	०९:०५:१०:५६	०९:२२:१७:४१	०७:०४:२०:२०	४४:३०:४४	०९:२९:४०	द·०६:०४:५१	–१२:४२
६	१०:२३:१०:१८	००:२६:३७:२२	०९:०५:१७:३०	१०:०५:५२:१७	१०:२२:३०:२२	०९:०६:०८:१८	०९:२२:२४:२८	०७:०४:१७:०९	४४:३२:४६	१०:०८:०६	द·०५:४१:०४	–१२:२७
७	१०:२४:१०:२२	०१:०८:५२:०९	०९:०६:०१:४३	१०:०७:३६:५७	१०:२२:४४:५०	०९:०७:०६:०८	०९:२२:३१:१४	०७:०४:१३:५९	४४:३४:४९	१०:४८:३२	द·०५:१७:१३	–१२:१३
८	१०:२५:१०:२४	०१:२०:५८:५८	०९:०६:४५:५८	१०:०९:२२:२७	१०:२२:५९:१८	०९:०८:०४:२५	०९:२२:३७:५७	०७:०४:१०:४८	४४:३६:५२	११:३४:४०	द·०४:५३:१८	–११:५७
९	१०:२६:१०:२३	०२:०३:००:५९	०९:०७:३०:१७	१०:११:०८:४१	१०:२३:१३:४६	०९:०९:०३:०८	०९:२२:४४:३८	०७:०४:०७:३७	४४:३८:५५	१२:२०:३१	द·०४:२९:१९	–११:४२
९	१०:२७:१०:२१	०२:१५:०१:५१	०९:०८:१४:३७	१०:१२:५५:३६	१०:२३:२८:१४	०९:१०:०२:१६	०९:२२:५१:१७	०७:०४:०४:२७	४४:४०:५८	१३:१२:३६	द·०४:०५:१६	–११:२६
१०	१०:२८:१०:१६	०२:२७:०५:३०	०९:०८:५९:०१	१०:१४:४३:०९	१०:२३:४२:४३	०९:११:०१:४९	०९:२२:५७:५४	०७:०४:०१:१६	४४:४३:०१	१४:०५:४५	द·०३:४१:११	–११:०९
११	१०:२९:१०:०९	०३:०९:१५:२१	०९:०९:४३:२७	१०:१६:३१:१७	१०:२३:५७:१२	०९:१२:०१:४४	०९:२३:०४:२८	०७:०३:५८:०५	४४:४५:०४	१५:००:०८	द·०३:१७:०४	–१०:५३
१२	११:००:१०:००	०३:२१:३४:२६	०९:१०:२७:५५	१०:१८:१९:५५	१०:२४:११:४१	०९:१३:०२:०२	०९:२३:११:००	०७:०३:५४:५५	४४:४७:०७	१५:५५:५९	द·०२:५२:५४	–१०:३६
१३	११:०१:०९:४९	०४:०४:०५:१७	०९:११:१२:२६	१०:२०:०९:०२	१०:२४:२६:१०	०९:१४:०२:४२	०९:२३:१७:२९	०७:०३:५१:४४	४४:४९:१०	१६:५२:३५	द·०२:२८:४२	–१०:१९
१४	११:०२:०९:३६	०४:१६:४९:५२	०९:११:५६:५९	१०:२१:५८:३४	१०:२४:४०:३९	०९:१५:०३:४३	०९:२३:२३:५६	०७:०३:४८:३३	४४:५१:१३	१७:४८:५२	द·०२:०४:३०	–१०:०१
१५	११:०३:०९:२०	०४:२९:४९:२८	०९:१२:४१:३५	१०:२३:४८:२७	१०:२४:५५:०८	०९:१६:०५:०५	०९:२३:३०:२०	०७:०३:४५:२३	४४:५३:१७	१८:४६:२७	द·०१:४०:१६	– ९:४३

होलिका पूजन– ढूँढा राक्षसी की तृप्ति के लिए और बाल रक्षाके लिए होलिका पूजा की जाती है। इसमें संकल्प लें– 'मैं सपरिवार ढूंढानामक राक्षसीके प्रीत्यर्थ, उसकी पीड़ा मुक्ति के लिए होलिका पूजन कर रहा हूँ।" उपला, कण्डा तथा लकड़ी को एकत्रित कर उसकी पुष्पादि से पूजाकर अग्निदीपन करे। ***"होलिकायै नमः"*** व

अस्माभिर्भय संत्रस्तैः कृता त्वं होलिके यतः।
अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूति प्रदा भव।

बोलते हुए उसे प्रणाम कर तीन परिक्रमा करे। इसके बाद मन में जो भी आ रहा हो वह गाओ, हँसो, गप्प लड़ाओ, स्वेच्छासे निःशंक होकर अपना मत प्रकट करो। होलिका दहन के बाद होलिका की भस्म धारण करे। आम्र मञ्जरी का भक्षण करे। कच्चा अन्न भूनकर खाए। सायं काल नवीन वस्त्र धारण कर बड़ों, छोटों को अबीर गुलाल लगाकर प्रणाम, आशीर्वाद लिया दिया जाता है। चाण्डाल आदिको गले लगाले। दूसरे दिन रंग खेले, फाग गाए, गीतनृत्य करे।

फाल्गुन शुक्लपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; ३ से १८ मार्च, २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःदक्षिण । ऋतुःशिशिर मीनार्कतः ऋतुःवसन्त,
याम्यगोलः, सौम्यायनं । ति·१५ अयनांशाः२२:५०:३८

तिथि दिन	दिनाङ्क अंग्रेजी	व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि
१ गु	३	मृत्युबाण घं·१०:१५:३उ·;
२ शु	४	**फूलेरा दौज; श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती; श्रीखाटूश्यामजी मेला आरम्भ;** ①
३ श	५	द·न·रे; सिद्ध·४; रवियोगःअ;
४ र	६	**वैनायकी श्रीगणेश चतुर्थी;** द·ति·४; सर्वार्थ·अ; रवियोगःअ; अमृत·५; द·न·भ;
५ चं	७	अमृत·५; सिद्ध·६;
६ मं	८	शतभिषायांबुधः२७:२४,घं·१८:१४:३१; अमृत·७; त्रिपुष्करः७+कृ;
७ बु	९	**कामदा सप्तमी;** सिद्ध·७; रवियोगःकृ; सर्वार्थ·रो;
८ गु	१०	**होलाष्टक प्रारम्भ; श्रीदुर्गाष्टमी;**
९ शु	११	**ब्रज–बरसाना में होली आरम्भ;** श्रवणायांशुक्रः५७:४०,घं·६:१७:४८;
९ श	१२	रवियोगःपुन; मृत्युबाण घं·१०:३१:४६उ·;
१० र	१३	**लट्ठमार होली नन्दगाँव;** रवियोगःपुन; सर्वार्थ·पु; मृत्युबाण घं·१०:२९:२९या·;
११ चं	१४	**श्री आमलकी एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त); रंगभरी एकादशी; मासान्तः;** मीनेरविः४९:५६,घं·३:९:२; श्रवणायांमङ्गलः२२:२०,घं·१६:६:२८; सर्वार्थ·पु; सिद्ध·११;
१२ मं	१५	**प्रदोषव्रतम्; श्रीखाटूश्यामजी मेला समाप्त; गण्डान्तः१६:३१–२९:१६;** पूर्वभाद्रेबुधः५५:१,घं·५:०९;सर्वार्थ·आश्ले;अमृत·१२;सिद्ध·१३;रवियोगःम; मृत्युबाण घं·१०:२२:१९उ·;
१३ बु	१६	धनिष्ठायांशनिः२३:२०,घं·१६:२८:६; मृत्युबाण घं·१०:१७:२६या·; ① पूर्वभाद्रेरविः५०:५,घं·३:२३:१३; कुम्भेबुधः३३:५९,घं·२०:५६:४६; मृत्युबाण घं·१०:२०:७या·;
१४ गु	१७	**पूर्णिमा व्रतम्; होलिका दहन (रात्रि में ०१:२२ पश्चात्);** सिद्ध·१५; द·न·उफा;
१५ शु	१८	**फाल्गुन पूर्णिमा (स्नान–दान); धुलण्डी; होलिका विभूतिधारणम्; गौरीपूजन आरम्भ; श्री चैतन्यमहाप्रभु जयन्ती;** उत्तरभाद्रेरविः१०:४३,घं·११:२३:३;

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	१२:१७:२३–१३:४९:२३
१५	१२:१२:४२–१३:४७:५९

जयन्ती

आजकल कुछ अज्ञानी दुष्प्रचार करते हैं कि जयन्ती शब्द केवल मरणशील लोगों के सन्दर्भ में प्रयुक्त होता है। जबकि जयन्ती के अर्थ हैं— पताका, इन्द्र की पुत्री, दुर्गा। जयन्ती — जि जये + शतृ + ङीप् अर्थात्- वह जिसकी जय हो। कोई भी अर्थ मर्त्य मानव को सूचित नहीं करता। 'जयन्ती' किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के आरंभ/घटित होने की वार्षिक तिथि पर होने वाले उत्सव को कहते हैं। जैसे किसी की जन्मतिथि पर मनाया जानेवाला उत्सव चाहे वह भगवान् हों या मनुष्य। जन्माष्टमी भी जयन्ती-व्रत है।

जयन्त्याम् उपवासश्च महापातकनाशनः। सर्वैः कार्यो महाभक्त्या पूजनीयश्च केशवः॥ (भविष्य पुराण, विष्णुधर्मोत्तर०) – *"श्रीकृष्ण जयन्ती का व्रत महापातक का विनाश कर देता है। अतः भक्तिपूर्वक यह व्रत करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण का पूजन करें।"; "रोहिणी नक्षत्र संयुक्ता जन्माष्टमी जयन्ती कहलाती है।"* — **विष्णुधर्मोत्तर०**। श्रीजीव गोस्वामीजी के मत में तो श्रीकृष्ण जन्माष्टमी ही एकमात्र जयन्ती है।

कलियुग में सात चिरंजीवी शास्त्रों में बताये गये हैं। *'अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः। कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरंजीविनः॥'* इनमें व्यासजी, हनुमानजी व परशुरामजी के जन्मोत्सव शास्त्र में जयन्ती नाम से ही प्रसिद्ध हैं। पराशर सहिंता में "हनुमान जयन्ती" का विधान दिया है। अतः श्रीहनुमान जयन्ती आदि अवसरों पर जयन्ती शब्द पर विवाद करना शास्त्रविमुखता का परिचायक है।

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि / ल·अं·	१ गु घं·मि·से	२ शु घं·मि·से	३ श घं·मि·से	४ र घं·मि·से	५ चं घं·मि·से	६ मं घं·मि·से	७ बु घं·मि·से	८ गु घं·मि·से	९ शु घं·मि·से	९ श घं·मि·से	१० र घं·मि·से	११ चं घं·मि·से	लग्न अन्त	१२ मं घं·मि·से	१३ बु घं·मि·से	१४ गु घं·मि·से	१५ शु घं·मि·से
कुम्भः	०७:२९:२२	०७:२५:२६	०७:२१:२९	०७:१७:३२	०७:१३:३६	०७:०९:३९	०७:०५:४३	०७:०१:४६	०६:५७:५०	०६:५३:५३	०६:४९:५७	०६:४६:०१	मीनः	०८:०७:५७	०८:०४:०१	०८:००:०५	०७:५६:०८
मीनः	०८:५५:१६	०८:५१:१९	०८:४७:२२	०८:४३:२५	०८:३९:२९	०८:३५:३२	०८:३१:३६	०८:२७:३९	०८:२३:४३	०८:१९:४६	०८:१५:५०	०८:११:५४	मेषः	०९:४३:५३	०९:३९:५६	०९:३६:००	०९:३२:०४
मेषः	१०:३१:११	१०:२७:१४	१०:२३:१८	१०:१९:२१	१०:१५:२४	१०:११:२८	१०:०७:३१	१०:०३:३५	०९:५९:३८	०९:५५:४२	०९:५१:४५	०९:४७:४९	वृष्	११:३९:२२	११:३५:२६	११:३१:३०	११:२७:३३
वृष्	१२:२६:४१	१२:२२:४४	१२:१८:४८	१२:१४:५१	१२:१०:५४	१२:०६:५८	१२:०३:०१	११:५९:०५	११:५५:०८	११:५१:१२	११:४७:१५	११:४३:१९	मिथुनः	१३:५३:३२	१३:४९:३६	१३:४५:३९	१३:४१:४३
मिथुनः	१४:४०:५२	१४:३६:५५	१४:३२:५८	१४:२९:०१	१४:२५:०४	१४:२१:०८	१४:१७:११	१४:१३:१४	१४:०९:१८	१४:०५:२१	१४:०१:२५	१३:५७:२९	कर्कः	१६:१३:४१	१६:०९:४५	१६:०५:४८	१६:०१:५२
कर्कः	१७:०१:०१	१६:५७:०४	१६:५३:०७	१६:४९:१०	१६:४५:१४	१६:४१:१७	१६:३७:२०	१६:३३:२३	१६:२९:२७	१६:२५:३०	१६:२१:३४	१६:१७:३७	सिंहः	१८:३०:०७	१८:२६:११	१८:२२:१५	१८:१८:१८
सिंहः	१९:१७:२८	१९:१३:३१	१९:०९:३४	१९:०५:३७	१९:०१:४०	१८:५७:४४	१८:५३:४७	१८:४९:५०	१८:४५:५४	१८:४१:५७	१८:३८:००	१८:३४:०४	कन्या	२०:४५:०३	२०:४१:०७	२०:३७:१०	२०:३३:१४
कन्या	२१:३२:२४	२१:२८:२७	२१:२४:३०	२१:२०:३३	२१:१६:३६	२१:१२:४०	२१:०८:४३	२१:०४:४६	२१:००:५०	२०:५६:५३	२०:५२:५६	२०:४९:००	तुला	२३:०३:५२	२२:५९:५६	२२:५५:५९	२२:५२:०३
तुला	२३:५१:१३	२३:४७:१६	२३:४३:१९	२३:३९:२२	२३:३५:२५	२३:३१:२९	२३:२७:३२	२३:२३:३५	२३:१९:३८	२३:१५:४२	२३:११:४५	२३:०७:४९	वृश्चिकः	०१:२२:४४	०१:१८:४७	०१:१४:५१	०१:१०:५४
वृश्चिकः	०२:१०:०५	०२:०६:०८	०२:०२:११	०१:५८:१४	०१:५४:१७	०१:५०:२१	०१:४६:२४	०१:४२:२७	०१:३८:३०	०१:३४:३३	०१:३०:३७	०१:२६:४०	धनुः	०३:२८:०८	०३:२४:१२	०३:२०:१५	०३:१६:१९
धनुः	०४:१५:३०	०४:११:३३	०४:०७:३६	०४:०३:३९	०३:५९:४२	०३:५५:४५	०३:५१:४८	०३:४७:५१	०३:४३:५५	०३:३९:५८	०३:३६:०१	०३:३२:०५	मकरः	०५:१२:४०	०५:०८:४३	०५:०४:४७	०५:००:५१
मकरः	०६:००:०३	०५:५६:०५	०५:५२:०८	०५:४८:११	०५:४४:१४	०५:४०:१७	०५:३६:२०	०५:३२:२३	०५:२८:२७	०५:२४:३०	०५:२०:३३	०५:१६:३७	कुम्भः	०६:४२:०४	०६:३८:०८	०६:३४:१२	०६:३०:१६

सूर्योदयकालीन तिथिः४

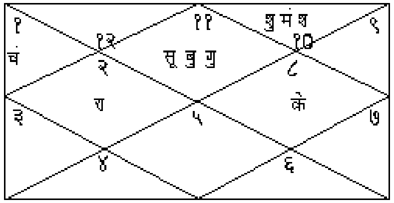

सूर्योदयकालीन तिथिः११

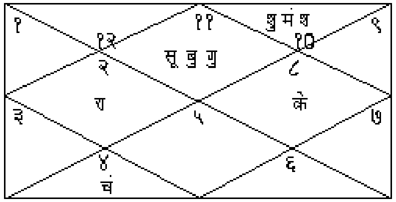

चैत्र कृष्णपक्षः; संवत् २०७८

ग्रहस्थितिः–मार्गी गुरुःपश्चिमास्त; मार्गी शुक्रःपूर्वोदितः; मार्गी शनिःपूर्वोदितः; मार्गी कुजःपूर्वोदितः; मार्गी बुधःपूर्वास्तः, १९:३:२०२२;

दिनमानं	तिथि	तिथ्यन्तः		नक्षत्रान्तः			योगान्तः			करणान्तः		चन्द्रराश्यन्तः		सूर्योदयः	सूर्यास्तः	आनंदादि	दिनाङ्काः		भद्रादि विचार
द·प·वि·	दिन	द·प·	घं:मि:से	नक्षत्र	द·प·	घं:मि:से	योग	द·प·	घं:मि:से	क१ द·प·	क२ द·प·	राशि द·प·	घं:मि:से	घं:मि:से	घं:मि:से	योग	सौर	अंग्रेजी	
२९:५०:४०	१ श	१४:५१	दि १२:३४:२३	हस्त	४५:३८	रा २४:५३:२२	वृद्धि	३९:०९	रा २२:१७:४२	कौल १४:५१	तैति ४३:३६	कन्या	अहोरात्र	६:३८:०६	६:३४:२२	मृत्यु	५	१९	द·ति·२;अमृत·१;
२९:५४:४६	२ र	१२:०८	दि ११:२८:०६	चित्रा	४४:०५	रा २४:१४:५३	ध्रुव	३३:४६	रा २०:०७:१५	गर १२:०८	वणि ४०:२२	कं·१४:६०	दि १२:३६:५४	६:३६:५८	६:३४:५३	पद्म	६	२०	**भद्रारंभः२२:४६घं·**; द·ति·२;
२९:५८:५३	३ चं	०८:२६	दि ०९:५८:१७	स्वाती	४१:३९	रा २३:१५:३२	व्याघ·	२७:३९	दि १७:३९:२०	विष ०८:२६	बव ३६:१५	तुला	अहोरात्र	६:३५:५१	६:३५:२४	छत्र	७	२१	**भद्रांतः९:५८घं·**;
३०:०२:५९	४ मं	०३:५५ ५४:४७	दि ०८:०८:३२ रा ३०:०३:२०	विशा·	३८:३०	रा २१:५८:४८	हर्षण	२०:५४	दि १४:५६:३०	बाल ०३:५५	कौल ३१:२२	तु·२४:२१	दि १६:१९:१७	६:३४:४३	६:३५:५४	श्रीवत्स	८	२२	
३०:०७:०५	६ बु	५३:०२	रा २७:४६:३५	अनु·	३४:४९	रा २०:२९:१८	वज्र	१३:४१	दि १२:०२:०७	गर २५:५६	वणि ५३:०२	वृश्चिक	अहोरात्र	६:३३:३५	६:३६:२५	सौम्य	९	२३	**भद्रारंभः२७:४७घं·**; सर्वार्थ·अनु;
३०:११:१०	७ गु	४७:०७	रा २५:२३:१३	ज्ये·	३०:४८	रा १८:५१:४५	सिद्धि व्यती	०६:०८ ५२:१४	दि ०८:५९:४९ रा २९:५३:२५	विष २०:०७	बव ४७:०७	वृ·३०:४८	रा १८:५१:४५	६:३२:२७	६:३६:५६	कालदंड	१०	२४	**भद्रांतः१४:३५घं·**; रवियोगःज्ये;
३०:१५:१६	८ शु	४१:०७	रा २२:५८:०४	मूल	२६:३९	दि १७:१०:५६	वरी·	५०:३७	रा २६:४६:१२	बाल १४:०८	कौल ४१:०७	धनु	अहोरात्र	६:३१:१९	६:३७:२६	प्रवर्द्ध	११	२५	अमृत·९;
३०:१९:२१	९ श	३५:१६	रा २०:३६:२८	पू·षा·	२२:३५	दि १५:३२:१९	परिघ	४३:०१	रा २३:४२:४१	तैति ०८:१०	गर ३५:१६	ध·३६:३६	रा २१:०८:४२	६:३०:१२	६:३७:५६	मातङ्ग	१२	२६	सिद्ध·९;
३०:२३:२६	१० र	२९:४५	दि १८:२३:०२	उ·षा·	१८:५०	दि १४:००:५४	शिव	३५:४३	रा २०:४६:२४	वणि ०२:२८	विष २९:४५	मकर	अहोरात्र	६:२९:०४	६:३८:२६	अमृत	१३	२७	**भद्रा ७:२८–१८:२३घं·**; सर्वार्थ·उषा;
३०:२७:३१	११ चं	२४:४६	दि १६:२२:२३	श्रवण	१५:३३	दि १२:४१:१०	सिद्ध	२८:५३	दि १८:०१:०३	बाल २४:४६	कौल ५२:३१	म·४४:०९	रा २४:०७:२४	६:२७:५६	६:३८:५६	सिद्धि	१४	२८	**पञ्चकारंभः१२:४१**; सर्वार्थ·श्र;
३०:३१:३५	१२ मं	२०:३१	दि १४:३९:०३	धनि·	१२:५८	दि ११:३८:०२	साध्य	२२:३८	दि १५:२९:५८	तैति २०:३१	गर ४८:४०	कुंभ	अहोरात्र	६:२६:४८	६:३९:२६	उत्पात	१५	२९	अमृत·१२; द्विपुष्करः१२+ध;
३०:३५:३९	१३ बु	१७:०७	दि १३:१६:३२	शत·	११:१४	दि १०:५५:०७	शुभ	१७:०५	दि १३:१५:४८	वणि १७:०७	विष ४५:४८	कु·५५:३३	रा २८:३८:५५	६:२५:४०	६:३९:५६	मानस	१६	३०	**भद्रा १३:१७–२४:४५घं·**;
३०:३९:४२	१४ गु	१४:४६	दि १२:१९:०४	पू·भा·	१०:३०	दि १०:३६:३०	शुक्ल	१२:२३	दि ११:२१:४४	शकु १४:४६	चतु ४४:०१	मीन	अहोरात्र	६:२४:३३	६:४०:२६	मुद्गर	१७	३१	सिद्ध·१५;
३०:४३:४५	३० शु	१३:३६	दि ११:४९:३९	उ·भा·	१०:५५	दि १०:४५:१७	ब्रह्म	०८:३६	दि ०९:४९:५५	नाग १३:३६	किं ४३:२७	मीन	अहोरात्र	६:२३:२६	६:४०:५५	ध्वज	१८	१	सर्वार्थ·रे; सिद्ध·१;

दि– सूर्योदय से सूर्यास्त के मध्य
रा– सूर्यास्त से सूर्योदय के मध्य

औदयिक दैनिक स्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरे गतिः

तिथि	सूर्यः रा अं क वि	चन्द्रः रा अं क वि	मङ्गलः रा अं क वि	बुधः रा अं क वि	गुरुः रा अं क वि	शुक्रः रा अं क वि	शनिः रा अं क वि	केतुः रा अं क वि	मिश्रमानं	चन्द्रोदयः	सूर्यक्रान्तिः	वेलान्तर मि:से
१	११:०४:०९:०२	०५:१३:०४:३६	०९:१३:२६:१३	१०:२५:३८:४०	१०:२५:०९:३७	०९:१७:०६:४६	०९:२३:३६:४१	०७:०३:४२:१२	४४:५५:२०	१९:४५:२१	द·०१:१६:०१	– ९:२६
२	११:०५:०८:४२	०५:२६:३५:००	०९:१४:१०:५४	१०:२७:२९:०८	१०:२५:२४:०६	०९:१८:०८:४५	०९:२३:४२:५९	०७:०३:३९:०२	४४:५७:२३	२०:४५:३०	द·००:५१:४६	– ९:०७
३	११:०६:०८:२०	०६:१०:१९:४२	०९:१४:५५:३७	१०:२९:१९:५०	१०:२५:३८:३४	०९:१९:११:०४	०९:२३:४९:१४	०७:०३:३५:५१	४४:५९:२६	२१:४८:३२	द·००:२७:३२	– ८:४९
४	११:०७:०७:५५	०६:२४:१६:५६	०९:१५:४०:२३	११:०१:१०:४१	१०:२५:५३:०३	०९:२०:१३:४०	०९:२३:५५:२७	०७:०३:३२:४०	४५:०१:२९	२२:५२:५४	द·००:०३:१८	– ८:३१
६	११:०८:०७:२९	०७:०८:२४:२३	०९:१६:२५:११	११:०३:०१:३७	१०:२६:०७:३०	०९:२१:१६:३३	०९:२४:०१:३६	०७:०३:२९:३०	४५:०३:३२	२३:५६:५४	उ·००:२०:५६	– ८:१२
७	११:०९:०६:६०	०७:२२:३९:०९	०९:१७:१०:०१	११:०४:५२:३४	१०:२६:२१:५७	०९:२२:१९:४३	०९:२४:०७:४२	०७:०३:२६:१९	४५:०५:३५	०१:००:५४	उ·००:४५:०८	– ७:५३
८	११:१०:०६:२८	०८:०६:५७:५८	०९:१७:५४:५४	११:०६:४३:२८	१०:२६:३६:२४	०९:२३:२३:०९	०९:२४:१३:४५	०७:०३:२३:०८	४५:०७:३८	०१:५८:३७	उ·०१:०९:१८	– ७:३५
९	११:११:०५:५५	०८:२१:१७:०४	०९:१८:३९:४८	११:०८:३४:१८	१०:२६:५०:५०	०९:२४:२६:५०	०९:२४:१९:४५	०७:०३:१९:५८	४५:०९:४१	०२:५४:०८	उ·०१:३३:२७	– ७:१६
१०	११:१२:०५:१९	०९:०५:३२:३८	०९:१९:२४:४६	११:१०:२४:६०	१०:२७:०५:१५	०९:२५:३०:४७	०९:२४:२५:४१	०७:०३:१६:४७	४५:११:४३	०३:४१:२४	उ·०१:५७:३३	– ६:५७
११	११:१३:०४:४१	०९:१९:४१:१८	०९:२०:०९:४५	११:१२:१५:३१	१०:२७:१९:३९	०९:२६:३४:५८	०९:२४:३१:३४	०७:०३:१३:३६	४५:१३:४५	०४:२५:२७	उ·०२:२१:३६	– ६:३८
१२	११:१४:०४:०१	१०:०३:४०:१०	०९:२०:५४:४७	११:१४:०५:४८	१०:२७:३४:०३	०९:२७:३९:२३	०९:२४:३७:२३	०७:०३:१०:२६	४५:१५:४७	०५:०४:३३	उ·०२:४५:३७	– ६:१९
१३	११:१५:०३:१८	१०:१७:२६:४६	०९:२१:३९:५१	११:१५:५५:४८	१०:२७:४८:२५	०९:२८:४४:०२	०९:२४:४३:०९	०७:०३:०७:१५	४५:१७:४९	०५:४०:५२	उ·०३:०९:३४	– ६:००
१४	११:१६:०२:३३	११:००:५९:१८	०९:२२:२४:५७	११:१७:४५:२८	१०:२८:०२:४६	०९:२९:४८:५५	०९:२४:४८:५१	०७:०३:०४:०५	४५:१९:५१	०६:१६:२४	उ·०३:३३:२७	– ५:४१
१५	११:१७:०१:४६	११:१४:१६:३८	०९:२३:१०:०५	११:१९:३४:४४	१०:२८:१७:०७	१०:००:५३:६०	०९:२४:५४:२९	०७:०३:००:५४	४५:२१:५२	०६:५१:०८	उ·०३:५७:१६	– ५:२२

द्विजका दाहिना कान पवित्र होता है। कान में वेदमन्त्र सुनते सुनते प्रभास आदि तीर्थ, गंगा आदि नदियों का पावित्र्य और प्रभाव रहता है–

प्रभासादीनि तीर्थानि गंगाद्याःसरितस्तथा।
द्विजस्य दक्षिणे कर्णे नित्यं तिष्ठन्ति देवताः।।

इसी कानसे दीक्षा ग्रहण की जाती है। इसी के ऊपर हमेशा यज्ञोपवीत चढ़ाकर मल–मूत्र का त्याग किया करते हैं। कर्णवेध के समय इसी में स्वर्णकुण्डल धारण किया जाता है। पराशर स्मृति में लिखा है कि छींक, थूक, दांत खोदने के बाद दाहिना कान स्पर्श करना चाहिए–

क्षुते निष्ठीविते चैव दंतश्लिष्टे तथाऽनृते।
पतितानाम् च संभाषे दक्षिणम् श्रवणं स्पृशेत्।।

पैर की द्वितीय उंगली में चांदी की अंगूठी पहनने की रीति प्राचीनकाल में थी। इससे मानसिक शान्ति बनी रहती है। आज यह प्रचलन तेजी से लुप्त हो रहा है। मणि, मन्त्र और औषधि का प्रभाव अतुलनीय होता है।

चैत्र कृष्णपक्षः; संवत् २०७८; शाके १९४३; १९ मार्च से १ अप्रैल २०२२ ईस्वी

पक्षान्तः –कालःदक्षिण । ऋतुःवसन्त, याम्यगोलः, सौम्यायनं । ति॰३० अयनांशाः२२:५०:४०

व्रत–पर्व–उत्सव, नक्षत्रसंचार आदि

तिथि दिन	दिनाङ्क अंग्रेजी	
१ श	१९	**वसन्तोत्सव;** द्विपुष्करः२+चि;
२ र	२०	**भैया दूज; श्रीचित्रगुप्त पूजा; संत श्रीतुकाराम जयन्ती;** द्विपुष्करः२+चि; सिद्ध॰३;
३ चं	२१	**संकष्टी श्री गणेश चतुर्थी;** मीनेबुधः२१:४४,घं॰१५:४४:२०;
४ मं	२२	**रंगपञ्चमी; श्रीपञ्चमी;**
६ बु	२३	**श्री स्कन्द षष्ठी;** उत्तरभाद्रेबुधः०९:५६,घं॰१०:५८:५२; अमृत॰६; रवियोगःज्ये; सिद्ध॰७;
७ गु	२४	**व्यतिपात पुण्य; गण्डान्तः१३:१७–२४:२७;** धनिष्ठायांशुक्रः५६:६०,घं॰५:४७; ①
८ शु	२५	**श्री शीतलाष्टमी; बास्योड़ा; श्री कालाष्टमी;** स्वात्यांकेतुः५९:१७,घं॰६:४१:६; मृत्युबाण घं॰८:५३:१०या॰;
९ श	२६	**भगवान श्री आदिनाथ जयन्ती व तप–कल्याणक दिवस जयपुरे;**
१० र	२७	**अभिजितः४:४४–२२:३५;** अमृत॰१०;
११ चं	२८	**श्री पापविमोचनी एकादशी (वैष्णव, स्मार्त्त);** सिद्ध॰११; ① अमृत॰८; मृत्युबाण घं॰९:६:११उ॰;
१२ मं	२९	**भौमप्रदोष व्रतम्; श्री कैलादेवी मेला प्रारम्भ (करौली);** सिद्ध॰१३;
१३ बु	३०	**मासशिवरात्रि व्रतम्;** रेवत्यांबुधः२४:९,घं॰१६:३१:५९;
१४ गु	३१	**अमावस्या श्राद्ध; प्रेतत्व विमुक्ति हेतु शिवसमीप गंगास्नान;** रेवत्यांरविः३७:५५,घं॰२२:०१; ②
३० शु	१	**अमावस्या (स्नान, दान); गण्डान्तारम्भः२९:११;** धनिष्ठायांमङ्गलः१३:११,घं॰१२:०६; ② कुम्भेशुक्रः१०:१४,घं॰१०:५६;

ति	श्राद्धकालं घण्टादिः
१	१२:१२:२१–१३:४७:५१
१५	१२:०७:३५–१३:४५:५५

गणगौर पूजन

कुमारियाँ एवं विवाहिताएँ फाल्गुन पूर्णिमा के चैत्र कृष्णपक्षभर-शुक्लपक्ष प्रतिपदा या तृतीया तक पश्चात् पन्द्रह दिन व्रती रहकर ईसरजी और ईसरीजी की प्रतिमा में शिव-पार्वती का प्रतिदिन पूजन करती हैं। **प्रातः पूजास्थल पर स्त्रियाँ पूजासामग्री सहित जब गणगौर पूजन करने जाती हैं तो यह गीत गाती हैं—**

गौर गौर गोमती ईसर पूजे पार्वती
पार्वती का आला-गीला , गौर का सोना का टीका
टीका दे, टमका दे, बालारानी बरत करयो, करता करता आस आयो, वास आयो,
खेरे खांडे लाडू आयो, लाडू ले बीरा ने दियो,
बीरो ले मने पाल दी, पाल को मै बरत करयो,
सन मन सोला, सात कचौला, ईशर गौरा, दोन्यू जोड़ा, जोड़ ज्वारा, गेंहू ग्यारा,
रानी पूजे राज ने, मैं पूजा सुहाग ने,
राण्या को राज बढ़तो जाए, म्हाको सुहाग बढ़तो जाय,
कीड़ी- कीड़ी, कीड़ी ले, कीड़ी थारी जात है, जात है गुजरात है,
गुजरात्यां को पाणी, दे दे थाम्बा ताणी, ताणी में सिंघोड़ा, बाड़ी में भिजोड़ा,
म्हारो भाई एम्ल्यो खेमल्यो, सेमल्यो सिंघाड़ा ल्यो, लाडू ल्यो, पेड़ा ल्यो,
सेव ल्यो, सिघाड़ा ल्यो,झरझरती जलेबी ल्यो, हरीहरी दूब ल्यो, गणगौर पूजल्यो
एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात, आठ, नौ, दस, ग्यारह, बारह, तेरह, चौदह, पंद्रह, सोलह....

दैनिक–लग्न–सारिणी

(राश्यन्तकाल) । घण्टादि सर्वत्र भारतीय मानक समयानुसार ; दण्डादि सौरमानानुसार (धूपघड़ी)

तिथि ल॰अं॰	१ श घं॰मि॰से	२ र घं॰मि॰से	३ चं घं॰मि॰से	४ मं घं॰मि॰से	६ बु घं॰मि॰से	७ गु घं॰मि॰से	८ शु घं॰मि॰से	९ श घं॰मि॰से	१० र घं॰मि॰से	११ चं घं॰मि॰से	१२ मं घं॰मि॰से	१३ बु घं॰मि॰से	१४ गु घं॰मि॰से	१५ शु घं॰मि॰से
मीनः	०७:५२:१२	०७:४८:१६	०७:४४:२०	०७:४०:२३	०७:३६:२७	०७:३२:३१	०७:२८:३५	०७:२४:३९	०७:२०:४३	०७:१६:४७	०७:१२:५०	०७:०८:५४	०७:०४:५८	०७:०१:०२
मेषः	०९:२८:०७	०९:२४:११	०९:२०:१५	०९:१६:१९	०९:१२:२३	०९:०८:२६	०९:०४:३०	०९:००:३४	०८:५६:३८	०८:५२:४२	०८:४८:४६	०८:४४:५०	०८:४०:५३	०८:३६:५७
वृष्	११:२३:३७	११:१९:४१	११:१५:४५	११:११:४८	११:०७:५२	११:०३:५६	११:००:००	१०:५६:०४	१०:५२:०८	१०:४८:११	१०:४४:१५	१०:४०:१९	१०:३६:२३	१०:३२:२७
मिथुनः	१३:३७:४७	१३:३३:५१	१३:२९:५४	१३:२५:५८	१३:२२:०२	१३:१८:०६	१३:१४:१०	१३:१०:१३	१३:०६:१७	१३:०२:२१	१२:५८:२५	१२:५४:२९	१२:५०:३३	१२:४६:३७
कर्कः	१५:५७:५६	१५:५३:५९	१५:५०:०३	१५:४६:०७	१५:४२:११	१५:३८:१४	१५:३४:१८	१५:३०:२२	१५:२६:२६	१५:२२:३०	१५:१८:३४	१५:१४:३७	१५:१०:४१	१५:०६:४५
सिंहः	१८:१४:२२	१८:१०:२६	१८:०६:२९	१८:०२:३३	१७:५८:३७	१७:५४:४१	१७:५०:४५	१७:४६:४८	१७:४२:५२	१७:३८:५६	१७:३५:००	१७:३१:०४	१७:२७:०८	१७:२३:१२
कन्या	२०:२९:१८	२०:२५:२१	२०:२१:२५	२०:१७:२९	२०:१३:३३	२०:०९:३६	२०:०५:४०	२०:०१:४४	१९:५७:४८	१९:५३:५२	१९:४९:५६	१९:४६:००	१९:४२:०३	१९:३८:०७
तुला	२२:४८:०६	२२:४४:१०	२२:४०:१४	२२:३६:१७	२२:३२:२१	२२:२८:२५	२२:२४:२९	२२:२०:३३	२२:१६:३६	२२:१२:४०	२२:०८:४४	२२:०४:४८	२२:००:५२	२१:५६:५६
वृश्चिकः	०१:०६:५८	०१:०३:०२	००:५९:०५	००:५५:०९	००:५१:१३	००:४७:१७	००:४३:२०	००:३९:२४	००:३५:२८	००:३१:३२	००:२७:३६	००:२३:४०	००:१९:४४	००:१५:४७
धनुः	०३:१२:२२	०३:०८:२६	०३:०४:३०	०३:००:३३	०२:५६:३७	०२:५२:४१	०२:४८:४५	०२:४४:४८	०२:४०:५२	०२:३६:५६	०२:३३:००	०२:२९:०४	०२:२५:०८	०२:२१:१२
मकरः	०४:५६:५४	०४:५२:५८	०४:४९:०१	०४:४५:०५	०४:४१:०९	०४:३७:१३	०४:३३:१६	०४:२९:२०	०४:२५:२४	०४:२१:२८	०४:१७:३२	०४:१३:३६	०४:०९:३९	०४:०५:४३
कुम्भः	०६:२६:१९	०६:२२:२३	०६:१८:२७	०६:१४:३१	०६:१०:३५	०६:०६:३८	०६:०२:२३	०५:५८:२७	०५:५४:३१	०५:५०:३५	०५:४६:३९	०५:४२:४३	०५:३८:४७	०५:३४:५०

सूर्योदयकालीन तिथिः४

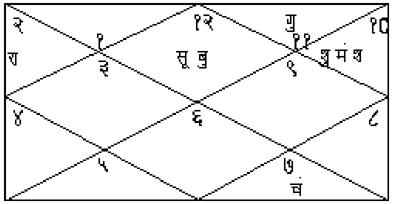

सूर्योदयकालीन तिथिः११

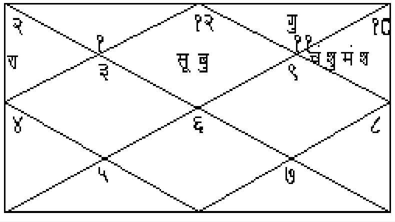

वर-कन्या वैवाहिक अष्टकूट मेलापक सारणियाँ इत्यादि

१ - वर्णस्यगुणाः

वरस्य (कन्यायाः – पंक्तियाँ)

वर्णाः	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

२ – वश्यगुणाः

वरस्य (कन्यायाः – पंक्तियाँ)

वश्याः	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	१	०	१
जलचर	१	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

४ – योनिकूटस्य गुणज्ञानाय चक्रमिदम्

वरस्य (कन्यायाः – पंक्तियाँ)

योनयः	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मा.	मूष.	गौ	महि.	व्या.	मृग	वान.	नकु.	सिंह.
अश्व	४	२	२	२	२	२	२	३	१	१	३	३	२	१
गज	२	४	३	२	२	२	२	२	३	२	२	२	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	२	३	३	१	३	०	३	१
सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	३	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	२	१	२	२
मृग	३	३	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	१	३	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	१	१	२	१	२	१	१	३	२	२	३	२	४

६ – गणगुणाः

वरस्य (कन्यायाः – पंक्तियाँ)

गण	देव	मनुष्य	राक्षस
देव	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

८ – नाड़ीगुणाः

वरस्य (कन्यायाः – पंक्तियाँ)

नाड़ी	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

३ – तारायाः गुणाः

वरस्य (कन्यायाः – पंक्तियाँ)

तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
जन्म १	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
संपत् २	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
विपत् ३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१
क्षेम ४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
प्रत्यरि ५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१
साधक ६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
वध ७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१
मैत्र ८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
अतिमैत्र ९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

अष्टकूट मेलापक

विवाह-मेलापक विचार में वर्ण में १, वश्य में २, तारा में ३, योनि में ४, ग्रहमैत्री में ५, गणमैत्री में ६, भकूट में ७ तथा नाडी में ८ गुण होते हैं। **इन कुल ३६ गुणों में से १८ गुण से ऊपर मिलने पर शुभ तथा २७ गुण से ऊपर विवाह अत्यन्त शुभ माना जाता है।** तारा देखने के लिये कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर जो आये, उसमें अलग-अलग ९ का भाग देने से जो शेष बचे, उसे तारा जाने।

अथ मेलापके विशेषस्तत्राह ।

अज्ञातजन्मनां नृणां नाम्नि भं परिकल्पयेत् ।।
तेनैव चिन्तयेत्सर्वं राशिकूटादि जन्मवत् ।।१।।
जन्मभं जन्मधिष्ण्येन नामधिष्ण्येन नामभम् ।
व्यत्ययेन यदा योज्यं दम्पत्योर्निधनं भवेत् ।।२।।

७ – राशिकूटस्य गुणाः

वरस्य (कन्यायाः – पंक्तियाँ)

राशि	मेष	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथु.	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चि	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

५ – ग्रहमैत्रकस्य गुणाः

वरस्य (कन्यायाः – पंक्तियाँ)

ग्रह	सू	च	मं	बु	गु	शु	श
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१	॥	५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

निराभिजिद् गणना

स्थानम्	नक्ष.	फलानि
शीर्षे	३	हानिः
मुखे	३	सिद्धिः
कण्ठे	३	मृत्युः
हस्ते	४	शत्रुभयं
हृदये	४	इष्टाप्तिः
उदरे	३	हानिः
कट्यां	३	इष्टाप्तिः
चरणे	४	धनाप्तिः

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चं.मं.गु.	बुधः	शु.श.
चन्द्र	सू. बु	मं.गु.शु.श.	०
मंगल	चं.सू.गु.	शुक्र,शनि	बुध
बुध	सू. शु.	मं,गु,श,	चन्द्र
गुरु	सू.चं.मं.	शनि	बु.शु.
शुक्र	बु. श.	मंगल,गुरु	सू.चं.
शनि	बु. शु.	गुरु	सू.चं.मं

प्रीतिषडष्टक	मृत्युषडष्टक	शुभद्विर्द्वादशक	अशुभद्विर्द्वादशक	शुभनवपंचक	अशुभनवपंचक
सिंह-मीन	मेष-कन्या	मीन-मेष	वृष-मिथुन	मेष-सिंह	धनु-मेष
तुला-वृश्चि.	तुला-मीन	कर्क-सिंह	कुम्भ-मीन	वृष- कन्या	मकर-वृष
कुम्भ-कन्या	मिथु-वृश्चि	सिंह-कन्या	मेष-वृष	मिथुन-तुला	कर्क-वृश्चि
मिथु.-मक.	मकर-सिंह	मकर-कुम्भ	मिथु-कर्क	सिंह-धनु	कन्या-मकर
मेष-वृश्चि.	कुम्भ-कर्क	तुला-कन्या	तुला-वृश्चि.	तुला-कुम्भ	कुम्भ-मिथु.
धनु-कर्क	धनु-वृष	धनु-वृश्चि	मकर-धनु	वृश्चि-मीन	मीन-कर्क

मेलापक सारिणी (वर)

मेलापक सारिणी (वधु)

	अ.	भ.	कृ.१	कृ.३	रो.	मृ.२	मृ.२	आ.	पुन.३	पुन.१	पुष्य	श्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.१	उ.फा.३	ह.	चि.२	चि.२	स्वा.	वि.३	वि.१	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.।।	पू.षा.३।।	उ.षा.१	उ.षा.३	श्र.१।।	श्र.२।।	ध.२	ध.२	श.	पू.भा.३	पू.भा.१	उ.भा.	रे.
अ.	२८	३३	२८।।	१८।।	२१।।	२२।।	२६	१७	१८	२२।।	३१।।	२७	२०।।	२६	१७।।	११	९	१३	२२।।	२६।।	२२।।	१९।।	२६।।	१५	१३	२६	२७	२४।।	२६	२६	२४	२१	२१	१५	१६	१४।।	२४।।	२६
भ.	३४	२८	२९	१९	२२।।	१३।।	१७	२६	२८	३०।।	२३।।	२४।।	२१	१९	२८	२१।।	१९	६	१४।।	२९।।	२२।।	१९।।	१७।।	१९।।	२०	१९	२०	२७	२८।।	२८	२६	१०	१०	२०	२४	२२।।	१६।।	२८
कृ.१	२७।।	२७।।	२८	१६।।	९	१५।।	१९	२०	२१	२५।।	२६।।	२३।।	१७।।	२१	२२	१५।।	१५।।	१८।।	२७।।	१५।।	१९।।	१६।।	२०।।	२६।।	२४।।	१८	१९	१४	१५।।	११।।	१०।।	२५	२५	२७	१९।।	१७।।	१९।।	११।।
कृ.३	१८।।	१८।।	१९	२८	१९	२५।।	१६।।	१७।।	१८।।	२२	२३	२०	१९।।	२३	२४	२१	२१	२३।।	२२।।	१०।।	१४।।	२१।।	२५।।	३१।।	२०	१२।।	१३।।	९।।	१४	११	१०	२२।।	२९।।	३१	२३।।	२०	२२	१४
रो.	२३।।	२३।।	१०	१९	२८	३६	२७	२३।।	२३।।	२७	२६	१३	१२।।	२६।।	२८	२५	२६	२०	१९	१५।।	९।।	१६।।	३०।।	२४।।	१४	१९	२०	११।।	१७	१९	१८	२०	२६	२४।।	३०।।	२७	२६	१९
मृ.२	२३।।	१३।।	१८।।	२७।।	३४	२८	२०	२५	२३।।	२६	१९	२२	२१।।	१७।।	२५।।	२३।।	२७	१३	१२	२५	१७।।	२३।।	२२।।	२५।।	१५	१२	११	१८	२१	२४।।	२४।।	१३	१९	२७	२९।।	२६।।	१७	२७
मृ.२	२७	१८	२१	१८।।	२५।।	२०	२८	३३	३१।।	१९।।	१०।।	१५।।	२४	२०।।	२८।।	३०।।	३४	२१	१४	२७	१९।।	१४	११	१३	२३	१९	१८	२४	२०।।	२५	२५	१२	१३	२१	२३।।	२७।।	१७	२७
आ.	१९	२७	२१	१८।।	२४।।	२६	३४	२८	२५	१३	२०।।	१३।।	२३।।	२९।।	२२।।	२४।।	२४।।	२७	२०	२७	२०	१३।।	१७	४	१६	२८	२७	२७	२२।।	२२।।	२२।।	१७	१८	११	१६	१९	२७	२७
पुन.३	१९	२६	२२	१९।।	२३।।	२४।।	३२।।	२४	२८	१६	२३	१६।।	२२।।	२७।।	२१।।	२३।।	२४।।	२५।।	१८।।	२७	२१	१३।।	२०।।	५	१३	२७	२६	२७	२७।।	२२।।	२३।।	१७।।	१८।।	११	१७	१९।।	२७।।	२८
पुन.१	२१।।	२८	२५।।	२०	२४	२५	१९	१०।।	१४।।	२८	३५	२८।।	१५।।	२०	१४।।	१७	१८	२०।।	२०	२७	२०	१९	२६	१०।।	८	२१	२०।।	२१।।	२८।।	२५	२७	२१	१२।।	७	११	१७	२५	२५।।
पुष्य.	३०।।	२१।।	२६।।	२३	२४	१७	१०	१८।।	२१।।	३५	२८	३०	१८।।	१४।।	२३।।	२६	२७	१२	११।।	२६	२१	२०	१९	२२	१७	११	११।।	२२।।	२६	२४	२५	१३	४।।	१४।।	१८	२४	१८	२७
श्ले.	२५	२३।।	२२।।	१९	१२	२१	१३	१२	१५	२८।।	२८।।	२८	१५	१५।।	१७।।	२०।।	२२।।	२६	२५।।	११।।	१६।।	१५।।	२०	२६	२२।।	१६	१६।।	८।।	१२	१३	१३	२७	१८।।	१८।।	१२।।	१८।।	२०	१२
म.	२१	२१	१७।।	१८।।	११।।	१९।।	२२।।	२२।।	२१।।	१६।।	१८।।	१६	२८	३०	२६।।	१६।।	१६।।	२२।।	२५।।	११।।	१७।।	२४।।	२६।।	३४	२४	२०	२१	११।।	५।।	५।।	४।।	१८।।	२४।।	२५।।	१८।।	१७।।	१८।।	१२
पू.फा.	२७	१९	२१	२२	२५।।	१७।।	२०।।	२८।।	२७।।	२२।।	१६।।	१६।।	३०	२८	३४	२४	२२।।	८।।	११।।	२५।।	१९।।	२६।।	२४।।	२४।।	१९	१८	१९	२७	२१	१९।।	१८।।	४।।	११।।	१९।।	२४।।	२३।।	१६।।	२४
उ.फा.१	१८।।	२७	२२	२३	२७	२५।।	२८।।	२१।।	२१।।	१६।।	२५।।	१८।।	२६।।	३४	२८	१८	१६।।	१४।।	१७।।	२६।।	१७।।	२४।।	३०।।	१९।।	१०।।	२६	२७	२८	२२	२१	२०	११।।	१८।।	१२।।	१६।।	१५।।	२६।।	२४।।
उ.फा.३	१३	२१।।	१६।।	२१	२५	२३।।	३०।।	२३।।	२३।।	१९।।	२८।।	२१।।	१७।।	२५	१९	२८	२५।।	२४।।	१६।।	२५।।	१६।।	१८	२७	१३	१५।।	२९।।	२८।।	२९।।	२६	२५	२५	१६।।	१६।।	१०।।	१४।।	१८	२९	२७
ह.	१०	२०	१६।।	२१	२६	२६	३३	२३।।	२३।।	१९।।	२८।।	२१।।	१७।।	२२।।	१७	२६	२८	२७	१९	२६।।	१७।।	१९।।	२६	१२	१४	२७	२६	२७।।	२३	२४	२४	१९	१९	८।।	१४।।	१९	२७	२७
चि.२	१३	६	१९	२५।।	२०	१२	१९	२६	२४।।	२०।।	१२।।	२६।।	२३।।	९।।	१५।।	२४।।	२७	२८	२०	१९	२६।।	२८	११	२५	२८	१४	१३	२१	१७।।	१९	१९	१८	१८	२४	१८।।	२२	११	२१
चि.२	२२।।	१५।।	२८।।	२३।।	२०	१२	१३	२०	१८।।	२०	१२	२६	२५।।	१०	१७।।	१७।।	२०	२१	२८	२७	३४।।	२४।।	७।।	२१।।	२८	१४	१३	२१	२५।।	२७	२७	२६	२०	२६	२०।।	१५	४	१३
स्वा.	२७।।	२९।।	१७।।	१२।।	१६।।	२७	२७	२६	२६।।	२८	२८	१५।।	१३।।	२५।।	२५।।	२५।।	२७।।	२१	२८	२८	२०	१०	२३।।	१८।।	२३	२७	२६	१८	२२।।	२३।।	२३।।	२७	२१	२०	२५	१९।।	२०	१३
वि.३	२२।।	२२।।	२०।।	१५।।	१०।।	१८।।	१९।।	२१	२१	२२।।	२१।।	१९	१७।।	१९।।	१८।।	१७।।	१८।।	२७।।	३४।।	१८	२८	१८	१७	२१।।	२८	२२	२१	१३	१७।।	१७।।	१७।।	३२।।	२६	२६	२२	१६।।	१३।।	५
वि.१	१६।।	१६।।	१४।।	१९।।	१४।।	२२।।	१३	१४।।	१४।।	१९	१८	१५।।	२१।।	२३।।	२१।।	१८	१९	२८	२३।।	८	१७	२८	२७	३१।।	२३।।	१६।।	१६।।	९।।	१२	१२	१२	२७	२७	२६।।	२२।।	२१	१८	९।।
अनु.	२४।।	१४।।	१९।।	२४।।	२७।।	२०।।	११	१६	२१।।	२६।।	१८	२१	२४।।	२०।।	२९।।	२६	२७	१२	७।।	२२।।	१७	२८	२८	३१	१६।।	१४।।	१४।।	२२	२५	२६	२६	१२	१२	२२	२४।।	२४	१८	२७
ज्ये.	१२	१८।।	२४।।	२९।।	२२।।	२२।।	१३	३	६	१०।।	२०	२६	३१	२३।।	१६।।	१३	१२	२५।।	२०।।	१६।।	२०।।	३१।।	३०	२८	१५	१७।।	१७।।	१७।।	२०	२०	२०	२५	२५	१८	११	९।।	२१	२१
मू.	१२	२०	२४।।	१९	१३	१४	२१	१५	१२	८।।	१७।।	२४	२५	१९	९।।	१३	१३	२७	२७	२१	२७	२४।।	१६।।	१६	२८	२८	२७	२५।।	१५।।	१५।।	१५।।	२१।।	२८	२१।।	१६।।	१६।।	२५।।	२७
पू.षा.।।	२६	१९	१८	१२।।	१९	११	१९	२७	२७	२३।।	१३।।	१७।।	२१	१९	२६	२८।।	२७	१२	१२	२७	२०	१६।।	१८।।	१७।।	२८	२८	२७	३३	२३	२३।।	२३।।	८।।	१६।।	२३।।	३१।।	३२।।	२३।।	३२।।
पू.षा.३।।	२७	२०	१८	१३।।	२०	१२	१८	२६	२६	२३।।	१३।।	१७।।	२१	१९	२७	२७	२६	११	११	२६	१९	१८।।	१८।।	१९।।	२७	२७	२८	३४	२४	२४	२३।।	८।।	१५।।	२२।।	२९।।	३२।।	२३।।	३२।।
उ.षा.१	२५।।	२७	१४	८।।	११।।	१८	२४	२६	२६	२३।।	२४।।	९।।	११।।	२७	२८	२८।।	२७।।	२०	२०	१९	१२	११।।	२५।।	१९।।	२५।।	३३	३४	२८	१८	१६	१५	१५।।	२२।।	२२।।	२८।।	३१।।	३२।।	२३।।
उ.षा.३	२८	२९।।	१६।।	१४	१७	२२।।	२०।।	२२।।	२२।।	२७	२८।।	१३	६।।	२२	२३	२६	२५	१७।।	२४।।	२३।।	१६।।	१४	२८	२२	१६।।	२६	२५	१९	२८	२६	२५	२५।।	१७।।	१७।।	२३।।	३०।।	३२।।	२३।।
श्र.१।।	२८	२७	१४।।	१२	१८	२७	२४	२१।।	२१।।	२७	२५	१५	५।।	१९।।	२०	२४	२५	१९।।	२६	२३।।	१६।।	१४	२८	२३	१७।।	२३।।	२४।।	१७	२५	२८	२७	३०	२२	१८।।	२३।।	३१।।	३०।।	२२।।
श्र.२।।	२७	२६	१३।।	१०	१७	२६	२३।।	२१	२३।।	२८	२६	१५	६।।	१८।।	२०।।	२३।।	२४।।	१८।।	२५।।	२३	१६।।	१४	२८	२२	१६	२३	२३।।	१५	२४	२७	२८	२९	२०।।	१८	२३	२९।।	३१।।	२४।।
ध.२	२०।।	१०।।	२६	२३।।	२०	१२	८।।	१७।।	१७।।	२२	१३	२८	१८।।	५।।	१२।।	१६	१७।।	१६।।	२४।।	२६	३०	२८	१४	२६	२१	९	९।।	१६।।	२५।।	२८	२८	२८	१८।।	२३।।	२१	२६।।	१५।।	२२।।
ध.२	२०	११	२६	३०।।	२७	१९	१०	१९	१९	१४	५	२०	२५।।	११।।	१९।।	१७।।	२१	१८	१९	२२	२५।।	२८	१२	२६	२९।।	१७।।	१६।।	२३।।	१८।।	२१	२१	२०	२८	३३	२८।।	१८।।	७।।	१४।।
श.	१५	२१	२८	३२।।	२५	२५	१८	१०	१०	७।।	१५	२०	२६।।	२०।।	१३।।	११।।	८।।	२६	२६	१९	२६	२६।।	२१	१९	२२।।	२४।।	२३।।	२३।।	१८।।	१८।।	१८।।	२५	३३	२८	१९	९	१७।।	१६।।
पू.भा.३	१८	२५	२०	२४।।	३१।।	३१।।	२४।।	१७	१७	१३।।	२०।।	१४	१९।।	२५।।	१७।।	१५।।	१७।।	१८।।	१९।।	२८	२१	२१।।	२७।।	१२	१५	३१।।	३०।।	२९।।	२४।।	२५।।	२५।।	२०।।	२७।।	१९	२८	१८	२३	२०।।
पू.भा.१	१४।।	२१।।	१६।।	१९	२६	२६	२५।।	१८	१८	१८	२५	१८।।	१६।।	२२।।	१४।।	१६।।	१८।।	१९।।	१२।।	१९	१४	२१	२७	११।।	१५	३१	३१।।	३०।।	२८।।	२९।।	३०।।	२५।।	१७	७।।	१६।।	२८	३३	३०।।
उ.भा.	२४।।	१५।।	१८।।	२१	२५	१७	१६।।	२५।।	२७	२६	१९	२०	१७।।	१५।।	२५।।	२७।।	२६	९।।	५	१९।।	१२	१९	२०	२२	२४	२२	२२।।	३१।।	२९।।	२८।।	२९।।	१४।।	६	१६।।	२१।।	३३	२८	३४।।
रे.	२५	२४।।	११।।	१४	१७	२६	२५।।	२४	२५।।	२४।।	२७	१३	१२	२२	२२	२४।।	२६।।	२०।।	१३।।	११।।	५।।	१२।।	२७	२२	२७	३०।।	३०	२१	१९	२०	२२।।	२२।।	१४	१६।।	१८	२९।।	३३	२८

अवकहडाचक्रम् -- शतपदचक्रम्

नक्षत्र अक्षर	चू.चे. चो.ला.	ली.लू. ले.लो.	अ.ई. उ.ए.	ओ.वा. वी.वू.	वे.वो. का.की.	कू.घ. ङ.छ.	के.को. हा.ही.	हू.हे. हो.डा.	डी.डू. डे.डो.
नक्षत्र	**अश्विनी**	**भरणी**	**कृत्तिका**	**रोहिणी**	**मृगशिरा**	**आर्द्रा**	**पुनर्वसु**	**पुष्य**	**आश्लेषा**
राशि	मेष	मेष	मेष१, वृष३	वृष	वृष२,मिथु२	मिथुन	मिथु३,कर्क१	कर्क	कर्क
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि१ बैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र
वश्य	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतु२ मान२	मानव	मान३ जल१	जलचर	जलचर
योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार
यो.वै.	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक
राशीश	भौम	भौम	भौम१,शुक्र३	शुक्र	शुक्र२,बुध२	बुध	बुध३,चन्द्र१	चन्द्र	चन्द्र
गण	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस
नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

नक्षत्र अक्षर	मा.मी. मू.मे.	मो.टा. टी.टू.	टे.टो. पा.पी.	पू.ष. ण.ठ.	पे.पो. रा.री.	रु.रे. रा.ता.	ती. तू. ते.तो.	ना.नी. नू.ने.	नो.या. यी.यू.
नक्षत्र	**मघा**	**पू.फा.**	**उ.फा**	**हस्त**	**चित्रा**	**स्वाती**	**विशाखा**	**अनु.**	**ज्येष्ठा**
राशि	सिंह	सिंह	सिंह१,कन्या३	कन्या	कन्या२,तुला२	तुला	तुला३,वृश्चि१	वृश्चिक	वृश्चिक
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि१ बैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र
वश्य	वनचर	वनचर	वन१ मान३	मानव	मानव	मानव	मान३ कीट१	कीट	कीट
योनि	मूषक	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग
यो.वै.	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गौ	अश्व	गौ	श्वान	श्वान
राशीश	सूर्य	सूर्य	सूर्य१,बुध३	बुध	बुध२,शुक्र२	शुक्र	शुक्र३,भौम१	भौम	भौम
गण	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस
नाडी	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि

नक्षत्र अक्षर	ये.यो. भा.भी.	भू.ध, फ.ढ.	भे,भो. जा.जी.	खी.खू. खे.खो.	गा.गी. गू.गे.	गो.सा. सी.सू.	से.सो. दा.दी	दू.थ. झ.ञ.	दे.दो. चा.ची.
नक्षत्र	**मूल**	**पू.षा**	**उ.षा**	**श्रवण**	**धनिष्ठा**	**शत**	**पू.भा**	**उ.भा**	**रेवती**
राशि	धनु	धनु	धनु१,मकर३	मकर	मक.२,कुंभ२	कुम्भ	कुम्भ३,मीन१	मीन	मीन
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्षत्रि१ बैश्य३	वैश्य	वैश्य२ शूद्र२	शूद्र	शूद्र३ विप्र१	विप्र	विप्र
वश्य	मानव	मान१ चतु३	चतुष्प	चतु१ जल३	जल२ मान२	मानव	मान३ जल१	जलचर	जलचर
योनि	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गौ	गज
यो.वै.	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीश	गुरु	गुरु	गुरु१,शनि३	शनि	शनि	शनि	शनि३,गुरु१	गुरु	गुरु
गण	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव
नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

॥ नवग्रह पौराणिक मन्त्राः ॥

ॐ जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महद्द्युतिम्।
तमोरिंसर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥
ॐ दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवम्।
नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषणम्॥
ॐ धरणीगर्भ संभूतं विद्युत्कांति समप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणाम्यहम्॥
ॐ प्रियंगुकलिकाश्यामं रुपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥
ॐ देवानांच ऋषीनांच गुरुं कांचन सन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥
ॐ हिमकुंद मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्॥
ॐ नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तंड संभूतं तं नमामि शनैश्चरम्॥
ॐ अर्धकायं महावीर्यं चंद्रादित्य विमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥
ॐ पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रह मस्तकम्।
रौद्रंरौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्॥

नवग्रहपीडाहरस्तोत्रम्

ग्रहाणामादिरादित्यो लोकरक्षणकारकः।
विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु मे रविः॥
रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः।
विषमस्थानसंभूतां पीडां हरतु मे विधुः॥
भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत् सदा।
वृष्टिकृद्वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु मे कुजः॥
उत्पातरूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः।
सूर्यप्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु मे बुधः॥
देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः।
अनेकशिष्यसम्पूर्णः पीडां हरतु मे गुरुः॥
दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः।
प्रभुस्ताराग्रहाणां च पीडां हरतु मे भृगुः॥
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु मे शनिः॥
महाशिरा महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः।
अतनुश्चोर्ध्वकेशश्च पीडां हरतु मे शिखी॥
अनेकरूपवर्णैश्च शतशोऽथ सहस्रशः।
उत्पातरूपो जगतां पीडां हरतु मे तमः॥

नवग्रहों के बीजमंत्र

ग्रह	बीज मन्त्र	जपसंख्या
सूर्य –	ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः।	७५००
चन्द्र –	ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।	१९०००
मंगल –	ॐ हूं श्रीं भौमाय नमः।	१०५००
बुध –	ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः।	२१०००
गुरु –	ॐ ह्रीं क्लीं हूं बृहस्पतये नमः।	२४०००
शुक्र –	ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।	२६०००
शनि –	ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।	१५०००
राहु –	ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः।	१५०००
केतु –	ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः।	१५०००

विश्वरूप जयादित्य जय विष्णो जयाच्युत।
जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते॥
- वराहपुराणम्, अध्यायः १६९/ श्लोकः २३

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल।
जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते॥
-- स्कन्दपुराणम्/खण्डः१/अध्यायः५१/श्लोकः५४

दिन का चौघड़िया

रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात
काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत
उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात्रि का चौघड़िया

रविवार	सोमवार	मंगल	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात
चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत
काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
लाभ	शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग
उत्पात	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
शुभ	चर	काल	उत्पात	अमृत	रोग	लाभ

नाड़ीदोष विचार एवं परिहार

जन्मकुण्डली में आदिनाड़ी, मध्यनाड़ी तथा अन्त्यनाड़ी नाम से तीन नाड़ियों का विवेचन प्राप्त होता है।

आदि नाड़ी - अश्विनी, आर्द्रा, पुनर्वसु, उ.फाल्गुनी, हस्त, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषा, पूर्वाभाद्र.

मध्य नाड़ी - भरणी, मृगशीर्ष, पुष्य, पू.फाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पू.षाढ़ा, धनिष्ठा, उ.भाद्र.

अन्त्यनाड़ी- कृतिका, रोहिणी, श्लेषा, मघा, स्वाती, विशाखा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, रेवती

यदि वर एवं कन्या की नाड़ी अलग-अलग होती है तो आठ गुण प्राप्त होते हैं। यदि वर कन्या की नाड़ी समान हो तो शून्य गुण मिलता है। इसे ही नाड़ी दोष कहते हैं। नाड़ी दोष की तीन स्थिति बनती है- i. वर-कन्या दोनों की आदि नाड़ी हो। ii, वर-कन्या दोनों की मध्य नाड़ी हो तथा ii. वर-कन्या दोनों की अन्त्य नाड़ी हो।

यदि दोनों की आदिनाड़ी हो तो विवाह करने पर वर की मृत्यु होती है। यदि दोनों की मध्यनाड़ी हो तो विवाह करने पर कन्या की मृत्यु होती है। यदि दोनों की अन्त्य नाड़ी हो तो विवाह के पश्चात् दोनों की मृत्यु होती है। अत: नाड़ी दोष त्याज्य होता है।

आदिनाडीवरं हन्ति मध्यनाडी च कन्यकाम्।
अन्त्यनाडी द्वयोर्हन्ति नाडीदोषं त्यजेद् बुधः ।।

यह वचन प्राचीन काल से ही समादृत है। यदि वर-कन्या का एक नक्षत्र हो और नक्षत्र चरण अलग-अलग हो तो नाड़ी दोष नहीं लगता है। यदि वर-कन्या का एक नक्षत्र हो और राशि अलग-अलग हो तो भी नाड़ी दोष नहीं लगता है।

राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव ।
नाडीदोषो नो गणानाञ्च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ।। मु.चि.

जातिभेद से नाड़ीदोष परिहार

प्राचीन परम्परा से प्राप्त ज्योतिर्विदों के द्वारा "नाडीदोष" का त्याग केवल विप्रवर्ण के लिए आदिष्ट हैं। क्षत्रीय वर्ण के लिए "वर्णदोष" का त्याग कहा गया है। वैश्यवर्ण के लिए "गणदोष" तथा शुद्रवर्ण के लिए "योनिदोष" का त्याग आदिष्ट किया गया है-

नाडीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषस्तु भूभुजाम्। गणदोषस्तु वैश्यानां योनिदोषस्तु पादजे।।

यदि नाड़ीदोष के कारण सभी वर्गो में विवाह को रोक दिया जाये तो फिर सोलह गुण पर विवाह होना ही कठिन हो जायेगा। कभी-कभी तो अट्ठाईस गुण होते हुए भी नाड़ीदोष की प्राप्ति होने से समस्या उत्पन्न हो जाती है। फलतः सोलह गुण पर विवाह सम्पन्न होने का शास्त्रीय आदेश सिद्ध करता है कि ब्राह्मण वर्ण के लिए ही नाड़ी दोष सर्वथा वर्ज्य है। नाड़ी दोष का ज्योतिष द्वारा प्राप्त परिहार ही एकमात्र उपाय नहीं होता है, धर्मशास्त्र द्वारा बतलाया उपाय ज्यादा महत्त्वपूर्ण और प्रभावशाली होता है।

फलत: नाड़ीदोष परिहार के लिए ज्योतिषशास्त्रीय परिहार के अतिरिक्त धर्मशास्त्रीय परिहार का भी अवलम्बन लेना चाहिए। भारत में प्राचीन काल से ही धर्मशास्त्रीय परिहारों की मान्यता बनी हुयी है। यह भी देखा गया है कि धर्मशास्त्रीय परिहार के बाद नवदम्पती के जीवन में विवाह के बाद किसी प्रकार की कोई दुर्घटना नहीं होती है। यह आवश्यक है कि परिहार विद्वान् वैदिक द्वारा सम्पन्न कराया जाय।

नाड़ीदोष परिहार

यदि ज्योतिषशास्त्रोक्त परिहार न मिले तो धर्मशास्त्रोक्त परिहार द्वारा नाड़ीदोष का निवारण करके विवाह किया जाता है। ऐसा करने पर नाड़ीदोष से उत्पन्न दुष्प्रभाव वर-कन्या को नहीं प्राप्त होता है। धर्मशास्त्रीय परिहार में बृहस्पति के वचन के अनुसार सवालाख महामृत्युंजय मंत्र जप कन्या का पिता कराकर तब विवाह करे। साथ ही विवाह मण्डप में नाड़ीदोष परिहार हेतु कन्या का पिता ब्राह्मण को गोदान-स्वर्णदान करे -

दोषापनुत्तये नाड्या मृत्युञ्जयजपादिकम्।
विधाय ब्राह्मणांश्चैव तर्पयेत्काञ्चनादिना।। -बृहस्पतिः

नारायणभट्ट द्वारा दी गयी धर्मशास्त्रीय व्यवस्था पूरे देश में मान्य है। आज भी यही धर्मशास्त्रीय व्यवस्था नाड़ी दोष के लिए प्रभावशाली उपाय है। नारायणभट्ट के अनुसार वर-कन्या की नाड़ी यदि एक हो जाये तो विवाह मण्डप में प्रत्यक्ष गोदान एवं स्वर्णदान करके ही कन्या का पिता विवाह करे -

द्वयर्के ताम्रसुवर्णमष्टरिपुके गोयुग्ममर्थांकके।
रौप्यं कांस्यमथैकनाडियुजिभे गोस्वर्णादिदत्वोद्वहेत्।।

इस उपाय को करके हजारों की संख्या में नाड़ी दोष युक्त विवाह का परिहार किया गया है। इस परिहार के पश्चात् दम्पती के जीवन में कोई अनिष्ट नहीं होता है। ध्येय है कि कन्या का पिता मण्डप में पाणिग्रहण संस्कार से पूर्व ही अपने कुल पुरोहित या श्रेष्ठविद्वान् को संकल्पपूर्वक गोदान तथा स्वर्णदान करे। संकल्प में नाड़ीदोष परिहारार्थ गोदान तथा स्वर्णदान का उल्लेख आवश्यक होता है। इस उल्लेख के बिना किया हुआ संकल्प या दान व्यर्थ होता है। अत: विद्वान् वैदिक द्वारा ही इस कृत्य का संपादन होना चाहिए। निष्कर्षत: नाड़ीदोष होने पर विवाह का त्याग ही एकमात्र मार्ग नहीं होता, बल्कि परिहारपूर्वक विवाह करना श्रेष्ठ मार्ग है।

नाड़ीकूट सर्वश्रेष्ठ है

आठ प्रकार के कूटों में नाड़ी सर्वश्रेष्ठ कूट होने के कारण कूटशिरोमणि नाम से प्रसिद्ध है। अत: नाड़ीदोष को लेकर पारम्परिक विद्वान्गणकों में भारी सजगता देखी जाती है। प्रायशः विद्वान् सामान्य ग्रन्थों में कहे गये परिहार को स्वीकार नहीं करते। फलत: मुहूर्त्तचिंतामणि या फिर नारायणभट्ट द्वारा कहा गया परिहार ही आज विद्वानों में स्वीकार्य है।

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

श्रीनिम्बार्क व्रतोत्सव निर्णय, २०२१-२०२२

(१३ अप्रैल २०२१ से १ अप्रैल २०२२ तक)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

तिथि	वार	दिनां.	माह	व्रतोत्सव
चैत्र शुक्ल पक्ष - १३ अप्रैल से २७ अप्रैल २०२१ तक				
शु.१	मंगल	१३	अप्रै०	विक्रम नववर्ष प्रारम्भ, श्रीनवरात्र घटस्थापनादि प्रातः ०९:०१ तक, मिश्री कालीमिर्चयुत नव निम्बदलार्पण, पञ्चाङ्ग श्रवण एवं श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीकेशवभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
शु.२	बुध	१४	अप्रै०	सिंजारा
शु.३	गुरु	१५	अप्रै०	गणगौर व्रतोत्सव, श्रीमत्स्यावतार जयन्ती
शु.६	रवि	१८	अप्रै०	श्रीयमुना जयन्ती, श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीपुरुषोत्तमाचार्य जी का पाटोत्सव
शु.९	बुध	२१	अप्रै०	श्रीरामनवमी महोत्सव
शु.१०	गुरु	२२	अप्रै०	नवरात्र उत्थापन
शु.११	शुक्र	२३	अप्रै०	श्रीकामदा एकादशी व्रत
शु.१२	शनि	२४	अप्रै०	दमनोत्सव
शु.१५	मंगल	२७	अप्रै०	पूर्णिमा पुण्य, श्रीहनुमान् जयन्ती, वैशाख स्नान प्रारम्भ
वैशाख मास - २८ अप्रैल से २६ मई २०२१ तक				
कृ.४	शुक्र	३०	अप्रै०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीपद्मनाभभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव (०३ पूर्व विद्धा होने से आज)
कृ.५	शनि	१	मई	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीरामचन्द्रभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
कृ.७	सोम	३	मई	बाबा श्रीमाधुरीशरणजी का जन्मोत्सव, श्रीअलिमाधुरी कुटी, श्रीवृन्दावन
कृ.११	शुक्र	७	मई	श्रीवरूथिनी एकादशी, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती
कृ.१४	सोम	१०	मई	व्रजविदेह चतुःसम्प्रदाय श्रीमहंत धनञ्जयदास जी काठिया तिरोभाव तिथि
कृ.३०	मंगल	११	मई	वैशाखी अमावस्या, देवपितृ कार्याऽमा, श्रीशुकदेव जयन्ती
शु.१	बुध	१२	मई	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य जी की ९३ वीं जयन्ती
शु.३	शुक्र	१४	मई	अक्षय तृतीया
शु.४	शनि	१५	मई	भगवान् का चन्दन शृङ्गार, सत्तू, ऋतुफल एवं शीतल पदार्थ समर्पण, भगवान् श्रीपरशुराम जयन्ती, ठाकुरजी श्रीगोपालजी महाराज, जूसरी-मकराना का पाटोत्सव (तृतीया पूर्वविद्धा होने से आज)
शु.५	सोम	१७	मई	श्रीमद् आद्य शंकराचार्य जयन्ती
शु.६	मंगल	१८	मई	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती
शु.७	बुध	१९	मई	श्रीगंगा सप्तमी, गंगा पूजन
शु.८	गुरु	२०	मई	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीविलासाचार्यजी का पाटोत्सव
शु.९	शुक्र	२१	मई	श्रीजानकी नवमी महामहोत्सव
शु.१२	रवि	२३	मई	श्रीमोहिनी एकादशी व्रत, (१० क्षय होने से), श्रीहितहरिवंश महाप्रभु जयन्ती
शु.१३	सोम	२४	मई	द्वाराचार्य श्रीमुकुन्ददेवाचार्यजी का पाटोत्सव (१२ विद्धा होने से आज)
शु.१४	मंगल	२५	मई	श्रीनृसिंह जयन्ती
शु.१५	बुध	२६	मई	श्रीकूर्मावतार जयन्ती, श्रीबुद्धावतार पूर्णिमा, पूर्णिमा पुण्य, वैशाख स्नान पूर्ति

तिथि	वार	दिनां.	माह	व्रतोत्सव
ज्येष्ठ मास - २७ मई से २४ जून २०२१ तक				
कृ.१	गुरु	२७	मई	जलसेवा प्रारम्भ, आज से इस माह की पूर्णिमा पर्यन्त पूरे मास शीतल सुगन्धित जलशय्या पर भगवान की शयन सेवा
कृ.२	शुक्र	२८	मई	श्रीनरहरिदेव जी का प्राकट्योत्सव टटिया स्थान
कृ.६	मंगल	१	जून	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीवामनभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
कृ.११	रवि	६	जून	श्रीअपरा एकादशी व्रत
कृ.१२	सोम	७	जून	महन्त श्रीगोविन्दासजीमहाराज स्मृतिमहोत्सव श्रीराधाकृष्णधाम,श्रीनृसिंहकुटीजयपुर
कृ.३०	गुरु	१०	जून	अमावस्या, देवपितृ कार्याऽमा
शु.२	शनि	१२	जून	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज का ७९ वां पाटोत्सव
शु.४	सोम	१४	जून	दिग्विजयी श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
शु.५	मंगल	१५	जून	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीव्रजराजशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
शु.६	बुध	१६	जून	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीनिम्बार्कशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
शु.७	गुरु	१७	जून	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीस्वरूपाचार्यजी का पाटोत्सव
शु.९	शनि	१९	जून	श्रीवृन्दावन श्रीजी की बड़ी कुञ्ज मन्दिरस्थ भगवान् श्रीआनन्दमनोहरवृन्दावनचन्द्रजी एवं श्रीरूपमनोहरवृन्दावनचन्द्रजी का पाटोत्सव
शु.१०	रवि	२०	जून	ठाकुरजी श्रीसरसबिहारीजी, श्रीललितकिशोरजी, श्रीराधामुकुन्दबिहारीजी का पाटोत्सव, श्रीनिम्बार्काचार्यपीठस्थ श्रीराधामाधव भगवान का २५५ वां पाटोत्सव
शु.११	सोम	२१	जून	श्रीनिर्जला एकादशी व्रत
शु.१५	गुरु	२४	जून	पूर्णिमा, ज्येष्ठाभिषेक - जलसेवा पूर्ति
आषाढ़ मास – २५ जून से २४ जुलाई २०२१ तक				
कृ.८	शुक्र	२	जुला०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीपद्माकरभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
कृ.९	शनि	३	जुला०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीकृष्णभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
कृ.११	सोम	५	जुला०	श्रीयोगिनी एकादशी
कृ.१२	मंगल	६	जुला०	पक्षवर्द्धिनी महाद्वादशी
कृ.३०	शुक्र	९	जुला०	पितृ कार्याऽमा
कृ.३०	शनि	१०	जुला०	अमावस्या देव कार्याऽमा
शु.२	सोम	१२	जुला०	श्रीरथयात्रा महोत्सव
शु.१०	सोम	१९	जुला०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीमाधवाचार्यजी का पाटोत्सव
शु.११	मंगल	२०	जुला०	श्रीदेवशयनी एकादशी व्रत
शु.१५	शनि	२४	जुला०	श्रीगुरुपूर्णिमा, श्रीहंस भगवान् से लेकर समस्त आचार्यों एवं निज गुरुदेव का पूजन
श्रावण कृष्णपक्ष – २५ जुलाई से ८ अगस्त २०२१ तक				
कृ.११	बुध	४	अग०	श्रीकामदा एकादशी व्रत
कृ.३०	रवि	८	अग०	श्रीहरियाली अमावस्या, देवपितृ कार्याऽमा, श्रीसरसमाधुरीशरण जी की जयन्ती

श्रीनिम्बार्क व्रतोत्सव निर्णय, २०२१-२०२२

(१३ अप्रैल २०२१ से १ अप्रैल २०२२ तक)

श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चांगम्

तिथि	वार	दिनां.	माह	व्रतोत्सव
श्रावण शुक्लपक्ष – ९ अगस्त से २२ अगस्त २०२१ तक				
शु.२	मंगल	१०	अग०	सिंजारा
शु.३	बुध	११	अग०	झूलनोत्सव प्रारम्भ, हरियाली तीज, श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीबलभद्राचार्यजी का
शु.५	शुक्र	१३	अग०	श्रीकल्कि जयन्ती
शु.७	रवि	१५	अग०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोपीनाथभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव, राष्ट्रीय स्वतन्त्रता दिवस
शु.१२	गुरु	१९	अग०	श्रीपवित्रा एकादशी (ईशदुर्गान्तिकक्षये वचनानुसार ९ क्षय होने से तथा एकादशी
शु.१५	रवि	२२	अग०	रक्षाबन्धन दिन में ०१:४७ से सांय ०४:२१ तक, पूर्णिमा पुण्य, शुक्ल-कृष्ण-यजुर्वेदी
भाद्रपद मास – २३ अगस्त से २० सितम्बर २०२१ तक				
कृ.५	शुक्र	२७	अग०	श्रीनिम्बार्कपीठाधीश्वर श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
कृ.८	सोम	३०	अग०	लीला पुरुषोत्तम भगवान् श्रीकृष्ण जयन्ती महामहोत्सव
कृ.९	मंगल	३१	अग०	श्रीनन्द महोत्सव, पलना दर्शन
कृ.१२	शुक्र	३	सित०	श्रीअजा एकादशी व्रत (एकादशी पूर्वविद्धा होने से आज), वन्जुलिनी महाद्वादशी
कृ.१३	रवि	५	सित०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
कृ.१४	सोम	६	सित०	कुशोत्पाटनी (कुशग्रहणी) अमावस्या, देवपितृ कार्याSमा
शु.४	शुक्र	१०	सित०	श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीवराह जयन्ती (३ पूर्वविद्धा होने से आज)
शु.५	शनि	११	सित०	श्रीऋषि पञ्चमी, सामवेदी उपाकर्म
शु.६	रवि	१२	सित०	श्रीबलदेव जयन्ती
शु.८	मंगल	१४	सित०	श्रीराधा जयन्ती महामहोत्सव, स्वामी श्रीहरिदासजी महाराज का
शु.९	बुध	१५	सित०	श्रीमद्भागवत जयन्ती महोत्सव
शु.११	शुक्र	१७	सित०	श्रीपद्मा (जलझूलनी एकादशी व्रत) श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोपालाचार्यजी का
शु.१२	शनि	१८	सित०	श्रीवामन जयन्ती एवं श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीपद्माचार्यजी का पाटोत्सव
शु.१४	रवि	१९	सित०	श्रीअनन्त चतुर्दशी,
शु.१५	सोम	२०	सित०	पूर्णिमा, श्राद्ध पक्ष प्रारम्भ, पूर्णिमा का श्राद्ध
आश्विन मास - २१ सितम्बर से २० अक्तूबर २०२१ तक				
कृ.१	मंगल	२१	सित०	प्रतिपदा का श्राद्ध
कृ.२	बुध	२२	सित०	द्वितीया का श्राद्ध
कृ.३	गुरु	२३	सित०	तृतीया का श्राद्ध
कृ.३	शुक्र	२४	सित०	चतुर्थी का श्राद्ध
कृ.४	शनि	२५	सित०	पंचमी का श्राद्ध, गौलोकवासी महन्त श्रीद्वारकादास जी महाराज का आविर्भाव दिवस
कृ.५	रवि	२६	सित०	षष्ठी का श्राद्ध
कृ.६	सोम	२७	सित०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीघनश्यामशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
कृ.७	मंगल	२८	सित०	श्रीचतुरचिन्तामणि "नागाजी" महाराज का पाटोत्सव, सप्तमी का श्राद्ध
कृ.८	बुध	२९	सित०	अष्टमी का श्राद्ध

तिथि	वार	दिनां.	माह	व्रतोत्सव
कृ.९	गुरु	३०	सित०	नवमी का श्राद्ध
कृ.१०	शुक्र	१	अक्टू०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीभूरिभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव, दशमी का श्राद्ध
कृ.११	शनि	२	अक्टू०	श्रीइन्दिरा एकादशी व्रत
कृ.१२	रवि	३	अक्टू०	एकादशी, द्वादशी का श्राद्ध
कृ.१३	सोम	४	अक्टू०	त्रयोदशी का श्राद्ध
कृ.१४	मंगल	५	अक्टू०	चतुर्दशी का श्राद्ध
कृ.३०	बुध	६	अक्टू०	अमावस्या, अमावस्या का श्राद्ध, सर्वपितृ श्राद्ध, देवपितृ कार्याSमा
शु.१	गुरु	७	अक्टू०	शारदीय नवरात्रारम्भ घट स्थापना ११:३५ से १२:२० तक
शु.२	शुक्र	८	अक्टू०	आदिवाणीकार श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीश्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज का पाटोत्सव
शु.६	सोम	११	अक्टू०	श्रीसरस्वती आवाहन (मूलेषु स्थापन)
शु.७	मंगल	१२	अक्टू०	श्रीसरस्वती पूजन (पूर्वाषाढासु पूजनम)
शु.८	बुध	१३	अक्टू०	श्रीसरस्वती अर्चनं (उत्तारासु अर्चन)
शु.९	गुरु	१४	अक्टू०	सरस्वती विसर्जन (श्रवणेन विसर्जयेत), नवरात्र समाप्त
शु.१०	शुक्र	१५	अक्टू०	श्रीविजयादशमी, श्रीसुदर्शनादि सर्वायुध पूजा, शमी पूजन, रथयात्रा, नवरात्र
शु.११	शनि	१६	अक्टू०	श्रीपापांकुशा एकादशी व्रत
शु.१३	सोम	१८	अक्टू०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीश्यामाचार्यजी का पाटोत्सव
शु.१५	बुध	२०	अक्टू०	शरद् पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, कार्तिक स्नान प्रारम्भ, श्रीसरसदेवजी का
कार्तिक मास – २१ अक्तूबर से १९ नवम्बर २०२१ तक				
कृ.६	मंगल	२६	अक्टू०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोविन्ददेवाचार्यजी का पाटोत्सव, संगीताचार्य बाबा श्रीशुकदेव दासजी महाराज की आविर्भाव तिथि (दोनों उत्सव ५ पूर्व विद्धा होने से आज)
कृ.८	शुक्र	२९	अक्टू०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोविन्दशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
कृ.९	शनि	३०	अक्टू०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीश्रवणभट्टचार्यजी का पाटोत्सव
कृ.११	सोम	१	नव०	श्रीरमा एकादशी व्रत, श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीमाधवभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
कृ.१२	मंगल	२	नव०	श्रीमहावाणीकार रसिकराजराजेश्वर श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी का
कृ.१३	बुध	३	नव०	रूप चतुर्दशी
कृ.३०	गुरु	४	नव०	अमावस्या, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, दीपमालिका प्रदोषवेलायाम् दीपोत्सव,
शु.१	शुक्र	५	नव०	श्रीअन्नकूट महोत्सव, श्रीगोवर्धनपूजा
शु.२	शनि	६	नव०	यम द्वितीया, भाई दूज
शु.३	रवि	७	नव०	ब्रह्मचारी श्रीयुगलशरणजी महाराज, पाटनारायण धाम की आविर्भाव तिथि
शु.५	मंगल	९	नव०	ब्रजविदेह चतु: संप्रदाय श्रीमहंत श्रीधनञ्जयदासजी काठिया बाबा आविर्भाव तिथि
शु.८	शुक्र	१२	नव०	गोपाष्टमी महोत्सव, गो पूजन, द्वाराचार्य श्रीस्वभूरामदेवाचार्यजी जयन्ती महोत्सव
शु.९	शनि	१३	नव०	श्रीहंस सनकादि जयन्ती तथा श्रीसर्वेश्वर प्रभु का प्राकट्य दिवस
शु.११	सोम	१५	नव०	श्रीदेव प्रबोधिनी एकादशी

श्रीनिम्बार्क व्रतोत्सव निर्णय, २०२१-२०२२

(१३ अप्रैल २०२१ से १ अप्रैल २०२२ तक)

तिथि	वार	दिनां.	माह	व्रतोत्सव
शु.१३	बुध	१७	नव०	ब्रजविदेह चतु: संप्रदाय श्रीमहंत श्रीसंतदास जी काठिया बाबा तिरोभाव तिथि
शु.१४	गुरु	१८	नव०	श्रीवैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत
शु.१५	शुक्र	१९	नव०	पूर्णिमा, आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् का ५११७वां जयन्ती महोत्सव, कार्तिक स्नान पूर्ण
मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष - २० नवम्बर से ४ दिसम्बर २०२१ तक				
कृ.५	बुध	२४	नव०	श्रीनिम्बार्क भगवान् का छठी महोत्सव
कृ.७	शुक्र	२६	नव०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीहरिवंशदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
कृ.८	शनि	२७	नव०	श्रीललितकिशोरीदेव जी का प्राकट्योत्सव टटिया स्थान
कृ.११	मंगल	३०	नव०	श्रीउत्पत्ति एकादशी व्रत
कृ.३०	शनि	४	दिस०	अमावास्या, देवपितृ कार्याऽमा
मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष – ५ दिसम्बर से १९ दिसम्बर २०२१ तक				
शु.२	सोम	६	दिस०	सेतुकाकार श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीसुन्दरभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
शु.४	मंगल	७	दिस०	द्वाराचार्य श्रीउद्धवघमण्डदेवाचार्यजी प्राकट्योत्सव (तृतीया क्षय होने से आज)
शु.५	बुध	८	दिस०	श्रीरामजानकी विवाह महोत्सव
शु.६	गुरु	९	दिस०	ठाकुर श्रीबाँकेबिहारी जी महाराज का प्राकट्योत्सव (पञ्चमी पूर्वविद्धा होने से आज)
शु.११	मंगल	१४	दिस०	श्रीमोक्षदा एकादशी व्रत एवं श्रीगीता जयन्ती
शु.१२	बुध	१५	दिस०	श्रीव्यञ्जन द्वादशी, पक्षवर्द्धिनी महाद्वादशी
शु.१३	गुरु	१६	दिस०	श्रीनारद जयन्ती (१२ पूर्व विद्धा होने से आज)
शु.१५	शनि	१८	दिस०	पूर्णिमा व्रत
शु.१५	रवि	१९	दिस०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीकृपाचार्य जी का पाटोत्सव (प्रथम पूर्णिमा पूर्वविद्धा होने से आज)
पौष मास – २० दिसम्बर २०२१ से १७ जनवरी २०२२ तक				
कृ.१	सोम	२०	दिस०	श्रीरसिकमाधुरीशरण जी की जयन्ती
कृ.६	शनि	२५	दिस०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
कृ.११	गुरु	३०	दिस०	श्रीसफला एकादशी व्रत, त्रिस्पर्शा महाद्वादशी, श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोपालभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
कृ.३०	रवि	२	जन०	अमावस्या, देवपितृ कार्याऽमा
शु.९	मंगल	११	जन०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीनारायणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
शु.११	गुरु	१३	जन०	पुत्रदा एकादशी व्रत, माघ स्नान प्रारम्भ, ब्रजविदेह चतु: संप्रदाय श्रीमहंत श्रीरामदास जी काठिया बाबा तिरोभाव तिथि
शु.१२	शुक्र	१४	जन०	श्रीमुकुन्दद्वाराचार्य श्रीमाधवदासजी महाराज का अविर्भाव दिवस, गौलोकवासी महन्त श्रीद्वारकादास जी का स्मृति महोत्सव
शु.१३	शनि	१५	जन०	मकर संक्रान्ति पुण्यं मध्याह्न तक ,
शु.१५	सोम	१७	जन०	पूर्णिमा

तिथि	वार	दिनां.	माह	व्रतोत्सव
माघ कृष्णपक्ष – १८ जनवरी से १ फरवरी २०२२ तक				
कृ.२	बुध	१९	जन०	जगदुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी श्री श्रीजी महाराज का पञ्चम निकुञ्ज प्रवेशोत्सव
कृ.७	सोम	२४	जन०	श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती
कृ.९	बुध	२६	जन०	७३ वां राष्ट्रीय गणतन्त्र दिवस
कृ.१०	गुरु	२७	जन०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगोपेश्वरशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
कृ.११	शुक्र	२८	जन०	श्रीषटतिला एकादशी व्रत
कृ.१४	सोम	३१	जन०	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीबलभद्रभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव, पितृ कार्याऽमा
कृ.३०	मंगल	१	फर०	माघी मौनी अमावस्या, देव कार्याऽमा
माघ शुक्लपक्ष - २ फरवरी से १६ फरवरी २०२२ तक				
शु.५	शनि	५	फर०	श्रीसरस्वती पूजन
शु.६	रवि	६	फर०	श्रीवसन्तोत्सव, भाष्यकार श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीनिवासाचार्यजी एवं जाह्नवीकार श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीदेवाचार्यजीका पाटोत्सव, गीतगोविन्दकार श्रीजयदेवकवि जयन्ती महोत्सव, श्रीरसिकदेव जी का प्राकट्योत्सव टटिया स्थान (०५ पूर्वविद्धा होने से आज)
शु११	शनि	१२	फर०	श्रीजया एकादशी व्रत, गौलोकवासी महन्त श्रीगोविन्ददास जी महाराज का जन्मोत्सव
शु१५	बुध	१६	फर०	पूर्णिमा, माघ स्नान पूर्ति
फाल्गुन मास – १७ फरवरी से १८ मार्च २०२२ तक				
कृ.१२	रवि	२७	फर०	श्रीविजया एकादशी व्रत (एकादशी क्षय होने से आज)
कृ.१४	मंगल	१	मार्च	श्रीमहाशिवरात्री व्रत
कृ.३०	बुध	२	मार्च	अमावस्या, देवपितृ कार्याऽमा
शु.४	रवि	६	मार्च	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीविश्वाचार्यजी का पाटोत्सव
शु.११	सोम	१४	मार्च	आमलकी एकादशी
शु.१४	गुरु	१७	मार्च	होलिकापर्व - होलिका दीपनं अर्धरात्र्योत्तर ०१:०९ पश्चात
शु.१५	शुक्र	१८	मार्च	पूर्णिमा, धूलिवन्दन (छारंडी)
चैत्र कृष्णपक्ष – १९ मार्च से १ अप्रैल २०२२ तक				
कृ.१	शनि	१९	मार्च	दोलोत्सव
कृ.२	रवि	२०	मार्च	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीगांगलभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
कृ.३	सोम	२१	मार्च	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीउपेन्द्रभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
कृ.११	सोम	२८	मार्च	श्रीपापविमोचिनी एकादशी
कृ.१२	मंगल	२९	मार्च	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी का पाटोत्सव
कृ.१३	बुध	३०	मार्च	श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीश्यामभट्टाचार्यजी का पाटोत्सव
कृ.१४	गुरु	३१	मार्च	पितृ कार्याऽमा
कृ.३०	शुक्र	१	अप्रै०	अमावस्या, देव कार्याऽमाविक्रम संवत्सर २०७८ पूर्ति

श्रीसूर्यनारायण मन्दिर, गलताजी, जयपुर

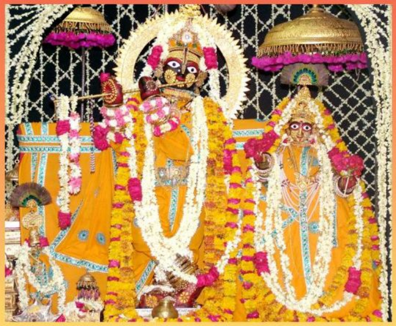

आराध्यदेव श्रीराधागोविन्ददेवजी, जयपुर

श्रीताड़केश्वर महादेवजी, जयपुर

श्रीशिला माता, आमेर, जयपुर

श्री खोले के हनुमानजी, जयपुर

विश्वरूप जयादित्य जय विष्णो जयाच्युत। जय केशव ईशान जय कृष्ण नमोऽस्तु ते॥
जयादित्य जय स्वामिञ्जय भानो जयामल। जय वेदपते शश्वत्तारयास्मानहर्पते॥

यह प्राचीन सूक्ष्म गणित श्रीसूर्यसिद्धान्त पर आधारित राजस्थान का एकमात्र
श्रीसर्वेश्वर जयादित्य पञ्चाङ्ग, श्रीनिम्बार्क परिषद, जयपुर ने
सरस्वती प्रिन्टिंग इण्डस्ट्रीज से छपवाकर प्रकाशित किया।

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

श्रीमोतीडूंगरी गणेशजी, जयपुर

-:: पञ्चाङ्ग प्राप्ति स्थल ::-

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
त्रिवेणी नगर, गोपालपुरा बाईपास,
जयपुर-302018
मो.: 9983597721
9413444921

श्रीसर्वेश्वर निम्बार्क सेवाधाम
36 ई (डी), बालाजी ब्लैसिंग 20
श्रीमंगलम गार्डन से पहले
गणतपुरा रोड, भांकरोटा, जयपुर-26
मो.: 9571108902

मन्दिर श्रीसरसबिहारी जी
मुख्य बाजार, कलवाड़ा
जयपुर-302037
मो.: 7425824413

पं. मोहनलाल शर्मा
90, दिव्य-केशव कुञ्ज
शक्तिनगर, गजसिंहपुरा,
अजमेर रोड, जयपुर-21
मो.: 9414074305

मन्दिर श्रीवैकुण्ठनाथ जी
हरि मार्ग, शिव कॉलोनी
टोंक फाटक
जयपुर-302015

मुद्रक : बसन्त जैन मित्तल
सरस्वती प्रिन्टिंग इण्डस्ट्रीज, चांदी की टकसाल, जयपुर
मो.: 8114417253, ईमेल : jainbasant02@gmail.com

Email : ssjayadityapanchang@gmail.com

Website : www.nimbarkparishad.com

संरक्षक

श्रीमहन्त श्रीवृन्दावनबिहारीदास जी महाराज
'काठिया बाबा' सुखचर कोलकाता

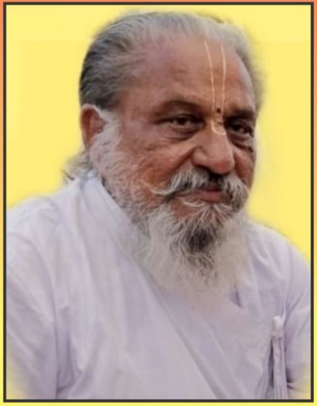

महन्त श्रीबनवारीशरण जी महाराज
प्रन्यासी अ.भा. निम्बार्काचार्यपीठ

महन्त श्रीवृन्दावनदास जी महाराज
महामंत्री अ.भा. श्रीनिम्बार्क महासभा
प्रन्यासी अ.भा. निम्बार्काचार्यपीठ

श्रीमहन्त श्रीपद्मनाभशरणदेवाचार्य जी
महाराज, श्री सर्वेश्वर सेवाधाम
प्रन्यासी श्रीनिम्बार्क परिषद्

मार्गदर्शक

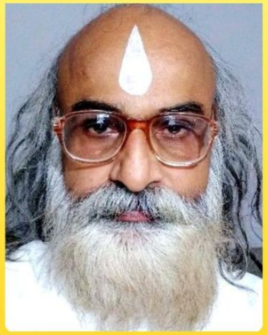

आचार्य श्री विनय झा

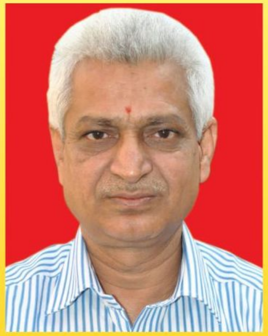

प्रो. श्री अर्कनाथ चौधरी

पं. श्री सतीशचन्द्र शास्त्री

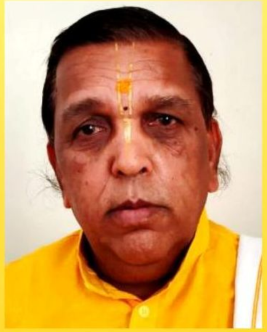

प्रो. श्री मोहनलाल शर्मा

आ. श्री कामेश्वर उपाध्याय

पं. श्री गंगाधर पाठक